वितरक :

तरुण प्रकाशन,
शान्ति निकेतन,
एच–218 शास्त्री नगर मेरठ उ० प्र० [भारत]

मुख पृष्ठ चित्र—'तूलिकी' (नई दिल्ली)

मुद्रक :

मोनो प्रिंटिंग प्रैस
22, महमूदुल हक रोड लिसाड़ी गेट मेरठ--2

बाईन्डर—मैसर्स साबिर अली बुक बाईन्डर शाहपीर गेट मेरठ

KAVIYATMA PRIYADARSHINI

Poet : Sahitya Manishi Tara Chand Pal 'Bekal'
(Sahitya Bhaskar)

Distributors : TARUN PRAKASHAN
SHANTI NIKETAN
H–218 SHASTRI NAGAR
Meerut-2, U. P, (INDIA)

Publishers : SHANTI PRAKASHAN
Ch. KALURAM BHAWAN
Jwalapur, Distt, Saharanpur U. P. (India)

भूमिका

विद्वान शिक्षाविद–लेखक

डा० रत्नाकर पाण्डेय

सदस्य राज्य सभा

····· 'बेकल' जी ने 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' वृहत् काव्य को अपने निर्धारित समय बद्ध कार्यक्रम के अन्तंगत पूरा कर दिखाया। यह इन्दिरा जी की अन्तः प्रेरणा से सम्भव हुआ है।

इन्दिरा जी की छवि सारे वातावरण पर छाई हुई है। इन्दिरा गांधी के विषय में बहुत कुछ उनके जीवन काल में लिखा गया है। और उनके न रहने पर भी लोग अनेक दृष्टि कोणों से लिख रहे हैं। मैं क्या लिखूं। क्या कहूं। इन्दिरा गांधी रोज तो पैदा नहीं होतीं, जब किसी देश का सौभाग्य जागता है तब इन्दिरा गांधी जैसी विभूतियां धरती पर अवतरित होती हैं और अपने लिये कुछ न कर मानव समुदाय के हित-चिंतन में अपना सर्वस्व समर्पित कर देती हैं और मानवता का सूरज जब दानवता के ग्रहण से कलंकित होने लगता है तब अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास के पन्नों का अपने खून से राजतिलक करती हैं।·········

इन्दिरा जी को समझने का लोगों का अपना-अपना दृष्णि कोण है परन्तु "काव्यात्मा प्रियदर्शिनी" वृहत् काव्य और कोई माई का लाल नहीं लिख सका। यह वृहत् कार्य श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' ने किया इसके लिये प्रशंसा के शब्द कहाँ से लाऊँ।·········

डा० रत्नाकर पाण्डेय

प्रधानाचार्य शिवानन्द

देवनागरी इन्टर कॉलेज
मेरठ

रचनायें—गीतारसामृत,
जीवन और सुख,
जीवन और अभय,

आशीर्वाद

महाकाव्य—"काव्यात्मा प्रियदर्शिनी" के सृजन के मूल में एक गहन, मर्मान्तिक पीड़ा की अनुभूति स्पष्ट झलक रही है, तथा कवि ने इसके द्वारा न केवल भारत के अपितु सारे सभ्य जगत के आक्रोश, व्यथा एवं वेदना को शब्द और स्वर देकर एक महान कार्य किया है। निर्मम निषाद द्वारा अपने समक्ष एक मूक, निरीह, पक्षी का वध होने पर आदि कवि बाल्मीकि का काव्य सृजन सहसा उद्‌गार एवं चमत्कार के रूप में उद्‌भूत हुआ था तथा मनो व्यथा काव्य के मूल में संस्थित थी। भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की निर्मम हत्या होने पर देश में हा-हाकार मचा हुआ था। तब संयोग से महाकवि 'बेकल' मेरे पास पधारे और मैंने उनसे यह आग्रह किया कि वे इंदिरा जी पर एक महाकाव्य लिख कर समय की मांग को पूरा करें! आश्चर्य मिश्रित हर्ष यह जान कर हुआ कि यह कार्य उन्होंने कर दिखाया! केवल चंद महीनों में। मेरे विदेश यात्रा से लौटने पर जब उन्होंने मुझे अपनी इस महत् रचना का द[illegible]न कराया तो मैं आनंद विभोर हो गया।

इस महाकाव्य में भाव एवं भाषा का प्रवाह है। गेयता हैं और रसमयता है! किन शब्दों में बधाई और कृतज्ञता अर्पित करूँ?

मेरा आशीर्वाद

शिवानंद

डा० धन प्रकाश मिश्र
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
एन० ए० एस० कॉलेज,
मेरठ (उ० प्र०)

निवास—
'रामायण'
ई–३० शास्त्री नगर.
मेरठ–२५०००५

३१ अक्टूबर १९८४ को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की जघन्य हत्या से भारत के जन–जन का हृदय करुण चीत्कार कर उठा। देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व इस बर्बरता पूर्ण हिंसा-प्रदर्शन से स्तब्ध रह गया। श्रीमती गाँधी का अन्त एक सामान्य व्यक्ति का अन्त नहीं, एक ऐसे संपूर्ण व्यक्तित्व का अन्त था जिसके नेतृत्व में एक शान्ति प्रिय राष्ट्र ने अपनी स्वतन्त्रता को विभिन्न रूपों में सुदृढ़ करने का सुष्ठु प्रयत्न करने के साथ–साथ विश्व के सभी राष्ट्रों को अपनी–अपनी स्वतन्त्रता और कल्याण कारिणी परम्पराओं की रक्षा करते हुये शान्ति पूर्वक एक साथ रहने तथा अभिवृद्धि करने का प्यारा सा सपना संजोया था।

प्रत्येक नया संकट विचारवान साहित्यकार को अन्तस्थल तक आन्दोलित कर डालता है। श्रीमती इंदिरा गाँधी के चमत्कारी व्यक्तित्व से प्रभावित कविवर ताराचन्द पाल 'बेकल' का भी मानवतावादी मूल्यों की इस संकट पूर्ण घड़ी में व्यथित होना स्वाभाविक ही था। राष्ट्र और समाज तथा अपने कवि–कर्म के प्रति उत्तर-दायित्व का निर्वहण करते हुये उन्होंने 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' के रूप में अपने भाव-पूर्ण हृदय की काव्यात्मक श्रद्धाँजलि प्रस्तुत करके प्रशंसनीय कार्य किया है।

साहित्य और युग का पारस्परिक संबंध अत्यन्त घनिष्ठ है। युग–स्थितियों की अभिव्यक्ति और युग–चेतना का निरूपण ही साहित्य है। साहित्यकार अपने युग में जीता है, युग को भोगता है, युग का मूल्यांकन करता है। कहा जा सकता है कि युग की चेतना ही साहित्यकार में अभिव्यक्त होती है। कविवर 'बेकल' अपने कवि जीवन के प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय दायित्व को वहन करते हुये मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु आत्मबल और आत्म-स्वातन्त्र्य के प्रेरक युगानुकूल साहित्य की सर्जना करते रहे हैं। राष्ट्र कवि का महा प्रयाण 'जय–जय हिन्दुस्तान' 'यह घाटी कश्मीर की' 'शान्ति दूत का महा प्रयाण' 'चमके बापू पूज्य हमारे' 'जय भारत जय बंगला देश' 'मुक्ताकाश' तथा 'मुक्तांगन' आदि उनके १९ प्रबन्ध काव्य एवं गीत संग्रह इस तथ्य के प्रत्यक्ष

प्रमाण हैं। भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम में क्रान्तिकारियों की भूमिका का सविस्तार वर्णन करते हुये सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी, स्वनाम धन्य अमर शहीद 'चन्द्र शेखर आजाद' के समग्र जीवन का ऐतिहासिक प्रामाणिकता से परिपुष्ट, प्रसादगुण सम्पन्न प्रवाहमान शैली में पूर्ण प्रभविष्णुता से संवलित (२६ जनवरी १९८५ को प्रकाशित) 'क्रान्ति-मन्यु वीर शिरोमणि चन्द्र शेखर आजाद' नामक ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य कवि 'बेकल' की एक अन्य महत्वपूर्ण काव्य रचना है।

महान् कवि स्वभाव से ही कालजयी होता है। कालजयी इस अर्थ में कि वह कालगत सातत्य को अपनी क्रान्तिदर्शी प्रतिभा के माध्यम से अपनी मनोभूमि से प्रत्यक्ष घटित होता हुआ-सा देख पाता है! 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' का विचारपरक ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य है। वास्तव में यह काव्य संस्कृत साहित्य शास्त्र की महाकाव्य विषयक रूढ़ धारणाओं के अंतर्गत निबद्ध किया ही नहीं जा सकता। इसका प्रधान कारण मेरे विनम्र मतानुसार, यह है कि यह रसाश्रित कृति न होकर विचाराश्रित कृति ही अधिक प्रतीत होती है। 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' का काव्य धरातल अत्यन्त व्यापक है। इसमें कवि ने सन् १८५७ की स्वातन्त्र्य क्रान्ति से पूर्व के वर्षों से लेकर सन् १९८४ तक के लगभग डेढ़ शताब्दी के भारत स्वतन्त्रता संग्राम के लोम हर्षक संघर्ष, स्वतन्त्रता प्राप्ति और स्वतन्त्र भारत के हर्ष एवं दुःख तथा आधुनिक भारत की विकासोन्मुख झांकी का सच्चा चित्रण करने का सुष्ठु प्रयास किया है।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' में जैसा नाम से स्पष्ट है, स्वर्गीया श्रीमती इंदिरा गाँधी की कथा को संपूर्ण कथा-प्रसंगों का मूलाधार मानकर ही चित्रित किया गया है। काव्य के प्रारम्भ में ही कवि ने इन्दिरा गांधी की प्रशस्ति इस रूप में की है—

खोल कर अध्याय जग में, जिन्दगी की नव विधा का,
कर दिया तादात्म्य सुस्थापित लगन से नव विभा का,
जब तलक हैं चाँद, तारे, सूर्य, धरती अरु गगन हैं;
नाम चमकेगा दमक के साथ, जग में इंदिरा का!

३० अक्टूबर १९८४ को उड़ीसा के दौरे पर विशाल जन-सभा को संबोधित करते हुये श्रीमती इंदिरा गाँधी ने जिस उत्सर्ग भावना का और अपने रक्त की बूंद-बूंद से देश की रक्षा करने के संकल्प का उद्घोष किया था, उसे कवि श्री 'बेकल' की लेखनी ने काव्यात्मकता के साथ इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

रख समक्ष गाँधी बापू की शिक्षा और शहादत को !
मुझे गर्व है मैंने सब कुछ किया समर्पित भारत को !!
हर्ष सहित बलिदान चढ़ा कर स्वयं उऋण हो जाऊँगी !
रक्त कणों को नव भविष्य की प्रगति हेतु बो जाऊँगी !!
बूंद-बूंद मेरे शोणित की भर देगी सुस्फूर्ति नई !
निर्मित करने को भारत के नव विकास की मूर्ति नई !!

जिस घृणित दृश्य की कल्पना मात्र से हृदय कम्पित हो उठता है, उसी का अपनी लेखनी से वर्णन करना कवि की धैर्य परीक्षा नहीं तो और क्या है ! क्रूर आतंकवादियों द्वारा श्रीमती इंदिरा गाँधी की नृशंस हत्या का यह चित्रण भी इसी कोटि का स्वीकार किया जा सकता है—

भाव-प्रवण विश्वस्त इंदिरा बढ़ी चली डग भर-भर कर !
सुदृढ़, सुरक्षा-पहरे में तब था भी किसको, किसका डर !!
कभी न समझा गैर जिन्हें, वे बैर साध कर शत्रु बने,
यह विडंबना ही तो थी, असहाय रही घर में अपने,
जिन्हें पिलाया दूध, आज वो ही थे तक्षक बन टूटे !
अंग रक्षक भक्षक बन टूटे !!

और, इस पर कवि की यह प्रतिक्रिया अत्यन्त स्वाभाविक ही है—

कोई धर्म नहीं सिखलाता महिला पर हो वार कहीं,
और निहत्थे पर वारों का दिया नहीं अधिकार कहीं,
जिसने समझा सदा पुत्रवत, जिससे माँ का प्यार मिला,
उसकी हत्या, हाय हंत रे ! जिसका रक्षा-भार मिला,
कुलांगार बन कर सहसा ही रीढ़ तोड़ दी मानवता की !
पराकाष्ठा कायरता की !!

कवि ने जिन घटनाओं को अपना वर्ण्य विषय बनाया है वे इतनी अधिक हैं कि उनका वर्णन करते हुये कथा की एक सूत्रता बनाये रखना अत्यन्त कठिन था ! किन्तु प्रतिभा के धनी श्री 'बेकल' ने कथा में उत्पाद्य-लावण्य का प्रयोग करते हुये

श्रीमती इन्दिरा गांधी के शव पर श्रद्धांजलि अर्पित करने आये एक ग्रामीण वृद्ध और उसके पौत्र बालक के कथा प्रसंग की कल्पना करके कथा सूत्र की इस जटिलता का अत्यन्त विवेक पूर्ण एवं मनोहारी समाधान प्रस्तुत किया है। इस कौशल के कारण ही ९६० पृष्ठो का यह वृहत्काव्य–प्रबन्ध काव्य कथा की दृष्टि से विशृंखलित होने से बच गया है।

भारतीय इतिहास और संस्कृति के पूर्ण अनुराग के मूल में कवि 'बेकल' की राष्ट्रीय भावना काम करती है। इस बलि पथी कवि ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्र को एक नया स्वर–बलिदान भावना के महत्व का स्वर प्रदान किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दी साहित्य' में लिखा है, "राष्ट्रीयता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का एक अंश है और इस राष्ट्र की सेवा के लिये, इसको धन, धान्य से समृद्ध बनाने के लिये, प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार से त्याग और कष्ट स्वीकार करना चाहिये'। कवि श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' की राष्ट्रीय भाव-प्रधान कविता में इस परिभाषा का प्रतिफलन देखा जा सकता है! उनका 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' नामक काव्य सामाजिकता के रंग में डूबा है। इसमें भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की उस कथा का भावात्मक चित्रण किया गया है जो कातर कहानी है; देश–भक्तों पर किये जाने वाले निर्मम अत्याचारों की कहानी है, जलियां वाला बाग में डायर के आदेश पर हुये रक्त-रंजित हत्याकांड का यह चित्रण कितना हृदय द्रावक है, देखिये—

> दनदना उठी बन्दूकें थीं,
> यीं निकलीं चीखें–हूकें थी !
> था तड़–तड़–तड़ का शोर हुआ,
> इस ओर बढ़ा, उस ओर हुआ !
> जो भाग चले तकदीर लिये,
> वे संगीनो ने चीर दिये,
> कुछ गिरे, मरे बेहोश हुये,
> थे हाय! शिकार निर्दोष हुये !

राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत कवि ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से लेकर रचना काल तक की प्रायः सभी प्रमुख घटनाओं का अत्यन्त सजीव

वर्णन किया है ! ऐतिहासिक प्रामाणिकता 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता है । इतने व्यापक धरातल पर रचित और ऐतिहासिक प्रामाणिकता से परिपुष्ट इस प्रकार के काव्य हिन्दी साहित्य में बिरले ही होंगे । उस युग की छोटी से छोटी घटना भी कवि की पैनी दृष्टि से ओझल नहीं हो पायी है । इस संदर्भ में 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' का विशिष्ट विवेचन अपेक्षित है ।

सभी राष्ट्रीय कवियों की भाँति कवि 'बेकल' ने देश की वर्तमान हीन दशा, नैतिक अव मूल्यन, स्वार्थ परता आदि पर व्यंग करते हुये उसे दूर करने का संदेश देना भी अपना पुनीत कर्त्तव्य माना है । कवि वर्तमान को देख कर व्यथित होकर कह उठता है—

आज ज़माना भी बदला है—
अब कृतज्ञता कहाँ जगत में !
फर्क आ चुका बहुत बड़ा है—
आज आदमी की नीयत में !!

कथा के सूत्राधार एक वृद्ध नागरिक का अपने पोते को संबोधित करते हुये यह कहना भी इसी व्यंग–भाव का परिचायक है——

ऐसा त्याग कहाँ अब बेटा—
सब कुर्सी के भूखे हैं !
इसीलिये तो राष्ट्र भक्ति के—
स्रोत यहाँ पर सूखे हैं !!

श्रीमती इंदिरा गांधी का राष्ट्र प्रेम कवि की दृष्टि में एक आदर्श भावना है जिसे प्रत्येक भारतवासी को अपनाना चाहिये । इसीलिये भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देते हुये कवि कहता है—

जन-सेवाहित किया समर्पित जिसने अपना जीवन !
धरती गाती गीत उसी के नभ करता अभिनन्दन !!
नारी हो या नर, समान यश–अर्जन क्षेत्र पड़ा है !
यहाँ भावना से सदैव ही निज कर्तव्य बड़ा है !!
इन्हीं गुणों से पूर्ण इंदिरा जीत रही थी जग में !
जड़ी दमक थी, सफलताओं की हर विकास के नग में !!

और यही कारण है कि——

जीत गई इंदिरा तो करके—
अर्पित भौतिक जीवन !
बनी इंदिरा की कुर्बानी—
दुनिया भर की धड़कन !!
एक नया विश्वास जगेगा—
प्रबल प्रेरणा द्वारा !
उभरेगा नव युक्ति–विधा से—
हिन्दुस्तान हमारा !!

शिल्प की दृष्टि से भी 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' अत्यन्त प्रौढ़, रचना है। इतिहास प्रसिद्ध प्रत्येक रचना को कवि ने छन्द बद्ध रूप में प्रस्तुत किया है। यह उनकी कवि प्रतिभा का परिचायक है। विभिन्न छन्दों का अत्यन्त सफल प्रयोग किया गया है। मुक्त छन्द प्रधान कविता, अकविता, कविता के नाम पर अनर्गल प्रलाप, कुण्ठा और सन्त्रास की मूर्च्छा में एब्सर्ड कविता' आदि की रचना बहुलता के इस दौर में 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' एक श्रेष्ठ काव्य का प्रतिमान है। हिन्दी की भावी पीढ़ियाँ इस प्रकार के सार्थक एवं प्रामाणिक काव्य पर गर्व करेंगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास एवं आकांक्षा है।

इतना कहना पर्याप्त होगा कि 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' एक व्यक्ति विशेष की कथा न होकर भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम की कथा है, स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के भारत के उत्थान की कथा है। इंदिरा जी की हत्या से भारत के भाल पर लगे कलंक की कथा है। और समग्रत: संस्कृति-विशेष की कथा है। यह वह विश्वास शील-गतिशील संस्कृति है जो भारत की स्वतन्त्रता, भिन्नता में एकता, संविधान एवं लोकतंत्र के प्रति अटूट आस्था एवं विश्वास का संबल लेकर अनेक अगम्य, अलंध्य परिवेशों में निरन्तर प्रवाह मान रही है और सदा, सर्वदा प्रवाहित होती रहेगी। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' इस संस्कृति का ऐसा लक्ष्य है, जिसकी कामना करते हुये 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' का कवि कहता है—

'अर्थ संतुलन रहे देश में कहीं न कोई तरसे !
सुख-औ-शान्ति की ध्वनि गूँजे नित नगर, गाँवों हर घर से !!
अंधकार हो दूर, अशिक्षा रहे न शेष वतन में !
आत्मजयी बनने के जागें, भाव सभी के मन में !!
गृह कलह-अलगाव वाद की पढ़े न कोई भाषा !
वर्तमान जुटे नव भविष्य की पूरी कर दे आशा !!
भूख सताये नहीं किसी को, सुख सम्पन्न धरा हो !
रहे प्रचुर धन-धान्य विश्व का हर भण्डार भरा हो !!

अंत में, निसंकोच कहा जा सकता है कि 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' एक श्रेष्ठ ऐतिहासिक विचारपरक प्रबन्ध काव्य है, जिससे प्रेरित होकर हिन्दी की भावी पीढ़ियाँ अपने विस्तृत सुन्दर इतिहास को स्मरण करके उसे काव्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास करेंगी !

डा० धन प्रकाश मिश्र

मन्मनाथ गुप्त

डी—२४ निजामुद्दीन ईस्ट
एन० डी० २३

प्रिय बन्धु,

आपका महाग्रंथ 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' देखकर गद्-गद् हो गया ! आपके इस ग्रंथ को १९ वें पुराण की मर्यादा मिलनी चाहिये । आपने लेखनी और प्रतिभा का सार्थक उपभोग किया है ! भारतीय ही नहीं एक हद तक विश्व इतिहास की सबसे गरिमामयी महिला का यह सुन्दर कलापूर्ण अभिनन्दन देखकर कौन-सा अरसिक ऐसा होगा जिसका मन मयूर आनंद विभोर होकर नृत्य न कर उठेगा !
मैं भी उपन्यास की विधा में इंदिरा की शहादत पर लिख रहा हूं ।

कृपा

विनीत
मन्मनाथ गुप्त

वीरेंद्र शर्मा 'मृदुल'
समीक्षक, व्यंगकार कवि एवं
लेखक

जीवन के अनुभव हैं जितने—
उतनी दुख की नागफनी,
तब तक फहरें ध्वजाएँ उसकी—
जिसकी जब तक रहे बनी,
कवि 'बेकल' तादात्म्य बिठाकर—
कथा वस्तु से चितंनमय;
महाकाव्य रच दिये अनूठा—
काव्यात्मा प्रियदर्शिनी !

मंदिर गली
बेगम बाग
मेरठ

डॉ० स्वर्ण किरण
एम० ए०, पी० एच० डी०,
साहित्यालंकार, राष्ट्रीय गीतकार, साहित्य मनीषी,
विद्यासागर, लघु कथाचार्य,
संपादक–नालंदा–दर्पण,
प्रवाचक, हिन्दी विभाग, किसान कॉलेज,
सोहसराय (नालंदा) (बिहार)

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' प्रयोग परक महाकाव्य देखकर आप्यायित हुआ !

यह महाकाव्य कवि के आशुकवित्व, महार्थ साधना, राष्ट्र प्रेम, मानवतावादी जीवन दर्शन एव भाषा पर अचूक अधिकार का द्योतक है ! गीतात्मकता, एवं वर्ण-नात्मकता के तत्व इस काव्य को जन–जीवन से जोड़ते हैं। जन–जीवन को दिशा निर्देशन देने की क्षमता रखते हैं। प्रियदर्शिनी इंदिरा गाँधी के संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रयोग परक रूप में उपस्थित कर कवि ने अपनी कारीगरी को यहाँ संकेतित किया है। यहाँ क्रमिक घटना वर्णन होने पर भी काव्यात्मा प्लवन (Poetic Leap) है, इतिहास होने पर भी काव्य से आवृत है और काव्य होने पर भी सहज जीवन यथार्थ बोध है। विविधता, जीवन–यात्रा की दृढ़ता, महान् उद्देश्य के साथ मैत्री, आशावा-दिता, पारस्परिक सौहार्द्र मानवीय तत्व, इस महाकाव्य के कुछ ऐसे गुण हैं जो अन्यत्र मुश्किल से हीं देखे जा सकते हैं। कवि 'दंडी' के काव्यादर्श, आचार्य विश्वनाथ के साहित्य दर्पण, अंग्रेजी के वाल्टर, परेर आदि ने महाकाव्य के जो निकर्ष रखे हैं। उनका विरोध करना इस महाकाव्य के प्रणेता का अभीष्ट नहीं है, अपितु उनके लक्षणों का अपने ढंग से उपयोग करना वह चाहता है और उपयोग करने में वह सफल हुआ है। ऐसे महाकाव्य और महाकाव्य के प्राणेता को अद्भुत कहने को जी चाहता है। कवि का कथन ध्यातव्य है—

जो कि रहेगा युगों–युगों तक अमर देश की भू पर,
करके गयी यहाँ पर है वह काम इंदिरा गाँधी !
उद्भव के अध्याय खोल कर स्वयं सिद्धि की लय पर,
भारत की पहचान बन गया, नाम इंदिरा गाँधी ! (पृ० 37)

यहाँ इंदिरा गाँधी के साथ, इंदिरा गाँधी के समस्त परिवार ही नहीं, इंदिरा गाँधी के प्रेरक, हितैषी, सहयोगी, विरोधी सबके चित्र सहज रूप से दीखते हैं और कवि को इनके चित्रण में सफलता मिली है । राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास इस महा-काव्य में सहज रूप से पिरोया गया दीखता है । मृत्यु के वारण्ट पर हस्ताक्षर करने वाली इंदिरा गाँधी की निर्भीकता, साहसिकता, दृढ़ता, सेवा भावना–समर्पणशीलता एवं मानवीयता निस्संदेह उपेक्ष्य नहीं है । काव्य में हत्या के दृश्य से प्रारंभ और विदा के क्षण से अंत को देख कर पल्लवग्राही पंडित यहाँ यह सोच सकते हैं कि कवि इसके माध्यम से मात्र लोगों को चौंकाना चाहता है पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है ।

कवि लक्ष्यवेध में सफल काम है । इंदिरा जी के जीवन के आत्यंकित उद्देश्य को सरल शब्दों में रखकर वह अपनी कुशलता का परिचय देता है ।

ओ रे मेरे देश वासियों ! तोल समय को चलना तुम,
कदम–कदम साम्राज्यवाद की परखा करना छलना तुम,
रखना नित संबन्ध सभी से, मित्र भाव, सद्भावों के;
राष्ट्रपिता गाँधी अरु नेहरू–नीति कभी न बदलना तुम ? (पृ० ६५६)

उपदेश तत्व यहाँ गड़ता नहीं है अपितु दूध में चीनी की तरह जल में नमक की तरह घुला मिला है और कवि की कुशाग्र बुद्धि का परिचायक है । कुल मिलाकर इंदिरा गाँधी के इस महानुष्ठान में, महाचरित्र एवं सामाजिक संस्कारों की अभि-व्यंजना के कारण कवि की प्रशंसा करनी पड़ेगी और कवि इस कार्य के द्वारा प्रचुर यश का भागी बनेगा, ऐसा सहज विश्वास है ।

ह० डा० स्वर्ण किरण

राष्ट्रीय एकता की गंगा–प्रगति की यमुना
(काव्यात्मा प्रियदर्शिनी)

डा० निजामुद्दीन
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
इस्लामिया कालेज श्रीनगर
कश्मीर

राजनीति के अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजों को पार करने वाला बहु-चर्चित और बहु-आयामी व्यक्तित्व था इन्दिरा गाँधी का। उनके व्यक्तित्व में एक गरिमा थी, चुम्बकीय आकर्षण था, एक उत्प्रेरक शक्ति थी। वह मन-मनीषा को छूने वाली थी। वह गंगा की उच्छल धारा भी थी और शान्त प्रवाहिनी कालिन्दी भी। संवेदन शीलता का, मानवीय ऊष्मा का, राष्ट्रीय भावों का सारस्वत कंचन कलश थी। ऐसे गरिमान्वित व्यक्तित्व को सहज ही काव्य का विषय बनाया जा सकता है। जो बात गुप्त जी ने राम के व्यक्तित्व के विषय में कही थी वही इन्दिरा जी के विषय में भी सार्थक लगती है -- 'इन्दिरा तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।' ताराचन्द पाल 'बेकल' भी धन्य हो गये ऐसे सृजनात्मक ऊर्जा के स्रोत को पाकर। उनका 'काव्यात्मा प्रियदर्शनी, नामकरण सार्थक है, न्यायोचित है। यह वृहद प्रबन्धात्मक कृति कवि की रचनात्मक प्रतिमा का गम्भीर सृजन है और हिन्दी में प्रथम प्रबन्ध काव्य है जो इन्दिरा गाँधी के जीवन पर आधारित है। ९६० पृष्ठों की वृहदाकार रचना जिस एकाग्रता, धैर्य, काव्य-कौशल, मर्मज्ञता, भाव संवेदन और आत्मीयता के साथ विन्यस्त प्रामाणिक दस्तावेजों तथा परिघटनाओं का चित्रांकन करती है वह श्लाघ्य है, अनुपम है।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' का प्रारम्भ नारी गुण-ज्ञान से (मंगल चरण के रूप में) किया गया है। नारी की महिमा-गरिमा का वर्णन ऋषि-मुनियों कवि कलाकारों ने अनादि काल से किया है। वैदिक युग में वह गुण-सन्निपात थी, पूज्य एवं आदरणीय थी। वह नर की अर्धांगिणी और गृह-लक्ष्मी समझी जाती रही— यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता:' इस्लाम धर्म में उसका बड़ा दर्जा है, एक हदीस में कहा गया है कि माँ के चरणों में स्वर्ग है—

'अलजन्नातु तहता अकदामल उम्माहात'।

कवि ने इन्दिरा को नारी के रूप 'सर्वोच्च गरिमा' मानकर उसके अनुपम जीवन का काव्य—इतिहास रचा है। नारी को उन्होंने सनातन शक्ति,

ममता—स्नेह— समर्पण की ज्योति, त्यागमय अनुराग, करुणा और क्षमा की मूर्ति परहितार्थ गरलपान करने वाली चित्रित किया है परन्तु क्रूर काल और निष्ठुर युग ने उसे अभिशाप भी बहुत दिये । पुरुष ने उसको भोग्या समझ कर सतत शोषण किया, नर–बल की कामुकता ने उसे नोचा है । लेकिन इतिहास साक्षी है, नारी की उपेक्षा संसार को संकटों में डालती है । इन्दिरा का चरित्र नारी का यश-गान है, नारी–गौरव की सिद्धि है । नारी–वंदन के बाद उड़ीसा के आदिवासी दौरे (३० अक्टूबर) का प्रसंग है जिसमें एक पत्नी प्रातः पति को जगा रही है कि उठ मुँह हाथ धो, मैं पानी भर लाई, आज कलिंग की धरती धन्य हो गई इन्दिरा के दर्शन कर । बालक भी नये वस्त्र पहन कर उनके दर्शन करने की ललक संजोये हैं । आठों पहर उसे देशोत्थान की, देश की एकता की, गरीबी मिटाने की चिंता थी । 'क्षण ये है विस्मयकारी' 'महा कार्य बलिदान माँगता' आदि कविताएं इन्दिरा गाँधी के महान बलिदान की पृष्ठ भूमि है । 'नियति' और 'काल चक्र' के संवादों में नाटकीयता के साथ 'भवित व्याणि दाराणि भवन्ति सर्वत्र' की सार्थकता भी सन्निहित है । इंदिरा को उसी के अंग रक्षकों ने भक्षक बन कर खालिया (पृ० ८८) यह कायरता की पराकाष्ठा है (पृ० ९०) यहाँ विश्वास खंडित–लज्जित है, इसके पश्चात कवि ने सफदर जंग के, आयुर्विज्ञान संस्थान के, तीन मूर्ति भवन में गलदश्रु भावुक विदाई–श्रद्धांजलि के करुणासिक्त दृश्यों की झाकियाँ है जिन्हें पढ़ कर आज भी पाठक सुबकियाँ लेने लगता है । युवा सिर पीट कर बिलख–बिलख रोते थे, दिशायें करुणार्द्र थीं, उनके रुदन से धरती आकाश दहल जाते थे, सफदरजंग अंधकार में डूब गया था, नर नारी लुटे–पिटे से दृष्टिगत होते थे । लगता था सकल भारत अनाथ हो गया है । राजीव की धीरता की, संयम की कोई थाह न थी । जहाँ महा बलिदानों में इन्दिरा का बलिदान सर्वोपरि है, वह एक प्रश्न कवि को विह्वल करता है कि अहिंसा को अंगीकार करने से कैसे–कैसे अत्याचार सहन करने पड़े । अहिंसा कहाँ तक वरण्य है । इसमें संदेह नहीं कि उसके महाबलिदान से नई प्रेरणा,

नया विश्वास

नया बल लेकर भारत उभरेगा ।

यह प्रबन्ध रचना 'नेहरू परिवार का उद्भव' से लेकर इन्दिरा के अस्थि–विसर्जन (११ नवम्बर १९८४) तक की भारत में घटी घटनाओं का ऐतिहासिक दस्तावेज है । १८५७ की क्रान्ति, मोतीलाल का जन्म, कांग्रेस की स्थापना, नेहरू का जन्म, शिक्षा, विवाह, इन्दिरा प्रियदर्शिनी का जन्म उनका विवाह, राजीव और संजय का जन्म और अन्य राजनीतिक घटनायें जिनका सम्बन्ध देश और इन्दिरा से था सभी का विस्तार से रेखांकन किया गया है । बंगाल विभाजन, जलियाँ वाला बाग हत्याकांड, भारत की स्वतन्त्रता, भारत–विभाजन, चीन और पाकिस्तान के साथ

युद्ध, इन्दिरा का प्रधानमंत्रीत्व–काल, एशियाड (१९८२) सातवाँ गुट निरपेक्ष आन्दोलन (1983), स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्यवाही (जून १९८४) और फिर अन्त में उनका अन्तिम प्रयाण दृश्य (पृ० ६१८) तक नाना प्रकार की घटनाओं को अनुस्यूत कर कवि ने इस प्रबन्ध काव्य के कथ्य को व्यापकत्व प्रदान किया है। यह सभी प्रसंग प्रमाणिक रूप में सजीव हैं। उनका ऐतिहासिक महत्व है। कविवर ने उन प्रसंगों को अधिक भावुक बनाया है। जिनका इन्दिरा गाँधी के बलिदान से सम्बन्ध है। यह भावुक स्थल इस रचना को औदात्य प्रदान करते हैं। इन्दिरा जी का जीवन चरित्र इसका प्रतिपाद्य है और इसके द्वारा कवि ने देशानुराग तथा राष्ट्रीय एकता, अखण्डता का मार्ग दर्शाया है, यही इन्दिरा जी का संदेश है—

मैं आहुति दे चली देश हित अपने प्यारे जीवन की,
चाह पूर्ण हो गई राष्ट्र के प्रति है आज समर्पण की,
जिसे सवाँरा रक्त–कणों से मैंने अन्तिम क्षण तक है,
देखो डाली सूख न पाये कोई मेरे उपवन की। (पृ० १४७)

आतंकवाद ने कितनी मांग सूनी की, कितने घर उजाड़े, रावी–सतलुज तक रो-रोकर बेहाल हैं। पृथकतावाद या अलगाववाद की भाषा ने जन मानस को व सारे देश को हिला कर रख दिया है। स्नेहिल बन्धुत्व-भाव को विषाक्त बना दिया। संशय, संदेह तुच्छ, घृणित स्वार्थ ने देश की एकता में घुन लगा दिया। यह प्रश्न है हम सबके सामने जिन्हें कवि ने पूर्ण उत्तेजना के साथ उठाया है।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' प्रांजल, प्रवाहमयी, प्रभावशाली भाषा में रची प्रबन्धात्मक कृति है जो महाकाव्य की परम्परागत शैली या सिद्धान्तों पर आधारित नहीं, न इसमें 'सर्ग' जैसी कोई चीज है परन्तु यह एक सशक्त रचना है और राष्ट्रीय चरित्रात्मक काव्यों में इसका अपना विशिष्ट स्थान होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। 'जननायक' 'मानवेन्द्र' (रघुवीरशरण 'मित्र') 'श्री गांधी चरित्र–मानस' (विद्याधर महाजन) सरदार भगत सिंह (श्री कृष्ण 'सरल') आदि प्रबन्ध काव्यों की भाँति यह भी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत एक महान रचना है। राष्ट्रीय चेतना की भारत की अखण्डता की ज्योति विकीर्ण करने वाली है इंदिरा गाँधी उसी ज्योति की अकंप लौ है।

कवि ने छंदो में वैविध्य अपना कर एक रसता से दामन छुड़ाया है, सजीवता और मोहकता के रंगों से अनुरंजित पद, दोहे, गीत, मुक्तक, सवैये, कवित्त प्रयुक्त

हैं । संगीतात्मकता इसकी उल्लेखनीय विशेषता है । भाषा शब्द, भावों का अनुमनन करते हैं । कहीं–कहीं कथा–प्रसंग अथवा संवाद–शैली के द्वारा नाटकीयता के ललित दृश्य हैं जो पाठकों को भले लगते हैं । 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' का शिल्प विधान, उसकी संरचना सराहनीय है । वस्तुतः यह काव्य के धरातल पर चित्रित किया गया भारत का राजनीतिक इतिहास है, यही इसका अनुपम शिल्प है, अद्वितीय कलापक्ष है, अप्रतिम लालित्य है । ग्रन्थ की रचना प्रौढ़ और काव्यगुण युक्त है । विशुद्ध, सरस और शक्ति शालिनी खड़ी बोली में रचा यह प्रबन्ध काव्य हिन्दी काव्य में एक विशेष योगदान है ।

—डा० निजामउद्दीन
अध्यक्ष हिन्दी विभाग

इस्लामिया कालेज, श्रीनगर–२
(कश्मीर)
स्वतन्त्रता दिवस

डा० सुरेश चन्द त्यागी
अध्यक्ष—हिन्दी विभाग,
महाराज सिंह कॉलेज,
सहारनपुर

संपादक—'संपर्क'
पत्रिका

श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' का बृहत् काव्य 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' पढ़ कर मैं चकित रह गया। क्षणिकाओं के इस युग में इतने व्यापक फलक पर श्रीमती इंदिरा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व का चित्रांकन किसी भी पाठक को आश्चर्य चकित कर सकता है ! उस महिमामयी के प्रति इस भावांजलि को मैं केवल 'बेकल' जी की ही नहीं मानता, इसमें मैं समग्र जनता की श्रद्धा का भव्य रूप देख रहा हूं ! सच मुच ही इस रचना के द्वारा साहित्य मनीषी श्री 'बेकल' जी ने एक महत्वपूर्ण और जरूरी काम किया है !

कवि की संपूर्ण कृतित्व की एक विशेषता ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है। और वह है उसमें व्यक्त राष्ट्रीय चेतना। राष्ट्र का स्मरण करने और कराने वाले कवि वही हो सकते हैं जो अपने दायित्व के प्रति सचेत हैं और जिन्हें कवि-कर्म की सार्थकता का पूरा बोध है।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' मे भी कवि की यह राष्ट्रीयता बार–बार मन को स्पर्श और प्रेरित करती है। छन्द के साथ–साथ मुक्तक और प्रबन्ध शैली पर कवि की मजबूत पकड़ है। इसी कारण पाठक को अपने साथ बहा ले जाने की क्षमता कवि में है।

श्री 'बेकल' जी हमारे जनपद सहारनपुर के ऐसे प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। जिनका यश दूर तक फैला है। मेरी शुभ कामना है कि यह चिर स्थाई हो और श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' हिन्दी की सेवा करने वाले कवियों में अमिट हस्ताक्षर बन कर चिरंजीवी हों।

राम जीवन नगर,
चिलकाना रोड,
सहारनपुर

डा० सुरेशचन्द त्यागी

डॉ० विष्णु शरण 'इंदु'
पूर्व हिन्दी प्रवक्ता
मेरठ कालिज, मेरठ ।

ऐतिहासिक महाकाव्य

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी'

ऐतिहासिक महाकाव्य किसी राष्ट्र और साहित्य के गौरव ग्रंथ कहलाते हैं, क्योंकि उनमें इतिहास और देश की आत्मा निहित रहती है, जो समाज एवं जीवन को चिरंतन अनुप्रणित करती है। 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' द्वारा रचित एक ऐसा श्रेष्ठ महाकाव्य है जिसमें सम्पूर्ण विश्व को चमत्कृत कर देने वाली वर्तमान भारत की निर्माता श्रीमती इन्दिरा गाँधी के जीवन का सर्वाङ्गीण चित्रण है। यदि विचार पूर्वक देखा जाए तो यह विशालकाय महाकाव्य भारत का ऐतिहासिक दस्तावेज है; जिसमें स्वाधीनता संग्राम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वतन्त्र भारत के विकास के साथ नेहरू-परिवार का भारत की स्वाधीनता और उत्थान के लिये दिये गये योगदान का भी सजीव और प्रभावपूर्ण चित्रण है।

महाकाव्य का सम्पूर्ण कथानक इसके प्रधान पात्र प्रियदर्शिनी इन्दिरा के जीवन से सम्बन्धित है। इन्दिरा जी के जन्म से उनके बलिदान तक सड़सठ वर्षों की कहानी केवल उनकी ही नहीं है अपितु वह समस्त भारत और कांग्रेस के इतिहास की एक ऐसी चित्रावली है जो हृदय में प्रत्यक्ष रूप से चित्रित हो जाती है। जिन्होंने भारत के इतिहास को अपने जीवन में यथार्थ रूप में घटित होते देखा है, उन्हें काव्यात्मा प्रियदर्शिनी का अध्ययन करते समय इतिहास रस की अनुभूति होने के साथ-साथ उनके भाव-सौंदर्य एवं प्रेरक सम्प्रेषणीयता के महत्व की अनुभूति भी होती है।

इस महाकाव्य का निर्माण सर्गबद्ध शैली पर न होकर शीर्षकबद्ध शैली में किया गया है। प्रारंभ में इन्दिरा को सर्वोच्च गरिमा बता कर उसे शक्ति का सनातन रूप दिया गया है। नारी होकर भी इन्दिरा ने नये युग का सृजन करके भारत की नारी के आदर्श को सिद्ध कर दिया। काव्य का प्रारम्भ इन्दिरा जी के उड़ीसा के दौरे से किया गया है। देश की विषमता और अलगाववादी उग्रपंथियों ने देश को ही

दुर्बल नहीं बनाया अपितु प्रधानमंत्री की जघन्य हत्या भी कर दी। सारा देश स्तब्ध घोर व्यथा से भर गया। श्रीमती गाँधी के अन्तिम दर्शनों को देश की जनता दिल्ली में उमड़ पड़ती है। इन दृश्यों का अत्यन्त भावपूर्ण एवं कवित्वमय वर्णन किया गया है। वस्तु विकास की शैली में एक वृद्ध अपने नाती को पहले दिल्ली का इतिहास बता कर प्रधानमत्री इन्दिरा गाँधी के जन्म, शिक्षा, बाल्यकाल, किशोर एवं युवावस्था, विवाह, राजनीति से सम्बन्ध तथा प्रधानमंत्रीत्व काल में किये हुये भारतोत्थान ओर विकास तथा विश्व की राजनीति से बेजोड़ बनाने वाली सभी घटनाओं को शृंखला-बद्ध करके अत्यन्त रमणीय और काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। इन्दिरा जी की दु:खद मृत्यु पर देश की जनता की मानसिक पीड़ा और विश्व भर के देशों से आये नेताओं के मार्मिक विचारों को पूर्ण श्रृद्धांजलियाँ अर्पित करके भारत की भारती को सदैव के लिये विदा कर देता है। इस प्रकार वृद्ध के द्वारा अपने नाती को इन्दिरा जी की कहानी कहने के साथ ही समस्त भारत के इतिहास को प्रस्तुत करके इसकी महानता और मंगलमय भविष्य और भारत के समस्त नागरिकों के संगठित रहने की शुभ कामना के साथ ग्रन्थ की समाप्ति होती है।

कवि ने भारत के इतिहास को इन्दिरा के इतिहास में संगुफित करके अत्यन्त कुशलता के साथ समस्त घटनाओं को सरसता और रोचकता से व्यक्त किया है। इसमें इतिहास की नीरसता नहीं आने पाई है, वर्णन प्रधान और घटना प्रधान काव्य होकर भी कल्पना की चारुता से इसे सरस और मार्मिक बना दिया है। इसका भाव पक्ष अत्यन्त सबल एवं उच्च है। भावानुभूति और रसानुभूति की सजीवता इसमें विद्यमान है। वस्तु संगठन, दृश्य वर्णन, चरित्र विधान में कवि की कल्पना-शक्ति का महत्व स्पष्ट रूप में लक्षित होता है। देश को स्वतन्त्र करने के लिये भारत के अनेक नेताओं, वीरों और क्रान्तिकारियों का सजीव चित्र इसमें दिखाया गया है। झाँसी की रानी ने जिस स्वतन्त्रता संग्राम को प्रारम्भ किया था उसमें जिन्होंने अपना बलिदान देकर उसे विकसित किया और विजयी होकर भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त की फिर स्वतन्त्र भारत के उत्थान में योगदान देने वाले अनेक नेताओं के गौरव का संकेत करते हुए प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी की महानता का चित्रण किया गया है। स्पष्ट है भारत का समस्त इतिहास कांग्रेस का इतिहास जैसे पृष्ठभूमि के रूप में भारत माता का रूप धारण करने वाली इन्दिरा गाँधी का ही इतिहास है। तिलक, गोखले, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आजाद, भगतसिंह, लाल बहादुर शास्त्री आदि अनेक चरित्रों का महाकाव्य में समावेश किया गया है किन्तु इन सभी नेताओं के कार्य की पारिणति इन्दिरा गाँधी के निर्माण में अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से अन्त-

निहित है। महाकाव्य की नायिका, सर्व प्रधान और तेजस्विनी है। महान नेताओं में वह महानतम नेता विश्व नेता के रूप में प्रतिष्ठित है। इन्दिरा गाँधी का चरित्र शक्ति प्रतीक है, भारत का बिम्ब है, देश का गौरव है, राष्ट्र की महिमा है। त्रिमूर्ति भवन की वह विशाल आत्मा रही है। आनन्द भवन से त्रिमूर्ति भवन और फिर एक सफदरजंग के राजनीतिक आदर्शों की वह प्रतीक है।

कलापक्ष की दृष्टि से भी इस महाकाव्य की नवीनता है। भाषा के साहित्यिक रूप के साथ जन-भाषा और लोकभाषा को भी माध्यम रूप में ग्रहण किया गया है। समस्त जनता की प्रतिनिधि आदर्श नेता, भारत की आत्मा–जो प्रस्तुत काव्य आत्मा प्रियदर्शिनी के रूप में प्रस्तुत की गई है वह सामान्य जनता की जनवाणी में मुखरित होकर ही व्यापकता को लिये हुये है। भाषा में जो ओज शक्ति, भवानुकूलता, सरलता, सरसता और प्रभावपूर्णता वर्तमान है वह सराहनीय है। कवि ने भाव सौन्दर्य और विचारों की अभिव्यक्ति को सफल बनाने वाले उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा जैसे अलंकारों को ग्रहण किया है। विभिन्न प्रकार के छन्दों और गीतों में महा काव्य की अनुरूपता विद्यमान है। छन्दों की गतिशीलता और प्रवाह कवि के रचना सामर्थ्य को लक्षित करते हैं।

भले ही 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' प्राचीन परम्परा के अनुसार महाकाव्य के सम्पूर्ण गुणों से युक्त न हो किन्तु फिर भी उसमें महाकाव्य की आत्मा, उदात्त एवं गौरवपूर्ण कथानक विश्व की सर्वोच्च नेता, महत्वपूर्ण भारत-रत्नों एवं आदर्शों का जो रूप प्रस्तुत किया है वह निस्संदेह इसे महान काव्यों की श्रेणी प्रदान करता है। देश-प्रेम, राष्ट्रीय जागरण, उद्‌बोधन और नये भारत को गौरवपूर्ण बनाने में जो महान् संदेश इस महाकाव्य से व्यंजित है वह महान है और राष्ट्र को संगठन शक्ति और उत्थान की प्रेरणा देने वाला है। इस दृष्टि से इस महाकाव्य के प्रणेता श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' बधाई और प्रोत्साहन के पात्र हैं जो अन्य कवियों को राष्ट्रीय आदर्श और जागरण के संदेशपूर्ण काव्यों के निर्माण के प्रेरक कहे जा सकते हैं।

स्थान : २७७, सराय लालदास, मेरठ शहर। जन्माष्टमी

विष्णुशरण 'इंदु'

राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बन्धुत्व भावना से युक्त महाकाव्य

डॉ० सियाराम शरण 'शर्मा'
प्रवक्ता हिन्दी विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय
झाँसी ।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' 'साहित्य मनीषी' श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' 'साहित्य भास्कर' का एक ऐसा ऐतिहासिक महाकाव्य है जिसकी अपनी गरिमा और महत्ता इस युग की अभूतपूर्व उपलब्धि है ।

संसार के रंगमच पर कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं, जिनका जीवन सम्प्रदाय, पंथ, समाज अथवा देश की सीमा-रेखाओं से परे होना है । वे किसी एक सीमा में आबद्ध होकर नहीं जीते । उनका जीवन सार्वभौमिक होता है । भारत की लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गाँधी ऐसी ही महान आत्माओं में अग्रगण्य थीं, उन्होंने इन्हीं सिद्धान्तों के लिये अपने आपको बलिदान कर दिया । दुर्गा एवं लक्ष्मी की वे साक्षात् अवतार थीं । महात्मा गाँधी के समान वे आजीवन अपने विचारों में अटल रहीं, और उन्ही के समान क्रूर हाथों से सीने पर गोली झेल कर इतिहास के पृष्ठों पर सदा-सदा के लिये अ‌मर हो गयीं । श्री ताराचन्द पाल 'बेकल' ने क्रान्तिमन्यु वीर शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद' महाकाव्य के तत्काल बाद 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' वृहद महाकाव्य का प्रकाशन करके एक अनूपा बेजोड़ कार्य किया है । कवि की यह महान् कृति उसकी कुशल लेखनी की परिचायक है ।

कवि ने इस महाकाव्य में इन्दिरा जी के जीवन एवं कृतित्व का विस्तृत चित्रण किया है, इसके साथ-साथ राष्ट्रीय महत्व की ऐतिहासिक घटनाओं पर भी प्रकाश डाला है । कवि ने प्रारम्भ में इन्दिरा जी के हृदय विदारक बलिदान और उसकी व्यापक प्रतिक्रिया का स्वाभाविक एवं यथार्थ परक चित्रण इन शब्दों में किया है—

रो उठी थी देखकर यह, जिंदगी सारे वतन की,
आँसुओं से तरबतर थी हर कली प्यारे वतन की,
फूल लोटे धूल में थे, मिट गई रौनक अचानक,
लड़खड़ा कर रह गई थी, जिंदगी सारे चमन की !

'बेकल' जी के इस वृहद-काव्य की केन्द्र बिन्दु स्व० श्रीमती इन्दिरा गाँधी हैं, किन्तु इनके माध्यम से कवि ने राष्ट्रीय कांग्रेस एवं स्वराज्य आंदोलन से सम्बन्धित घटनाओं का चित्रण करके व्यापक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। महात्मा गाँधी, मोतीलाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक गोखले, चन्द्र शेखर आजाद, माँ कस्तूरबा, कमला नेहरू, सरदार भगतसिंह ऐसे ही पावन चरित्र हैं जिनके जीवन और बलिदान भावना से इन्दिरा जी सदैव प्रभाविन रहीं हैं और इन्दिरा जी का स्वयं का बलिदान कवि के शब्दों में—

बलिदानों की प्रथम पंक्ति में—
होगा नित अभिनंदन !
अरु महकेगा अखिल विश्व मे—
सदा सुयश का चंदन !!

इन्दिरा जी का बलिदान राष्ट्रीय एकता के प्रति सच्चा बलिदान है, भावी पीढ़ी उनके इस अमर बलिदान से निश्चय ही प्रेरणा ग्रहण करेगी, कवि 'बेकल' के शब्दों में—

उस इन्दिरा ने संतति का भी—
मार्ग प्रशस्त किया है !
राष्ट्र एकता हेतु जहर का—
प्याला स्वयं पिया है !!

× × × × ×

स्वाभिमान से जो जीता है—
उसका यश बढ़ता है !
लिखता है इतिहास उसे ही—
पाठक भी पढ़ता है !!

कवि 'बेकल' जी को हार्दिक बधाई ! उन्होंने काव्य के माध्यम से इतिहास को नया जीवन दिया है, उसमें नये रक्त का संचार किया है और वे उसे अतीत से वर्तमान तक ले आये हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन्त इतिहास की आवश्यकता है, ताकि आजकी युवा-पीढ़ी को मार्ग-दर्शन प्राप्त कराके राष्ट्रीय एकता एवं विश्व-बन्धुत्व की भावना के लिये दृढ़ता के साथ कृत संकल्प हो सकें।

६७ टक साल
झाँसी

डॉ० सियाराम शरण शर्मा

विश्व तुम्हारा यश गाये

'इन्दु' तुम्हारा कार्य श्रेष्ठतम काव्य है !
विश्व तुम्हारा यश गाए संभाव्य है !!
तुम महान, महिमामय–जीवन बलिदानी !
याद रखेगा बच्चा-बच्चा अमर कहानी !!

उपर्युक्त पंक्तियाँ प्रातः स्मरणीया, महान महिमामयी उस अमर हुतात्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि स्वरूप भाव सुमन लेखनी की नोक से आकर कागज पर छितर गईं, जिसके महान बलिदान ने संसार को लड़खड़ा कर रख दिया। मुझ जैसे अनेक साधकों ने अपनी लेखनी संभाली और देश तथा समाज में शिवत्व भाव से विश्व शान्ति के लिये बेझिझक मर मिटने वाली श्रीमती इन्दिरा गाँधी के प्रति अपनी मार्मिक श्रद्धांजलि, शब्द, भावों से गुंफित करके प्रकट करने में लग गये। यह आवश्यक भी था। कोई हृदय ऐसा नहीं था जो श्रीमती इन्दिरा गाँधी की जघन्य हत्या के मस्तिष्क को झनझना देने वाले शोक समाचार को सुनकर द्रवित न हो उठा हो।

पाठकों के हाथों में प्रस्तुत---'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' काव्य ग्रंथ रचना की भी अपनी एक कहानी है जो कि वास्तविक और महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिये कि इस ग्रंथ को रचने में मेरे दो संकल्प पूर्ण हुये है। इन संकल्पों की चर्चा मैं आगे चलकर करूँगा।

इस देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनेकानेक बलिदान ऐतिहासिक गरिमा की धरोहर बन चुके है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जो सबसे बड़ा दायित्व इस देश के कर्णधारों और जनता के कंधों पर आया वह है इसे सुरक्षित और अक्षुण्य रखने का। असंख्य वीरों और देशभक्तों के महान् उत्सर्ग के रक्त से सिंची आजादी के महत्व को समझने का भी समय क्रमबद्ध तरीके से भारतीय जनता के समक्ष आता रहा। महात्याग की नींव पर प्रतिष्ठित हुई इस स्वतंत्रता का मूल्य सही मायनों में वही व्यक्ति आँक सकता है जो उन अनेकानेक सरफरोशों और बलिदानियों की पवित्र भावना के साथ त्याग की धाराओं में बहा हो। अपनी इस स्वतंत्रता की रक्षा और राष्ट्र की प्रगति का दायित्व पूर्ण प्रश्न राष्ट्रीय एकता के ज्वलंत अध्याय से जुड़ता हुआ पहले भी सर्वोपरि रहा है और आज भी है ! कल भी रहेगा ! कुछेक सुविधा

भोगी व्यक्ति इस तथ्य से मुँह मोड़ने हुये अपनी जिम्मेदारी को नकारने का नाटक और अनर्गल प्रयास भले ही करें। अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु कतिपय काल्पनिक उड़ानें भरें पर यह देश अखण्ड रहेगा, एक रहेगा। यह निश्चित है। इसकी प्रगति भी अब किसी के रोके नहीं रुकेगी। 'प्रण कर निकली'—इन्दिरा जी इस देश की धरती को हम सबको राष्ट्रीय एकता के लिये मर मिटना सिखला गई हैं। जीना है तो इस देश के लिये, मरना है तो इस देश के लिये।

यद्यपि राष्ट्रीय एकता की पवित्र भावना का अखंड भवन महात्याग की सुदृढ़ नींव पर निर्मित है—तो भी सबसे अधिक बेचैनी में डालने वाली एक विशेष बात यह है—जिसे निःसंकोच कहा जा सकता है! वह है—एक सर्वविदित सच्चाई—जो हर स्थान, नगर, गाँव, सड़क, बाजार, दफ्तर, रेल मोटर, घर-द्वार, में गली कूँचे में अक्सर सुनने को मिलती है—"आज जहाँ देखो राष्ट्रीयता का अभाव है। निजी स्वार्थ के सामने आदमी देश को, राष्ट्र को, गौण समझने लगा है। व्यक्तिवाद और स्वार्थवाद ने जातिवाद को प्रश्रय देते हुये ऐसे तत्वों को बढ़ावा देना आरम्भ कर दिया है जो एक प्रगतिशील विशाल राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो रहे हैं। मुझे यह कहने में कतई संकोच नहीं है कि यह पीड़ा हर सचेष्ट कर्णधार, राजनीतिज्ञ, समाज-सेवी, कलमकार और आम नागरिक की है। इस दुर्दमनीय रोग की स्थिति यह है कि—"मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की"—वर्ना तो जिस महिमामयी इन्दिरा जी ने इस देश को महान शक्तिशाली बनाने में, प्रगति के चरम शिखर पर पहुँचाने में, इसकी सदियों से लीलती हुई निर्धनता मिटाने में, इसको एक रखने में दिन और रात एक कर दिये। उसका ही कत्ल ! वह भी उसके अपने प्रधानमंत्रीत्व काल में। उसके अपने निवास के आँगन में, पुत्रवत स्नेह से पाले सुरक्षा गार्डों द्वारा एक सुनियोजित ढंग से दिन दहाड़े, कैसी अवर्णनीय और अशोभनीय स्थिति ? कृतघ्नता की और हमारे लोकतंत्र के सुरक्षा प्रबन्ध की विवशता और लाचारी की वर्तमान व्यवस्था पर पड़ी इस जघन्य मार का उत्तर शायद किसी के पास नहीं। केवल लाचार और संवेदनशील हृदय इन्दिरा जी की हत्या से शोक विह्वल है।

यद्यपि हमारे इस विशाल देश का चहुँमुखी विकास हो रहा है। प्रगति का पहिया बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश के बड़े नगरों में व्यापार प्रतिष्ठानों के साथ-साथ बहुमंजिली इमारतें, तीन व पाँच सितारा होटल, कल कारखाने, पुल, बाँध, बिजली घर आदि बनाये जा रहे हैं। आवासीय समस्या हल हो रही है। कृषि की उन्नति अगले कदम धर रही है। परन्तु इन सबके साथ-साथ भाषावाद, प्रान्तवाद और स्वार्थवादपूर्ण जातिवाद इन सबसे आगे वितंडावाद इस देश की जनता और राष्ट्र के लिये आये दिन खतरे पैदा करता चला जा रहा है। देशघाती विचारों के नारे निरन्तर बुलंद होते रहते हैं। भाँति-भाँति के आन्दोलन भड़का कर, युवा शक्ति का नाजायज लाभ उठाकर इस देश की राष्ट्रीय सम्पत्ति का स्वाहा करने में हिचक नहीं

की जाती है। युग पटल पर अपना सिक्का जमाने का यह अच्छा माध्यम चुन रखा है, मौकापरस्तों ने। इन सबसे बढ़ कर घोर कष्टकारी स्थिति है आये दिन जासूसी कांडों का प्रकाश में आना। यह विनाशक प्रवृति हमारे इस सजाए संवारे बलिदान-रक्त से सींचे देश को कहाँ ले जायेगी भगवान ही जानता है। ऐसी दुर्दमनीय स्थिति और यहाँ-वहाँ हत्याओं के दौर को देख कर कोई भी चिन्तनशील लेखक, संवेदनशील कवि चुप बैठा रह कर तमाशबीन नही बन सकता। उसे अपने देश की आजादी की रक्षा करनी है वह करेगा, भरसक प्रयत्नों के साथ लेखनी के जोर से, अभिव्यक्ति के द्वारा।

'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' की रचना की तह में एक यह भी मनोभाव रहा है कि केवल वादों के चक्कर में उलझने के लिये ही आजादी आई थी? क्या आजादी का यह अर्थ है देश की अखण्डता और एकता के लिये प्रयासरत माध्यमों को शक्तिहीन किया जाये? विनाश की लहर बढ़ाई जाए? क्या यह विडम्बना नहीं है।

भारत को भारत का ही आदमी आँखें दिखाये धोखा दे, उसके टुकड़े करना चाहे, उसकी गोपनीयता को अपनी क्षुद्र स्वार्थपरता के लिये दूसरे दुराग्रही देशों के चुटैले माध्यमों को चाँदी के चंद टुकड़ों के लिये बेचे। देश को विनाश की भट्टी में झोंके रखने में दो हाथ आगे रहे। राष्ट्र की प्रतिरक्षा को क्षति पहुँचाए। ऐसे व्यक्ति को निष्कृष्टतम आचरण के लिये समय या सुरक्षा तन्त्र या सरकार जो भी दण्ड दे सकेंगे, देंगे। यह तो समय ही बतलाएगा। परन्तु इस देश के चिंतनशील मानस के लिये यह स्थिति एक खतरे की घंटी की तरह है। विघटनकारी तत्वों के पनपते रहने से सदैव चिंताओं का वातावरण व्याकुल करता रहेगा। ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक जागरूक शासन तन्त्र और नागरिक को सतत् प्रयत्नशील रह कर देश की रक्षा करने के लिये कटिबद्ध रहना है। सबसे बड़ा दायित्व यही है।

महिमामयी विश्व नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी इस दुर्घर्षपूर्ण स्थिति के प्रति सजग, संतुलित और संयमित रह कर जितनी इस देश की रक्षा और अखंडता में व्यस्त रह सकती थीं रहीं। अपने भरसक प्रयत्नों द्वारा इस विशाल देश की प्रगति के रथ को अनेक आँधियों, तूफानों और अभावों के प्रभंजनों से बचा कर जितना भी आगे बढ़ा सकती थी बढ़ाया। जितना दमखम लगा सकती थीं, लगाया। वे हमलों पर हमले बर्दाश्त करती रहीं। पर अपने संकल्प पर दृढ़ रहीं। यह संकल्प उन्होंने अपने पूज्य पिता श्री जवाहर लाल, माँ कमला जी और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से विरासत में लिया था, उन्होंने देश-सेवा का जो प्रण बचपन से किया था आयु पर्यन्त उस पर अडिग रहीं।

महाकवि सत तुलसीदास ने रघुकुल रीति की मर्यादा के लिये रामचरितमानस में यह उल्लेख किया था—

रघुकुल रीति सदा चली आई!
प्राण जायें पर वचन न जाई!!

संभवतः इस चौपाई की भावाभिव्यक्ति के सार को इन्दिरा जी ने आत्म सात करके ही देश रक्षा, एकता और अखंडता के लिये निज प्राणों को तुच्छ समझा। उनका यह उत्सर्ग भाव—

गाँधी का संदेश न जाई !
प्राण जायें पर देश न जाई !!

आज सर्वविदित होकर ऐतिहासिक लेख बन गया है।

इन्दिरा जी अपने युग की सफल अभियंता सिद्ध हुई। देश और समाज के लिये हँसते-हँसते प्राणों का बलिदान चढ़ाने वाले हुतात्मा मेरे श्रद्धेय और पूज्य रहे हैं। उनके प्रति श्रद्धा-भाव धर्म का पालन करते हुये मैंने 'चमके बापू पूज्य हमारे', जय-जय हिन्दुस्तान, जय बोलो बलिदानी की और क्रान्तिमन्यु वीरशिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद काव्यग्रंथ लिखे और हिन्दी साहित्य-क्षेत्र तथा समाज में उनका यथोचित आदर हुआ। इनको महत्व मिला। क्रान्तिमन्यु (लगभग ५०० पृष्ठ) का महत्व तो उस दिन और भी बढ़ गया जिस दिन कान्स्टीट्यूशन क्लब-स्पीकर हाल नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी और लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त से सभापतित्व में, केन्द्रीय सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री कृष्णचन्द पंत के सान्निध्य में डॉ० रत्नाकर पाँडेय के संचालन और पद्मश्री चिरंजीत के संयोजकत्व में विद्वान साहित्यकारों से ठसाठस भरे हाल मे लोक सभाध्यक्ष डॉ० बलराम जाखड़ ने इसका विमोचन और प्रकाशनोद्घाटन दिनाँक ११ अप्रैल, १९८५ की साँध्य वेला में किया था।

निःसंदेह इस प्रकार के श्रद्धा काव्यों की रचना में मुझे प्रोत्साहन मिलता रहा। प्रस्तुत 'काव्यात्मा प्रियदर्शिनी' भी मेरी श्रद्धा का प्रतीक है।

जिस दिन ३१ अक्टूबर, १९८४ को श्रीमती इन्दिरा गाँधी की जघन्य हत्या हुई उस दिन मैं बुलन्दशहर स्थित अपने कार्यालय मे था। यकायक साढ़े ग्यारह बजे मेरे एक सहायक श्री योगेश कुमार ने हड़बड़ाहट में आकर ज्योंही इन्दिरा जी को गोली मारे जाने का हृदयद्रावक समाचार मुझे दिया मैं हतप्रभ सा एक बार को तो उस पर बिगड़ पड़ा—"क्या बकते हो!" वह संवेदनशील नौजवान रुआँसा होकर बोला—"यह सच है साहब, आप फोन पर दिल्ली से फिर वार्ता कर लें।" मैंने कहा-"फोन मिलाओ।" होनहार बलवान ! तुरन्त फोन मिलाया और अखबार के दफ्तर मे शोर ही शोर सुनाई पड़ा। दुखद समाचार सच निकला। मैं तुरन्त कार्यालय से छुट्टी ले चल दिया मर्माहत और पीड़ित मन लिये। मैंने देखा सहृदय अधिकारी श्री कैलाशचन्द शर्मा, सब सहायकगण सर्वश्री चरणसिंह, रेवती शरण गोयल, सत्यवीर सिंह चौहान, प्रेमपाल सिंह, के० पी० सिंह, हरदत्त शर्मा, सुखदेव प्रसाद, धनवीर

सिंह, कमल और यादव बाबू व चपरासीगण सभी के चेहरे वेदनापूर्ण थे, सभी की पलकें नम थीं। बाहर निकला तो सड़कों, चौराहों, दुकानों, खोमचे वालों, सिनेमा घरों—कालेआम के चोराहे से दूर तक दिखने वाली हर चीज घोर उदासी लिये खोई-सोई सी लग रही थी। बड़े वाहनों वाले गमगीन तो रिक्शा वाले रुआँसे होकर कह रहे थे—"गरीबों की मसीहा चली गई।" मैं एक बस में बैठा। रास्ते भर वही काट खाने वाला उदासी का वातावरण। यदि किसी यात्री की चुप्पी टूटी तो वह यही कहता—"गजब हो गया!" भारी कदमों से घर पहुँचा तो लगा उदासी और पीड़ा का साम्राज्य और अधिक गहरा हो गया है। मेरे प्रिय पुत्र चि० तरुण ने गेट पर ही कहा—"पापा इन्दिरा जी की हत्या कर दी गई।" मैं चुपके से सूनी सी पलकों को ऊपर नीचे उठाता हुआ ड्राइंग रूम में घुसा और अपने निःश्वास पर नियन्त्रण रखने का असफल प्रयास करता रहा। दूरदर्शन से समाचारों का सिलसिला शुरू हो गया।

विश्व के लिये अपार क्षति, देश के लिये अपूर्णनीय क्षति और जन-जन के लिये अवर्णनीय क्षति की मर्मान्तिक पीड़ा का उस युग का इतिहास पन्ने-पन्ने पर आँक रहा था। हत्या से लेकर तीन मूर्ति भवन तक का श्रद्धाँजलि दृश्य अक्षरशः अंकित होता जा रहा था। घरों में लोग दूरदर्शन के साथ जम से गये थे। अंत्येष्टि तक यही क्रम जारी रहा। दर्शकों के समक्ष पूर्ण स्थिति यह थी—एक के बाद एक श्रद्धानत पंक्ति में लगा अपनी बारी के इन्तजार में था। श्रद्धा की डोर से बधा चल रहा था एक अजीब उदासी और विह्वलता हृदय में लिये। इन्दिरा जी की दुखद हत्या के समाचारों ने समस्त विश्व को महात्रास से त्रस्त कर दिया था। इसकी प्रतिक्रिया दिल्ली सहित अनेक नगरों में दंगों के रूप में सामने आई। आदमी, आदमी के खून का प्यासा हो उठा। खूंखार जानवर से भी बढ़कर। देश के लिये यह स्थिति घातक थी और यही वे शक्तियाँ चाहती थीं जो इस देश को अखण्ड नहीं रहने देना चाहती हैं। सम्पत्ति का विनाश और बर्बादी के दृश्य देखे नहीं जाते थे। परन्तु तभी इस देश के युवा कर्णधार सुयोग्य, संयमशील, धैर्यवान और साहसी प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने वस्तु स्थिति की नजाकत को समझा। अपनी माँ के शव के पास से हट कर गहराती रात मे दिल्ली का दौरा करके सम्बन्धित अधिकारियों को दंगे की आग बुझाने के कड़े आदेश दिये, और जनता का आह्वान शान्ति स्थापित करने के लिये किया। साथ ही आश्वासन दिया कि यह विनाश की लहर चलने न देंगे। जिस राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिये इन्दिरा जी बलिदान हुई हैं उसकी सुरक्षा वे प्राण-प्रण से करेंगे। उनके कड़े और सामयिक निर्देशों का पालन तुरन्त हुआ और राष्ट्र आश्वस्त होने लगा कि देश मजबूत हाथों में सुरक्षित है। भारत ही नहीं विश्व के जन-मानस पर इसका प्रभाव पड़ा। विरोधी दलों से सलाह की गई उन्हें विश्वास में लिया गया। स्वयं वेदनाग्रस्त होते हुये भी जन-सुख को प्राथमिकता दी गई।

जब इन्दिरा जी की शव-यात्रा आरम्भ हुई तो ऐसा लगा कि कण-कण वेदनाग्रस्त हो उठा है। विषादग्रस्त जन-समूह को करुणार्द्र हवा छूती हुई चल रही थी। तीनों सेनाओं के प्रतिनिधि सुरक्षा के साथ-साथ शव-यात्रा और अनुशासन को भार सम्माले हुये थे। नत मस्तक शोकाकुल। छोटे से बड़ा सभी श्रद्धा सुमन अर्पित करता सजल नयनों का दृश्य देख रहा था। भारतीय आत्मा का परमात्मा से मिलन क्षितिज पर अंकित था। चिता के सांस्कारिक, मार्मिक और हृदयद्रावक दृश्य ने समस्त उपस्थित भारतीय जन-समूह व विदेशी राजनायिकों, राष्ट्राध्यक्षों, शासनाध्यक्षों को शोक विह्वल कर दिया था। कितनी बड़ी शक्ति थी इन्दिरा जी की इसका एहसास कण-कण में व्याप्त था। उनके प्रिय पुत्र और देश के युवा प्रधानमंत्री का उस समय का धैर्य, संयम और कुशाग्र चेतन देख कर सभी प्रभावित थे–कमाल का साहस-पूर्ण अनुशासन और संस्कारों के प्रति श्रद्धा, मन में अटूट विश्वास।

धरती आँक रही थी लेख, देख कर दशा गगन की !
कलमकार ने उठा लेखनी, रचदी भाषा मन की !

माह नवम्बर, सन् १९८४ की हिन्दी की साहित्यिक मासिक पत्रिका—'सर्वप्रिय' जब मेरे पास आई तो इसके यशस्वी संपादक पदमश्री चिरंजीत का श्रीमती इन्दिरा जी की स्मृति में शोक गीत—'मेरी माँ ने पहन गेरुआ–माँ पर शीश चढ़ाया है।' मुझे अपने समय की सर्वोत्कृष्ट श्रद्धांजलि स्वरूप लगा। भावाभिव्यक्ति की इस बेजोड़ रचना में श्री चिरंजीत जी ने अपना कलेजा निकाल कर रख दिया था। मैंने तुरन्त अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये उन्हें ऐसी श्रेष्ठतम रचना के लिये बधाई देते हुये लिखा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी के कत्ल से मेरा कवि भी टूट सा गया है। चूँकि मैंने सदैव उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को देश के उत्कर्ष के सन्दर्भ में देखा है। आदरणीय चिरंजीत जी को मैं अपना अग्रज और पथ-प्रदर्शक मानता हूँ। उन्होंने मुझे तुरन्त लिखा कि अब लेखनी द्रुत गति से चलनी चाहिये। मेरे लिये एक बहुत बड़े दायित्व की ओर उनका इंगित था। मैंने पुस्तकें पढ़नी आरम्भ की। अनेकानेक वर्षों से सहेजी अखबारों की कतरनें उलटने-पुलटने लगा और इन्दिरा जी के सम्बन्ध में काव्य रचना हेतु सन्दर्भ, सामग्री और उल्लेख बटोरने लगा। संयोग कहिये या होनहार—मैं इसी दौरान अपने एक और शुभचिंतक विद्वान मनीषी—आध्यात्म चैतन्य स्वरूप (प्रधानाचार्य डी० एन० इण्टर कालिज, मेरठ) श्री शिवानन्द शर्मा जी के यहाँ दर्शनार्थ एक दिन ज्योंही पहुंचा श्री शर्मा जी ने मेरे प्रकाशित काव्यग्रंथ—क्रान्तिमन्यु की सराहना करते हुये कहा—'बेकल जी, समय की माँग को पूरा करने का यही समय है। इस युग में इन्दिरा जी की जघन्य हत्या से बढ़ कर कष्टदायी प्रकरण और क्या होगा ? चारों ओर हाहाकार ? आपके लिये रचना का यह विषय है। जुट जाओ। विलम्ब करो।'

मैंने विनत भाव से आशीर्वाद मांगा। उनके स्नेहपूर्ण आशीष का प्रतिफल भी है यह ग्रंथ। मैं उनके प्रति सदैव विनत रह कर कृतज्ञता अनुभव करता रहा हूं और रहूंगा। विद्वत्जनों का आशीर्वाद ही मेरा मार्ग-दर्शक और संबल है।

संयोग या सौभाग्य से मैं इतिहास का विद्यार्थी रहा हूँ। इस कारण अपने जीवन में भी घटते हुये महत्वपूर्ण राष्ट्रीय घटना-क्रम, विश्व-चक्र आदि की खास-खास बातें नोट करता रहता हूं। इससे मुझे इस काव्य ग्रंथ में तिथिवार उद्धरण की सहायता मिली। अध्ययन सामग्री में पं० जवाहरलाल नेहरू की—'मेरी कहानी'—'पिता के पत्र पुत्री के नाम व रूसी विद्वान लेखक अ'गोरेव, व जिम्यानन की पुस्तक—'नेहरू' मनो भाव से पढ़ कर मैं वृहत् काव्य ग्रंथ रचना के लिये अपना मन बनाया। भारतीय नारी की महत्ता का गुणगान आदिग्रंथों में होने के उपरान्त भी समाज में यह उत्पीड़न का शिकार रही। इस विषमता को ध्यान में रख कर काव्य का आरम्भ मैंने नारी महत्ता से ही किया। चूंकि श्रीमती इन्दिरा जी ने अपने अप्रतिम व्यक्तित्व व कृतित्व के द्वारा विश्व में महिला वर्ग को सम्मान के साथ जो स्थान दिलवाया है वह अद्वितीय है। वैसे मैंने कई एक रचनायें इन्दिरा जी से सम्बन्धित उनके जन्मदिवस १९ नवम्बर, ८४ तक श्रद्धा सुमन स्वरूप लिखी थीं परन्तु प्रेरणा स्रोत और प्रोत्साहन ने वृहत् काव्य रचना के द्वार खोल दिये।

कुछ समय पूर्व मेरे एक विद्वान मित्र ने लिखा था कि प्रबन्ध काव्य व महाकाव्यों का युग लद गया। क्षणिकाओं और अतुकान्त कविताओं के युग ने वृहद रचना भाव को लील लिया। छंद रचना में श्रम की परेशानी से बचने के लिये कवि सपाट चलने लगे। मंचीय कविता प्रपंचीय हो गई और अगर कोई साहस भी करे तो पढ़ेगा कौन ? मेरी अपनी एक आदत रही है, चुनौती स्वीकार करके विपरीत स्थिति से भिडने का साहस कर अनुकूलता के लिये प्रयासरत रहना। दूसरी बात मेरे समक्ष मेरी उस सफलता की थी जो क्रान्तिमन्यु (५०० पृष्ठों का वृहत्काव्य ग्रंथ) के हिन्दी साहित्य और पाठक समाज में स्वागत ने दिलाई। एक दिन अध्ययन चल ही रहा था कि प्रातः स्मरणीय राष्ट्र कवि मैथिली शरण जी पावन धारा में निम्नलिखित पंक्तियां मुखर हो उठीं—

'इन्दु' तुम्हारा काय श्रेष्ठतम काव्य है !
विश्व तुम्हारा यश गाये संभाव्य है !!
तुम महान महिमामय जीवन बलिदानी !
याद रखेगा बच्चा-बच्चा अमर कहानी !!

इसके पश्चात मेरा कवि मन अभी हाल के उस अतीत की ओर मुड़ गया जिसमें तीन मूर्ति भवन में पंक्तिबद्ध श्रद्धालुओं द्वारा श्रद्धांजलि क्रम के दृश्य थे। 'वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो'—का नाद गुंजित होता रहा और मस्तिष्क में यह बात उभरती रही कि महान पिता की महान पुत्री इन्दिरा कैसे महान बनी। यह ऐतिहासिक तथ्य लय के साथ यदि इस देश की संतति के समक्ष रखा गया तो ज्ञान-परिवेश के लिये कवि कर्म की उपयोगिता रहेगी।

विचार करते-करते सहसा मेरे मन में एक ऐसे काल्पनिक सूत्रधार, अनुभवी, सीधे-सादे ग्रामीण वृद्ध का समावेश हुआ जो अपने तेरह-चौदह वर्ष के विद्यार्थी पोते के साथ दूर गांव से आकर श्रद्धालुओं की पंक्ति में खड़ा हैं। बच्चे चूँकि हर घटना–बात–तथ्य और अजूबे को जानने के लिये बेचैन होते हैं। उनके मन में अपार कौतूहल होता है, जिज्ञासा होती हैं। अतएव वह अपने बाबा से इन्दिरा जी की इस महानता का रहस्य जानना चाहता है जो आज जग-जाहिर है। सारी दुनिया की बेचैनी और संवेदनशीलता है इन्दिरा जी के लिये; या यूँ कहिये कि पुरानी पीढ़ी के समक्ष नयी पीढ़ी इस महानता के राज को जानने की उत्सुकता का समाधान चाहती है। भाव फलक पर नयी रचना-सामग्री सजोने का रास्ता खुल गया। मेरा कवि मन किसी फिल्म के फ्लेश बैक की तरह उस अतीत में पहुँच गया जहाँ से नेहरू परिवार की कहानी एक ऐतिहासिक रूप लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ तादात्म्य स्थापित करतीं है। सन् १८५७ से पूर्व की स्थिति और असफल जन-क्रान्ति के जय घोष–ब्रिटिश शासन द्वारा उत्पीड़न सभी ऐतिहासिक दृश्य काव्य सामग्री बनने के लिये मन-मस्तिष्क में घूम गये। काव्य रचना के भावों में सागर में ज्वार जैसा वेग सचरित हो गया। लेखनी अनवरत चलती रही।

सर्व प्रथम नारी महिमा और विशेष रूप से उड़ीसा का श्रीमती इन्दिरा जी का अंतिम दौरा संकल्प समर्पण, और उत्सर्ग भावना का एक अभूत पूर्व समन्वित अध्याय काव्य भाव में गुंफित होता चला गया। कथा सूत्र एक के पश्चात् एक लेखनी की नोंक पर आते रहे। अध्ययन के साथ-साथ लेखन चलता रहा।

महानता की तह में त्याग और बलिदान की बहुत बड़ी पुट होती है। पंडित मोती लाल नेहरू ने अपने परिश्रम-लगन और कर्मठता से अपने जीवन के चुनौती पूर्ण दिनों और वर्षों को वरदान के दिन बनाने में स्वयं सिद्धि का परिचय देते हुये एक बैरिस्टर की हैसियत से अप्रतिम ख्याति प्राप्त की। विदेशी ठाठ-बाट को मात देता हुआ उनका जीवन एक आलीशान स्तर का बना आनंद भवन इलाहाबाद में तत्कालीन अधिकारियों, रईसों- जमींदारों-राजाओं और नवाबों का सुरुचिपूर्ण केन्द्र बिन्दु ही नही बना रहा बाद को स्वराज आन्दोलन व स्वतन्त्रता आन्दोलन का गढ़ भी बना। बड़े-बड़े स्वराजी नेता वहाँ अभूतपूर्व निर्णय लेने में फख्र समझते रहे। पंडित मोती लाल जी ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुये अपने प्रिय पुत्र जवाहर

लाल नेहरू को उच्चतर शिक्षा के लिये इंग्लैंड भेजा। जहाँ जवाहर लाल ने विद्याध्ययन के साथ-साथ यूरोपीय हलचल व ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की हरकतें ध्यानपूर्वक देख समझ कर तत्कालीन भारतीय प्रवासियों व यूरोप में पढ़ने वाले विद्यार्थियों व नेताओं से संपर्क बढ़ा कर उस युग के परिवर्तन एक विशेष लगन और जिज्ञासा से देखे उनमें रुचि ली। राजनीति की ओर रुझान बढ़ाया रूस की राजनैतिक स्थिति समझी। बहुत कुछ कई देशों में निकट से देखने और बैरिस्टरी पास करने के पश्चात जब लौटे तो पिता के चरण चिन्हों पर चलते हुये वकालत आरम्भ अवश्य की पर मन न लगा। महात्मा गाँधी के संपर्क में आकर स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ते चले गये। अमीरी में पल कर गरीबी की पुकार को समझा। सुयोग्य जीवन संगिनी कमला जी से विवाहोपरान्त पूर्णत: स्वतन्त्रता आन्दोलन के हो जाने के लिये वकालत छोड़कर महानता के मार्ग पर पहला कदम रखा। दूसरा कदम था शाही ठाट-बाट और जीवन का परित्याग करके एक दम स्वदेशी और खद्दर धारी होना। पूरे परिवार को भी उसी में ढालना।

पंडित जवाहर लाल नेहरू के यहाँ क्रान्ति पुत्री इन्दिरा जी का जन्म १९ नवम्बर १९१७ को स्वतन्त्रता की ललक में ठाठें मारती हुई उस लहर के दौरान हुआ था जब महात्मा गाँधी द्वारा स्फूर्त स्वतन्त्रता आन्दोलन दिन प्रतिदिन वेग पकड़ता जा रहा था तो दूसरी ओर भारतीय युवा रक्त महान रूसी क्रान्ति की सफलता और प्रतिफलों को देख कर तत्कालीन ब्रिटिश शासन को चुनौती देने का कार्यक्रम बना रहे थे। क्रान्ति लहर उफान की ओर अग्रसर हो रही थी।

इन्दिरा के जन्म पर नेहरू परिवार में खुशियों का तारतम्य जुड़ा और पंडित मोतीलाल जी ने बेटी को बेटा मान कर लाड प्यार दिया। जवाहर लाल ने बेटी को सुयोग्य शिक्षा देकर अभूतपूर्व प्रस्तुति का प्रण मन ही मन साधा। खुले दिलो दिमाग में लड़की लड़के में भेद का स्थान न था। आयु की दहलीज पर दहलीज पार करती हुई इन्दिरा ने जब आनन्द भवन में राजनीतिक हलचलें, बड़े-बड़े जलसे, बैठकें और महात्मा गाँधी सहित अनेक नेता देखे तो उसके शैशव काल की देश भक्ति—भावना सुदृढ़ होती चली गई। अपार स्नेह के साथ-साथ इन्दिरा जी ने देश भक्ति की शिक्षा ग्रहण करने के सुयोग्य वर निरंतर प्राप्त किये।

त्याग, संकल्प, धैर्य, साहस और लगन इन्दिरा जी को विरासत में मिली थी धरती से लेकर मानव जीवन निर्माण और निर्वाण की शिक्षा उनको पिता से मिली। गाँभीर्य के साथ बौद्धिक चैतन्य दादा मोती लाल जी से मिले। दृढ़ता के साथ निष्ठावान-व्रत माँ कमला से तथा जनाभिमुख देश भक्ति चेतन महात्मा गाँधी से। 'एकला चलो' आह्वान गुरु रवीन्द्र से। चिंतनमय रहकर आगे बढ़ते रहना इन्दिरा जी की विशेषता रही थी। स्वतन्त्रता आन्दोलन और विदेशी सत्ता द्वारा दमनकारी

दृश्यों को उन्होंने अपनी आँखों से देखा था। आम जनता में, अपने घर में। स्वयं वानर सेना बनाकर प्रतिशोध की भावना बलवती की थी। महात्याग और देशानुराग का रंग चढ़ा युग उनके सामने था। इन्दिरा जी के उद्भव, पराभव और पुनरुत्थान, संयम और विश्व व्यक्तित्व बनने का इतिहास अभूतपूर्व है ? महाशोक के क्षणों का समय भी उनको अपने संकल्पों से डिगा न सका और देश सेवा का जो संकल्प बचपन में धारण किया उसकी पूर्णता उनके महान उत्सर्ग से आप्लावित हुई यह सर्व विदित है।

प्रस्तुत वृहत् काव्य को वर्णन सूत्र की तारतम्यता से बाँधे रखने में समय-समय पर मार्ग दर्शन मुझे मिलता रहा मेरे अग्रज पद्म श्री चिरंजीत जी से, लगभग एक सहस्र पृष्ठों से ऊपर इस काव्य ग्रथ की रचना में मेरठ से बुलंदशहर तक और वापसी की दैनिक यात्रा भी बड़ी सहायक सिद्ध हुई। प्रातः आठ बजे मैं ज्यों ही बस में बैठता ऐतिहासिक सामग्री–कोई ग्रन्थ या समाचार पत्र पढ़ना आरम्भ कर देता। पता ही न चलता कब कालें आम (बुलंदशहर) का चौराहा आ जाता। लौटते हुये शाम को भी यही दशा रहती। घर पहुँचने पर पंक्तियाँ रचना का रूप लेकर कागज पर छितरती जातीं और ग्रथ का कार्य आगे बढ़ता रहता। चूंकि मुझे समय से ग्रंथ पूरा करना था इसलिये प्रैस कार्य भी आरंभ हो चुका था। मुद्रण के दौरान मोनो प्रिंटर्स मेरठ का सहयोग सराहनीय रहा। और प्रूफ पढ़ने में मेरी सहायता करते रहे मेरे पुत्र तरुण कुमार और चौ० मुल्कीराम विचार मंच के मंत्री सुकवि पद्म सिंह 'पद्म'।

इसे एक संयोग का चमत्कार ही कहूँगा कि जब इस ग्रंथ का कार्य द्रुत गति मे चल रहा था उस दौरान-अप्रैल ८५ में पटना (बिहार) से मेरे साहित्यकार मित्र श्री सतीशराज 'पुष्करणा' पधारे और ग्रंथ की प्रगति देख कर हर्षित होते हुये अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये कथा में लघु कथा जैसा समयानुकूल समावेश। वह मैंने सहर्ष स्वीकार करके किया जो पाठकों को इस काव्य मे पढ़ने को मिलेगा। दूसरे दिन मेरे अनुजवत परम मित्र ज्वालापुर से श्री एन० आर० गोयल 'अजय' आये और विचार विमर्श के दौरान उन्होंने भी कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इन सबके प्रति मैं हृदय से आभारी हूं।

इतने बड़े ग्रंथ के लिये सामग्री संकलन भी एक दुरुह कार्य था जिसे आसान बनाने में मेरी सहायता की मित्रवर श्री श्यामलाल 'शमी' व श्री वीरेन्द्र शर्मा 'मृदुल' मेरे दामाद श्री देवीराम पी० सी० एस० और मित्र श्री विनोद भृंग ने। इनके सहयोग से मुझे पर्याप्त सहायता मिली। टंकण का कार्य चिरंजीव नरेन्द्र कुमार ने करके योगदान दिया। इन सबके योगदान का भी मैं आभार मानता हूं।

जीवनोपयोगी दैनिक कार्य दायित्वों के निर्वाहन—सरकारी नौकरी की व्यस्तता तथा घर की बागबानी से जो भी समय बचता वह इस महाकाव्य ग्रंथ की रचना को अर्पित रहा। कई-कई घंटे तक बैठ कर चिंतन—मनन और लेखन कार्य ऐसा जीवन अध्याय है जिसमें बहुत कुछ अनुकूलता का श्रेय मेरी पत्नी श्रीमती शान्ति देवी पाल को जाता है। घरेलू जिम्मेदारियों में से अधिकतम स्वयं संभालते हुये इन्होंने मुझे सदैव चिंता मुक्त रख कर काव्य सृजन के लिये पर्याप्त सहयोग दिया।

इस वृहत काव्य के मुख पृष्ठ के कार्य में सामयिक भाग दौड़ और उपयुक्त सुझावों का दायित्व संभालते हुये क्रियाशील रहे प्रिय कुमुदकान्त कश्यप (सर्व प्रिय प्रबन्ध संपादक)। काव्यात्मा प्रियदर्शिनी काव्य के अनुरूप कलापूर्ण मुख पृष्ठ-योजना-प्रारूप और मुद्रण का समस्त दायित्व उन्होंने संभाला। सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री तूलिकी से बार-बार संपर्क स्थापित करना, मनोयोग से भाग दौड़ करना उनका अभूतपूर्व सहयोग रहा। जिसके लिये मैं हृदय से आभारी हूं।

सरल भाषा—सौष्ठव और कथावस्तु को तारतम्यता पूर्ण रखने में आशीर्वाद सहित सलाह मुझे समय-समय पर मिलती रही पद्म श्री क्षेम चन्द्र 'सुमन' और डा० रत्नाकर पाँडेय जी से। डा० पाण्डेय जी ने तो सहर्ष भूमिका लिखने का दायित्व निर्वाह कर मेरे प्रति अपने अपार स्नेह का प्रमाण दिया है। इन दो महानुभावों के प्रति मैं विनत भाव से श्रद्धानत हूं।

अब आती है बात मेरे उन दो संकल्पों की पूर्ति की जिनकी मैंने आरंभ में चर्चा की थी। आगामी वर्ष ३१ अगस्त १९८६ को मैं केन्द्रीय सरकार की सेवा से चालीस वर्ष की आडिट एवं एकाँउटस की सेवा करने के उपरान्त सेवा निवृत हो जाऊँगा। चूंकि गत वर्ष यह स्थिति मेरे समक्ष ज्वलंत समस्या के रूप में थी और मैंने स्थायी रूप से साहित्य सेवा करते हुये मेरठ में रहने का निश्चय कर लिया था इसलिये मैंने अपने विभागाध्यक्ष से सविनय निवेदन मेरठ में ही किसी डिविजन में स्थानान्तरित करने का किया था। परन्तु विभागीय पेचीदगियों का शिकार होते हुये मुझे गत वर्ष मेरठ से बुलंदशहर स्थानांतरण पर जाना पड़ा। इससे विशेष रूप से मेरा साहित्यिक कार्य प्रभावित हुआ। परन्तु मैंने सदैव विपरीत स्थिति का सामना पूर्ण शक्ति से किया है। इसलिये मैं अपने मेरठ स्थानान्तरण के लिये प्रयासरत रहा और यह संकल्प किया कि आज के सिफारिश भरे युग में मेरठ बिना किसी सिफारिश के स्थानांतरण कराऊँगा। सामान्य प्रशासनिक तरीके से। वह मेरा संकल्प जुलाई ८५ में पूर्ण हुआ। दूसरा मेरा संकल्प था कि बुलंदशहर रहते-रहते मेरा यह वृहत काव्य पूरा हो जाये। वह भी इसी तारतम्य में पूरा हुआ। परमपिता परमात्मा को मैं इन दोनों संकल्पों की पूर्ति पर धन्यवाद देता हूं। मुझे इनकी सफलता पर एक नई शक्ति भी प्राप्त हुई है इसका उल्लेख करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

काव्यात्मा प्रियदर्शिनी काव्य ग्रंथ की रचना में अनेक बाधायें और अवरोध भी आए परन्तु सभी दूर होते रहे और अमर हुतात्मा श्रीमती इंदिरा जी के प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धांजली के रूप में काव्य रचना पूरी हुई।

राष्ट्रीय चेतना के समक्ष अपने दायित्व की पूर्ति करते हुये-समस्त पाठकगण, समीक्षक, समालोचक और पारखी साहित्यिक वृंद के हाथों में यह ग्रंथ जो मेरी श्रद्धा का प्रतीक है, देते हुये विनत भाव से अनुरोध करूँगा कि इस पर अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत करा कर कृतार्थ करें।

अन्त में माँ सरस्वती के प्रति विनम्र भावांजलि--

रहे साधना--स्वर संयोजित,
भाव व्यंजना--क्षण में,
तारतम्यता सधी रहे नित--
काव्य--कथा--विवरण में,
रहे आस्था पुण्य कर्म में,
बल भर दे माँ ऐसा प्रण में;
रहे सदा सम्मान पूर्वक--
ध्यान लगा तव पुण्य--चरण में !

राष्ट्रीय एकता-दिवस
दिनांक : ३१ अक्टूबर १९८५
शान्ति निकेतन,
एच-२१८ शास्त्री नगर (मेरठ)

विनीत :
ताराचन्द पाल 'बेकल'

सर्वोच्च गरिमा—

लेखनी उठ आज वर्णन कर उसी का,
शब्द भावों में सुचिंतन भर उसी का,
होम की सर्वोच्च गरिमा प्राप्त कर जो,
दे गई इतिहास अनुपम ज़िन्दगी का !
खोलकर अध्याय जग में ज़िन्दगी की नव विधा का,
कर दिया तादात्म सुस्थापित लगन से नव विभा का,
जब तलक हैं चाँद, तारे, सूर्य, धरती, अरु गगन हैं;
नाम चमकेगा, दमक के साथ जग में इन्दिरा का !

शक्ति-शक्ति हाँ शक्ति सनातन—

शक्ति-शक्ति हाँ शक्ति सनातन–
ज्योतिर्मय शुचि उद्‌गम !
कीर्ति युक्त सद् भावनाओं का–
पूर्ण नियोजित संगम !!
रूप, स्वरूप अनूप जगत में–
नारी रचना—व्रत का !
आदि काल से गुण रहस्यमय–
हैं इस प्रणवत् सत् का !!

जग निर्मात्री, शक्ति-भक्ति मय–
भावुक, भव्य प्रबल है !
ममता, स्नेह, समर्पण रुचि की–
उज्ज्वल ज्योति अटल है !!
महाभाग शुचि उपादेयता-
आदि काल से अनुपम !
स्वर्गिक सुख संभावनाओं का–
स्निग्ध चारुता–व्रत-क्रम !!
त्याग भरा अनुराग शान्त चित्त-
आकृति पूर्ण नमन की !
है समानता कहाँ जगत में–
नारी के जीवन की !!
क्षमता सदा अपरिमित यद्यपि–
प्रशमित, लय–कातरता !
नर पर निज, निर्द्वन्द्व भाव से–
सौंप रखी निर्भरता !!
करुणा, चिन्तन, व्रत-अभिनंदन-
नर, नारी से सीखे !
कोष, प्रबल संकल्प शक्ति का–
ऊपर से मृदु दीखे !!
पग-पग पर दायित्व वहन का–
श्रमवत है संचालन !
शुभ्रज्योत्सना सरिस निखरता-
संयम व्रत का पालन !!
नित प्रकाश, मृदु हास, त्रास–
हर लेता आकुल मन के !
चित्र आंकती रही युगों से–
नारी अपनेपन के !!

पालनार्थ, रुचि सौम्य समर्पित-
भावनाओं के क्रम को !
रखती आई सतति सुख की–
खातिर नित्य नियम को !!
जब-जब शक्ति-परीक्षण वेला-
आई तो यह नारी !
बड़ी चुनौती से भिड़ने को–
करके हर तैयारी !!
गरल पान कर दुविधाओ का–
रचती सुविधा पथ है !
इसकी महिमा की विशेषता–
फिर भी रही अकथ है !!

युग बदले तो नारी जीवन हुआ यहाँ अभिषापित !
एक समय था जब भारत में नारी थी सम्मानित !!
स्वार्थवाद ने वंचित रखकर शिक्षा, ज्ञानोदय मे !
नारी को था बाँधे रक्खा केवल अपनी लय मे !!
मनु ने उ॰ ॰ स्तर की गरिमा नारी की गिनवाई !
शक्ति–सभ्यता, मौलिक गुणता नारी से ही पाई !!
ऐच्छिक सुख, सुविधा का भोगी नर यह सहता कैसे !
अपना ही वर्चस्व किया सुस्थापित जैसे–तैसे !!
सिमट गया सम्मान, संकुचित भावो के ही स्वर मे !
दासी बनकर रही हाय रे ! नारी केवल घर में !!
अश्रु कणों के निर्झर झर-झर लगे बहाने नदियाँ !
हुआ ह्रास मानवता रोई, रही बीतती सदियाँ !!
जो नारी थी पूज्या, भोग्या बनी भाग्य की मारी !
तिरस्कार के हाथ अहिल्या बनी रही बेचारी !!

राम चरित की नारी हारी, हाय, पुरुष के बल से !
वर्ना क्या रावण हर लेता उसको अपने छल से !!
जब न मिल सका न्याय अंततः धरती मध्य समाई !
महा त्याग, अनुराग भावना ही सीता कहलाई !!
और महाभारत की नारी, द्रुपद सुता बेचारी !
भरी सभा में दुर्योधन की, गड़ी लाज की मारी !!
जिन पर भार सुरक्षा का था बली जुये में हारे !
रहे देखते इस अनर्थ को धर्म-नियंता सारे !!
कलियुग के नारी-पीड़ा वर्णन से मन दुखता !
हावी होती गई निरन्तर नर-बल की कामुकता !!
नित्य नये मिलते वृतान्त हैं, उस सामाजिक धुन के !
जिसके द्वारा नित नारी को रौंदा है चुन-चुन के !!

जब-जब नारी रही उपेक्षित-
सह कर त्रास जगत के !
तब-तब टूटे हैं पहाड़-
इस दुनिया पर आफत के !!
भूला जग यह दुर्गा, लक्ष्मी-
अरु यह ही है जाया !
नर ने इसके क्षीरपान से-
जीवन—अमृत पाया !!
अगणित गुण, गौरव, करुणा-
मृदु भावों का यह संगम !
यह बहन है, माँ बेटी है-
और भार्या अनुपम !!
यदि न रही होती शिकार यह-
स्वार्थ सने मद-छल की !
आन-बान अरु शान बढ़े नित-
इससे ही नर-बल की !!

यद्यपि लज्जा, शील भावना-
इसमें शोभित प्रतिक्षण !
त्याग, तपस्या, लगन, कर्म व्रत-
इसके हैं आभूषण !!
लेकिन जब-जब स्वाभिमान पर-
इसके चोट पड़ी है !
हर प्रकार की यातनाओं से-
बढ़कर स्वयं लड़ी है !!
स्वयं सिद्धि की भावनाओं से-
जुड़ इतिहास रचा है !
कला, काव्य, उद्यम का कोई-
क्षेत्र न आज बचा है !!

नाम इन्दिरा गाँधी

एक नहीं अनगिन चरित्र हैं ऐसे इस धरती पर !
जब दिखलाया है नारी ने यहाँ शान से जीकर !!
पौरुषेय को नव संज्ञा दी जिसने रुचि के बल से !
सदियों तक होंगे धरती पर नारी-यश के जल से !!
जब आवश्यक हुआ स्वयं का भी बलिदान चढ़ाया !
जिसका यश इतिहास लोक ने युगों-युगों तक गाया !!
अनुपम ताकत ◌गन-ज्योति से जिसने दुनिया बाँधी !
नारी-गौरव सिद्ध हुई वह श्रेष्ठ इंदिरा गाँधी !!
हर क्षण, हर पल मूल्यवान प्रणवत था उस जीवन का !
शौर्य-विभा से उसकी मस्तक ऊँचा हुआ वतन का !!
एक नया युग अपने पन का जुट निर्माण किया है !
जन-कल्याणी भावनाओं का श्रेष्ठ प्रमाण दिया है !!

जोकि रहेगा युगों-युगों तक अमर देश की भू पर,
करके गई यहाँ पर है वह काम इन्दिरा गाँधी !
उद्भव के अध्याय खोलकर-स्वयं सिद्धि की लय पर,
भारत की पहचान बन गया, नाम इन्दिरा गाँधी !!

दृढ़ निश्चय के साथ किया जाता है-
जो भी निर्णय !
स्वयंसिद्धि के गुण का रहता-
उसमें श्रेष्ठ समन्वय !!
कर्मविधा, सुविधा को तजकर-
वरती स्वयं चुनौती !
बन जाती है पथ प्रशस्त-
करने की यही हटौती !!
मानव—जीवन की विशेषता-
जिसने जब पहचानी !
तब-तब मन के अन्तराल ने-
वास्तविकता जानी !!
कितना क्या कुछ विजय कर लिया-
कितना शेष सफर है !
उहा-पोह की इस स्थिति का-
रहता फिर कब डर है !!

जगती नित निर्भीक भावना-
अरु निर्द्वन्द्व हृदय हो !
हर प्रयास की सार गर्भिता-
लाती खींच विजय को !!

जनहितार्थ सब कुछ करने की-
लगन लगी रहती है !
और चेष्टा उत्तरोत्तर ही-
मगन जगी रहती है !!

इस विशेषता क कारन कथ-
वर्णन अंकित करना !!
गौरवान्वित जीवन वृत को-
भाव विमंडित करना !!
अपना लौकिक धर्म मानकर-
चली लेखनी द्रुततर !
हर प्रसंग जो मूल्यवान है-
रक्खा है चुन-चुन कर !!
ज्योतिर्मय करती जाये यह-
भावी जीवन—गाथा !
इसको पढ़ कर, गुण कर ऊँचा-
रहे देश का माथा !!

इन्दिरा जी उड़ीसा के दौरे पर
(प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी की सभा में जाने हेतु ग्रामवासियों के जाने को तत्परता का काव्यमय भाव चित्र) ३० अक्टूबर १९८४

(पत्नी, पति को जगाती है)

मैं पानी लाई रे !
छैल मैं पानी लाई रे !!
अरे, अब बीत चुकी है रात,
देख मैं पानी लाई रे !
अरे उठ, धो लेना मुँह हाथ,
छैल मैं पानी लाई रे !!

आज बड़ा सौभाग्य, महकता प्यारा मौसम है,
आँगन-आँगन देख, चहकता प्यारा मौसम है,
आज तो पंत प्रधान प्रवीण हमारे द्वारे आयेंगी,
हर गरीब के लिये संदेशा नूतन लायेंगी,

खिचेंगे फोटो उनके साथ,
छैल मैं पानी लाई रे !
अरे, उठ धो लेना मुँह हाथ,
देख मैं पानी लाई रे !!

जगह-जगह पर आज अभी से तोरण द्वारे हैं,
तरह-तरह के फूलों से अब जग-मग सारे हैं,
उठ ! कलिंग की इस धरती की किस्मत जागेगी,
शुभ दर्शन से एक नयी ही ताकत जागेगी,

अरे उठ, खाले जल्दी भात,
छैल मैं पानी लाई रे !
अरे उठ, धो लेना मुँह हाथ,
देख मैं पानी लाई रे !!

चिड़ियाँ चहकीं, बगिया महकी महके आँगन हैं,
चप्पे-चप्पे की शोभा भी अति मनभावन है,
उठे पड़ोसी बढ़े जा रहे, दर्शन पाने को,
गाँव-गाँव से अपनेपन की छवि दिखलाने को,

उठ अनुपम यह प्रात,
छैल में पानी लाई रे !
अरे, उठ, धो लेना मुंह हाथ,
देख मैं पानी लाई रे !!

उस महान मैया

अरी माँ भी हम जावेंगे, अरी माँ हम भी जावेंगे !
उस महान मैया के हम भी दर्शन पावेंगे !!
अरी माँ हम भी जावेंगे !!

सुनते हैं, माँ बच्चे उनको प्यारे लगते हैं,
प्यारे लगते हैं, जगत से न्यारे लगते हैं,
नेहरू चाचा भी बच्चों पर स्नेह लुटाते थे,
फूल फूल कर फूल फेंक कर खूब हँसाते थे,
इन्दिरा माँ के दर्शन से नव ज्योति जगावेंगे !
अरी माँ हम भी जावेंगे !!

सभी जा रहे उन्हें देखने, भीड़ बड़ी है भारी,
दूर-दूर तक देखो तो माँ, एक नई है तैयारी,
अच्छे-अच्छे कपड़े हमको माँ पहना दो तुम,
एक झलक इंदिरा गाँधी की हमें दिखा दो तुम,
दूर-दूर से उन्हें देखने बच्चे आवेंगे !
अरी माँ हम भी जावेंगे !!

उठो ! उठो ! ओ बापू देखो, सूरज निकला है,
सुन्दर-सुन्दर हवा सुहानी मौसम बदला है,
हो न कहीं ऐसा कि वंचित हम हों दर्शन को,
फिर बुहार लेना री माँ, आकर आँगन को,
उन्हें देखकर ही लौटें, तब खाना खावेंगे !
अरी माँ हम भी जावेंगे !!

महिलायें पंक्ति बद्ध खूब थी तदाद मे !
भाग्यवान, आज सब, ज्योति पुण्य लूट चलें,
कौन जाने सायतें ये आयें नहीं बाद में !!
मूर्तिमंत, कोई वहां, ध्यान धार देख रही,
पा रही थी नव्य प्रभा-गौरव प्रसाद में !
पुष्प हार बार-बार व्योम से उतार रही,
जिनको सहेजना था इंदिरा की याद मे !!

दौड-दौड आई कोई छोड-छोड पंक्ति निज,
इंदिरा से प्राप्ति हेतु आज पुष्प माल को !
झकि-झुकि, झूम-झूम बाल और बालिकायें,
तोड रहे उन्मुक्त पंक्तियों के जाल को !!
चौकते प्रबन्धकारी व्यक्ति रहे बार-बार,
आँकते सुरक्ष और दक्ष देख-भाल को !
कैमरे अनेक वहाँ घूम रहे पुनि-पुनि,
वृत्त चित्र मध्य बाँध दर्शको के हाल को !!

इंदिरा प्रसन्न चित्त, देख रही दृश्य धूम,
प्रीत का प्रवाह था अभूतपूर्व उस दिन !
एक नव्य चाव के स्वभाव का प्रभाव देख,
मूल्यवान हो गये थे सारे ही वे पल छिन !!
कोई-कोई कहता था देश की महान बेटी,
और कोई कह रहा था आज आगई बहिन !
बाट रोज जोहते थे चाव से उडीसावासी,
काटी इन्तिजार की वे घड़ियाँ थी गिन-गिन !!

३० अक्टूबर १९८४

बैठना संभव नहीं है चैन से

साधना के फूल खिलने हैं अभी तो इस चमन में !
पर न जाने क्यों उभरता आ रहा अवसाद मन में !!

लग रहा है चौंकती सी ये दिशायें कह रही कुछ !
है नई कुछ बात सी अब, हर उभरती नव किरण में !!

यत्न करने अनवरत हैं, प्रगति पथ को है सजाना !
एक नव स्फूर्ति के संबल जगाने हर नयन में !!

वक्त के संदेश से है विश्व को परिचित कराना !
युद्ध में वह बात कब है जो कि होती है अमन में !!

जब तलक है एक भी इंसान निर्धन और बेकस !
बैठना संभव नहीं है, चैन से तब तक वतन में !!

यह हमारी संस्कृति जो आदि से है शक्ति उद्गम !
स्वस्थ चिंतन से समन्वित कर सजानी है लगन में !!

एकता की रम्य रूपक झांकियों से कर सुसज्जित !
स्वप्न गांधी के सजाने हैं यहाँ हर एक मन में !!

धर्म का शुचि मर्म समझें सब यहाँ निष्ठा संजोकर !
टाँक दें नक्षत्र अपनी सभ्यता का उठ गगन में !!

हर किसी को मंत्र यह रुचिकर लगे कि देश प्यारा !
बढ़ रहा विश्वास भर कर एकता में, संगठन में !!

मांगता है देश अब बलिदान पूरा।

यह किरण जो आज प्रात: की नया ही कह रही कुछ,
और नव संकेत लेकर यह हवा भी बह रही कुछ,
यह धरा जो उर्वरा है, शक्ति का है स्रोत उन्नत,
है समझना आज इसकी भाव, भाषा और अभिमत,

हो न पाया है अभी अरमान पूरा !
मांगता है देश अब बलिदान पूरा !!

लड़ खड़ाती चेतना है, कसमसाती भावना है,
बाहरी क्या अन्दरूनी विघ्न—स्वर का सामना है,
देश की उन्नति खटकती नित रही जिनकी नजर में,
आग देने को वही तत्पर खड़े हैं आज घर में,

जोड़ते नित ध्वंस का सामान पूरा !
मांगता है देश अब बलिदान पूरा !!

कामना सामन्तवादी प्रगति पथ पर अड़ रही है,
हाय ! मेरे देश दुविधा झेलनी अब पड़ रही है,
स्वार्थ का चश्मा चढ़ाये आज आंखों पर खड़े हैं,
ये वो ही हैं, कष्ट जिनके वास्ते सहने पड़े हैं,

जानता यह तथ्य हिन्दुस्तान पूरा !
मांगता है देश अब बलिदान पूरा !!

आज जो भी मूल्य अब करना पड़े चुकता यहां पर,
आंच आने दी न जायेगी प्रगति के कारवां पर,
अब समर्पण में यहां पर पूर्णता लानी पड़ेगी,
त्याग की उत्कृष्टता की ज्योति दिखलानी पड़ेगी,

तब समय का हो यहां आह्वान पूरा !
मांगता है देश अब बलिदान पूरा !!

अब सुरक्षा की लहर, शाश्वत सुयश की कामना है !
देश की हर एक सीमा पर विपद का सामना है !!
शस्त्र सज्जित कुछ पड़ोसी अब यहाँ फिर तन रहे हैं !
आबरू-ए-आन के गाहक यहाँ जो बन रहे है !!
हिंद सागर में महा हलचल, मची है और ज्यादा !
कौन जाने और क्या साम्राज्यवादी का इरादा !!
क्षण नहीं खोना निरर्थक एक भी अब जिंदगी में !
फर्क करना है यहाँ अब दोस्ती अरु दुश्मनी में !!
क्या बचा उनसे कि जो सम्मान से जग में जिये हों !
यत्न रक्षा हेतु, उन्नत श्रेष्ठ शस्त्रो के लिये हों !!

देश की चिंता लगी हो.

नींद फिर रुचिकर कहाँ हो !
स्वस्थ मन-चिंतन धरा पर,
दृष्टि डाले साधना से उर्वरा पर,
रात दिन यह सोचता हो,
यत्न अच्छा और क्या हो, ?

शान्ति से निर्विघ्न पथ पर,

प्रगति का यह कारवाँ हो !
नीद फि रुचिकर कहाँ हो !!

देश एक है, एक रहेगा !

चाहे लाख बलायें आये,
शत्रु निरंतर जाल बिछायें,
ज्योतिर्मय पथ पर उन्नति के,
कुलाँगार आँखें दिखलायें,
उन्नति-स्वर भयभीत न होगा,
अलगावों का गीत न होगा,
जनता की आकाँक्षाओं के,
कुछ भी तो विपरीत न होगा,

रक्षा करने को भारत की,
जुटा वीर प्रत्येक रहेगा !
देश एक है, एक रहेगा !!

जो जन करते हैं मन मानी,
प्रगति उन्होंने कब पहचानी ?
देशद्रोह अब सहन होगा,
कुछ भी कीमत पड़े चुकानी,
शस्यश्यामला भूमि कहाती,
बलिदानों की है यह थाती,
उसे न बँटने देंगे किंचित,
जो सबको निज क्षीर पिलाती,

सिर, आँखों पर लेंगे उसको,
जिसका आशय नेक रहेगा !
देश एक है एक रहेगा, !!

बात करते हैं अधिक, तट बंध लेकिन खोखले हैं,
धर्म भावों के नियंत्रण, चोंचले ही चोंचले हैं,
आड़ में नित धर्म की है राजनीतिक चाल सारी,
वाह्य मंत्रों के विधा-स्वर आज इस घर में पले हैं !!

क्षण ये हैं विस्मयकारी

होगा यह अन्तिम दौरा,
कब किसको कहाँ पता था !
था किसको ज्ञान कि विधि ने
क्या कुछ अब नया लिखा था !

झूमा था यद्यपि उत्कल,
पुलकित थी वनश्री सारी !
महके थे फूल समय के—
हँसती थी क्यारी-क्यारी !

कब कोई जान सका क्या ?
क्षण ये हैं विस्मयकारी !
रंग-ढंग है और नगा ही—
क्या जाने, क्या तैयारी ?

किसको था ज्ञान कि अब तो—
अनहोनी द्वार खड़ी है !
कल्पना सी मृत्यु निकट है—
जिद अपनी फिर पकड़ी है !

था स्नेह अपरिमित आतुर—
जनता के मन में उद्यत !
थी देख रही इंदिरा के—
रुचि भाव खड़ी वह संयत !

ये कोल, किरात सदृश्य जन,
आँखों में चमक लिये नव !
दर्शन की साध लिये मन–
लखते हैं जितना संभव !

हर ओर प्रबन्ध कड़े थे–
अनुशासित कितनी जनता ?
मन का उत्साह प्रखरतम–
भावों के साथ उफनता !

दुख सह कर युगों, युगों के,
सुख की सी झाँपी छाया !
आई है माँ कल्याणी,
गौरव है अनुपम पाया !

जन-जीवन की गाथा में–
जुड़ गई समर्पण भाषा !
अब एक नया युग लायें,
लायेगी जीवन आशा ।

ये पंक्ति बद्ध सब ठहरे,
अरु बाल, वृद्ध नर, नारी !
शुभ दर्शन-ललक हृदय में–
बन बैठी प्रीत-पुजारी !

पाने को नूतन जीवन,
उलसित थे पुत्र धरा के !
अंकित थे जगह-जगह पर–
ये अद्‌भुत चित्र विभा के !

युग–युग से जिसके सपने,
रक्खे थे नित्य संजोकर !
वह क्षण आ द्वार खड़ा था–
उन सबका अपना होकर !

जन्मों से झेल रहे जो–
निर्धनता विधि के मारे !
अब सुख का शंख बजा था–
उन सब लोगों के द्वारे !

उठ करके बड़े सवेरे,
मीलों मे चल कर आये !
सम्मान— भावना— चंदन–
ये भोले–भाले लाये !

लगता था आज भरेगी–
निज कामनाओं की झोली !
उत्साहित होकर सबने–
"जय इन्दिरा गांधी बोली ।"

हारों मे लदी हुई वह–
जब लपक—झपक कर आई !
लखकर के भीड़ अपरिमित–
थी मन ही मन मुस्काई !

श्रद्धा का उमड़ा सागर–
आंखों में अप· ःपन था !
धरती का तृण तृण पुलकित–
मुस्काता नील गगन था

जीवन के प्रति नव चेतन,
आई हो ज्यों बतलाने !
लगता था भारत माता–
आई हः स्वयं जगाने !

इतिहास पुरातन जिसका,
गौरव था वीर जनों का !
भूखण्ड कलिंग धरा का–
लखता था सुख अपनों का !

रग–रग में लहू वही था–
जो बहा शान से लड़कर !
था और नहीं कुछ हित कर–
निज स्वाभिमान से बढ़कर !

बढ़-चढ़ कर होम किये तन–
मन रमा सुरक्षा–प्रण में !
जय बोल पवित्र धरा की,
सब कूद पड़े थे रण में !

हत्प्रभ था लख कर लाशें,
नत माथ अशोक खड़ा था !
रुक गया युद्ध था सहसा–
दिशि, दिशि में शोक बड़ा था !

ये लाखों वीर धरा के,
शोणित में नहा चुके हैं !
हा, हन्त ! विजय के मद में,
यों रक्त बहा चुके हैं !

यह ह्रास मनुजता का है,
हा ! अब क्या होगा प्रभुवर !
इस ललक-ठसक ने जय की,
रख दिया कलिंग मिटा कर !

अब और न युद्ध चलेगा,
अब खड्ग न कर में साजे !
मन आत्मजयी बन जाये–
अरु शान्ति सदैव विराजे !

ज्ञाता थीं इन्दिरा गांधी,
क्या कुछ है रहा उड़ीसा !
बलि जाना बेहतर समझा,
पर रक्खा मान सभी का !

यह धरती संकल्पों की–
कहती हैं सांझ सकारे !
युद्धों से नहीं अमन से–
फैलें जीवन—उजियारे !

यश–कीर्ति–शान्ति का द्योतक–
भू–भाग अमरता–गाथा !
लख सूर्य रथी शुचि मंदिर–
झुकता है सबका माथा !

अब श्रेष्ठ सुरक्षा हित में–
भावी श्रम–योग–प्रखर से !
रखना है देश सुसज्जित,
नित नित उत्साह लहर से !

चहुँ दिशि है खतरा भारी
शस्त्रों की होड़ लगी है !
हैं शान्ति–प्रयास अबल से–
तमसा ने ज्योति ठगी है !

ये भाव भरे उद्वेलन,
संयम से साध सवाँरे !
रुचि में कर्त्तव्य विधा की–
साधन थे सभी विचारे !

थी आत्म ज्ञान से ज्योतित,
वह भारत की सन्नारी !
कल्याण भाव से मन में–
रहती थी दुनिया सारी !

श्रम के संवेदन वृत में–
जीवन का चाव ढला था !
रग-रग में कोमल तन की–
मानव का दर्द पला था !

विकसित हो देश हमारा,
छवि नित्य चमकती निखरे !
भारत के गरिमा-गुण-कण
हर एक दिशा में बिखरें !

क्षण नहीं निरर्थक जायें—
श्रम-व्रत से नहीं डरें अब !
निर्भीक प्रगति के साधन,
मिलकर उपयोग करें सब !

पग-पग पर मिले सफलता,
मंजिल अब दूर नही है !
है देश स्वतंत्र हमारा—
कोई मजबूर नहीं है !

अपने ही स्रोतों में है—
ताकत का भरा खजाना !
इतिहास बदलना हमको—
भारत मजबूत बनाना !

लख चिन्ह प्रगति के प्रतिपल—
ऋतुओं के मन भी मचलें !
हम आत्मजयी बन करके—
जन-जीवन का रुख बदलें !

भाग्यवान थे दर्शक सारे !

अंतिम बार जिन्होंने देखी,
अपने मध्य इन्दिरा गाँधी,
बार-बार सौ बार निहारी
बारम्बार इन्दिरा गाँधी,
ऐसा लगता था कि वस्तुतः
भारत माता ही प्रत्यक्ष हो,
राष्ट्र एकता और सुरक्षा—
का वहाँ संपूर्ण पक्ष हो,

संकल्पों के थे उजियारे !
भाग्यवान थे दर्शक सारे !!

भाग्य सराहें अपना-अपना,
दीख रहे सब पुलकित मन में,
पंत प्रधान स्वयं देश की
आज आ गई घर-आँगन में,
नया काफिला उत्साहों का
उनके द्वारे दीख रहा था,
दबा हुआ जो वर्ग, शान से
उठ कर जीना सीख रहा था,

अब आयें सुख पूर्ण सकारे !
भाग्यवान थे दर्शक सारे !!

आत्मीयता का शुभ परिचय,
पहली बार उन्होंने देखा,
मंद, मंद मुस्कानों की थी,
अब जिनके अधरों पर रेखा,
उलसित बच्चे छोटे, छोटे,
उचक-उचक कर देख रहे थे,
माँ, बहनों के काँधों पर झुक
मस्तक रुचि से टेक रहे थे,

सब जिज्ञासू थे बेचारे !
भाग्यवान थे दर्शक सारे !!

ऐक्य भावना सूत्र अमर हो !

कर्त्तव्यों की सत्य साध से–
एक नया विश्वास जन्म ले,
बलिदानों की परम्परा से
एक नया इतिहास जन्म ले,
उन्नति परक समय का स्वर हो !
ऐक्य भावना सूत्र अमर हो !!

धर्म भावना के प्रभाव से
राष्ट्र–प्रेम–उद्‌गार निखारे,
कर्मठता की नई लगन से–
भारत—भू का रूप सवाँरे,
देश–प्रेम सबसे ऊपर हो !
ऐक्य भावना–सूत्र अमर हो !!

सत–जीवन की ज्योति जगा कर–
दूर करें मन का अँधियारा,
सबकी रुचि सममाव–चाव से
चमके, दमके भारत प्यारा,
उन्नति की हर ओर लहर हो !
ऐक्य–भावना–सूत्र अमर हो !!

श्रेष्ठ भावना उपजे मन में जन–जन के पुनरुत्थान की ।
अंगीकार भारत-दर्शन, रुचि कर ले यदि इंसान की ।।

सिंधु सरीखी लहर-लहर में

अपने पन का पाया जीवन !
दूर-दूर तक दृष्टि घुमाकर–
खड़ी इन्दिरा, स्नेह लुटाया,

शब्द–शब्द से निखर रही थी–
विश्वासों की अनुपम छाया,
बड़े राष्ट्र की बड़ी समस्या–
समाधान पर अपने बल पर,
समय आ गया, ध्यान अधिक
अब देना होगा नित निर्बल पर,

कठिन समय में आज देश के–
दिया सजगता का संबोधन !
सिंधु सरीखी लहर लहर में,
अपनेपन का पाया जीवन !!

ये निर्मित तट तभी कारगर,
जन हित में उपयोग अगर हों,
प्रेम सहित सब करें प्रगति नित–
नहीं किसी को किंचित डर हो,
आज कुटिल साम्राज्यवाद ने
बुद्धि– शिरायें ठगी हुई हैं,
युद्धोन्मादी बड़ी ताकतें–
ताक झाँक में लगी हुई हैं,

वर्तमान की युग धारा का–
करना होगा हमें विवेचन !
सिंधु सरीखी लहर–लहर में,
अपनेपन का पाया जीवन !!

दृढ़तर था विश्वास स्वयं का ।
राष्ट्र प्रगति के लिये कार्यरत,
रहती थी दिन रात इन्दिरा ।
उसको पूरा किया हमेशा
कहती थी जो बात इन्दिरा ।
मूर्ति सजीली रही ओज की–
स्वाभिमान का गर्व संजोया ।

नहीं निरर्थक बात कही कुछ,
नहीं एक भी क्षण था खोया,

बना दिया इतिहास स्वयं का !
दृढ़तर था विश्वास स्वयं का !!

संघर्षों से जूझ जूझ कर—
निर्धन जन की दशा बदलना,
हिमगिरि से नित अटल यत्न से—
लेकर साथ समय को चलना।
हर पल का है मूल्य जगत में।
हर क्षण है अनमोल विरासत।
जिस पर हर दिन किया भरोसा—
वह थी उसकी अपनी ताकत,

कर-कर के अहसास स्वय का !
दृढ़तर था विश्वास स्वयं का !!

उन्नति के नव लक्ष्य हृदय में,
रख कर सदा उठाया जग को।
स्वयं सिद्धि का नया करिश्मा—
बढ़ कर सदा दिखाया जग को,
कभी-कभी तो चौंका भी था—
जग का वातावरण यहाँ पर।
जब देखे थे एशियाड में—
नई प्रगति के चरण यहाँ पर।

वक्त बनाया दास स्वयं का !
दृढ़तर था विश्वास स्वयं का !!

सयंम, साध, साधना बल का कोष अगर कुछ पास नहीं,
जग-जीवन संघर्षों का कुछ याद अगर इतिहास नहीं,
नित उदास उद्भ्रान्त क्लान्त मन प्रगति पंथ से दूर अरे !
वह कैसा इन्सान कि जिसको खुद का भी विश्वास नहीं !

कलुष न उपजा किंचित मन में !

चली सदा निर्भीक डगर पर,
जोश निराला मन में भर कर,
भारत भू की हर क्यारी को,
सजा-सजा कर, सवँर-सवँर कर,
न था हृदय में किंचित संशय,
विकसित करती थी जीवन-लय,
दिशा-दिशा थी स्वर आच्छादित,
श्रेष्ठ भावना का था परिचय,
साधनाओं का बल था प्रण में !
कलुष न उपजा किंचित मन में !!
कहीं नहीं मन डर कर डोला,
दृढ़ता से—यश—पन्ना खोला,
जब भी दिया संदेशा नूतन,
पहले अपना हृदय टटोला,
उत्साहों की लहर-लहर पर,
टाँक रही थी यश के अक्षर,
नई प्रेरणा दी भिड़ने की,
संघर्षों मे जमकर, डटकर,
रहा बाँकपन नित्य चलन में !
कलुष न उपजा किंचित मन में !!
क्षमाशील बन नाम कमाया,
भव्य भावना रूप दिखाया,
किया जिन्होंने बुरा उन्हें भी—
प्रतिशोधों से नहीं सताया,
अवरोधों को डगर-डगर से,
रही हटाती दृढ़ता स्वर से,
षडयंत्रों का नया धरातल—
नहीं बचा था तेज नजर से,
शान्ति कामना रही वतन में !
कलुष न उपजा किंचित मन में !!

देखा-परखा हर विवाद था,
कुटिल भाव अलगाववाद था,
प्रणत पाल इंदिरा को हर पल–
गाँधी जी का वचन याद था,
सब अपने हैं देशज प्यारे,
धरा—पुत्र सारे के सारे,
अलग नहीं अपने से किंचित,
स्नेह सरित के धारे सारे,
यह ही था सिद्धान्त वचन में !
कलुष न उपजा किंचित मन में !!

अब हवा बेचैन है

आज चहुँदिशि हैं खड़े खतरे हमारे सामने !
धैर्य से मिलकर सभी को शान्ति-संबल थामने !!
है महासागर विकंपित देख करके होड़ वो !
नव विनाशों के धरा पर चिन्ह जाती छोड़ जो !!
सामरिक विध्वंसकारी शक्तियाँ है जुट रहीं !
शान्ति की सीमायें प्रतिदिन हर तरफ से लुट रहीं !!
घिर रहा है देश भारत नव विपद के जाल में !
हैं जड़ें जिसकी बहुत गहरी विकट पाताल में !!
है निरंतर सैन्य·छल-बल रच रहा विध्वंस को !
झेलना फिर से धरा को पड़ रहा है कंस को !!
भूमि से क्या व्योम से भी नाश का संदेश है !
और जंगी चाव से घिरता हुआ परिवेश है !!
हर तरफ बेचैनियाँ हैं, हर दिशा बेचैन है !
चाँद तारों में सहम है, अब हवा बेचैन है !!

ज्योति–निर्मित भावनाओं

महा शक्तियाँ जुटी आज, परमाणु-शस्त्र-बल होड़ में !
स्वार्थ सनी चालाक वृत्तियाँ लगीं जोड़ अरु तोड़ में !!
लगीं जोड़ अरु तोड़ में !!

नित तनाव बढ़ता जाता है, भय से कंपित किरण-किरण,
खतरे में सदभाव चेतना, खतरे में है आज अमन,
क्या जाने क्या ध्वंस उमड़ने लगे, समय के मोड़ में !
लगी जोड़ अरु तोड़ में !!

पाकिस्तानी अरु लंका की घटनायें हैं सालतीं,
दुरभि संधियाँ अपनों को भी दुविधाओं में डालतीं,
लाख कहा, उनको समझाया लेकिन रहे मरोड़ में !
लगी जोड़ अरु तोड़ में !!

स्नेह सिंचित पुष्प दल रुचि से वहाँ वितरित किये !
सिंधु था मन की लगन का, आम जनता के लिये !!
भीड़ में उल्लास था, विश्वास था, रुचि गर्व था !
ज्योति निर्मित भावनाओं का अनूठा पर्व था !!
थी पुलक हर एक मन में, अरु निकटता चाव की !
इंदिरा के मातृवत, सुस्नेह के शुचि भाव की !!
दूर से आये सभी थे, आज अपनापन लिये !
चेतनायें थीं समर्पित रुचि साधन लिये !!

शक्तियों का सिलसिला था इंदिरा में,
प्रेरणा का काफिला था इंदिरा में,
इसलिये आये सभी घर छोड़कर ये;
श्रेष्ठ अपनापन मिला था इंदिरा में !

कुछ अनूठापन लिये तब चेहरे पर ओज था !
रंग ही कुछ और मौसम का वहाँ उस रोज था !!

वह निरर्थक क्षण नहीं था,
ओज बिन कारण नहीं था,
बात थी नव चेतना की,
महज़ आकर्षण नहीं था !

एक अद्‌भुत शौर्य सज्जित भावना थी,
कुछ नया रुख था, सजग संभावना थी,
दीर्घ चिंतन का स्वयं फलितार्थ चमका;
देश हित बलिदान की शुचि कामना थी !

जिंदगी में त्याग का उत्कर्ष बढ़ कर माँगता है !
जब समर्पण भाव शुचि बलिदान के प्रति जागता है !!

भर स्वयं तेजस्विता के भाव हर इंसान में,
और प्रेरक आत्मबल का स्रोत हिंदुस्तान में,
इंदिरा गाँधी प्रखरतम तेज की आराधना थी;
त्याग की प्रतिमूर्ति थी भुवनेश्वर मैदान में !

उत्सर्ग भावना । बलिदानी भावोन्मेष

हँसता, खिलता रूप समाया है मन में इस उपवन का !
जिससे है आलोक युक्त नित गौरव भारत जीवन का !!
देश हमारा बने सुदृढ़तम, सबल रहे निज रक्षा में !
नहीं कसर कोई भी रखनी हम को आज सुरक्षा में !!
मुझे ज्ञात है शत्रु पड़े हैं पीछे मेरे जीवन के !
कदम-कदम पर रहे बिछाते जाल सदा ये उलझन के !!
मैंने तो कर दिया समर्पित देश हेतु इस जीवन को !
शुभाकांक्षा सुखी देखने की है मन में जन-जन को !!
यह जीवन, तन-मन सब कुछ ही लगे देश की माटी को !
अंगीकार कर चुका हृदय है बलिदानी परिपाटी को !!
हो न विभक्त सकेगा भारत अब यह दृढ़तर निश्चय है !
देश एक है, एक रहेगा, मुझे न किंचित संशय है !!

रख समक्ष गांधी बापू की शिक्षा और शहादत को !
मुझे गर्व है मैंने सब कुछ किया समर्पित भारत को !!
हर्ष सहित बलिदान चढ़ाकर स्वयं उऋण हो जाऊँगी !
रक्त कणों को नव भविष्य की प्रगति हेतु बो जाऊँगी !!
बूंद-बूंद मेरे शोणित की भर देगी स्फूर्ति नई !
निर्मित करने को भारत के नव विकास की मूर्ति नई !!
मेरा रक्त-वक्त का सबल, संतति को बन जायेगा !
मुझको है विश्वास देश यह, महाशक्ति कहलायेगा !!

व्यापक हित उत्सर्ग मांगता, और मांग बलिदान रहा,
वही समझ सकता है इसको जिसका लक्ष्य महान रहा,
ज्ञान रहा निज आन-बान का दृष्टि रही उत्थान प्रवर,
इसी श्रेष्ठ दर्शन पर चलकर जीवित हिन्दुस्तान रहा !

यही धरा है भुवनेश्वर की-जिससे जुड़ा अतीत रहा !
कटु अनुभव, अनुभव, उद्‌भव का सद्य समन्वित गीत रहा !!
यही जवाहर, नाहर झटका खाकर युग को झेल गये !
और यहीं पर सयम साधे इंदिरा के प्रण खेल गये !!

वायु-सुरक्षा सैनिकों के साथ—

कभी न खोया था सुयोग मौके पर—
जीवन—दर्शन का !
कभी न विस्मृत किया कहीं क्षण—
उन्नति के आकर्षण का !!

वायु सुरक्षा शिक्षा क्रम का केन्द्र सुनिश्चित हुआ जहाँ,
कार्य त्वरित आधार शिला का पूर्ण नियोजित हुआ वहाँ,
जाग उठा गोपालपुरा सुनकर ओजस्वी भाषण को,
कहा सैनिकों से—रखना है सदा सुरक्षित जन गण को,
मूल्य समझना है हम सबको—
अब हर पल का, हर क्षण का !
कभी न विस्मृत किया कहीं क्षण—
उन्नति के आकर्षण का !!

"नित्य जाल नव डाल रहा आंतकवाद हर ओर यहाँ,
पूर्ण रूप से अब अशान्त है भारत का हर छोर यहाँ,
धरती अरु अस्मान सभी पर दृष्टि जमाये रखना है,
अपने बल को कदम कदम पर हमको यहाँ परखना है,
ओज आंक कर चलना होगा—
हमें धरा के कण-कण का !"
कभी न विस्मृत किया कहीं क्षण—
उन्नति के आकर्षण का !!

साथ किया सबके था भोजन, वहाँ इन्दिरा गाँधी ने,
मातृ स्नेह था दिया सुशोभन, वहाँ इन्दिरा गाँधी ने,
मिला आत्मिक बल उन सबको, पंत प्रधान निहाल हुई,
भावनायें निज स्वाभिमान की उन्नत और विशाल हुई,

परिवारों के साथ चित्रमय–
खाका खींचा रुचि प्रण का !
कभी न विस्मृत किया कहीं क्षण–
उन्नति के आकर्षण का !!

उड़ीसा से लौटते हुये मनोभाव—

बढ़ा अगर आंतकवाद यूं,
उभरे ऐसे ही फिसाद यूं ?
आशाओं के अंचल घायल,
जिधर देखिये नूतन हल-चल,

क्या होगा इस अमर देश का ?

प्रगति मार्ग में रोड़े अनगिन,
नित समस्या है हर पल छिन,
दुर्धर्षों का ज्वार उफनता,
मिट पाये कैसे निर्धनता !

रहता संशय सदा क्लेश का !
क्या होगा इस अमर देश का ?

सिन्धु पार से चली हवायें,
षडयंत्रों की उठी घटायें,
धर्म भाव–भाषा के झगड़े,
खड़े प्रगति को कसकर जकड़े,

आशय क्या है रुचि विशेष का ?
क्या होगा इस अमर देश का ?

सीमाओं पर कुटिल वज़ीरा,
अरु शस्त्रों का बढ़ा ज़खीरा,
विघ्न शान्ति में डाल रहा है,
नित्य बिछाता जाल रहा है,
कारण बन कर क्षति विशेष का !
क्या होगा इस अमर देश का ??

महा कार्य बलिदान मांगता

पराकाष्ठा हुई जा रही–
षडयंत्रों के बढ़े जाल की !
हैं आशायें पूरी करनी–
भारत के हर नौ-निहाल की !!
हँसता–खिलता भारत महके,
सुख–वैभव की चिड़ियाँ चहके,
किन्तु कहा है सत्य किसी ने !
महाकार्य बलिदान माँगता !
विग्रह की बढ़ रही भावना–
वर्गवाद सिर चढ़ कर बोला,
विध्वंसों का नया रास्ता–
वाह्य शक्तियों ने है खोला,
अपने भी हैं शत्रु सरीखे,
वार कर रहे तीखे, तीखे,
शायद अब ना देंगे जीने !
महाकार्य बलिदान माँगता !!
लगा एकता को घुन ऐसा–
विश्वासों की जड़ें हिल गईं,
षडयंत्रों को नित्य नई शै–
सिन्धु पार से और मिल गई,
भूल गये हैं अपने पन को,
लगे बेचने हाय ! वतन को,

क्यों हक कोई किसी का छीने !
महाकार्य बलिदान माँगता !!

राष्ट्र एकता हेतु यहाँ अब–
उत्सर्गों के नये पृष्ठ हो,
और यहाँ अलगाववाद के–
अब तो सारे सूत्र नष्ट हो,
बीते जाते दिवस महीने !
महाकार्य बलिदान मागता !!

भावनात्मक अनुभूति—

ये ! यह कैसा सपना, अपना–
बापू मुझको बुला रहा है !
और अरे हाँ, समय सदेशा–
गांधी जी का सुना रहा है !!

बिखर न जाये अब वे कड़िया,
जिनको जोड़ रही शहादत,
दुर्दमनीय विचारो को लख,
रह न सकेगा अब मन सयत,

इंगित करके नये लक्ष्य को–
कोई राहे दिखा रहा है !
और अरे हाँ ! समय सदेशा–
गाँधी जी का सुना रहा है !!

जिसे सजाया बलिदानो से,
नही उजड़न देना उपवन,
निज जीवन की आहुति देकर,
भी रखना है इसका जीवन,

सम्यक्–हित उत्सर्ग भाव का–
चाव हृदय में समा रहा है !
और अरे हाँ, समय संदेशा–
गाँधी जी का सुना रहा है !!

रखनी होगी साख वतन की,
ध्यान तत्व पर रखना होगा,
कार्य कौन सा महाकार्य है,
पूरी तरह परखना होगा,

ऐं ! यह कैसा क्षण उत्तेजक–
मुझको सहसा जगा रहा है !
और अरे हाँ ! समय संदेशा–
गाँधी जी का सुना रहा है !!

कहता हर क्षण"–सुनो इन्दिरा–
तुमको वह इतिहास बनाना !
मानव मूल्यों को नित समझे–
जिसको करके याद जमाना !

अब जिज्ञासा नये मार्ग की–
मन मे कोई बढ़ा रहा है !
और अरे हाँ ! समय सदेशा–
गाँधी जी का सुना रहा है !!

चाहा था कि देश में फूले-फले समाज !
उग्रवाद हावी हुआ लेकिन सब पर आज !!
सुविधा भोगी जीत रहे है !!
मौलिकता को धर्म की भुला रहे वे लोग !
उन्नति पथ के हैं मिले जिनको नित संयोग !!
श्रम के क्रम को बढ़ा रहे है !!

भुला दिया अपनत्व को, भुला दिया सत् स्नेह !
पग-पग पर खतरा नया, पग-पग पर संदेह !!
नव संतति को सिखा रहे हैं !!

भुला नहीं सकता कभी, गुरुओं का बलिदान !
है कृतज्ञ हर पल रहा-प्रणवत हिन्दुस्तान !!
एक यही तो मौलिकता है !!

आजादी के रंग से निखरी जिसकी आब !
दुराग्रहों से है घिरा आज वही पंजाब !!
आज समय का चक्र चला है !!

गुरु नानक, गोविंद सिंह. सबके पूजित संत !
उनके प्रति सबके हृदय-आदर भाव अनंत !!
यह विशेषता अपनेपन की !!

एक पेड़ की दो शाखायें ऋतु के फलित प्रसाद !
अपनों के द्वारा हुये यहाँ, वहाँ बर्बाद !!
लील लिया अलगाववाद ने !!

भारत देश विशाल है, कर्म पथी इतिहास !
किन्तु हाय ! विदेश में उड़ा दिया उपहास !!
सहन नहीं है प्रगति हमारी !!

मिला इशारा गैर का—बिछा बैर का जाल !
आज रहे कुछ लोग हैं—खुद की पाग उछाल !!
लगाते आज चमन में !!

एक साथ कुछ प्रश्न उभर कर
आये मन—मस्तिष्क जगे !

विकट समस्याओं के उलझनयुक्त
पृष्ठ कुछ निकट लगे !!

चला मानसिक था संघर्ष,
अरु विचार का था निष्कर्ष,—

विश्व शान्ति—

भयाक्रान्त है क्षिति की सीमा—
जहाँ देखिये हल चल है !
नवोल्लासमय आशाओं की—
आज आत्मा घायल है !!
कूटनीति का अंग बन गया—
जग में शक्ति प्रदर्शन है !
जो कि विश्व की थाती है—
संकट में उसका जीवन है !!

राजनीतिक विद्वेष —

जग—चर्चित अफगान समस्या—
बना नित्य आधार रहे !
जमा पड़ौसी के घर प्रतिदिन—
शस्त्रों के अम्बार रहे !!
करते आये नित्य नुमायश—
जो शस्त्रों अरु पैसों की !
खटक रही है प्रगति हृद की—
आँखों में उन जैसों की !!

युगीन विडंबना—

भारत को कमजोर देखना—
चाह रहे जो वर्षों से !
जले हुये से रहते हर दम—
भारत के उत्कर्षों से !!

यह निश्चय है हिंद कभी भी–
बेचेगा सम्मान नहीं !
जिस दिन है सम्मान नहीं–
उस दिन तो हिन्दुस्तान नहीं !!

शून्य सा सद्भावनामय लग रहा था आस्मान !
और करवट में खड़ी थी उस सफर की भी थकान !!
जोकि अन्तिम था लगन की जिंदगी की राह पर !
था नया अवसाद था उस रात को उत्साह पर !!
था दिया आदेश अगला दिन रहे विश्राम का !
सिलसिला धीमा रहेगा हर जरूरी काम का !!
चाव के चैतन्य मन पर गीतिमाओं का असर !
कर रहा था कार्य क्रमवत भर रहा था रुचि प्रखर !!

३१ अक्टूबर १९८४ (श्रीमती इन्दिरा गांधी की जघन्य हत्या)

(नियति और काल चक्र में बहस छिड़ गई)

नियति—

देखो चक्र चले अनहोनी,
खण्ड-खण्ड हो मूर्ति अभय की !
सुनो, तनिक अज्ञात स्वरों में–
ध्वनियाँ गुंजित नव संशय की !!

(स्वत:) जिस पर तुम को नाज भाग्य रे !
आज वही असहाय रहेगी !
विश्व शान्ति की संबल देखो,
आज खड़ी निरुपाय रहेगी !!

कालचक्र—

क्या कहती हो सुबह-सुबह तुम !
नहीं रहा क्या हृदय ठिकाने !
लगता है कर रखा प्रताड़ित,
तुमको अत्य अधिक दुविधा ने !!
इस भारत का तो खयाल हो—
जो है जग में शान्ति सृजेता !
आज इन्दिरा गाँधी जी हैं—
मान्य विश्व में सबकी नेता !!

नियति—

इसमें क्या संदेह कि भारत—
जग में एक विशाल देश है !
किन्तु यहाँ सिर फिरे मनुज कुछ—
जिनके कारण बढ़ा क्लेश है !!
यही एक चिन्ता कि डगमग—
प्रातः से मन डोल रहा है !
और आज का सूर्योदय भी—
स्वयं अटपटा बोल रहा है !!

कालचक्र —

क्या कहती हो, तुम्हें पता है—
आज नई अनहोनी होगी ?
अरु गाँधी के अमर देश को,
नई आपदा ढोनी होगी ??

हुई आज तक जो कि प्रगति है–
क्या वह सहसा रुक जायेगी ?
और सुयश की आज पताका–
प्रातः होते झुक जायेगी ??

नियति—

नहीं, नहीं, ऐसा तो कुछ भी–
यहाँ न होने पायेगा !
प्रगति पंथ का सूत्र हाथ से–
कभी न खोने पायेगा !!
महाकार्य जिस हेतु इन्दिरा-
जुटी हुई है बचपन से ही !
बोल रहा है खड़ा द्वार पर–
"आहुति देहि ! आहुति देहि !!"

कालचक्र—

यह कैसी रे, परम्परा है !
यह कैसा विधि का विधान है ?
यह कैसी रे हाय, व्यवस्था !
क्या कुछ इसका भी निदान है ?
बल-विक्रम से जिसने भारत–
खड़ा कर दिया निज पाँवों पर !
आज उसी की अग्नि परीक्षा,
यहाँ नियति के प्रस्तावों पर !!

नियति-

परिचित होकर दिशा-बोध से,
समझ सको तो समझो, जानो !
नई सुबह के नये रंग की,
अजब गूढ़ता को पहचानो !!

वह देखो, हर एक दिशा पर,
अंकित हैं अनुभव के छाले !
यह तो है दुर्भाग्य यहाँ का-
शत्रु स्वयं घर में ही पाले !!

कालचक्र—

यह तो मेरा भी अनुभव है-
अपने ही जड़ काट रहे हैं !
देशोत्थानी व्यवस्थाओं को,
दीमक बन कर चाट रहे हैं !!
उनका जो भी चक्र चल रहा,
अपना चक्र प्रथक है उनसे !
उन्हें काम है अपनी खू से,
हमें काम है अपनी धुन से !!

नियति—

आज जमाना भी बदला है–
अब कृतज्ञता कहाँ जगत में !
फर्क आ चुका बहुत बड़ा है,
आज आदमी की नीयत में !!
होनहार बलवान उसे ना,
किंचित कोई टाल सका है !
निश्चित जो भी किया भाग्य ने.
विघ्न न कोई डाल सका है !

कालचक्र—

यह तो सच है, तत्व घिनौनी--
बाहों के अब जुटे हुये हैं !
इनके कारण ही सुख—सपने,
डगर-डगर पर लुटे हुये हैं !!

सत्ता-सुख के स्वप्न संजोये,
उल्टी भाषा बोल रहे हैं !
लिये धर्म की आड़ विदेशी–
आवरणों में डोल रहे हैं !!

नियति—

युग आया विश्वास हनन का–
कौड़ी में इंसान बिक रहा !
गहराई से देखो तो अब–
खुले आम ईमान बिक रहा !!
इससे पहले भी कुछ ऐसा,
दौर चला था याद नहीं क्या ?
भारत की धरती का गौरव–
गया छला था याद नहीं क्या ?

कालचक्र—

जो कुछ होना है वह होगा–
कहीं न कोई टोक सकेगा !
आने वाली विपदाओं को–
यहाँ न कोई रोक सकेगा !
बाहर कुछ है अन्दर कुछ है–
जड़ें हिलीं, विश्वास नहीं है !
प्रारब्ध के लिखे हुये का–
किंचित भी आभास नहीं है !!

नियति—

जो कि आज अनिवार्य उसे–
अब यहाँ नहीं बतला सकती हूं !
लेकिन कुछ संभावनाओं की–
झलक तुम्हें दिखला सकती हूं !!
वह देखो तो सिंधु पार से–
मिली हुई शै विध्वंसों की !

दूर कनाडा, अमरीका में–
खड़ी जमातें हैं कंसों की !!
धन की उनको कमी नहीं है–
उसके बल पर नाच रहे हैं !
इन्दिरा गांधी अरु परिजन की–
हत्या के स्वर बांच रहे हैं !!
हल्केपन से लिया जा रहा–
तथ्यपरक अनुबन्ध नहीं है !
कहीं बड़ी प्रतिरोध क्रिया का-
समुचित आज प्रबन्ध नहीं है !
इसका लाभ उठा सकते हैं-
जोकि ताक में लगे हुये हैं !
ऐसा लगता है कि सुरक्षा–
सूत्र सभी तो ठगे हुये हैं !!
परते ही परते हैं जैसे—
कदम-कदम पर नव उलझन की !
अपनी-अपनी पड़ी सभी को–
सोचेगा अब कौन वतन की ??

कालचक्र—

ऐसा अब कुछ रचा गया है–
धरती हिले, गगन थर्राये !
लापरवाही से अपनों की–
ज्ञान—पृष्ठ काला हो जाये !!
दूर—दूर तक दुष्प्रभाव से–
गली—गली आतंकित होगी
और यहां पर नीयत की रुचि–
उलझे और सशंकित होगी

नियति—

अगली रचना क्या है यह तो–
निश्चित लेखा विधि विधान का !
आने वाले चन्द क्षणों से–
भाग्य जुड़ा—हिन्दोस्तान का !!
पुनः पलटकर अड़तालिस सा–
दृष्य यहाँ पर प्रस्तुत होगा !
छा जायेगा अंधकार सा–
जहाँ—जहाँ पर प्रस्तुत होगा !!
अस्थिरता लाने का उपक्रम–
अपने ही कर रहे चाव मे !
इन्दिरा गाँधी परिचित खुद हैं–
दुर्घटना के इस स्वभाव मे !!

होनी है बलवान जगत में !

नहीं जान पाया है जग में जिसको कोई आज तलक,
बड़े-बड़े ज्योतिर्विद हारे, पा न सके हैं कभी भनक,
होनी का क्रम-व्रत, संचालित उसकी अपनी माया से,
गोरखधंधे में होनी के नहीं किसी को किंचित शक,
नहीं कहीं कोई कह पाया, क्या कर दे वह किस संवत में !
होनी है बलवान जगत में !!

क्षण भर पहले, हँसी खुशी का मुस्काता सा रुचि आंगन,
बन जाता है रौद्र भयानक विपदाओं का उद्बोधन,
है समर्थ सब तरह मगर, मानव है हारा इससे ही,
पलक झपकने कुछ का कुछ धरती पर होता परिवर्तन,
तनिक नहीं भी आ सकती है ढील, नियंत्रित आदत में !
होनी है बलवान जगत में !!

इसे न कोई सरोकार है, कहीं शान्ति या उलझन से,
उसे न हो आभास तनिक भी खेले जिसके जीवन से,

इसका तो निर्धारित क्रम है, हारी है मानवता नित्य,
जब भी चाहे खिला-खिलाया फूल तोड़ले उपवन से,
कौन जानता, कहाँ और कब बढ़े, डाल दे आफत में !
होनी है बलवान जगत में !!

ध्यान मग्न सब ज्ञानी-ध्यानी किंचित भी क्या जान सके,
कब किसके घर क्या कर डाले गति न कभी पहचान सके,
मान थके, अभिमान थके, नित गूढ़ तत्व-संधान थके,
शोध, बोध की परिधि में भी सारे ही अनुमान थके,
यह अपनी सी ही करती है, फर्क न आया आदत में !
होनी है बलवान जगत में !!

गई रात की बात, प्रात की स्नात उभरती किरण-किरण !
सतत सशंकित विस्मयता से जीवन का हर आतुर क्षण !!
निरख रहा था उजलेपन में एक नया ही परिवर्तन !!
क्या कुछ अब है होने वाला ?
लगा प्रकंपित सा उजियाला,
दिशा-दिशा में गति-भ्रम अंकन,
आज हवा में कुछ-कुछ कंपन,

किंतु वाह रे ! प्रणवत इन्दिरा ! स्वर साधे थे उन्मत क्षण !
उतर चला है आज समय की परतों पर सारा विवरण !!
दुरभिसंधियों का किसको था ज्ञान वहाँ नंगा नर्तन !
निरख रहा था उजलेपन में एक नया ही परिवर्तन !!

अंतिम दौरे की सब बातें,
विनत भावयुत रुचि की पाँतें,
याद आ गई थी सब क्रमवत,
मृदुल चेष्टा थी शुचि संयत,
लगा घूमने मन आँगन में दृश्य विगत का बन कण-कण !
एक नई स्फूर्त विधा को करना होगा अब धारण !

जैसे भी हो रहे, संगठित प्यारे भारत का जीवन !
निरख रहा था उजलेपन में एक नया ही परिवर्तन !!

गांभीर्य चेतना झुकी-झुकी सी,
पलकों पर थी रुकी-रुकी सी,
सहसा था आभास नया कुछ,
निर्मित हो इतिहास नया कुछ,
मनोयोग से क्रियाशील तब इस धरती का था हर कण !
नया संदेशा कुछ पा जायें शायद भारत के जनगण !!
दमक रहा था ज्वलित किरण सा कठिन तपस्या में चिंतन !
निरख रहा था उजलेपन में एक नया ही परिवर्तन !!

कालचक्र की गति संचालित,
उस दिन थी अपनेपन से !
कौन जानता था कि इन्दिरा—
चली खेलने जीवन से !!
सूर्य किरण प्रण साध उगी थी—
प्रणमय स्वयं उजाला था !
और नियति ने भावी क्रम पर—
जम कर पर्दा डाला था !!
सभी सहायक, रक्षा कर्मी—
थे सन्नद्ध यथावत से !
पूर्ण रूप अनभिज्ञ खड़े थे—
आने वाली आफत से !!
पीटर उस्तीनोव निदेशक—
फिल्म जगत के थे मौजूद !
जिज्ञासा संकेत दे रहा—
उनका अपना भव्य वजूद !!
टी० वी० के भी कलाकार कुछ—
रहे उपस्थित क्रमवत् थे !
एक अनोखे दृश्यांकन के—
लिये सभी तो उद्यत थे !!

चेहर की उस दमक में क्या न जाने क्या नया संदेश था,
भारतीय संस्कृति रुचि भावना की थी कि उसका श्लेश था,
श्रेष्ठ विस्मय युक्त आभा खिल रही थी इन्दिरा से,
एक देवी की तरह सज्जित समूचा वेश था !

।ये स्निग्धता आनन पर

दीख रही थी नवल ज्योति सी–
लिये स्निग्धता आनन पर !
चूंकि निर्मित नयी फिल्म थी–
होने वाली जीवन पर !!
पूर्व बने कुछ अंश, उड़ीसा–
मध्य जुड़े संपादन से !
एक नया वृत चित्र बनेगा–
फिर कुछ कुछ संशोधन से !!
थे अधिकारी वहाँ उपस्थित–
मन को बांधे तत्पर से !
देख रहे थे राह कि इन्दिरा–
कब आयेंगी अन्दर से !!
चित्रांक के साधन सब ही–
तत्परता से सधे हुये !
कार्यक्रमों की सजग नीति मे–
सबके सब थे बंधे हुये !!
आते ही क्षण भर को देखा–
और तनिक मुस्काई थी !
और शीघ्र ही चाय सभी कि–
खातिर तब भिजवाई थी !!

चमक रही थी आभा अनुपम—

कमी न किंचित कुछ प्रभाव था—
पड़ा आयु का जीवन पर !
थी सदैव निष्णात चेष्टा—
कर्म भूमि के आँगन पर !!
सुबह उठी इकतिस अक्टूबर—
देख रही थी मुख मंडल !
दमक रही थी आभा अनुपम—
भाव भरे उज्ज्वल, उज्ज्वल !!
विगत दिवस—दुर्घटना सुनकर—
हुआ प्रकम्पित तन—मन था !
पौत्र—पौत्री के जीवन का भी—
क्या कोई दुश्मन था ?
उन्हें तनिक सी चोटें आई—
खैर हुई जो बच निकले !
उभर रहे थे कभी—कभी जो—
वे संशय थे सच निकले !!
किन्तु तनिक भी रोष न प्रकटा—
साध रखी सामान्य नजर !
अधिक नहीं कुछ कहा—
सुरक्षा की गति पर बल देकर !!

'तीव्राग्रह' की बात कही थी—
राहुल और प्रियंका से !
और स्वयं को मुक्त किया था—
किसी अन्यथा शंका से !!
"नित भविष्य में चलो संभल कर—
वाहन गति सामान्य रहे !
रहे हृदय सुस्पष्ट चेतना—
सदुद्देश्य—प्राधान्य रहे !!"
कहा धवन से—"कर निरस्त दो—
मिलने—जुलने का हर क्रम !
आज तनिक विश्राम करूँगी—
कल तक किया बहुत ही श्रम !!

बहुत खास ही किसी बिन्दु पर—
यदि आदेश अपेक्षित हों !
तदनुसार ही सकल कार्यक्रम—
दिन भर के संशोधित हों" !!
चूक कहीं आतिथ्य परिधि में—
कहीं न रहने देती थीं !
हर विशेष अवसर पर इसका—
भार स्वयं पर लेती थीं !!
यह विशालता उसी हृदय की—
जिसमें सबका दर्द रहा !
विश्वशान्ति की अमर डगर पर—
जो सबका हमदर्द रहा !!

तत्परता वृत चित्र हेतु थी मन की [illegible] प्रसार रही ।
दृश्यांकन अनुरूप वेष की गरिमा सदा विचार, रही ।।
चुनकर निज केसरिया बाना, सबको ही था दंग किया ।
निखर उठी उत्फुल्ल भावना पसंद गेरुआ रंग किया ।।

अवसर के अनुकूल सुसज्जा गुण,
मन की तत्परता थी !
स्वस्थ चिंतनों की अनुगामी—
जीवन की तत्परता थी !!
कैसा यह संयोग, योग की—
पराकाष्ठा के ये क्षण !
स्वयं प्रकृति भी आँक रही थी—
आतुरता से यह विवरण !!
निखर उठा व्यक्तित्व अनोखा—
दैविक गुण—गौरव के संग !!
दमक उठा तत्काल अलौकिक—
भव्य भावमय भगवा रंग !!

पुष्पावलियाँ थी निहाल सी,
झुकी—झुकी थी मृदुल डाल सी,
मूर्ति महा तेजस्विता की;
दर्शनीय थी अरु विशाल थी !

खिला गेरुआ रंग अंग पर

खिला गेरुआ रंग अंग पर !

मुस्काता गांभीर्य सजा था कमल सरीखे आनन पर,
अन्तिम होना था **फिल्मांकन**, उस गौरवमय जीवन पर,
सौम्य, सरल, अद्भुत, सन्यासी जैसा तेज प्रखर उद्यत,
दमक रहा था कुन्दन जैसा आन—बानयुत अति संयत,
झूम—झूम कर लोट रही, थीं किरणें विकसित मन उमंग पर !

खिला गेरुआ रंग अंग पर !!

रहा समयानुकूल दृश्य जो रूप, स्वरूप किया धारण,
उस दिन भी ज्यों पूछ रही हो–'कैसी लगती हूं इस क्षण'?
झलक उठा उत्साह, अरुणिमा अंग–अंग की शोभा थी,
या कि प्रतिष्ठित हुई स्वयं में आज तपस्या की थाती,
चकित स्वयं भी प्रकृति प्रभा थी आज निराले इसी ढंग पर !

खिला गेरुआ रंग अंग पर !!

रम्य रूप की छटा देखकर दंग हुई अधिकारी पंत,
वृद्धावस्था में भी आभा खिली हुई थी भव्य अनंत,
विस्मिय युत थी चमक आँख में जो भी वहाँ उपस्थित थे,
दिव्य प्रभा सी नवल ज्योति से हुये स्वयं वे ज्योतित थे,
कौन जानता था कि सिलसिला हो जायेगा त्वरित भंग–पर !

खिला गेरुआ रंग अंग पर !!

अद्‌भुत था सब ताना–बाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

जिन की खातिर खुला गेह था,
नित्य पुत्र सा दिया स्नेह था,
कौन जानता था वे सारे,
उद्यत बनने को हत्यारे !

रहे उपस्थित बना बहाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

मुंह में रख दो मुंही जबानें,
चले शान्ति—संकेत मिटाने,
बनकर नाग वहीं करवट में,
छुपे खड़े झाड़ी—झुरमुट में,

भाँप रहे थे आना—जाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

पंत प्रधान बढ़ी उस पथ पर,
अकबर रोड जिधर था दफ्तर,
निकट छुटा आवास भवन था,
अन्तिम करता रहा नमन था,

बरसों से जो गति पहचाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

जाने क्या समझा, परखा था,
कवच न उस दिन पहन रखा था,
यह भी रही विडंबना ही,
या कि समय की थी मन चाही,

पैदल ही थी हुई रवाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

उस क्षण क्या था रुचि के मन में,
किसे पता क्या घर—आँगन में ?
या कि व्यस्त थी अस चिंतन में,
विश्व—पीर जिस विश्लेषण में,

सीखा था कर्त्तव्य निभाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

दुराग्रहोंयुत आकर्षण से,
भेद— विभेदों के दूषण से,
परिचित थी अनगिन वर्षों से,
डरी न किंचित संघर्षों से,

बदल रहा था मार्ग जमाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

सम्यक् भाव सजाकर पोसा,
जिन पर करती रही भरोसा,
जिनके खातिर सचमुच माँ थी,
ऐसी और मिसाल कहाँ थी ?

बना चुके वे उसे निशाना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

अनुगामी थी अपनेपन की,
रखती आई लाज वतन की,
दृढ़ता की थी खींची रेखा,
सबको स्नेह दृष्टि से देखा,

तर्क कुतर्क नहीं था माना !
भेद न किंचित कोई जाना !!

थी बहुत गंभीर मन अरु लग रही बिल्कुल निडर थी !
मृत्यु के वारंट पर जब कर चुकी हस्ताक्षर थी !!

स्वर न अमृतसर मिलाता–
यदि विदेशी धूर्त–स्वर में,
आग लग पाती न किंचित–
आस्था के श्रेष्ठ घर में,
यदि न हिंसा—क्रम पनपता–
सिर उठाती ना पृथकता,
फिर न कोई भी किसी को–
काट सकता, मार सकता,

पर हवा दी दुश्मनों ने–
दुश्मनों के साधनों ने,

जानती थी, जानकर भी दृष्टि व्यापक हित प्रखर थी !
मृत्यु के वारंट पर जब कर चुकी हस्ताक्षर थी !!

मन दुखी था नित्य सुनकर—
रोज हत्या निर्बलों की,
मिल रही थी सूचनायें—
रोज ही तो हलचलों की,
बन गई 'हिटलिस्ट' थी—
आतंक चारों ओर फैला,
इस विनाशक लहर का रुख—
देश में हर ओर फैला,
शस्य बल—अबार साधे,
मोर्चे दिन रात बांधे,

मंत्रणा दुर्घर्ष की होती कहीं पर रात भर थी !
मृत्यु के वारंट पर जब कर चुकी हस्ताक्षर थी !!

आड़ लेकर धर्म की—
खिलवाड़ करते जो वतन मे,
प्यार क्या था अंजुमन से—
या कि इस खिलते चमन मे,
उग्रवादी भावनाओं के—
प्रशिक्षण चल रहे थे,
शत्रु घातक तंत्र लेकर—
देव घर में पल रहे थे,
था त्वरित षडयंत्र भांपा,
मंत्रणा का मंत्र मापा,

देशद्रोही सिलसिलों की मिल चुकी पूरी खबर थी !
मृत्यु के वारण्ट पर जब कर चुकी हस्ताक्षर थी !!

था किया, जो कुछ किया था देश–प्रण के वास्ते,
योजना थी धर्म रक्षा के चरण के वास्ते,
जिंदगी की हो समर्पित स्वयं जिस व्यक्तित्व ने;
वह कहां चिंतित रहेगा फिर मरण के वास्ते ?

थी न चिंता एक पल भी निज सुरक्षा के लिये,
प्राण रहते थे सदा तत्पर परीक्षा के लिये,
आंच किंचित आ न पाये देश की मर्याद को;
प्रण किया स्वर साध कर था स्वत्व रक्षा के लिये !

अंग रक्षक भक्षक बन टूटे

अंग रक्षक भक्षक बन टूटे,

भाव प्रवण, विश्वस्त इंदिरा बढ़ी चली डग भर-भर कर,
सुदृढ़, सुरक्षा पहरे में तब था भी किसको, किसका डर,
निकट द्वार के पहुँची ज्यों ही, हिली तभी संयत झाड़ी,
क्रूर दृष्टियाँ घूर रही थी, होकरके तिरछी, आड़ी,
दाँयें कर बेअंत सिंह था, बाँएँ पर उद्यत सतवंत,
इन्दिरा जी की सहिष्णुता के ये प्रमाण थे दो जीवन्त,
कभी न समझा गैर जिन्हें, वे बैर साधकर शत्रु बने,
यह विडंबना ही तो थी असहाय रही घर में अपने,

जिन्हें पिलाया दूध–आज वो ही थे तक्षक बन टूटे !
अंग रक्षक भक्षक बन टूटे !!

सहमी बेगन बेल, खेल यह कैसा है रे अपनों का,
तोड़ दिया विध्वंसक रुख से जाल सुनहले सपनों का,
पलक झपकते तड़, तड़ाक बेअन्त गोलियाँ दाग रहा,
क्रूर दूर से नहीं निकट से था बरसाता आग रहा,
पहली गोली लगी गिरी वह-मुख से निकली 'हाय' तभी,
कहा—"देख बेअन्त तुम्हारा शस्त्र अचानक चला अभी,"
किन्तु नियोजित वार तड़ातड़ उस तन पर बौछार बने,
नेह भावना तंत्र–मंत्र थे खुद को ही अंगार बने,
नई मुसीबत के भारत पर कई भयानक धन टूटे !
अंग रक्षक भक्षक बन टूटे !!

साथ-साथ आग्नेय शस्त्र ले सत्यवंत तैयार खड़ा,
किये जा रहा था मैय्या पर और वार-पर-वार खड़ा,
खेल चुकी थी अग्नि खेल अब अभिवादन भ्रम टूट गया,
चौदह चक्र गोलियाँ खाकर जीवन का क्रम टूट गया,
मचा एक वीभत्स हाय रे ! पड़ी सिंहनी घायल थी,
भिगो रही निज रक्त धार से धरती माँ का आँचल थी,
शत्रु दलों की चाल घिनौनी खेल भयानक खेल रही,
पंत प्रधान पड़ी, बिगड़ी छवि-तन पर गोली झेल रही,
नहीं कभी भी जिन पर शक था वे ही घातक बन टूटे !
अंग रक्षक भक्षक बन टूटे !!

पराकाष्ठा कायरता की

कोई धर्म नहीं सिखलाता महिला पर हो वार कहीं,
और निहत्थे पर वारों का दिया नहीं अधिकार कहीं,
कर्त्तव्यों की परिधि निरंतर यह भी तो सिखलाती है,
उसकी रक्षा धर्म तुम्हारा-जो सुख-दुख का साथी है,
इस हत्या के पीछे दुर्गति कितनी थी यदि जान सको,
जानो अरु पहचानों देशज ! यदि गतियाँ पहचान सको,
जिसने समझा सदा पुत्रवत, जिससे माँ का प्यार मिला,
उसकी हत्या हाय हंत रे ! जिसका रक्षा-भार मिला,
कुलांगार बनकर सहसा ही रीढ़ तोड़ दी मानवता की !

पराकाष्ठा कायरता की !!

नहीं वीरता कहते इसको, छल से आक्रामक बन कर,
ताबड़ तोड़ चलाये गोली, एक निहत्थी महिला पर,
निरी मूर्खता, कायरता का खुला नया अध्याय अरे !
विश्वकोष में भी तो शायद कहीं न मिले पर्याय अरे !
जिन हाथों में भार सुरक्षा का था सौंपा शासन ने !
वो ही खून से रंगे हाय रे ! एक घृणित पागलपन ने !
घायल होकर भी अपनापन था अधरों से छूट रहा,
"हाय—अरे बे अंत !" फुहारा शोणित का था छूट रहा,
देखा दृश्य भयंकर रोई किरण-किरण थी सविता की !

पराकाष्ठा कायरता की !!

हर दर्शक, स्तब्ध, जड़ा सा, कैसा अत्याचार अरे !
देख रहा था घायल तन से तीव्र रक्त की धार अरे !
खेल रही अनहोनी अपना खेल सिसकते आँगन में,
आग लग गई थी बचाव के हर मौजूदा साधन में !
एक नहीं दो-दो कातिल थे, मक़तल खुद थर्राया था,
निकट न कोई अनुचर, अफसर बढ़कर तब क्यों आया था ?
प्रश्न पड़ा रह गया चतुर्दिक, मिला न कोई उत्तर रे !
दिशा-दिशा से टकराया था चीत्कार का वह स्वर रे !
देख-देख कर सिसकी उभर रही धरती दुखिता की !
पराकाष्ठा कायरता की !!

चीत्कारों को न अपनी रोक पाया था चमन !
लड़खड़ाई थी दिशायें, डगमगाया था वतन !!
सहमी–सहमी झाड़ियाँ थी फूल पत्ते थे उदास !
लुट गया था एक क्षण में ही समूचा बाँकपन !!
सब लगे असहाय से थे, आ न पाया कोई पास !
आँसुओं से तरबतर था हर नयन हाँ हर नयन !!
रो रही इंसानियत थी, हाय रे, हत् भाग्य देश !
तेरी धरती पर विदेशी हरकतों का संगठन !!
रंग गई थी भूमि सारी इन्दिरा के खून से !
दृश्य था कितना भयानक, है न संभव आकलन !!

पीछे–पीछे कौन कहाँ था !
इसका विवरण और अशान्त !
कर देता है लेखन विधि को–
और अधिक सी ही तो क्लान्त !!

नई उपजती दुविधा का स्वर–
किन्तु यही देता आभास !
'ऐसा भी क्या कुछ संभव है' ?
नहीं किसी को था विश्वास !!

जब टूटा था कहर वहाँ पर–
चली गोलियाँ ताबड़ तोड़ !
जो पीछे थे, चले गये वे–
कहाँ अकेली उसको छोड़ ?
सुने धमाके धरा हिल गई–
लगा कांपने गगन समीत !
धाड़ मार कर लगा बिलखने–
भारत भू का श्रेष्ठ अतीत !!

शोर, शोर हाँ सभी ओर–
तत्काल मचा था चारों ओर !
बिखर चुका था धैर्य धरा का–
टूट गई संयम की डोर !!

सफदर जंग बंगला थर्राया,
जब देखी थी शोणित–धार !
दो, दो जालिम खड़े सामने–
किया निहत्थी पर था वार !!

सारी शक्ति धरी रह गई–
गई व्यवस्था सारी टूट !
लिये प्राण थे इन्दिरा जी के–
बेशर्मी ने बढ़कर लूट !!

लूटी जैसे गई गोपियाँ–
धरे रहे अर्जुन के बाण !
जैसे शक्ति स्वरूप कृष्ण के–
लिये भील ने बढ़कर प्राण !!

कालचक्र के हाथ बिक गया–
सबका साहस और विवेक
और घास पर तभी लुढ़क कर–
दिया इन्दिरा ने सिर टेक !!

"अरे ! अरे यह क्या गड़बड़ है–
हुई अचानक कैसे आज ?"

दौड़े तभी कमाण्डो तत्पर,
सुनकर गोली की आवाज !

सत्यवन्त, बेंअन्तसिंह ने–
डाल दिये अपने हथियार !

ज्ञान रहा विपरीत क्षोभ का–
जिसके खातिर थे तैयार !!

"जो हमने करना था करके–
दिखलाया है आज समक्ष !
जो तुम को करना है कर लो–
कृत्य हमारा है प्रत्यक्ष" !!

किया समर्पण था दोनों ने–
उच्च किये थे अपने हाथ !

पकड़ कमाण्डो चले उन्हें थे–
लेकर दोनों को ही साथ !!

त्वरित कमाण्डो पकड़ ले गये थे–
दोनों को पिछली ओर !

उधर सिपाही खड़े और भी–
मचा रहे थे काफी शोर !!

"हाय रे ! क्या किया जालिमों !
मारी पंत प्रधान प्रवीण !

खोल दिया विश्वासघात का–
तुम ने है अध्याय नवीन !!

माँ को मारा जिसके साए में–
पले बढ़े ओ जालिम वीर !
जिसका स्नेह सदा पाया था–
दिया कलेजा उसका चीर" !!
प्रश्न खड़ा हो गया आज से–
कौन करे किसका विश्वास !
मिला देश को कृतघ्नता का–
एक नया ही यह इतिहास !!

पड़ी खून से लथपथ थी माँ

लगातार गोली वर्षा से–
छलनी सारा हुआ शरीर !
बिन्धे वक्ष को देख रहे थे–
तरु, लतिकायें सभी अधीर !!
आह, निकलती थी फूलों के–
चेहरों से थी आकृति म्लान !
धोखा देकर लूट लिया था–
सुबह–सुबह ही हिन्दुस्तान !!
सुनी चीख, चल पड़ी सोनिया–
"हाये ! खुदा का कहर अजीब !
पड़ी खून से लथपथ थी माँ–
'धवन' झुके थे वहीं करीब !!
नौकर चाकर बदहवास से–
दौड़ रहे थे दो या चार !

यह कैसा दुर्धर्ष समय का–
यह कैसा रे, अत्याचार ??
बिलख रही थी बहू सोनिया,
"हा ! मम्मी हाये री मातु !
यह कैसा विघटनकारी है–
सत्यानाशी आज प्रभात !!
"अरे ज़ालिमों देवा माँ के–
बेध दिये सारे ही अंग !
है कैसी अनहोनी देखो–
आज नहीं बेटा भी संग !!"
रही सहायक जो सबकी ही–
वही आज घायल असहाय !
रक्तस्राव गहरे घावों से
और खड़े हैं सब निरुपाय !!
यद्यपि थी उपलब्ध ऐंबुलेंस–
और चिकित्सा भी मौजूद !
किन्तु समय की तत्परता में–
रहा सभी कुछ था बेसूद !!
यही उचित था त्वरित चिकित्सा का-
उपलब्ध जहाँ सामान !
ठीक रहेगा ऐसे क्षण में–
संस्थान, आयुर्विज्ञान !!
'धवन', 'सोनिया' दोनों ने ही-
उठा लिया था सिक्त शरीर !
बनी हुई थी रक्तिम झरने–
इन्दिरा—जीवन की तस्वीर !!

भीग चुकी थी भगवी साड़ी,
अरु काया अत्यन्त म्लान !
चले डालकर तभी कार में–
शायद बच जायेंगे प्राण !!
जो भी जहाँ खड़ा, ठहरा था–
गायब लेकिन होशहवास !
सोच रहे शारदा प्रसाद थे–
आज हो गया सत्यानाश !!
किसे होश था पूर्व सूचना–
पहुँचाये आयुर्विज्ञान !
जैसे—तैसे इन्दिरा गाँधी का–
तन पहुँचा लहुलुहान !!
लरज़ उठा बिजली सा कौंधा–
नगर, डगर सबही थे स्तब्ध !
वही बुलाया गया त्वरित था–
जो भी चिकत्सक था उपलब्ध !!
इस दुस्साहस अरु हमले की–
खबर ले उड़ा स्वर उत्कीर्ण !
जिसने सुना, धुना सिर–
दिल रो रो कर हुआ विदीर्ण !!
फैल गई बेचैनी चहुंदिशि–
तड़प उठे थे देश—विदेश !
सिंधु लसर को लगा कहरसा–
उस दिन मानयता का क्लेश !!

रो उठी थी देखकर यह जिदगी सारे वतन की,
आंसुओं से तरबतर थी हर कली प्यारे वतन की,
फूल लोटे धूल में थे, मिट गई रौनक अचानक;
लड़ खड़ाकर रह गई थी जिंदगी अपने चमन की,

सफदर जंग पर

पकड़ लिया दोनों को कसकर

हत्प्रभ से सब रहे देखते–
अनहोनी का जालिम दौर !
चौंके क्षण भर तत्परता से–
कहीं न कर दें कुछ ये और !!
खून चढ़ चुका इनके सिर पर–
हत्या का करके कुकृत्य !
पकड़ लिया दोनों को कसकर–
देख नियति का विकृत नृत्य !!
तड़प उठे थे अन्य सुरक्षा–
अधिकारी अरु वीर जवान !
देख चुके थे जब इन्दिरा का–
सारा तन ही लहू लुहान !!
समझ गये सतवंत और बेअंत–
सिंह के घृणित विचार !
स्वाभाविक था लहू उतरता–
आँखों मे लख अत्याचार !

निकट कोठरी में ले जाकर–
नई व्यवस्था के आधीन !
हत्यारों को काबू करके–
सोच रहे थे यत्न नवीन !!

तभी मिला बेअंत सिंह से–
कुछ गड़ बड़ का था आभास !
हावी होने को तत्पर था–
वह, ठहरे सैनिक के पास !!

क्षण भर में संघर्ष छिड़ गया–
उद्यत उस क्षण था सतवंत !
घायल होकर गिरा वहीं वह–
और अंत को प्राप्त बेअंत !!

तब घायल सतवंत सिंह को–
पहुँचाया था हस्पताल !
जान चुके इन्दिरा, हत्या के–
पीछे था कुछ भारी जाल !!

आयुर्विज्ञान संस्थान में

यह कैसा दुर्भाग्य, इन्दिरा का–
अपना सुत ना था पास !
कैसा घातक था ईश्वर यह !
विडंबनाओं का इतिहास !!

टूटा दिल था सहमी मंजिल–
बेसुध लेटी पंत प्रधान !
जड़ चेतन थे सभी हिल गये–
जब देखी थी लहू-लुहान !!

जितना जो कुछ भी संभव था–
किया चिकित्सा के दौरान !
ग्लूकोज अरु रक्तदान भी–
कर न सका था कष्ट आसान !!

दिल—गुर्दा सब छलनी होकर–
बहा चुके थे रक्त प्रपात !
और 'सफाया' शल्य चिकित्सक–
देख रहे थे यह आघात !!

निष्फल सारी हुई योग्यता–
श्वासों का क्रम था निस्पंद !
सब घबड़ाये, हक्के–बक्के–
नाड़ीं की गतियाँ थी बंद !!
देख रही थी अष्टम मंजिल–
घायल गुर्दा अरु वह दिल !
विश्व शान्ति के जिसमें हर दम–
सपने रहते थे झिलमिल !!

एक नहीं थी कई गोलियाँ–
शल्य चिकित्सा के दौरान !
बाहर करके त्वरित जिस्म से–
दिया योग्यता युक्त प्रमाण !!

सब प्रयास थे गये निरर्थक–
लौट नहीं पाये थे प्राण !
जिनकी अंतरर्वाह्य चेतना–
साध रही थी जन कल्याण !!

जिनकी केवल रही एक धुन, जन–जीवन—कल्याण !
किया बहुत कुछ जो संभव था, बच न सक वे प्राण !!
हार गई थी शल्य चिकित्सा,
जीता विधि का विधान,
धरे रहे उपकरण सभी वे,
जिन पर था अभिमान,
राष्ट्र–एकता हेतु चाहिये था
नूतन आह्वान-
इसी निमित्त चढ़ा इन्दिरा
गई यहाँ बलिदान,

होगा क्या उत्सर्ग—भाव का, इससे अधिक प्रमाण !
किया बहुत कुछ जो संभव था, बच न सके वे प्राण !!

जब–जब कुण्ठित हुई चेतना,
जन–मन हुआ उदास,
लगन–मगन मन श्रेष्ठ तपस्वी,
बदल गये इतिहास,
जब–जब खण्डित हुई संस्कृति
और सभ्यता दीन,
तब–तब आगे बढ़ी दिव्य-व्रत
चेतन—ज्योति—प्रवीण,

त्याग मूर्ति शुचि आत्माओं ने किये मार्ग निर्माण !
किया बहुत कुछ जो संभव था बच न सके वे प्राण !!

फैल रहा था सांप्रदायिकता
का विष चारों ओर,
दबा लिये थे दानवता ने–
शान्ति सदन के छोर,
गाँधी जी की पूर्णाहुति से,
चेता वह अभियान,
जिसका पूरक बना श्रेष्ठतर–
इन्दिरा का बलिदान,

ज्योतिर्मय कर्तव्य भाव ने सहे मृत्यु के बाण !
किया बहुत कुछ जो संभव था बच न सके वे प्राण !!

किंतु चेहरे पर इन्दिरा के–
दिव्य चेतना थी सुस्पष्ट !
महाक्रूर दानवता भी तो–
कर न सकी थी उसको नष्ट !!

जीवन रक्षा यंत्र और उपकरणों की-
वह खड़ी — कतार !
ऐसा लगता था कि स्वयं में-
रोई हों मिलकर बेजार !!
युक्ति-युक्त थी त्वरित चिकित्सा-
संयम साधे शल्य सवाँर !
किन्तु हायरे, रहे अंततः-
सभी चिकित्सक थे लाचार !!
शल्य क्रिया में सावधानियाँ-
बरती बारम्बार अनेक !
और साथ ही ईश्वर से भी-
लगा रखी थी मन की टेक !!

लुटा कारवाँ बीच डगर में-
टूट गई आशा की शाख !
स्वयं चिकित्सक ने धीरे से-
बंद करी जब उनकी आँख !!
निष्फल श्रम हो गया सभी का-
टूटा गम का पर्वत हाय !
खड़े देखते रहे वहाँ पर-
सब हताश अरु सब निरुपाय !!
यों तो गोली लगते ही था-
हुआ त्वरित था काम तमाम !
फिर भी थे आशा के अंकुर-
शल्य चिकित्सा के आयाम !!

नीचे विगलित थे सहस्त्र स्वर-
रक्त दान के हेतु निसार !
"किसी तरह भी बचे इंदिरा"-
चिल्लाते थे बारबार !!

ज्योंही जिनको मिली सूचना–
मिल पायी थी दौड़े लोग !
सभी चाहते थे बचने का–
कोई तो होता उद्योग !!
संस्थान पर पहुँचा वह ही–
जिसको जो जैसे, मालूम !
थी समस्त दिल्ली ही दौड़ी–
टूट पड़ा था त्वरित हुजूम !!
नेता गण अरु मंत्री पहुँचे–
संस्थान, आयुर्विज्ञान !
अब क्या होगा, हाय देश का–
इसी ओर था सबका ध्यान !!
कोई रोया हिलकी भर–भर,
कोई भटका था बेचैन !
सूज चुके थे रोते—रोते–
हाय सोनिया के भी नयन !!
बार–बार थे शल्य चिकित्सक–
पोछ रहे मस्तक का स्वेद !
धरी रह गईं सभी क्रियायें–
इस कारण सब को था खेद !!
निःश्वासें ही निःश्वासें थीं
निकल न पाये मुंह से बोल !
सहमे–सहमे जन गण, प्रतिक्षण–
वहाँ रहे थे यों ही डोल !!
जो भारत की जनता पर उस क्षण-
टूट पड़ा था बनकर श्राप !
लाखों की संख्या में प्राणी–
झेल रहे थे वह संताप !!

अविरल धारा बही अश्रु की–
नर—नारी बेचैन सभीत !
रक्षक के भक्षक बनने की–
देख चुके थे उल्टी रीत !!
सड़कें रोईं, गलियाँ रोईं,
चीख पड़े बाजार अनेक !
ग़म के सागर में डूबा था–
भारत का प्राणी प्रत्येक !!
झुंड नारियों के बिलखे थे–
तड़प रही थी सब ग़मगीन !
"लाज देश की जगन्नियंता–
आज तुम्हारे है आधीन" !!
लाख नियंत्रण रखा पुलिस ने–
यत्न हो रहे थे बेकार !
जनता के प्रश्नों की लगती–
रही वहाँ हर पल बौछार !
छूट नियंत्रण रहा हाथ से–
बढ़ा हुआ था जन–आक्रोश !!
बार–बार युवकों के दल भी–
खो बैठे थे अपने होश !!
दूर–दूर तक खड़ी गाड़ियाँ–
झेल रही थी अतुलित भार !
चढ़े हुये थे जिन पर दर्शक–
उचक–उचक कर रहे निहार !!
नेहरू अरुण, वसंत साठे–
और कुछेक मंत्री गण !
आतुर और भयातुर सब थे–
त्वरित जानने को विवरण !!
सुना मेनका ने तो दौड़ी,
गई चिकित्सा–गृह की ओर !
डूब रहे थे अश्रु—कणों से–
पूर्णतः पलकों के छोरे !!

हत्प्रभ सी वह रही देखती-
परिवर्तन का यह इतिहास !
क्रूर नियति के अट्टहास को-
देख—देख कर हुई उदास !!
दिल में उठते रहे वलवले-
"हाय ! कितना समय खिलाफ !
अंत समय तक भी न किया है-
मम्मी जी ने मुझको माफ !!"
बाहर भी नारी—कण्ठों की-
चीखें-"हा ! हा ! हाय ! लूट !
हाय ! हाय रे ! आज सभी पर-
देखो कहर पड़ा है टूट !!"
बच्चे, बूढ़े बिलख रहे थे-
छूट चुकी संयम की डोर !
"हाय! इन्दिरा! मैय्या, बहना !"
यही शोर था चारों ओर ?
नहीं कल्पना की थी ऐसी-
होगा यों देवी का अन्त !
उसके दिल में तो भारत की-
शक्ति—साध का सिन्धु अनन्त !!
जिसने भला देश का चाहा
भूल स्वयं के सारे चाव !
राष्ट्र एकता और शक्ति ही-
बनता जिसका गया स्वभाव !!
लौकिक रूप, स्वरूप समन्वित-
किन्तु अलौकिक था उत्साह !
बूंद—बूंद से निज शोणित के-
अंकित की थी अन्तिम चाह !!

[illegible]

[illegible]

सुलझाने में जुटे हुये थे–
काल–वीथिका—क्रूर रहस्य !!
डोल रहे अपरान्ह समय तक-
सभी निराश्रित मन को मार !
सोच रहे थे—देश—दशा-
क्या होगी, करते रहे विचार!!
गुप्त मंत्रणा का आशय था–
श्रेष्ठ सामयिक वह निष्कर्ष !
खण्डित होने से बच जाये–
जिससे सारा भारतवर्ष !!
खटका सबको था अभाव–
कि दूर बहुत ही है राजीव !
चिन्ता अरु दुश्चिन्ताओं के–
चित्रण होने लगे सजीव !!
यद्यपि जो थे सस्थान में–
रहे उपस्थित वे सब लोग !
जान चुके थे खत्म हो चुका–
इन्दिरा—जीवन का संयोग !!
समाचार पत्रों में कुछ ने–
दिया शीर्षक में आभास !
मृत्यु वरण कर चुकी इन्दिरा,
मिला आस को था वनवास !!
किन्तु साथ ही सचालित सा–
लगा चिकित्सा का संघर्ष !
और अभी सुस्पष्ट घोषणा–
सह न सकेगा भारत वर्ष !!

नहीं राष्ट्रपति थे स्वदेश में–
गृहमंत्री भी रहे न पास !
यही सोचकर थे सहयोगी-
बार—बार उद्विग्न उदास !!
कर न सके उद्घोषित वे भी–
जिनका था समुचित कर्तव्य !
'उड़ा ले गई प्राण पखेरू–
इन्दिरा जी के हा ! भवितव्य !!'

श्री राजीव गाँधी को त्वरित सूचना

आंचलिक बंगाल क्षेत्र में–
दौरे पर थे व्यस्त प्रवीण !
आँक रहे राजीव व्यवस्था–
साम्प्रदायिकों के आधीन !!

संबोधित कर भरी सभा को·
बता रहे थे अपनी नीति !
साथ–साथ ही याद दिलाया–
भारत—गौरवपूर्ण अतीत् !!

राष्ट्र सुरक्षा, और एकता -
पर दे करके सारा जोर !
कहा—"यहाँ षडयंत्रों की है–
नई प्रथायें चारों ओर !!

सहसा ही तब किया किसी ने–
महा घोर दुख का संचार !

"इन्दिरा जी की हत्या ! उनको–
दी है घर में गोली मार" !!
क्षण भर तो स्तब्ध रह गये–
पर सुस्थिर रख होश-हवास !
और प्रणव भी चौंके सुनकर–
जो उस क्षण बैठे थे पास !!
त्वरित सभा को छोड़ चल दिये–
दिल्ली का था हर पल ध्यान !
बैठ कार में बी० बी० सी० के–
उद्‌घोषण पर रक्खे कान !!
लम्बी दूरी, और विवशता–
सड़क मार्ग की क्रूर थकान !
बनी हुई थी सुधी पुत्र के–
संयम अरु बल की पहचान !!
विस्फारित नेत्रों से पल—पल–
देख रहे थे चारों ओर !
मर्माहत अन्तर था लेकिन–
पकड़े रहे धैर्य की डोर !!
"हाय ! अरे क्या काण्ड हो गया–
आज हो गया सत्यानाश !
ऐसे कठिन समय में भी तो–
रह न सका मैं माँ के पास" !!
वायुदूत से वायुयान पर–
चढ़कर पकड़ी मन की डोर !
त्यों—त्यों थी बढ़ती जिज्ञासा–
ज्यों–ज्यों थे दिल्ली की ओर !!

मानव—सेवा दृढ़तर मन से

कफन बांध कर देश हेतु जो निकल पड़ी थी घर से !
उसे डराया जा सकता था, कहाँ मृत्यु—अजगर से !!

रही सदा निर्भीक, अभय का—
नित जीवन प्रमाण दिया !
खतरे लेकर अपने सिर पर—
जन–जीवन–कल्याण किया !!
कोटि–कोटि जन की इस माँ ने—
ऐसा श्रेष्ठ विचार दिया !
जिसने चौंका एक लख्त ही—
सारा ही संसार दिया !!
मानव सेवा दृढ़ तर मन से—
किया चाहिये जीवन में !
है अतुलित भण्डार शक्ति का—
मानव भी अपने मन में !!
यही ऊर्जा तो उसको नित—
नई प्रेरणा देती है !
युक्ति—युक्त चैतन्य प्रभासी—
स्वयं चेतना देती है !!
दृढ़ विचार अरु सत्य लगन से—
छुट सकता कुछ काम नहीं !
आ सकता मन में किंचित भी—
ती थकान का नाम नहीं !!

लिये शक्ति का रूप स्वयं में जब भी जहाँ निकलती थी !
इन्दिरा जी को देख हवा खुद अपनी चाल बदलती थी !!
वीर बनी वह, वीर रही वह, वीरोचित व्यवहार किया !
किन्तु हायरे ! कायरता ने कलुषित ढंग से मार दिया !!
वहीं पड़ी निष्चेष्ट चिकित्सा—संबल के आधीन वहाँ !
जोकि चाहती थी इलाज में पद्धति नित्य नवीन जहाँ !!
ढलते सूरज की किरणों की देख—देख कर दीन दशा !
"हा ! भारत का बेड़ा असमय देखो, आकर कहाँ फँसा ??
याद आ गया समय—चक्र को गाँधी का बलिदान तभी !
और व्रणों के मध्य घूमता सारा हिन्दुस्तान अभी !!
वह भी मानवता पर ही तो—गोली का था वार हुआ !
तब—तब घायल हुई धरित्री, जब—जब सत्य—प्रचार हुआ !!
तन्मय सेवा ने मानव की, चूर दनुज का दंभ किया !
बलि जाने की श्रेष्ठ प्रथा को गाँधी ने आरम्भ किया !!
जब—जब जिसने जन—कल्याणी भावनाओं को शुद्ध किया !
तब—तब उसका मार्ग ईर्ष्या, द्रोहों ने अवरुद्ध किया !!

मानव सेवा सत्य धर्म है–
सर्वोपरि सब धर्मों से !
मनुज देवता बन जाता है–
इस जग में सद् कर्मों से !!
त्याग—मूर्ति अनुराग अनोखा–
रखते हैं निज जीवन में !
निखरा है व्यक्तित्व सदा ही–
जब—सेवा—संवर्धन में !!
किन्तु हाय ! धर्मान्ध तत्व जब–
ठान शत्रुता लेते हैं !
खिले—खिलाये उपवन को–
शमशान बना देते हैं !!

जन—प्रतिक्रिया

कोटि—कोटि विश्वस्त जनों की–
आहें मिलकर एक हुईं !
अश्रु धार फुफकार उठी थी–
तीक्ष्ण, तीव्र, अनेक हुईं !!

धधक उठी अन्तर में ज्वाला बढ़ी क्रोध की चिंगारी !
लखते—लखते थी शिकार बन गई वहाँ दिल्ली सारी !!
छिन्न—भिन्न थी सहन शीलता डोर धैर्य की टूटी थी !
क्रोधानल ने यहाँ वहाँ, दिल्ली की शोभा लूटी थी !!
वाह्य स्रोत ने भी शै दी थी अग्नि—शिखा भड़काने की !
सोच रखी थी युक्ति हिन्द की प्रेरक छटा मिटाने की !!

एक और ना समझी उपजी–
कुछ ने खुशी मनाई थी !
उछल—कूदकर आँगन—आँगन–
बाँटी गई मिठाई थी !!
उग्रवाद की चाल ढाल पर–
जो थे नित आसन्न हुये !
इन्दिरा जी की/ हत्या से थे–
वे ही तत्व प्रसन्न हुये !!

इसने और हवा दी उनको–
जो लपटें बन भड़क उठे !
कुछ बेचारे लुटे घरों में–
कुछ थे लबे सड़क लुटे !!

यह था कार्य नितांत घृणित ही निर्दोषों पर हमले का !
जिस पर भूत सवार रहा क्या किया जाये उस अमले का !!
उधर देश की पड़ी आत्मा, शल्य—चिकित्सा घेरे में !
इधर आग लग रही भयानक, किसी—किसी के डेरे में !!
निकले गुण्डातत्व घरों से, अपने हाथ दिखाने को !
जिसके खातिर मिटी इन्दिरा, उपवन वही जलाने को !!
सभ्य चेतना ग़म में डूबी रही निरन्तर उस पल थी !
जिस क्षण दुखिता दीन—हीन सी दिल्ली होती घालय थी !!

सिर पर था शैतान चढ़ गया–
मानवता थी दीन हुई !
ऐसा लगता था कि दिल्ली–
निपट प्रशासन हीन हुई !!
जिसके प्रति आक्रोश बढ़ा–
उसको पकड़ा अरु मार दिया !
जहाँ मृत्यु का तांडव देखा–
उस ही घाट उतार दिया !!
आहें और कराहें हर पल–
चहुँदिशि हा ! हा कार मचा !
हाय ! रे, अलगाव वाद–
क्या मानवता से प्यार बचा !!

तड़क–भड़क मिट गई सड़क की–
जले अनेकों वाहन थे !
जिनमें खुशियाँ नाचा करतीं–
धधक उठे वे आँगन थे !!

जिनको कभी गुमान नहीं था–
ऐसा भी हो सकता है !
घायल भारत का जन बल–
संतुलन यहाँ खो सकता है !!

कोस रहे उस घृणित तत्व को–
जिसने सत्यानाश किया !
प्रथक वादिता की भाषा का–
जिसने यहाँ विकास किया !!

आग लगादी खिले चमन में, बाँटे नेक खयाल गये !
पैदा आज किये धरती पर जिद ने यहाँ सवाल नये !!
तोड़ दिये संबन्ध आपसी, प्रेम प्रथा मिस्मार हुई !
वर्गवाद के द्वारा निर्मित पुनः भेद—दीवार हुई !!

कितना बड़ा अहित कर डाला, अब भी इसका ध्यान नहीं !
यदि हठ वादी डटे न रहते, जलता हिन्दुस्तान नहीं !!
वाह्य तंतुओं ने जो खेला, खेल घृणित इतिहास बना !
खुशियाँ छीन-छीन कर सबकी, सबको दिया उदास बना !!

राजीव दिल्ली लौटे

उधर साथ राजीव प्रणव के–
लौट रहे जब दिल्ली को !
थे उतारते चले जहन में–
बार–बार तब दिल्ली को !!
त्वरित सफर से वायुयान के–
जब उतरे थे दिल्ली में !!
देखा चारों ओर उदासी–
व्रण उभरे थे दिल्ली में !!
नहीं कहीं उत्साह शेष था–
सभी ओर थी म्लान दशा !
झुके वृक्ष तक दूर–दूर से–
कहते थे गमगीन कथा !!
लेने को अमिताभ खड़े थे–
था चेहरे का रंग उड़ा !
ज्यों ही उतरे वायुयान से–
लगा सभी उखड़ा, उखड़ा !!
सहसा–पूछा—"मम्मी कैसी ?'
सांत्वना संकेत मिला !
किन्तु हृदय को लगी चोट सी–
टूटा—शान्ति निकेत मिला !!

संग चले अमिताभ सोचते–
—"कैसे दशा निहारेंगे !
कितना साहस जुटा सकेंगे–
कैसे धैर्य सवारेंगे !!"
लेकिन अपनी दशा भूलकर–
बोले—"प्रिय अमिताभ कहो !
क्या अमरीका मे जाकर कुछ–
मिला स्वास्थ्य को लाभ कहो !!
मैने एक चिकित्सक देखी–
कलकत्ते में नाम बड़ा !
वही स्वस्थ्य अरु सुखी हो गया–
जिसका उससे काम पड़ा !!

उसमे अपनी बीमारी का–
करवा लो उपचार सखे !
अब न करो तुम अधिक परिश्रम–
रहते हो बीमार सखे" !!

जब होता उत्तेजित मन !

मानव का मस्तिष्क नियंत्रण से हो जाता बाहर,
हृत्तंत्री में कंपन होने लगता तीव्र बराबर,
कैसा, क्या उपयुक्त आचरण होगा। भूले क्षण में,
संशय, शंका लगें उभरने द्रुत से बढ़े चरण में,
लोप सदाशयता का होता, खोता आत्म—नियन्त्रण,
अरु संभावित हों अनर्थ के क्षण भी इसके कारण,
परवश होती बुद्धि—ग्रंथियाँ, तन— मन डोला करता,
ऐसे में इन्सान न जाने क्या कुछ बोला करता,
कभी—कभी तो खतरे में पड़ जाता मानव—जीवन !
जब होता उत्तेजित मन !!

सरल, स्वभाव शान्त ना रहकर, बनता केन्द्र अलथ का,
पग—पग पर उत्तेजित स्वर से संशय होता भय का,
हित—अहित पहचान न पाती ग्रसित चेतना कंपित,
अरु आकृति तक मानव की लगने लगे अशोभित,
मानव—गुण दब जाया करते, अवगुण होते विकसित,
आस—पास का जीवन वृत भी हो उठता है चिंतित,
होता ह्रास, क्षुब्ध सौम्यता, प्रति पल डर के मारे,
देखा करती चक्र समय का—रुचि की डोर सवाँरे,
खो जाता है सदा तैश में मानवता का अपनापन !
जब होता उत्तेजित मन !!

सुस्थिर मन होता अजेय है।

लाखों—लाख उठें बढ़ें बवंडर, हों विनाश क्षण द्वारे,
वह मानव है जो इन सबसे, कभी न हिम्मत हारे,
दिशा बोध कर रखे चेतना अपने आप नियन्त्रित,
कर सकता कंटकाकीर्ण पथ को भी पग से शोभित,
स्वयसिद्धि के मूल मंत्र में रहती जिसकी निष्ठा,
मिल सकता बस उसे श्रेय है !
सुस्थिर मन होता अजेय है !!

होता है आदर्श संचरित जन—जन की नस—नस में,
उसका जिसका मन रहता है सदा स्वयं के वश में,
उसे वेदना किसी तरह भी कर न पाये विकंपित,
जो रखता है अपने मन की सुस्थिरता को ज्योतित,
उसका पूरित हुआ ध्येय है !
सुस्थिर मन होता अजेय है !!

समय आंकता रहा व्यथा को

मातृ शक्ति के भक्ति भाव का–
था प्रभाव उस मन पर !
कार्य—क्षेत्र में जोकि चला था–
पूर्ण सहायक बनकर !!
खड़ा सामने रहा लक्ष्य था–
पूर्ण रूप से जमकर !
अन्तर्मन की बढ़ी व्यथा को–

आत्मसात कर, डग भर !!
कर विश्लेषण लिया समय का–
जब पहुँचे तो देखा !
महाशोक की खिंची हुई थी–
हर चेहरे पर रेखा !!
चलते—चलते दिन डग—मग था–
ढलता सूर्य विकल था !
जन—समूह का शोर वहाँ पर–
उभर रहा हर पल था !!
"इन्दिरा गाँधी–जय" के नारों से–
गुँजित था गगनांगन !
बिलख रहा था एक साथ ही–
सारा ही तो जन—जीवन !!
अजब मार्मिक दृश्य वहाँ का–
अश्रुकणों से पुर था !
भीगी—पलकों के अन्तर में–
उभरा रोष प्रचुर था !!
विह्वल जनता खड़ी हुई थी–
इन्तिजार के क्षण थे !
पत्रकार—दल खड़े साथ ही–
आंक रहे विवरण थे !!

बिलख रहे थे बच्चे – बूढ़े–
और युवा सब लखकर !
तड़प रहा था कोई किसी के–
काँधे पर सिर रखकर !!
बार–बार की चीत्कार से–
हिलती थी दीवारें !
पूछ रही थी बढ़ी व्यथायें–
कैसे साहस धारें !!
समय आँकता रहा दशा को–
और तड़पतें क्षण को !
जब कि चिकित्सक लगे हुये थे–
सीने में हर व्रण को !!
ज्यों ही थे राजीव पहुँचकर–
ठहरे द्वार निकट थे !
त्वरित चिकित्सालय के दोनों–
खोल ले गये पट थे !!

देखी छाया मृत्यु सरीखी, असमंजस में जनमन !
बढ़ी जा रही थी हर पल ही, हरेक मन की उलझन !!
मित्रगणों अरु साथी जन से सारी स्थिति जानी !
केवल जानी ही क्यों, बढ़कर देश-व्यथा पहचानी !!

मकवाना ने कहा कि ऊपर चलकर देखें जानें ।
बोल न निकले इससे आगे–घेरा तीव्र व्यथा ने !!
जाते–जाते हृदय किया मजबूत धैर्य था धारा !
समझ चुके राजीव कि ग़म में डूबा भारत सारा !!
सुनी ध्यान से प्रतिक्रियायें, अवसादों की बातें !
राष्ट्र–शत्रुओं के द्वारा जो चली गई थीं घातें !!
विचलित होने दिया न किंचित सधा लिया था मन को !
सोच लिया-निर्देशन अब क्या देना आज वतन को !!

बिगड़ा यदि संतुलन और तो होगा अहित वतन का !
दीख रहा ज्वालामुखियों सा रुख था तब जन-जन का !!
संयम, धैर्य, सहिष्णुता का साधा रूप समन्वित !
रखा रूप चैतन्य प्रणव्रत यद्यपि मन था चिंतित !!

माँ के निकट पहुँच कर देखा !

टूट पड़ा था गम का पर्वत, परिजन अरु पुरजन पर,
गिरी अचानक घातक बिजली खिलते हुये चमन पर,
देखा मात्र शरीर पड़ा था, उग्रवाद का प्रतिफल,
खड़े रहे राजीव, साथियों के संग, संयत निश्चल,
इधर सोनिया ने देखा तो अश्रु स्वतः उमड़े थे,
कंधे पर अमिताभ हाथ रख करके क्लान्त खड़े थे,
रोया बचपन और जवानी वृद्धावस्था बिलखी,
हाय ! इन्दिरा अम्मा को यह नज़र लग गई किसकी?
फैल रही अवसाद भाव की हर चेहरे पर रेखा !
माँ के निकट पहुँच कर देखा !!

युग समाप्त हो चुका व्यवस्था का माँ के जीवन की,
किससे कहता पुत्र व्यथा को अपने पीड़ित मन की?
सबको ही तो पीड़ाओं ने पूरा तोड़ दिया था,
हाय ! सभी को आज अधर में लाकर छोड़ दिया था,
चढ़ा गई बलिदान जनहितार्थ मिटकर अपने प्रण पर,
गई छोड़ वह छाप अमिट थी भारत के जनगण पर,
केवल आँखें बता रही थीं, क्या कर्त्तव्य अपेक्षित,
चूंकि देश की सारी जनता हर क्षण थी अति चिंतित,
था समक्ष, माँ के जीवन के आदर्शों का लेखा !
माँ के निकट पहुँचकर देखा !!

मर्माहत था मन कैसा दुख से ?
बोल नहीं निकले थे मुख से,
प्रियजन सबसंतप्त बड़े थे,
दम साधे चुपचाप खड़े थे,
मौन चिकित्सक शल्यक सारे !
शब्द नहीं थे पास किसी के !!

हा ! कैसी मनहूस घड़ी थी,
इन्दिरा माँ, निर्जीव पड़ी थी,
ऐसी खाई मार समय की,
टूट चुकी थी डोर अभय की,
काश ! बोल सकती वह क्षण भर,
पल भर को ही सुन लेते स्वर,
कालचक्र ने हा ! चेतन को !
बंद किया होंटों को सींके !!

यह दुर्भाग्य देख भारत का

हल कर डाली निज जीवन में-
जिसने दुविधा बड़ी—बड़ी थी !
स्वयं सिद्धि की अविचल प्रतिमा–
आज वही निश्चेष्ट पड़ी थी !!

महिला होकर मर्दों जैसा-
शौर्य जगत को दिखलाया था !
भारत को सर्वोच्च शिखर पर-
लाकर जिसने बिठलाया था !!

वाणी दी थी चमत्कार को-
जिसने विश्व पटल पर जमकर !
देश अविकसित थे जो पहले-
बढ़े विकासों के नव पथ पर !!
निर्धन–निर्बल जन जी खातिर–
बनी सहायक जो पग–पग पर !
संसृति युत शुचि भव्य भावना-
छायी जिसकी सारे जग पर !!
उसके यश की गुण–गरिमा से--
बचा नहीं था कोई कूचा !
लोहा जिसका मान चुका है-
बार–बार ही विश्व समूचा !!

अग्नि परीक्षा को भी जिसने-
समझी थी सुन्दर फुलवाड़ी !
जहाँ जुल्म को देखा जग में-
बढ़ी सिंहनी सरिस दहाड़ी !!
भरी विलक्षणता से हर दम,
अनुपम क्रियाशीलता धारे !
उसे मसीहा रहे समझते-
निर्धन जन सब ही बेचारे !!
वही हाय ! असहाय ! अजीवित-
पड़ी आठवीं मंजिल पर थी !
देख यही दुर्भाग्य देश का-
काँप रही थी सारी धरती !!

नहीं समय था हाय, रुदन का-
नहीं प्रश्न था बिगलित मन का !

इन्दिरा जी के बाद प्रश्न था-
कौन बने मुखिया शासन का !!

यमन राज्य के दौरे पर थे-
राष्ट्रपति संदेश भिजाया !

पहले ही से पूर्ण रूप से—
स्थिति से अवगत करवाया !!

सुन कर वे लड़खड़ा गये थे-
हृत्—तंत्री पर चोट पड़ी थी !

इन्दिरा जी प्रति आदर था-
और हृदय आस्था बड़ी थी !!

त्वरित भ्रमण का क्रम निरस्तर कर-
शोकाकुल लौटे भारत को !

मन ही मन में कोस रहे थे-
प्रथकवादिता की आफत को !!

कैसे भारत रहे संगठित-
कैसे शासन सूत्र चलेगा !

सोच लिया था भावी क्रम से-
कैसे अगला क्रम बदलेगा !!

चूंकि बड़ी ही नाजुक घड़ियाँ-
थी समक्ष तब ज्ञानी जी के !

क्या होगा उद्घोषित स्वर नव-
कान लगे थे उधर सभी के !!

मंत्री परिषद के सहयोगी-
जो भी थे उपलब्ध मिसिल पर !

उनकी बैठक त्वरित हो गई-
वहीं आठवीं ही मंजिल पर !!

सभी एक मत हुये कि प्रिय-
राजीव देश का भार संभालें !
असमय के तूफानी—वृत से-
आज देश को वही निकालें !!

गौतम गांधी अरु नानक के

दुखी हृदय अपरान्ह छः बजे,
राष्ट्रपति जी थे संस्थान !
पलक द्वार पर अश्रुकणों से—
दीख रहे थे तन—मन म्लान !!
"हाय ! विधाता क्या कर डाला—
यह कैसी रे, विधि की मार !
रही शान्ति की प्रबल शक्ति जो—
दिया मृत्य के घाट उतार !!
लाखों लोगों के जमघट में—
कुछ थे अत्य अधिक मति हीन !
दीख रहे थे यहाँ, वहाँ पर—
क्रोध भावना के आधीन !!
करने को आतुर अनर्थ थे—
संभाषण में भरे उबाल !
त्याग शिष्टता बढ़े अवांछित—
शब्दों का लेकरके जाल !!

किन्तु वाह रे ! ज्ञानी जी तब–
सहनशील तुम सा था कौन !
रहे देखते इन्दिरा जी के–
शव को कुछ क्षण ठहरे मौन !!
श्रद्धांजलि देकर लौटे तो–
बढ़ा द्वार पर पल—पल शोर !
आहत स्वर, मर्माहत मन से–
भीड़ भड़कती थी हर ओर !!
यह थी गलत धारणा मन की–
दोषी केवल वर्ग विशेष !
गाँधी, गौतम अरु नानक के–
भूल गये थे सब संदेश !!

संकट की यह घड़ी बड़ी ही

निश्चित स्वस्थ मंत्रणा के प्रति–
सजग रहा मन बारम्बार !
पंत प्रधान बनाने का था–
रचा प्रेरणा युक्त विचार !!
युग था एक समाप्त हो गया–
दिखला करके चर्मोत्कर्ष !
अग्रिम युग के लिये एक टक–
देख रहा था भारतवर्ष !!
सर्वोपरि था कार्य —व्यवस्था–
करनी थी तब शासन हेतु !
संवैधानिक व्यवस्थाओं के–
अन्तर्गत संचालन हेतु !!

संकट की यह घड़ी मार्मिक–
चिंतन की थी तब उस पल !
ज्ञानी जी ही कर सकते थे–
समाधान इसका केवल !!
निज विवेक अरु अधिकारों की–
सीमाओं के अंतर्गत !
नियम बद्ध हो संविधान के–
और घोषणा हो विधिवत् !!
लेकर निर्णय समझ बूझ से–
पारित किया तभी संदेश !
बुलवाया राजीव सुनर को–
वाहक भेजा गया विशेष !!

जान चुका था देश समूचा इन्दिरा की बलिदान कथा !
नगर–ग्राम सबकी धरती से उमड़ चली थी घोर व्यथा !!
जनता का अधिकाँश भाग भी यही एक मत था उस क्षण !
आगे बढ़ राजीव संभालें–भव्य भारती का शासन !!
चूंकि यहाँ तत्पर अनेक हैं तत्व विनाशक बुद्धि-विचार !
जो कि चाहते वर्गवाद का दिन प्रतिदिन ही नव विस्तार !!
निष्कलंक, निष्पक्ष भावना, यदि मिल सकती कहीं अतीव !
वह केवल है एक व्यक्ति ही इन्दिरा जी के सुत राजीव !!

३१ अक्टूबर १९८४—श्री राजीव गांधी द्वारा भारत के प्रधानमंत्री के पद की शपथ ग्रहण

रहे सलामत देश, वेश जो—
मलिन हुआ वह सवँर सके !
संभले शासन—सूत्र, व्यवस्था—
ग़म की तह से उभर सके !!

सजग राष्ट्रपति, कुशल चितेरे—
राष्ट्र सुरक्षा, हित, रुचि के !
त्वरित प्रथम कर्त्तव्य निभाया—
रखकर प्राण, प्रथा शुचि के !!

भवन राष्ट्रपति का सादापन—
लिये खड़ा अभिनदन में !
गंध भर रहा आत्मीयता की—
यश—गरिमा के चंदन में !!

बिल्कुल सादे समारोह में—
शपथ ग्रहण संपन्न हुआ !
हुआ राष्ट्र वह फिर समर्थ था—
प्रातः जो कि विपन्न हुआ !!

सद्य भावना जिनके प्रति थी–
वह राजीव प्रधान बने !
युवा शक्ति को सौंपा शासन–
ताकि देश महान बने !!
यद्यपि बात खुशी की थी यह–
किन्तु आचरण मातम का !!
दे न सका था आज्ञा इसकी–
जुड़े सौख्य उलसित क्रम का !!

एक ओर था शव मैया का, उधर खिवैया शासन के !
दीख रहे राजीव मूर्ति थे, धैर्य, धर्म अनुशासन के !!
लिखा यही था भाग्य चक्र ने, यश, गरिमायें मिलनी थी !
परितापों के मध्य क्यारियाँ उत्साहों की खिलनी थी !!
दीखा रूप, स्वरूप आत्मगुण निखरा था अपनेपन से !
जोड़ दिया तादात्म सहज ही भारत के जन-जीवन से !!
लोकतंत्र की रखकर गरिमा भारत जगत प्रसिद्ध हुआ !
महाघोर संकट के क्षण में सफल चेतना सिद्ध हुआ !!

यह परिवर्तन

सहज भाव सत्ता हस्ताँतरण–
जग को था आश्चर्य महान !
बिना हील, हुज्जत के सहसा–
एक नया युग था द्युतिमान !!
जिनको था संदेह जगत में–
कलुष भरी थी जिनकी टेक !
भारत भू के लिये अहित की–
सोच बनाकर तजे विवेक !!

इतनी दुविधा, धर्म अनेकों–
अरु भाषाओं का अलगाव !
शायद अब भारत बन जाये–
नित्य समस्या युक्त अलाव !!
लगी ठेस उन सब के मन पर–
जो भारत के थे विपरीत !
या कि जिन्हें अलगाववाद के–
प्रिय लगते थे हर दम गीत !!

यह परिवर्तन, वह परिवर्तन था कि जिससे साख बढ़ी !
उस क्षण चौंकी सारी दुनिया जब राजीव ने शपथ पढ़ी !!
अपनी उपमा स्वयं बन गया, कमल, धवल, निर्मल निस्वार्थ !
कठिन समय में भारत भू के बढ़कर आगे आया पार्थ !!
यद्यपि म्लान कान्ति थी गम से- किन्तु दमकता था आनन !
ऐसा लगता था कि आकृतिमय बनकर आया अनुशासन !!
उच्च भाल, गांभीर्य युक्त मुख, दुख में भी था भाव प्रवीण !
ज्यों भारत का गौरव चित्रित हुआ यहां हो सर्वांगीण !!
दीप्ति युक्त संकल्प शक्ति का मिला सभी को था आभास !
गौरवान्वित होगा निश्चय ही भारत का अब इतिहास !!
सत्ता दल के सब सहयोगी, अनुभव करते थे संतोष !
साथ–साथ ही नव युवकों में उभर रहा था नूतन जोश !!
केंद्रित थी आशायें सबकी, सब ही थे मिलकर आश्वस्त !
शपथ कार्य पश्चात हुये राजीव अन्य कामों में व्यस्त !!

रहे देखते अचरज से सब

लगी हुयीं थी सबकी नज़रें उस दिन हिन्दुस्तान पर,
सारे जग के समाचार पत्रों की रुचि थी इस आह्वान पर,
राजनयिक भी चकित रह गये देख हिन्द की यह गरिमा;
सत्यमेव जयते की छवि थी अंकित कार्य महान पर !

त्वरित बुद्धि—चातुर्य देखकर,
जग भौंचक्का रहा खड़ा !
सिद्ध हो गया लोकतन्त्र यह—
भारत जग में आज बड़ा !!
बड़े आस्थावान लोग हैं—
दृढ़ विश्वासी अनुपम हैं !
संविधान अनुकूल विधान—
तोड़ दिये जग के भ्रम है !!
इतना बड़ा विनाशक संकट—
भारत यूं ही झेल गया !
जब भी आई कठिन परीक्षा—
अंगारों पर खेल गया !!
इसकी समता नहीं जगत में—
ग़म हँसकर सह सकता है !
आँधी अरु तूफ़ानों में यह—
अडिग खड़ा रह सकता है !!

भारत की यह उपादेयता–
बन नूतन आदर्श गई !
इन्दिरा जी निज लोकतन्त्र को–
देतीं नव उत्कर्ष गईं !!
युवकोचित दायित्व वहन का–
समय आज वह आया है !
युगों पूर्व जिसका विधान रच–
शास्त्रों में बतलाया है !!

पुनः आयुर्विज्ञान भवन

इन्दिरा गाँधी की हत्या से–
सारे नेता थे ग़मगीन !
कहीं न उभरे कोई समस्या–
रखकर अपना रूप नवीन !!
राजनरायण जो कि उम्र भर–
रहे झगड़ते थे प्रतिपल !
दीख रहे थे भरी भीड़ में–
अति मर्माहत, अति विह्वल !!
अटलबिहारी भारी मन जब–
पहुँचे थे आयुर्विज्ञान !
बार—बार इन्दिरा के युग का–
आता था रुक–रुक कर ध्यान !!
कितनी कर्मठ, देश भक्त यह–
सन्नारी थी सिद्ध महान !
इसके जाने से लगता है–
लुटा समूचा हिन्दुस्तान !!

अश्रु पूर्ण आँखों से विगलित–
दीख रहे जगजीवन राम !
कहा—"हमारी पुलिस व्यवस्था–
आज देश में है नाकाम !!"
हृत् प्रभ शेखर चन्द्र दुखी मन–
जब पहुँचे तो बोले—हाय !"
नहीं खोजने पर भी संभव–
इन्दिरा गाँधी का पर्याय !!"
तड़प उठे फारूख अब्दुल्ला–
"अरे हाय ! जन–जन की माँ !
रही बहादुर वह जीवन भर–
उसकी आज मिसाल कहाँ ??"
राजनीति का युद्ध, युद्ध था–
कुछ उद्देश्य, उसूलों का !
त्वरितबुद्धि चातुर्य लगन का–
समय—समय की भूलों का !!"

टूट न पाये कहीं एकता

यद्यपि दर्शन था मर्मान्तक–
किन्तु रही उपलब्धि बड़ी !
मौन भाव आशीषें पल–पल–
देती थी माँ पड़ी–पड़ी !!

मौतिकता का स्वर समाप्त था–
आत्म संचरण जारी था !
"देखो बेटा बाहर जाकर–
दिल्ली की हालत बिगड़ी !!

मेरी हत्या हुई, किन्तु वे-
निर्दोषों पर टूट पड़े !
जिनको रहना शान्त चाहिये-
था हर पल, हर एक घड़ी !!

तुम को सौंपा, देश क्लेश में-
कभी न हो भारत माता !
टूट न पाये कहीं एकता-
की मेरे राजीव कड़ी !!

जिसे सजाया और सँवारा-
मैंने नव निर्माणों से !
वह देखो, रे हाय ! हमारी-
यह दिल्ली कैसी उजड़ी !!
मैंने तो सर्वस्व समर्पित-
किया देश की खातिर है !
सब से पहला कार्य तुम्हारा-
शान्ति व्यवस्था करो कड़ी !!
तुम पर है विश्वास मुझे सुत,
नित्य रहोगे चौकस तुम !
गरिमा अक्षुण रहे देश की–
जिसके हित मैं सदा लडी !!"

खो न जायें क्षण कहीं विश्वास के,
खो न जायें स्वर कहीं उल्लास के,
एक नव युग के सृजन के हेतु सारे;
देखते आतुर तुम्हें ही पृष्ट नव इतिहास के !

जान दे दो इन्दिरा ने

पूर्ण साहस वीथिका लो साध प्रण के वास्ते !
संहिता आचार की हो आचरण के वास्ते !!
देखती है राह प्रतिदिन कामना कर्त्तव्य की !
हर कहीं संभावना हो ज्योति-कण के वास्ते !!
दूर पाखी घोंसले की चाह में उड़ता है नित !
नापता है दूरियाँ बस एक तृण के वास्ते !!
जो मिला दायित्व निर्वाहन रहे संकल्प से !
ढील होने पाये किंचित भी न क्षण के वास्ते !!
कीर्ति निर्भर आज से राजीव तुम पर है यहाँ !
जान दे दी इन्दिरा ने एक प्रण के वास्ते !!

भार यह जो आ गया, कंधों पे अतुलित है, मगर !
पर गई दिखला यहाँ पर इन्दिरा यश की डगर !!
चल पड़े, चलते रहो निर्भीक मंजिल की तरफ !
साध कर रखना कदम, लंबा भी हो तो हो सफर !!
देश यह विस्तृत यहाँ की हैं समस्यायें विशाल !
किन्तु तुम में पैतृक गुण राजनैतिक है प्रखर !!
बाँटना जो चाहते हैं आज धरती देश की !
उन सभी तत्वों पे तुमको वीर रखनी है नजर !!
आ रही आवाज देखो वक्त के अंदाज की !
अन्दरूनी शत्रुओं से हो न जाना बेखबर !!

सावधान ! दुराग्रही सपनों से सावधान !
सावधान ! स्वार्थ भरी तपनों से सावधान !
जो सिर्फ मौका परस्ती के लिये दिखला रहे अपनत्व !
सावधान ! आज ऐसे अपनों से सावधान !

किन्तु वाह रे !

धन्य धरा है यह भारत की–
धैर्य धार कर सब सहती है !
जब तक करती नहीं समीक्षा–
नहीं किसी से कुछ कहती है !!

शत्रु ताक में लगते रहते–
चुप से मौका खोज रहे !
कूटनीति के जाल प्रसारे–
ताने बुनते रोज रहे !!

सीमाओं पर हलचल का कुछ–
भनक पड़ी थी कानों में !
मुर्दे भी अंगड़ाइयाँ लेकर–
भड़के कब्रिस्तानों में !!

"यह होगा—अब वह होगा, थी–
रटन यही गुमनामी से !
सोच रहे थे भारत किंचित–
बचे नहीं बदनामी से !!

इन्दिरा का फौलादी पंजा—
ज्यों ही यहाँ समाप्त हुआ !
जग देखेगा अब भारत यह—
गृहकलह को प्राप्त हुआ !!
किन्तु वाह रे ! देश जवाहर—
गाँधी के वह दिखा दिया !
जिसको कहते आत्मनियंत्रण—
जग को मंत्र सिखा दिया !!

मुंह की खाकर शत्रु छुप गये—
अपने ठौर ठिकानों में !
नई शक्ति जब देखी उभरी—
भारत के मर्दानों में !!
यों तो जीवन सफर दीर्घतर—
मिलते मार्ग अनेक रहे !
सिद्ध कर दिया कष्टों में भी—
सारा भारत एक रहे !!

दिग्गजों की बात क्या है—
अग्नि संग खेलेंगे !
आँधियों, बवण्डरों के—
ताव को भी झेलेंगे !!
ले लेंगे हर एक क्षण—
कष्ट धारी शीश पर !
मौत भी जो आयेगी तो—
दूर तक ठेलेंगे !!

अनियंत्रण की बेचैनी से–
हानि अधिक हो सकती थी !
और तनिक सी लापरवाही–
काँटे पथ में बो सकती थी !!
दुविधाओं के महासिंधु को–
बढ़कर करना पार स्वयं था !
हर संभावित दुर्गति—गुर पर–
करना भी अधिकार स्वयं था !!

सबसे बड़ी परीक्षा के क्षण–
थे समक्ष राजीव सुनर के !
भारत की ही ओर लगे थे–
कान बराबर तब जग भर के !!
शल्य चिकित्सक "श्री सफाया"
दीख रहे संतप्त अधिक थे !
हो न सके थे कामयाब वह–
इससे ही अभिशप्त अधिक थे !
यही समय था जबकि नियन्त्रण–
की रखनी थी डोर पकड़ कर !
यद्यपि आते रहे पलक पर–
आँसू भी थे तब भर–भर कर !!
यही समय था सुस्थिर मन से–
अभूतपूर्व निर्णय लेने का !
परिजन, पुरजन, देश–जनों को–
बढ़कर नई दिशा देने का !!

यही समय था बुद्धि परकब्रत के–
समुचित द्रुत पालन का !
निर्भर था संभावित पग पर–
रुख अपने इस क्लान्त वतन का !!

जन—आक्रोश – तूफान

जिस जनता की रही आस्था थी सदैव वैधानिक क्रम में !
सेवा-व्रत-सत् कार्य पद्धति, निष्ठा और लगन संयम में !!
योग्य पिता की योग्य सुता को जिसने शासन पर बिठलाया !!
युक्ति युक्त जो वाजिब था, समय-समय पर कर दिखलाया !!
अधिक समय तक दिया नहीं था मन में आसन संशय भय को !
जैसा मौका देखा वैसा बढ़कर उत्तर दिया समय को !!
उस जनता के मन पर असमय क्रूर काल की चोट पड़ी थी !
अन्तिम दर्शन को इन्दिरा के सिंधु सरीखी वह उमड़ी थी !!
थी न निरी यह भावुकता ही, प्रिय नेता के प्रति श्रद्धा थी !
पीट रही थी छाती पुनि-पुनि बिलख रही बैठी वृद्धा थी !!
"हाय ! इन्दिरा शक्ति–स्रोत थी भारत की निर्माण लगन का !
क्या होगा निर्धन जनता का, क्या होगा रे हाय ! वतन का ??
युवा पीट कर रोते थे सिर, बिलख-बिलख चिंघाड़ रहे थे !
मैय्या-मैय्या कहकर, धरती, दर की छाती फाड़ रहे थे !!
हो जाता था बार-बार ही शोकपूर्ण तब आलम सारा !
जब-जब उठता आसमान तक मर्मान्तक वेदन का नारा !!

"जब तक सूरज चाँद रहेगा !
इन्दिरा तेरा नाम रहेगा !"

फफक उठी करुणार्द्र दिशायें–
धरती और गगन हिलते थे !
अगणित कण्ठों के रोदन—स्वर–
जब आपस में जा मिलते थे !!
बहते अश्रु कणों पर अंकित–
यही समय की करुण कहानी !
निष्फल नहीं कभी जायेगा–
इन आँखों का बहता पानी !!
जिसके कारण इन्दिरा जी ने–
अपने तन की बलि चढ़ा दी !
सुस्थिर अरु सत्यार्थ रहेगी–
भारत भू की वह आजादी !!

नहीं आँच हम आने देंगे–
राष्ट्र एक है एक रहेगा !
शान्ति सदन का रक्षक बनकर–
डटा वीर प्रत्येक रहेगा !!
जिसकी शै पर कार्य हुआ यह–
इन्दिरा गाँधी की हत्या का !
फहर नहीं सकती है किंचित–
उसके यश की यहाँ पताका !!

वाह्य शक्तियाँ कितनी क्या हैं–
समय करेगा निर्णय इसका !
उसके सिर पर चढ़कर बोले–
यह जो पाप रहा है जिसका !!
कोई जितना भी ताकत वर–
होगा, यदि वह दोषी पाया !
दुनिया देखेगी कि इक दिन–
खिंचा शिकंजे में वह आया !!

आयुर्विज्ञान संस्थान के बाहर भीड़ का दृश्य

खड़ी भीड़ ठेली धकियायी ?
जिसने जहाँ जगह थी पायी !!

गणना करना क्या संभव था !
बढ़ता जाता जन कलरव था !!

बार - बार चोटें खाने का !
केवल एक झलक पाने का !!

रहा सिलसिला घंटों जारी !
थकते तंत्र रहे सरकारी !!

पत्रकार भी थक कर हारे !
डोल रहे थे मारे, मारे !!

कहते थे कुछ खड़े विदेशी !
भीड़ नहीं देखी थी ऐसी !!

देख रहे थे नजर—नजर को !
अपनेपन की सिंधु लहर को !!

सब कुछ लुटा—लुटा सा देखा !
खिंची हुई थी गम की रेखा !!

तरह—तरह के अनुमानों में तरह—तरह की बातें !
क्या कह सकते और किसी को, अपने करते घातें !!
अपनों ने जब लूटा जमकर, औरों का क्या कहना !
कहता है अब वक्त यहाँ चौकस अपनों से रहना !!
अधिक न देना भेद किसी को निज जीवन के प्यारे !
धोखा दे सकता है वोही जो है निकट तुम्हारे !!
सत्ता का यह लोभ भ्रष्ट कर सकता मानव मन को !
भ्रष्टाचारी लगा दाँव पर देगा कभी वतन को !!
सत्तालोलुपता दुर्गुण है मानवता के मग में !
यदा कदा परिवर्तन इससे ही होते हैं जग में !!
अपनेपन को आग लगा देती हैं इसकी माया !
भेद नहीं सत्ता लोलुप का आसानी से पाया !!

इन्दिरा जी की अन्तिम झाँकी

समय आ गया था उस क्षण का जिसका करते इंतिजार थे !
संस्थान के बाहर दर्शक, नर—नारी तब बेशुमार थे !!
बढ़ी समस्या वहाँ भीड़ को हटवाने की पल—पल भारी !
दिल्ली में दंगों के कारण, बढ़ी प्रशासन की लाचारी !!
खास—खास विश्वस्त जनों की प्रश्न सुरक्षा का भी तब था !
था महत्व द्रुत संचालन का, कठिन मोड़ पर भारत जब था !!
इससे पूर्व सुना सड़कों पर, विध्वसों के चिन्ह खड़े थे !
जले हुये वाहन राहों पर बिखरे—बिखरे अडे पड़े थे !!
दिये गये आदेश प्रशासन चुस्त हुआ हरकत में आया !
जहाँ—जहाँ से शव था जाना, त्वरित मार्ग था साफ कराया !!
संस्थान से सफदरजंग तक राहें रोके भीड़ खड़ी थी !
इन्दिरा जी की अन्तिम झाँकी पाने को हर पल उमड़ी थी !!

ऐसा वह संक्रमण काल था, जिसका बिवरण रहा असंभव !
पर जनता की पूर्ण आस्था का भी था यह अनुपम उद्भव !!

इसने देखी शव यात्रायें गांधी, वीर जवाहर की भी !
देश—धर्म पर बलिदानी नर, लाघव लाल बहादुर की भी !!

किन्तु हाय रे ! यह हत्या तो घाव दे गई जन—जन मन को !
यही प्रश्न था कौन रखेगा बांध सूत्र में आज वतन को !!

जनता पर निर्भर आगामी युग का अपने था संचालन !
सोच रहे थे धरा गगन, कर्त्तव्यों का हो कैसे पालन !!

उठा लिया शव कंधों पे

नहीं कल्पना की थी जिनकी—
वे क्षण थे दुख द्वन्दों के !

आहत मन से परिजन ने था—
उठा लिया शव कन्धों पे !!

जिस मां ने था भार उठाया—
भारत के निर्माणों का !

उसका ही सर्वस्व साथ था—
था लेकिन बिन प्राणों का !!

अरुण और अमिताभ संग थे, और संग थे मित्र अनेक !
मंत्री परिषद के सहयोगी, अरु अधिकारी था प्रत्येक !!
गम में सब थे साथ—साथ, राजीव बढ़े थे भारी मन !
सोच रहे थे किस परिणति को पहुँच गया मां का जीवन !!

ढका हुआ था शव फूलों से, लाये ऊपर से नीचे !
रक्खा सैनिक गाड़ी पर था सबने ही आँखे मींचे !!
तरल हुई पलकों के आँसू, अविरल धारा से बहते !
सब ही थे चुपचाप वहाँ पर कौन किसी से क्या कहते !!

"इन्दिरा गाँधी अमर रहे–
इन्दिरा गाँधी जिन्दाबाद !"
भीड़ समूची हाय ! हाय ! कर–
बार—बार करती थी याद !!

ख्याति प्राप्त कर चली इन्दिरा, मना यहाँ बलिदानी पर्व !
उसको था नित गर्व देश पर, उस पर है भारत का गर्व !!
जिधर दृष्टि जाती थी, चहुँदिशि खड़ी हुई थी भीड़ अपार !
इधर—उधर से डाल रहे थे दर्शक बढ़ फूलों के हार !!
देख रही थी सहमी—सहमी दृश्य बिदाई का वह रात !
जिसके मन में चुभी हुई थी, इन्दिरा की हत्या की बात !!

लेप रसायन का करके था शव को गया सवाँरा !
कैसे रक्खा जाय सुरक्षित, इसका किया इशारा !!
आभा और दमक ज्यों की त्यों दीख रही थी उस क्षण !
जिस पल वातावरण समूचा, आँक रहा था विवरण !!

थे गुलाब आच्छादित शव पर–
मन से और लगन से !
गये मंगाये चुन–चुन कर थे–
कई–कई उपवन से !!
जवाकुसुम के गंध भरे
गुच्छों की बिखरी पातें !!
ज्यों करती हों इन्दिरा जी से–
जाते—जाते बातें !!

चूँकि उनको थे पसंद ये–
फूल मृदुल अति प्यारे !
सिसक रहे थे वे भी चुप—चुप–
शव पर गम के मारे !!

ज्यों—ज्यों बढ़ता था शव वाहन सफदरजंग की ओर !
अति विह्वल स्वर चीत्कार के छूते थे हर छोर !!
लुटे—पिटे से नारी नर थे दीखे मूक समान !
था अनाथ हो गया समूचा उस क्षण हिन्दुस्तान !!
ढके तिरंगे ध्वज से शव पर फूलों की बौछार !
इंगित करती थी जन–जन का इन्दिरा के प्रति प्यार !!
साथ-साथ राजीव चले थे, बहू सोनिया संग !
चेहरों से था प्रकट नियति ने छीनी सभी उमंग !!

एक सफदरजंग के निकट शव आने पर

अंधकार में डूबा, डूबा सफदर जंग का आंगन था !
श्वाँसे थी बन गई उसाँसें बदल गया सब जीवन था !!
नत्थू सेवक सहित सभी थे इन्तिजार में दर्शन के !
नहीं किसी को रही कल्पना यह ऐसा परिवर्तन था !!
अंधकार बढ़ता जाता था, लगती रात भयानक थी !
मर्माहत थी कोठी सारी, मुर्झाया सा उपवन था !!
हरपल आती रही याद थी सबको पहली रह रह कर !
दिल—दिमाग दोनों थे कंपित भीगा मनका आँगन था !!
रक्त बिन्दु कहते थे रौनक सारी ही तो चली गई !
कोई सहायक बन न सका था मन में यह उद्वेलन था !!
जिस दम उस पर चली गोलियाँ अपने जो थे छिटक गये !
क्रूर काल की छाँव तले, अपनों में क्या अपनापन था ??

ज्योंही आया निकट द्वार के-
शव था, सब जन चीख पड़े
दुखिता कोठी, मुरझा उपवन-
सूना आँगन चीख पड़े !!

शव ठहराया गया तनिक तो-
स्वर थोड़ा सा मद हुआ !
"इन्दिरा गान्धी अमर रहें"
यह नारा पुनः बुलन्द हुआ !!

रहा उपस्थित जो भी जैसे, जहाँ खड़ा, वह मौन अधीर !
बनी हुई थी भीड़ समूची असह्य वेदना की तस्वीर !!
अश्रु-कणों से सींची श्रद्धा, नत मस्तक हो किया प्रणाम !
"अमर रहेगा-जब तक दुनिया, इन्दिरा गाँधी-तेरा नाम !!

पुनि-पुनि पुष्पों की वर्षा थी, पुनि-पुनि उठता था जय घोष !
"हाय रे किस्मत ही उल्टी, किसका, कितना क्या कुछ दोष !!"
वही भवन, वो ही दीवारें, वही पेड़ अरु उपवन शेष !
मानों कहते थे कि किसी में नहीं रहा अब जीवन शेष !!

जो आंगन नित रहा सुशोभित वर्षों लख लख कर हर्षाया,
देशी और विदेशी छवि पर जिसने हर पल रंग जमाया,
लेखा-जोखा जिसमें अनगिन यादों का है इन्दिरा जी की;
चंद क्षणों को रखी हुई थी आज उसी पर उसकी काया !

भूल न जाना सफदर जंग

भूल न जाना सफदर जंग !

ऐसा लगा कि जाते-जाते एक नया संदेश दे रही,
राष्ट्र हितार्थ प्रणमय मन का अंतिम वाक्य विशेष दे रही,
टूट न पाये किंचित भारत, बिगड़ न पाये इसकी शोभा,
इसको किंचित आँच न आये, यह जो मैं परिवेश दे रही,
बड़े-बड़े निर्णय ले–लेकर गति को नव आयाम दिया,
सजग तंतुओं को जीवन के कभी नहीं विश्राम दिया,
अपना हर कर्त्तव्य निभाया, निर्धन जन सेवा के हेतु;
लिये समर्पण भाव हृदय में, देश हेतु हर काम किया,
राष्ट्र एकता हेतु भरी है, आत्माहुति की नई उमंग !
भूल न जाना सफदर जंग !!

मेरा भारत, प्यारा भारत, भारत प्यारा रहे सदा,
और चमकता शान्ति सदन यह जग से न्यारा रहे सदा,
धर्म भाव, समभाव, सहिष्णुता गुण इसके निर्द्वन्द रहें,
गाँव-गाँव, अरु नगर-नगर में रुचि की धारा बहे सदा,

श्रेष्ठ संस्कृति और सभ्यता इसकी समुचित हर्ष बने,
उत्तरोत्तर उद्‌भव का संबल जीवन में हर वर्ष बने,
चमके भारत, दमके भारत, नित विज्ञान प्रयोजन में,
पुनः विश्व गुरु माने रुचि से भारत वह आदर्श बने,
निखरे-बिखरें डगर-डगर पर सच्चे जीवन के नव रंग !
भूल न जाना सफ़दर जंग !!

मैं आहुति दे चली देशहित अपने प्यारे जीवन की,
चाह पूर्ण हो गई राष्ट्र के प्रति है आज समर्पण की,
जिसे सवाँरा रक्त–कणों से मैंने अन्तिम क्षण तक है;
देखो, डाली सूख न पाये कोई मेरे उपवन की !

तीन मूर्ति भवन की ओर

बढ़े रात के अंधकार को चीर रहा था क्लान्त रुदन,
लाखों लोगों की आँखों से उमड़ रहे थे कतिपय घन,
महाशोक की लहर, शहर के हर चप्पे पर व्याप्त हुई;
बार, बार, हर बार काँप कर सहम उठा था नील गगन !

राह चाह कर भी तो किंचित रोक न पाये अश्रु प्रवाह,
झुक-झुक करते वृक्ष तलक भी कर्त्तव्यों का थे निर्वाह,
पंक्ति-पंक्ति की शक्ति क्षीण ज्यों कर डाली थी मातम ने;
नहीं चेतना ही लक्षित थी, नहीं रहा किंचत उत्साह !

वही द्वार जो कई बार झुक-झुक अगवानी करता था,
तीन मूर्ति का रूप स्वयं ही उसको देख निखरता था,
भरता था दम नेहरू युग का कीर्ति सजाकर इन्दिरा की;
जब-जब आती रही इन्दिरा तब-तब स्नेह उभरता था !

आज वही उलझे-उलझे से प्रश्न लिये निज आँखों में,
देख रहा रोमांचक पीड़ा, हर किसलय की पाँखों में,
आकृति जड़ पर, अनुभव चेतन महा दुखी था आज खड़ा,
लिपट रही जन-जन की पीड़ा, रोती हुई शलाखों में !

लिया तोप गाड़ी से धीरे-धीरे शव को झुका नयन,
कंधा देते रहे सिसकते पुत्र और सारे परिजन,
जहाँ कभी खेली खाई थी व्यस्त रही संग पापू के;
लिये अंक में तड़प उठा था तीन मूर्ति का वही भवन !

दीप लिये चल रही सोनिया आगे—आगे आहत सी,
पूर्ण रूप भारतीय वेश में धैर्य धार मर्माहत सी,
हाय ! कारुणिक दृश्य सामने, वह सिसका जो देख रहा;
संस्कार युत रहना, सहना, इन्दिरा जी की आदत थी !

सैनिक, दर्शक, परिजन पुरजन अरु अधिकारी बिलख रहे,
पहले से तैयार मंच पर, रखकर शव को निरख रहे,
निकट द्वार के उचित व्यवस्था, पुष्प सजे थे श्रद्धा से;
अन दीखे चारण इस युग के खड़े जगाते अलख रहे !

हर प्रबन्ध पर पूर्ण नियन्त्रण, रखे स्वयं राजीव खड़े,
पास खड़े नटवर सिंह जिनकी आँखों से आँसू उमड़े,
अरुण और अमिताभ व्यस्त से देख रहे थे संयत मन;
राहुल और प्रियंका दोनों बच्चे आहत दीख पड़े !

यूनुस परिजन अंतरंग, प्रिय मर्माहत पर धैर्य धरे,
थे प्रबन्ध में व्यस्त पस्त से आँखों में थे अश्रु भरे,
युक्ति सहित था मंच बनाया, सुविधा को तब दर्शन की;
श्रद्धानत शुचि मौन वंदना पुष्प पड़े बिखरे, बिखरे !

एक ओर से खास अतिथिगण श्रद्धा सुमन चढ़ाते थे,
अन्दर—अन्दर परिक्रमा कर लौट वहीं से जाते थे,
और दूसरी ओर आम जनता की खातिर द्वार खुले;
रात गये भी पंक्तिबद्ध बहुदर्शक स्नेह दिखाते थे !

शायद इतने जनबल की थी नहीं कल्पना उनको भी,
पूर्व प्रबन्धों हेतु हिदायत पहले से ही जिनको थी,
यद्यपि, दिल्ली धधक रही थी, फिर भी दर्शक आते थे;
अन्तिम दर्शन हेतु हृदय में प्रबल चाहना उनको थी !

ठहर—ठहर कर सिन्धु लहर सी पल—पल बढ़ती जाती थी,
और एक से एक नया नारा भी गढ़ती जाती थी,
रहे अवांछित तत्व यहाँ भी जो चिनगी भड़काते थे;
किन्तु निगाहें सैनिक दल की सब कुछ पढ़ती जाती थी !

बड़ी युक्ति से रखा नियन्त्रण, सबसे मृदु व्यवहार किया,
भीड़ बढ़ी तो तनिक दूर से सुमनों को स्वीकार किया,
लिया, दिया पाँवों में रख फिर उठा त्वरित अन्यत्र किया;
विनत भाव से व्यवहारिक गुण गौरव का शृंगार किया !

राजनयिक हर एक प्रभावित हुआ देखकर गति क्रम को
तोड़ दिया था जिसने उस दिन सिंधु पार के हर भ्रम को,
नहीं किसी को सुविधा की कुछ कमी खली थी क्षण भर भी;
सभी सराहते रहे अंत तक वहाँ प्रहरियों के श्रम को !

सामयिक उद्बोधन

खड़े रहे राजीव सुसंयत, धैर्य धार कर मन में !
कठिन परीक्षा के क्षण थे ये, आज यहाँ जीवन में !!
देख रहा था देश-धर्म तब रस्ता नई दिशा का !
अनुशासन के साथ पुनः थी होनी नई व्यवस्था !!

क्रम श्रद्धाँजलि का जारी था, पूर्ण नियोजित क्रम से !
सधे हुये सैनिक प्रहरी थे, बाँधे पंक्ति नियम से !!
राष्ट्रपति अरु अन्य कई नेता थे वहाँ पधारे !
नत मस्तक श्रद्धाँजलि देकर बाँई ओर सिधारे !!

देशी और विदेशी दर्शक-अनगिन आते जाते !
देख-देख कर अश्रु-कणों को रोक नहीं थे पाते !!
अद्भुत देखा धैर्य सभी ने तब राजीव सुनर का !
ध्यान केंद्रित महसा ही था, उस पर दुनिया भर का !!

संयम था साक्षात वहाँ पर ज्यों धर कर निज काया !
विचलन की किंचित भी क्या थी फटक सकी कुछ छाया !!
और अजब गाँभीर्य युक्त था शौर्य विभा सा आनन !
असमय का तूफान झेलकर सुस्थिर था मन-आँगन !!

बदले की थी कहीं भावना—उपजी क्या पल भर को ?
साध लिया था अपने पन से, जमकर अपने स्वर को !!
भड़क उठी जो हिंसा चहुं दिशि उसे रोकना तय था !
अग्रिम पग क्या होगा जमकर किया वहीं निश्चय था !

माँ की शिक्षा यही रही जीवन उपमेय बनाना !
जिससे पाये जगत प्रेरणा वह करके दिखलाना !!
संकट का जैसा भी क्षण हो साहस नहीं डिगाना !
उन्नति का पथ कठिन मगर है नहीं असंभव पाना !!

था समन्वय का नया रुख—
साथ ले प्रतिपक्ष को !
राजनीतिक अनुभवों से—
युक्त गुण स्वर दक्ष को !!

बढ़ चले अपनी डगर—
राजीव हो करके निडर !
देखने के हेतु अपनी—
आँख से जलता नगर !!

गये सकपका सब अधिकारी क्रियाशील हो गये तुरन्त !
दंगे और फिसादों का अब करना होगा निश्चित अंत !!
कदम—कदम पर नई चुनौती देखी, देखा धुआँ—गुबार !
हाय ! अहिंसा तेरे कारण कैसे—कैसे अत्याचार !!

त्वरित दिये निर्देश पुलिस को, कड़ी व्यवस्था के अधिकार !
कहीं न कोई लुटे-पिटे अब कहीं न कोई हो लाचार !!
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे सब श्रद्धा सुस्थल रहें पवित्र !
कहीं न कोई क्षति पहुँचाये, रहें सभी मिल-जुलकर मित्र !!

था त्वरित पहला कदम यह

था त्वरित पहला कदम यह,
शान्ति के श्रृंगार में !
शक्ति का परिचय स्वयं था—
सामयिक उद्‌गार में !!

भावना में कामना थी—
देश—हित कल्याण की !
त्वरित अनुशासन प्रवृति के—
नीति के निर्माण की !!

साथ ही था साहसिक—
परिचय मिला राजीव का !
हो गया आरम्भ था नव-
सिलसिला राजीव का !!

शान्ति की समुचित व्यवस्था—
के दिये आदेश थे !
हो गया तादात्म्य संयम का—
स्वयं परिवेश से !!

जो कि दंगों की दशा को—
देख करके पस्त थे !
इस त्वरित आदेश से—
कुछ हो रहे आश्वस्त थे !!

तीन मूर्ति भवन में श्रद्धांजलि क्रम

दूर–दूर से आये दर्शक, पंक्ति बद्ध थे खड़े हुये,
लाल, श्वेत फूलों के गुच्छे इधर-उधर थे पड़े हुये,
उमड़ पड़ा श्रद्धा का सागर, ज्यों-ज्यों बढ़ती रात गई;
इसी भवन में इन्दिरा जी के जीवन–व्रत थे जड़े हुये !

ऐसा लगता था चेहरे से जैसे कि बस सोई है,
दमक रहा मुख मंडल, उज्ज्वल, नहीं चेतना खोई है,
किन्तु हाय रे ! विधि विधान कुछ पार न तेरा पाया जग !
कहाँ देश की प्रगति–विधा की आकर नाव डुबोई है !

निकट दरी पर बैठे परिजन, शोकाकुल नर-नारी थे,
देख रहे थे हर मनुष्य के जीवन की लाचारी थे,
झलक रही थी अगम वेदना, सबके झुकते चेहरों से,
हा ! होगी क्षति और कहाँ तक, हिंसा की बीमारी से !

ध्वनि–विस्तारक यंत्र सूचना देने में थे व्यस्त त्वरित,
अरु टी० वी० से दृश्य प्रसारण होता था क्षण-क्षण चित्रित,
हृदय विदारक स्थिति से थे अवगत, देश-विदेश हुये;
पल-पल का हर दृश्य हुआ था जग के द्वारा अवलोकित !

"इन्दिरा गाँधी अमर रहे" नारे रुक-रुक कर गूँज रहे,
कुछ दर्शक तो विनत भाव से बढ़कर पग थे पूज रहे,
बलिदानों की श्रेणी में यह सर्वोपरि बलिदान हुआ;
लेकिन प्रश्न वहाँ पर कुछ तो बिल्कुल ही अनबूझ रहे !

पक्ष–विपक्ष सभी दल-नेता आये सुमन चढ़ाने को,
श्रद्धा की अभिव्यक्ति हेतु अरु अन्तिम दर्शन पाने को,
भूल नहीं सकती है दुनिया युगों-युगों तक यह गाथा;
जो कहती—उत्सर्ग भावना से जीवन दमकाने को !

कोटि–कोटि बेटों की माँ के प्रति आदर सम्मान बढ़ा,
युवक मंडली के मन में कर्तव्यों का अभिमान बढ़ा,
यही वास्तविक जीवन-दर्शन, कहते देख विदेशी भी;
शाश्वत गौरव मार्ग यही है जिस पर हिन्दुस्तान बढ़ा !

जन–सेवा–हित किया समर्पित

यों तो आते, जाते रहते जग में मनुज घनेरे !
जाना उसका जिसको रोए, दुनियाँ साँझ सवेरे !!

जीने को तो सब जीते हैं, हँसी खुशी अरु गम में !
जीवन उसका जो कि न जीये रहकर किंचित भ्रम में !!

मानव जीवन पाकर जिसने निज कर्मों को तोला !
उसको परखा सदा जगत ने, उसकी ही जय बोला !!

समय पारखी, मनुज प्रगति का आंका करता क्रम है !
उसे सफलता मिलती जग में जिसे सुहाता श्रम है !!

क्षण न निरर्थक कभी गँवाता जो कि कहीं भी अपना !
निश्चय ही साकार हुआ है उसके सुख का सपना !!

आत्म नियंत्रण, संयम विधिवत जो रखता श्रम–क्रम में !
कभी न खोता रंच मात्र भी समय कहीं वह भ्रम में !!

श्रेष्ठ सफलता हेतु चाहिये, लगन–मगन मन अरु लय !
लक्ष्य प्राप्त हो जाया करता बिना किसी भी संशय !!

मौलिक गुण जीवन के यदि मन, साध-साध कर सजता !
जगत मध्य उस गुणी मनुज का प्रतिदिन डंका बजाता !!

जन–सेवा–हित किया समर्पित जिसने अपना जीवन !
धरती गाती गीत उसी के नभ करता अभिनंदन !!

दुनिया के इतिहास पृष्ठ में बढ़ती उसकी महिमा !
जिसने निज के साथ—साथ ही रखी देश की गरिमा !!

धैर्य धार कर निज जीवन में झेले जिसने संकट !
छू लेती उसकी जिज्ञासा, श्रेय, सफलता–चौखट !!

भाव समर्पण का जिसमें भी, देश-काज के प्रति है !
पूरित करता निज स्वभाव से वह अभाव की क्षति है !!

नारी हो या नर समान यश–अर्जन–क्षेत्र पड़ा है !
यहाँ भावना से सदैव ही निज कर्तव्य बड़ा है !!

जिसे समय का मूल्य आँकने का कुछ चाव नहीं है !
गरिमा—गुण का पा सकता वह मनुज स्वभाव नहीं है !!

ध्येय रहा बस खाना, पीना, मौज उड़ाना जग में !
लक्ष्य उचित कब आ सकता है उस मनुष्य के दृग में !!

करता मनुज यहाँ सार्थक जो भी हैं जीवन को !
बहुत निकट पाता है अपने वह तो निखिल भुवन को !!

किसके रोके रुका समय है अपने क्रम से चलता !
चाँद समय से आता, जाता, सूरज उगता—ढलता !!

लिखी समय से जिसने क्रमवत, अनुभव–कीर्ति–कहानी !
उसकी यश—गरिमा दुनिया ने रुचि भर कर पहचानी !!

झुका नहीं जो तूफानों से, कभी न ग़म से टूटा !
जन–विश्वासों का यश उसने, दोनो हाथो लूटा !!

कथनी—करनी रही एक सी जिसकी इस दुनिया में !
हुआ सम्मिलित सारा जग है उसकी निजी व्यथा में !!

मार्ग निदेशन मिलता जग को, उसके ही अभिमत से !
जिसे देश से प्यार, प्यार है जिसे एकता–व्रत से !!

जिसने रोका, प्राण अड़ाकर, डट कर मार्ग प्रलय का !
उसे त्याग से महाभाग मिलता है यश अरु जय का !!

इन्हीं गुणों से पूर्ण इन्दिरा जीत रही थी जग में !
जड़ी दमक थी सफलताओं की हर विकास के नग में !!

किन्तु अधिक विश्वास, ह्रास कर देता शक्ति-विधा का !
अवसर जग में स्वार्थ उठाता लाभ सदा सुविधा का !!

क्रमवत चेतन, बुद्धि परख रख करके अपने मन में !
मानव सकता क्लिष्ट गुत्थियाँ खोल यहाँ जीवन में !!

१ नवम्बर १९८४ तीन मूर्ति भवन

ऐसा लगता सारा जग ही-
आकर द्वार खड़ा है !
और इन्दिरा का शव-
निर्मल, उज्ज्वल शान्त पड़ा है !!

चढ़ता जो भी सीढ़ी पल भर-
जब पाने को झाँकी !
नम हो उठती उसकी पलकें-
लख कर रीति यहाँ की !!

विश्व समूचा इन्दिरा जी ने-
मरकर यहाँ समेटा !
खड़ा हुआ अभिवादनरत है-
उसका प्यारा बेटा !!

परिक्रमा को लखते-लखते-
अविरल आँसू झड़ते !
लुढ़क—लुढ़क कर पुष्प पादपों-
पर है गिर-गिर पड़ते !!

पुनः आ गये राष्ट्रपति जी-
मुख पर गहन उदासी !
अगले दिन फिर श्रद्धांजलि को-
आये दिल्ली वासी !!

आये हैं उपराष्ट्रपति भी-
वेदन लिये हृदय में !
हा ! कैसा, विध्वंस मच गया,
युग के कठिन समय में !!

भारत भू की कठिन परीक्षा-
हर क्षण है अब जग में !
क्या भविष्य रखता है अगला-
युग है अपने दृग में ??

प्रातः से लग रहा बराबर-
सबका आना—जाना !
दूर—दूर तक कठिन बहुत है-
ओर—छोर का पाना !!

जीवन भर जो रहे विरोधी-
किससे करें खिलाफत !
गई दिशा नूतन दिखलाकर–
उसकी यहाँ शहादत !!

जिसके प्रति श्रद्धानत सारे-
पुष्पांजलि से शोभित !
मानो—देती मौन संदेशा-
कार्य करो वीरोचित !!

श्री जगजीवनराम पधारे-
उमड़ी याद पुरानी !
अमर हो गई आज इन्दिरा-
देकर नई कहानी !!

हैं आये ये अटल बिहारी-
स्वर—भाषा—रुचि—संयत !
"वाह इन्दिरा, बलि का गौरव-
पाया रह कर प्रणवत !!

श्रद्धानत है साथ सभी के-
आये यह चन्द्रशेखर !
भर आंखों में दृश्य विगत के-
कर सुमनाँजलि लेकर !!

धीरे-धीरे श्रद्धाँजलि का-
क्रम सबने अपनाया !
नमित भाव संवेदन स्वर में-
अपनापन छलकाया !

आये हैं ये उच्चाधिकारी—
श्रद्धा नत निज क्रम से !
पुष्पाँजलि अर्पित करते हैं-
सत्वर सौम्य नियम से !!

सुमनाच्छादित शव पर जब—जब—
उठती दीन निगाहें !
बरबस अधरों से फूटी हैं—
करुणा पूरित आहें !!

पहरे पर सिर के पीछे—
दो सेना के अधिकारी !
करते हैं परिवर्तित क्रम ये—
अपने बारी—बारी !!

सारा दृष्य घना मार्मिक—
छूता हृदय पटल को !
विह्वल करता है हर पल ही—
सारे दर्शक—दल को !!

पूर्ण शान्ति का राज चतुर्दिक—
हावी गहमा—गहमी !
क्या होगा अब नव भविष्य का—
दृष्टि सभी की सहमी !!

किन्तु खड़े राजीव सुसयत—
उद्यत अपनेपन में !
दबा रहे हैं तूफानों के—
झोंको को निज मन में !!

व्यक्ति खास कुछ आये हैं—
तो दीखी हलचल भारी !
पर चेहरों पर अंकित है—
कुछ स्वाभाविक लाचारी !!

कुछ तो राष्ट्राध्यक्ष पधारें—
पंत—प्रधान खड़े कुछ !
इन्दिरा जी से परामर्श के—
थे अरमान बड़े कुछ !!

इतने प्रतिनिधि सारे जग के,
वह भी बारी बारी ?
देख रहे मर्माहत दर्शक–
की पल—पल लाचारी !!

लंका, अरु जापान, जमैका–
रूस, अरु चीन सभी तो !
आए हैं श्रद्धाँजलि–
अर्पित करने इन्दिरा जी को !!

वियतनाम के नेता अरु ये–
राष्ट्राध्यक्ष पधारे !
वृद्धावस्था में भी आकर–
मन के भाव प्रसारे !!

ठहरे कुछ क्षण देखा परखा–
श्रद्धा—सागर उमड़ा !
इन्दिरा जी के जाने से–
जग–शान्ति–सन्तुलन बिगड़ा !!

ये आये लो कैनेथ कोंडा--
सिसके, फफक पड़े हैं !
अविरल आँसू बहे आँख से–
जड़वत आप खड़े हैं !!

मिले त्वरित राजीव सभी से–
धैर्य धार कर अनुपम !
कुछ से परिचय पहला-पहला–
कुछ से नूतन गति क्रम !!

श्रीमाओ लंका से आई—
अपनापन दिखलाती !
लाख चाह कर भी—
आँसू की धारा रोक न पाती !!

लखकर दर्शक ज्वार प्रबलतम—
विश्व हुआ सुस्तंभित !
पूत—सपूत अकूत धैर्य से—
करता रहा प्रभावित !!

खड़ा दूर ग्रामीण एक जो—
साथ पौत्र के आया !
श्वेत केश, अनुभव—गरिमा—
की दर्शाते हैं छाया !!

लगा पंक्ति में श्रद्धानत हो,
देख रहा था पल—पल !
लंगड़े, लूले तक हैं आये—
श्रद्धाँजलि को केवल !!

दूर—दूर से ग्रामीणों के—
दल के दल थे उत्सुक !
देख रहे शव इन्दिरा जी का—
उचक—उचक अरु झुक—झुक !!

धरे पोटली सिर पर अपने,
खड़े पंक्ति में सारे !
जाने—कितनी दूर—दूर से—
आये हैं बेचारे !!

वे गरीब जिनकी खातिर वह–
बनी मसीहा हर दम !
मध्य देश, या कि बिहार से–
आये रखकर सयम !!

कठिन दिक्कते सही सफर की–
सुनते ही थे दौडे !
चले साथ वह पूंजी लेकर–
जितने पैसे जोडे !!

केवल अन्तिम दर्शन पाने,
साध सजा कर मन की !
वह देखो अधा भी–
आया सुन आवाज वतन की !!

बच्चे, बूढे, अरु महिलाये–
घंटो—घटो ठहरे !
ऊँचे–ऊँचे नारो को सुन–
घिरे शोक मे गहरे !!

वहा वृद्ध श्रद्धॉजलि देकर,
निकला आँखे मीचे !
कहा पौत्र से–'आ बैठेगे–
तनिक पेड के नीचे" !!

जिज्ञासा थी जगी पौत्र में–
सुधि नव मन मे साधी !
बोला–" बोलो, बाबा कैसे–
बनी इन्दिरा गाँधी !!

"जिसके मरने पर जग सारा—
रोया, दिल्ली आया !
वार-पार कुछ नहीं भीड़ का—
अभी तलक भी पाया !!

कैसे इतनी बड़ी हो गई,
हमको यह बतलाओ !
क्या विशेषता थी इन्दिरा में
बाबा, यह समझाओ !!"

बाबा बोले—"बैठ यहाँ रे,
तुझे सभी बतलाऊँ !
दिल्ली से लेकर इन्दिरा—
तक का इतिहास सुनाऊँ !!

इस महानता के पाने को,
तरसे बड़े-बड़े हैं !
नहीं उन्हें भी यहाँ मयस्सर
जिनके महल खड़े हैं !!

इससे पहले कि इन्दिरा के,
जीवन वृत को खोलूँ !!
पहले सुन दिल्ली की बाबत
जो कुछ भी अब बोलूँ !!

यह अतीत से रजधानी है,
भारत के शासन की !
इस पर निर्भर रही साख है"
अपने हिन्द वतन की !!

मर्माहत दिल्ली

जग प्रसिद्ध यह नगर, डगर पर जिसकी जय के स्वर हैं!
अर्थ तन्त्र अरु सृजन मंत्र को, साधे लहर, लहर हैं !!
है इतिहास अनोखा इसका, यह दिल्ली अलबेली !
खुशियों के अंबार लगाकर, अंगारों से खेली !!

इसे याद हैं कौरव पाँडव, अरु उत्थान, पतन भी !
इसे याद चौहान वीरवर अरु खूँखार यवन भी !!
इसे याद हैं दगा बाजियाँ निज धर में अपनों की !
इसने देखी डोर टूटती नित सुख के सपनों की !!

इसे याद गृह–चोर, लुटेरों, बटमारों के युग हैं !
इसे याद बर्छी–भालों अरु तलवारों के युग हैं !!
कई बार यह बसी यहाँ पर कई बार यह उजड़ी !
कई ताकतें रही युगों तक, कई जमीं अरु उखड़ी !!

देखा है पैशाचिक युग भी इसने हमलावर का !
सजग रही तो किया सामना, इसने हर बर्बर का !!
बही खून की नदियाँ इसके धूल भरे आँगन में !
देखें हैं अंबार सिरों के इसने निज जीवन में !!

लाल किले की बुनियादों को इसने उठते देखा !
यमुना के अधरों पर देखी मुस्कानों की रेखा !!
मुगलों के घर चुगलों की भी देखी इसने पैठें !
आग लगाते थे जो शाही घर में बैठे, बैठे !!

रनिवासों की साँसों को पढ़ इसने लिखी कहानी !
बाप अरु बेटों की भी देखी इसने है नादानी !!
देखा है वह युग भी इसने जब हकीम अरु जनखे !
बने हुये थे श्रेष्ठ मुसाहिब, शहँशाह के मनके !!

षडयन्त्रों का युग भी देखा इसने कदम-कदम पर !
देखा क्या कुछ था निर्भर तब शहँशाह के भ्रम पर !!
देखे इसने तख्त-ताज की खातिर कटते सिर थे !
इसे पता है हिजड़े तक भी इस फन में माहिर थे !!

देखे जद्दी सेठ और उमराव लगन के पक्के !
इसे याद है जब पल भर में सब खाते थे धक्के !!
इसे याद जब आई गुलामी व्यापारिक-सुर-लय में !
नींद नहीं आई थी इसको, क्षण भर भी संशय में !!

परख रही थी, आने वाले दुर्दिन की यह रेखा !
इसके मन पर अंकित अब भी जो कुछ जब था देखा !!
आये थे व्यापारी बनकर गोरे पाँव जमाने !
पहुंच गये शाही महलों में घुसकर किसी बहाने !!

कोई तो बन गया चिकित्सक, कोई सैनिक, साथी !
आती जाती हवा देखकर बढ़ा स्वार्थ का हाथी !!
धीरे—धीरे घुसपैठों का रहा सिलसिला जारी !
राख बन गई षडयंत्रों के कारण साख हमारी !!

भूल चुके थे कर्त्तव्यों को राजा, योगी, चारण !
हटे मरहठे सीमाओं से अंग्रेजों के कारण !!
बन बैठे व्यापारी शासक, शासक पेंशन भोगी !
और दुर्दशा इससे ज्यादा क्या दिल्ली की होगी !!

वीर—सूरमा लगे टहलने बनकर ढोंगी, जोगी !
कदम—कदम पर अवसादों के बने हुये थे रोगी !!
लुटी संस्कृति और सभ्यता, सदियों जो कि सहेजी !
साज—बाज सब हुये विदेशी और राज अंग्रेजी !!

ले बैठी थीं पूर्ण देश को शाहों की रंग रलियाँ !
तंग हो गईं अपने ही घर दिल्ली में थीं गलियाँ !!
गालिब, मोमिन, दाग देहलवी के भी सुने तराने !
रंग दिखाये तूने क्या—क्या वाहरे, खूब जमाने !!

किन्तु न छोड़ा अपनापन था, दिल्ली के दर्शन ने !
आखिर सहकर घोर गुलामी, ली करवट जन—जन ने !!
उठी पड़ौसी मेरठ से लौ एक नई जनमन में !
"सहन गुलामी नहीं एक पल हमको आज वतन में" !!

इसे याद है बिफर उठा था तब कैसे जन जीवन !
कफन बाँध कर खड़ा हो गया सिर पर सन सत्तावन !!
इसने देखा आजादी की लौ का दौर यहाँ पर !
केवल लहरें रही क्रान्ति की सधा न और यहाँ पर !!

जुड़ा क्रान्ति से

जुड़ा क्रान्ति से शाह जफर था, जनता का आह्वान किया !
बनी श्रेष्ठतम जिसकी गाथा, ऐसा था बलिदान दिया !!
चौराहों पर फाँसी का जो दौर चला तो हल—चल थी !
सरे आम बेटों को मरते लखकर दिल्ली व्याकुल थी !!

बड़े—बड़े राजे, महाराजे फँसे गुलामी दल—दल में !
विद्रोहों को मिली प्रेरणा थी दिल्ली के दगल में !!
जहाँ बैठकर साई, सुथरे भाव नये उपजाते थे !
डगर—डगर पर फिर दिल्ली की नये तराने गाते थे !!

"गंगा उठो कि नींद में सदियां गुजर गईं !
सोते—सोते न जाने किधर गई !!"

था जागा दुर्भाग्य कि जब यह गोरो के आधीन हुई !
क्षीण हुआ बल, छल के कारण काया त्वरित मलीन हुई !!
क्या मजाल जो पत्ता खड़के पग—पग मिलती थी धमकी !
'जी हुजूर' कहलाने की थी प्रथा बनी नव उपक्रम की !!

संस्कृति, भाषा, अपनेपन का ऐसा हाय, विनाश हुआ !
हर कोने में हाय, जगत के भारत का उपहास हुआ !!
ये दिन अपनों के कारण ही पड़े देखने दिल्ली को !
जिनका लेखा कठिन, कष्ट वो पड़े झेलने दिल्ली को !!

पूर्ण शक्ति से धर्म—मर्म पर भी गोरों ने वार किया !
नई संस्कृति दी अंग्रेजी जिसका खूब प्रचार किया !!
यद्यपि हैं आजाद आज हम, अंग्रेजी के दास बने !
क्या सभव है नही कि अपनेपन का नव इतिहास बने ??

भेद भाव की लीक डालकर किया विभाजित जन-जीवन !
दिल्ली रोई जब देखा था-लुटा देश का तन—मन—धन !!
हिन्दू अरु मुस्लिम दो कौमें प्रथक—वाद स्वर जोड़ दिये !
घृणित चाल ने सदियों के सारे ही रिश्ते तोड़ दिये !!

कुप्रभाव उसका है अब तक हिन्दू आज विभाजित है !
'सिक्ख अलग है कौम नये स्वर करते आज प्रताड़ित है !!
सेना का सगठन किया था, जाति वर्ग के नामो पर !
निज गुर्गे मुखिये बिठलाये दूर— दूर तक ग्रामों पर !!

जी हुजूर सरकार' कहा था जिसने उसको पार किया !
स्वार्थ— साधना ललक, झलक मे जी भरकर अधिकार दिया !!
स्वाभिमान मे जीना दूभर, अरु सम्मान लुटाया था !
हाय रे, अपनो ने हा त हिन्दस्तान लुटाया था !!

भारत मा को जकड लिया था कानूनो के घेरे मे !
कोई अन्तर नही रहा था, सध्या और सवेरे मे !!
मरी आत्मा थी दिल्ली की, रोई प्रति पल दीन हुई !
खोया गौरव था अतीत का, स्वय चेतना हीन हुई !!

सुनता कौन यहाँ दिल्ली की, भीगी बिल्ली बनी रही !
लंदन से भेजे नदन की चेरी दिल्ली बनी रही !!
केवल कुछ चालाक आदमी रचे दुमहले ताशों पर !
रखते थे पग बढ़ा चढ़ा कर दीन जनों की लाशों पर !!

डंडे के बल राज काज का संचालन नित होता था !
दुर्दिन की छाया में हा ! सौभाग्य देश का सोता था !!
जिस दिल्ली के दिल पर लेखा, रहता था मर्दानों का !
निज घर में व्यवहार सहा करती थी वह हैवानों का !!

एक सदी का लम्बा अनुभव, रह रह कर तड़पाता था !
बार–बार अंग्रेजी शासन, इसका हृदय जलाता था !!
यद्यपि था कंकाल मात्र पर, भारत फिर भी भारत था !
नव विवेक स्वर, स्वयं सिद्धि का तत्पर करता स्वागत था !!

लगा खौलने रक्त, वक्त ने जब इसको ललकारा था !
पूर्व सदी की उदासीनता का कर भार उतारा था !!
भाव जगे, खुल गई रगे थी, तन में थी स्फूर्ति नई !
इसके मन मे स्वतन्त्रता की जाग उठी थी मूर्ति नई !!

स्वाभिमान के पंख लग गये नही रहा था मात्र विपन्न !
दिवा स्वप्न ही मही देखकर जन विशेष थे हुये प्रसन्न !!
नगर–नगर में नई लहर ने नवजीवन का मन्त्र दिया !
देश हेतु सेवा करने का समुचित भाव स्वतन्त्र दिया !!

मिली जहाँ से नई प्रेरणा, रूस—क्रान्ति का असर पडा !
नये मोड़ पर स्वाभिमान के भारत आकर हुआ खड़ा !!
एक और था गाँधी बाबा की लकुटी ने काम किया !
और दूसरी ओर क्रान्ति—दल ने था सर अंजाम दिया !!

हिलता रुख दिल्ली ने देखा, तब अंग्रेजी शासन का !
था प्रभाव जनता पर पूरा गाँधी, नेहरू–भाषण का !!
जन आन्दोलन लखा तीव्रतर इसने आनन–फानन में !
सब कुछ अपना लगा दिया था दिल्ली ने संचालन में !!

सुनी वार्ता भी अनेक थी वायसराय अरु गाँधी की !
देखी थी रफ्तार तीव्रतम गाँधी जी की आँधी की !!
पड़ा वास्ता इसका था जब गोली अरु बम गोलों से !
इसे याद साम्राज्यवाद जब काँप उठा हिचकोलों से !!

कहाँ भूल सकती है दिल्ली, जन–जन के बलिदानों को !
उन सबके सर्वस्व त्याग को, लोहे के इन्सानों को !!
याद इसे है इन्कलाब की लहरों का वह तीखा पन !
जिसके धक्के से हिलता था लंदन तक का सिंहासन !!

वह दिन भी है याद इसे जब सफल हुआ था आन्दोलन !
झूम उठा था आजादी का सूर्य देख कर जन–जीवन !
याद इसे पंद्रह अगस्त की वे सब प्यारी सी घड़ियाँ !
सत्ता के हस्तांतरण पर छूटीं जब थीं फुलझड़ियाँ !!

नेहरू पंत प्रधान बन गये भारत था आजाद हुआ !
उल्लासों के क्षण आते ही दूर सभी अवसाद हुआ !!
लेकिन अभी मुसीबत के दिन और इसे कुछ सहने थे !
अरु दिल्ली की आंखों से आंसू झर–झर कर बहने थे !!

देश विभाजित हुआ समूचे घर का सत्यानाश हुआ !
बही लहू की धार कलंकित फिर से था इतिहास हुआ !!
हिन्दू–मुस्लिम दंगे देखे देखे थे विस्थापित जन !
बड़ी कठिनता से आ पाया था आपस में अपना पन !!

जो उजड़े थे उन्हें बसाया, दिल्ली ने दिल खोल दिया !
जिस जीवन में घुला जहर था, उसमें अमृत घोल दिया !!
ये दिन वो थे जब इन्दिरा को दिल्ली ने पहचाना था !
रात दिवस के कड़े परिश्रम अरु क्षमता को जाना था !!

निर्भयता भी देखी इसने अरु देखी थी श्रेष्ठ लगन !
दंगों में किस तरह रही थी शान्ति व्यवस्था हेतु मगन !!
जहाँ–जहाँ देखा था खतरा जाकर डेरा डाल दिया !
सही सलामत कितनों ही को भय के पार निकाल दिया !!

तत्परता से संयम साधे रात दिवस जुट काम किया !
विस्थापित जीवन–विधियों को एक नया आयाम दिया !!
हुई शान्ति पर अधिक न ठहरी, गम ने पुनः अधीर किया !
गिरी गाज थी ऐसी सहसा, दिल्ली का दिल चीर दिया !!

सांप्रदायिकता बनी कहर थी, जिसने विचलित देश किया !
हिला दिया था अंबर तक को, मलिन धरा का वेश किया !!
जिन्हें न भायी रीति-नीति थी गाँधी जी की भारत में !
सहन कहाँ समभाव उन्हें था यहाँ किसी भी सूरत में !!

किया एक पागल को प्रेरित, खत्म कराया गाँधी को !
और पुनः आरम्भ यहाँ कर दिया कलह की आँधी को !!
किन्तु राममय होकर गाँधी, देकर यह संदेश गये !
"रहना मेरे देश शान्त, करने हैं कार्य विशेष नये !!"

उस दिन रोई तड़प-तड़प कर अरु यह दिल्ली डोली थी !
इसके ही आंगन में मारी गाँधी जी को गोली थी !!
जग की चमक-दमक अरु लिप्सा हर आडंबर झूठा था !
सर्वोपरि था त्याग महा यह, अरु बलिदान अनूठा था !!

समझ न पाये गाँधी गरिमा हम सब ही अपराधी थे !
विश्व वंद्य हो गये सिद्ध, नर श्रेष्ठ महात्मा गाँधी थे !!
पाया निःसंदेह यही रुचि भाव इन्दिरा गाँधी ने !
देश हेतु जीवन अर्पण का चाव इन्दिरा गाँधी ने !!

एक नई लौ :

अपनी आँखों मे सब देखा, रेखा खीची थी प्रण की !
इससे अच्छी विधि क्या होगी, भारत हेतु समर्पण की !!
शिक्षा से परिचित थी देवी, भारत-जीवन-दर्शन की !
एक नयी लौ जाग चुकी थी मन में कृत्य–विवेचन की !!

जो दिल्ली अंतरंग बन चुकी उसके प्रणमय जीवन में !
अवगत थी क्या बैठ चुका है भाव इन्दिरा के मन में !!
आते सब जग में, जाते हैं, काम करो कुछ जीने का !
बनता है इतिहास तभी जब जीवन रहे करीने का !!

इस विशेषता को इन्दिरा ने हरदम श्रेष्ठ विचार दिया !
कार्य संहिता की उत्तमता को था नव आधार दिया !!
निर्भय, निश्चय, कर्मठ, तत्पर, सब मिलकर गणतन्त्र बने !
उत्तरोत्तर निष्ठावान, सतजीवन मौलिक मंत्र बने !!

सजा दिया था हर पडाव को इन जीवन-आदर्शों से !
नई इन्दिरा निर्मित की थी, जीवन के संघर्षों मे !!
हाय ! चली अब गई इन्दिरा, दिल्ली देख उदास हुई !
देख रहे हो हर चप्पे पर लगती बहुत निराश हुई !!

क्या कुछ नही किया दिल्ली के लिये इन्दिरा गाँधी ने !
विष के कैसे घूंट यहाँ पर पिये इन्दिरा गाँधी ने !!
लिये विश्व से होड़ बढ रही देखो इसकी चमक–दमक !
इन्दिरा गांधी की लगती है हर चप्पे पर एक झलक !!

ऊँचे–ऊँचे भवन गगन तक यश के ध्वज फहराते हैं !
प्रगतिशील भारत का नक्शा दुनिया को दिखलाते हैं !!
किन्तु साथ ही धोखा भी कुछ नहीं मिला कम इन्दिरा को !
जिसने अक्सर समय–समय पर दिये यहाँ गम इन्दिरा को !!

भुला दिये गम भ्रम को तोड़ा पुनः कार्य में व्यस्त हुई !
ज्यों–ज्यों चोट पड़ी इन्दिरा पर सहने की अभ्यस्त हुई !!
चमके दिल्ली, दमके दिल्ली, मन में प्रतिपल लगन रही !
प्रगति देख करके नित नूतन मन ही मन थी मगन रही !!

कर्मशील मानव को दिल्ली ने आश्रय नित भेंट किया !
जो भी आया रमा यहीं, अपने में उसे समेट लिया !!
लगा बदलने रूप नई दिल्ली का नित विस्तार हुआ !
नये भवन, उपवन, प्रांगण युत, नित्य नया श्रृंगार हुआ !!

खेल गाँव अरु इन्द्रप्रस्थ से द्रुत निर्माण करा करके !
खींच लिये रुचि–चाव बिन्दु थे सारे ही दुनिया भर के !!
छवि ने निर्गुट सम्मेलन को, रवि सा श्रेष्ठ स्वरूप दिया !
जिसे देख सम्मान विश्व ने भारत के अनुरूप दिया !!

पग–पग पर यह नव आकर्षण दिल्ली की नव शान बना !
पूर्ण रूप सामर्थवान है पूरा हिन्दुस्तान बना !!
क्रान्ति युक्त यह प्राण प्रवणता गरिमा इन्दिरा गाँधी की !
दिल्ली के हर छोर–छोर पर महिमा इन्दिरा गाँधी की !!

आज उसी की नश्वर देखो, देह पड़ी है लो आगे !
साम्प्रदायिकता की जिद के हैं पृष्ठ आज फिर से जागे !!
"दुख महान ! इन्दिरा की हत्या, वह भी अपने ही घर में" !
कहते–कहते आत्मग्लानि थी भरी वृद्ध के तब स्वर में !!

यह तो कालिख पुती भाल पर सुनो अरे ! दिल्ली वालो !
माँग रहा है मुल्क कैफियत उठकर तो कुछ बतिया लो !!
रख न सके तुम उस हस्ती को जो दुनिया पर छाई थी !
कभी इन्दिरा के रहते दिल्ली को आँच न आई थी" !!

और आज ये दिल्ली वाले खेल रहे है शोणित से !
ऐसे में इन सबके ये क्या लगे आचरण शोभित से ??
"रहे राष्ट्र अरु रहे एकता," कितनी प्यारी बोली है !
इस कारण ही तो इन्दिरा ने ली सीने पर गोली है !!

देश प्रेम सर्वोपरि जाना जिस इन्दिरा ने जीवन मे !
कैसे होती सहन उसे उठती हो लपट उपवन म !!
बन्द करो यह जोश, होश रख देखो चक्र समय का है !
इसको समझो, इसको रोको आया दौर प्रलय का है !!

यही इन्दिरा की इच्छा थी, रहे सभी ही मिल-जुलकर !
मिट जाये अलगाववाद-बू, रक्त कणो से धुल-धुल कर !
कहते कहते बात वृद्ध वह भावुक होकर बोल गया !
उसका अन्तर, मन की पीड़ा, जड़ चेतन पर खोल गया !!

बनी इन्दिरा की कुर्बानी

"जीत गई इन्दिरा तो करके-
अर्पित भौतिक जीवन !
बनी इन्दिरा की कुर्बानी-
दुनिया भर की धड़कन !!

एक नया विश्वास जगेगा-
प्रबल प्रेरणा द्वारा !
उभरेगा नव युक्ति विधा से-
हिन्दुस्तान हमारा !!

रही जान ऑफ आर्क से आगे–
श्रेष्ठ समर्पण लय में !
किसको है संदेह इन्दिरा–
की भौतिक—युग—जय में !!

बलिदानों की प्रथम पंक्ति में–
होगा नित अभिनन्दन !
अरु महकेगा अखिल विश्व में–
सदा सुयश का चन्दन !!

ये जो लाखों लोग आज हैं–
श्रद्धानत, नत मस्तक !
ये ही बनेंगे उसकी–
अन्तिम इच्छा के संवाहक !!

वह देखो बेटा, दिल्ली का-
लाल किला क्या कहता !
जिसके हर पत्थर से होकर-
स्नेह इन्दु का बहता" !!

लाल किले की आँखों से है—

साँस उसाँसें बनती जाती—
ज्यों-ज्यों गहराती है रात !
लाल किले की आँखों से है—
सावन भादों की बरसात !!

हाथ मले, अफसोस कर रहा—
अपने युग का दुर्ग प्रवीण !
मारी पंत प्रधान हाय रे,
शक्ति हुई मानस की क्षीण !!

देखे युग थे हमलों के भी—
षडयंत्रों के देखे दौर !
हवा बदलते लगी देर क्या—
रहे बदलते जब सिरमौर !!

अरे, आज अपने ही घर में—
अंगरक्षक का ऐसा जुल्म !
कहीं नहीं इतिहास पृष्ठ पर—
देखा इसके जैसा जुल्म !!

अनपढ़ लोगों के युग में भी–
कड़ी चौकसी थी हर द्वार !
पढ़े लिखों के युग में देखो–
हाय ! हुआ यह अत्याचार !!

कठिन प्रशिक्षण के दावे सब–
आज हुये हैं झूठे सिद्ध !
कहाँ गई वह श्रेष्ठ सुरक्षा–
जिसको कहते जगत प्रसिद्ध !!

कहाँ गई वह जाँच परख की,
क्षमता जिस पर रहता नाज !
"सब नाकारा" सब नाकारा !"
बुलन्द आज है यह आवाज !!

इनके जैसी नहीं मिलेगी–
जग में ऐसी कही मिसाल !
पन्त प्रधान–निवास स्थल पर–
घातक तत्वों का यह जाल ??

कैसी थी यह लापरवाही–
कैसा था यह शासन तन्त्र !
टोह लगाकर हत्यारे थे–
नित्य घूमते रहे स्वतन्त्र !!

जहाँ उन्ह जो कुछ करना था–
किया बिला शक अरु निर्द्वन्द !
कहाँ गये थे अन्य पहरुए–
जो कि डियूटी के पाबन्द ??

जनता की दुखती साँसें जब–
टकराती हैं बारम्बार !
घायल होती सी लगती हैं–
लाल किले की हर दीवार !!

यह परिचित उस गुण गौरव से–
जिसको अर्जित करने हेतु !!
दृढ़ निश्चय के साथ यहाँ वह–
फहराती थी आकर केतु !!

वर्षों का क्रम इसे याद है–
याद इसे हैं श्रेष्ठ प्रबन्ध !
याद इसे जन-सेवा-व्रत की–
जो लेती थी वह सौगन्ध !!

स्वाभिमान अरु आन-बान की–
इसे याद है कीर्ति विशेष !
कथनी अरु करनी दोनों में–
सर्वोपरि था उसको देश !!

आज सुना जब दगा दे गये–
उसके अपने पहरेदार !
सोचा, हाय ! क्या युग आया–
रहा सोचता बारम्बार !!

यह कैसा विश्वास धर्म का–
मानव भूला निज कर्त्तव्य !
होनी, या अनहोनी कहलो–
या कहलो इसको भवितव्य !

यही धारणा बन जायेगी–
अब किसका, कैसा विश्वास !
जब कि यहाँ अपने ही करने–
लगे कलंकित हैं इतिहास !!

अविश्वास का दौर चला तो–
क्या होगा इस जग के बीच !
दुराग्रहों की स्थितियों को–
देखें कब तक आँखें मींच !!

काश ! लगा सकता कोई भी–
इसका थोड़ा सा अन्दाज !
क्या कहती है आज वेदना ग्रस्त–
समय की यह आवाज !!

यह धरती है राम, कृष्ण की–
गौतम, गांधी का यह देश !
गूँज रहा है दिशा-दिशा में–
नृप अशोक का भी संदेश !!

नानक, गोविन्द सिंह वीर की–
वाणी का है अमिट प्रभाव !
तेग़ बहादुर मर-मिटने का–
पाते हैं हम श्रेष्ठ स्वभाव !!

राष्ट्र एकता के प्रतीक हैं–
इस भारत के चारों धाम !
जहाँ स्वस्थ मन धर्म भावना–
जन-सेवा का कार्य ललाम !!

नहीं लिखा है किसी धर्म में–
मानव-हत्या-कार्य विधान !
नहीं कहा है किसी धर्म ने–
हिंसक पशु सा हो इन्सान !

काश ! अगर पढ़ लेता कोई–
भारत-गौरव-पूर्ण अतीत !
निश्चय ही मानवता के प्रति–
हर पल रहती मन में नीति !!

कहीं न फिर षडयंत्र पनपते–
कहीं न बहती शोणित—धार !
यदि गुरुओं की शिक्षा के प्रति–
मानव रखता सच्चा प्यार !!

महा स्वार्थी तत्वों ने है–
किया देश को लहू, लुहान !
मांग रहा है दिशा, दिशा से–
आज कैफियत हिन्दुस्तान !!

नही कल्पना की थी जिसकी–
घटित हो गया वह निर्भीक !
गूढ़ प्रश्न है आज व्यवस्था–
रही सुरक्षा की क्या ठीक ??

कैसी हास्यास्पद यह क्षमता–
दौहरे, तिहरे रहे प्रबन्ध !
फिर भी कैसे रहे पनपते–
घर के भीतर ही जयचन्द !!

हिला समूचा किला मिला यह–
कष्ट भोगने को दिन रात !
कहाँ रहे फौलादी पन्जे–
कहाँ पुलिस की ठहरी बात !!

लौट सकेंगे क्या वे दिन अब,
जब आती थी पंत प्रधान !
लिये हृदय में प्रगति—चेतना–
अरु आँखों में हिन्दुस्तान !!

लौट सकेंगी क्या वे घड़ियाँ–
विगत भावना के मानिंद !
जब कहती थी उच्च स्वरों में–
बड़े गर्व से वह "जय हिंन्द" !!

डूब रही है गम में देखो–
देखो वह ऊँची प्राचीर !
और कंगूरे इसके देखो–
हुए जा रहे आज अधीर !!

चुस्त चाल से बढ़कर, चढ़कर
फहराती थी ध्वज को तान !
झूम-झूम कर यश गाता था–
तब सारा ही हिन्दुस्तान !!

इन प्रश्नों का उत्तर शायद–
आज नहीं है उनके पास !
जिनके कारण भारत ही क्या–
सारी दुनिया हुई उदास !!

कहती हैं यमुना की लहरें–
गहरे गम में डूबी आज !
सर्वमान्य नेता की हत्या–
का है कैसा घृणित रिवाज !!

तत्पर करने को हैं सारी-
श्रेष्ठ व्यवस्था को ही नष्ट !
अपनी-अपनी जिम्मेदारी-
करनी है सबको सुस्पष्ट !!

कहीं न हो ऐसा करवट में–
पनप रहे हों दुश्मन और !
क्षति पहुंचाने को भारत को–
जोड़ लिये हों साधन और !

उन्हें बीनना होगा जमकर–
पनप रहे जो घातक शूल !
कहीं और कुछ करे नाश ना–
केवल इक छोटी सी भूल !!

गई इन्दिरा जो दिखला कर–
स्वयं सिद्धि का मार्ग विशेष !
संकट से भिड़ सकता हर पल–
उस पर चलकर अपना देश !!

यह भारत है उस गाँधी का–
जिसने देकर निज बलिदान !
दूर किया नफरत के युग को–
जगा दिया था हर इन्सान !!

यह भारत है उस नेहरू का—
जिसने बल देकर विज्ञान !
निर्माणों के हेतु सजाया—
रचने को नव हिन्दुस्तान !!

यह भारत है उस सुभाष का—
जिसकी रजकण तक में याद !
रचदी थी बलिदानी सेना—
करने को भारत आजाद !!

यह भारत है भगत सिंह का—
जिसके प्राणों की आवाज !
स्वाभिमान से जीने का है—
सिखलाती सबको अन्दाज !

यह भारत है क्रान्तिमन्यु का—
रहा अन्त तक जो आजाद !
क्रान्तिकारियों के युग को था—
बना दिया जिसने फौलाद !!

बिस्मिल अरु अश्फाकउल्ला थे—
इस धरती के गर्व महान !
हँसते-हँसते चढ़ा दिये थे—
देश-धर्म पर अपने प्राण !!

और आज इन्दिरा गाँधी ने—
परम्परा की रखकर लाज !
जगा दिया है दिवा स्वप्न से—
अरु आलस से पुनः समाज !!

हिला रहा दिल किला लाल यह–
कहता है सन्नद्ध रहो !
कर्त्तव्यों के पालनार्थ निज–
नियमों से आबद्ध रहो !!

आने वाला युग सतर्कता का–
करता अह्वान खड़ा !
चारों ओर घिरा कष्टों से–
अपना हिन्दुस्तान खड़ा !!

रहो जागते हरपल छलबल–
घातक तत्वों का जारी !
चौंक रही है अब रह-रह कर–
देखो तो धरती सारी !.

तन्मय स्वर

तन्मय स्वर ग्रामाण वृद्ध जब थोड़ा सा कुछ रुकता !
एक हवा का झोंका आकर पास निकट ही झुकता !!

कहता—"केवल यह तो हालत दिल्ली की ही जानी !
आओ, कुछ मैं भी बतलाऊँ ग़म से भरी कहानी–
गहन रात के अंधियारे ने जब दी ख़बर भयानक !
इन्दिरा जी की अपने घर में हत्या हुई अचानक !!

अरु हत्यारे भी वे ही हैं जो थे उनके रक्षक !
हाय ! डस गये भारत माँ को बनकर पूरे तक्षक !!
राम, रहीम, करीम सुबकते—जेम्स देखता अपलक !
हाय रे ! दुर्भाग्य देश का जाग उठा है बेशक !!

नगर सिसकते, दूर गाँवों तक पहुंच रहा था क्रंदन !
बिलख रहा था भारत भू का सारा ही जन–जीवन !!
राधा रोती खड़ी द्वार पर, भीगा सुधि का आंचल !
चुन्नू–मुन्नू तक आँगन में दीख रहे थे विह्वल !!

रात कटी जब गिन–गिन घड़ियाँ अगला दिन जब आया !!
देखा चारों ओर बढ़ी जाती है ग़म की छाया !!
खुले न थे बाजार और थे बन्द क्षेत्र व्यापारिक !
कहा किसी ने हत्यारों को हा ! हा ! रे, पशु धिक–धिक !!

जगह–जगह संतुलन खो दिया,
अग्नि शिखा बन नर तन !
प्रतिकारों की लौ में उन्मत–
भूल गये अनुशासन !!

बिफर उठा जन मानस–
सुन कर हत्या, तजकर संयम !
हुआ नया आरम्भ देश में–
था विनाश का उपक्रम !!

किन्तु नहीं प्रतिशोध उचित था–
अहित अधिक था संभव !
ऐसे में तो निश्चय ही–
हो सकता और पराभव !!

जिसको जो साधन मिल पाया, उसको त्वरित पकड़ कर !
चला वहीं दिल्ली को व्याकुल, मनोकामना रख कर !!
कहीं-कहीं तो चूल्हा तक भी नहीं जला था सुन कर !
चला गाँव से छोड़ सभी कुछ, युग परिवर्तन गुण कर !!

यही आस्था आत्मभाव की—
सबसे बड़ी कड़ी है !
अपनेपन के सम्बन्धों की—
डोर बडी तगड़ी है !!

जन समूह जो दीख रहा यह—
यह भारत का बल है !
यद्यपि धोखा खाया है—
पर नव भविष्य उज्ज्वल है" !!

पोता बोला—"बाबा यह जो इतना बड़ा भवन है !
इसकी भी तो कुछ विशेषता सुनने का अब मन है !!

उठी दृष्टि उस वृद्ध पुरुष की कहा—"सुनो रे बेटा !
कहूं भवन को भाग्यवान या फिर किस्मत का हेटा !!
तीन मूर्ति संकेत दे रही गौरवशाली प्रण का !
नेहरू-कुल से सम्बन्धित स्वर इसके हैं कण-कण का !!"

तीन मूर्ति का आज भवन

अश्रु प्रपूरित नयनों से है देखा युग परिवर्तन !
करुणा का इतिहास लिख रहा तीन मूर्ति का आज भवन !!

एक पक्ष है राजनीति की–
गरिमाओं का याद इसे !
जिसने नेहरू के युग में था–
बना दिया प्रासाद इसे !!

अंकित है हर क्षण का लेखा–
दीर्घकाय दीवारों पर !
लिखे हुये हैं यश के अक्षर–
अनुभव की मीनारों पर !!

दिग्गज युग-निर्माता नेता–
जग के आये रुचि भर-भर !
भवन रहा यह आकर्षक था–
गरिमायुत आतिथ्य प्रवर !!

याद यहाँ हर एक व्यक्ति की–
विश्व शान्ति की एक कड़ी !
यहीं बनी थी राष्ट्र प्रगति की–
योजनाएँ भी बड़ी—बड़ी !!

पंचशील का अभ्युदय भी–
हुआ यहीं से था प्यारे !
जगे यहीं पर विश्व शांति के–
स्वप्न श्रेष्ठतर थे सारे !!

बांडुंग सम्मेलन की शिक्षा–
और समीक्षा हुई यहाँ !
युग निर्माताओं के बल की–
कठिन परीक्षा हुई यहाँ !!

उभरा गुट निरपेक्ष नीति का—
स्वर भी इसके आंगन से !
रहा सदा संबद्ध भवन यह—
प्रतिपल जग के जीवन से !!

शीत युद्ध को रोक सकें जो जुटे यहीं पर थे साधन !
करुणा का इतिहास लिख रहा, तीन मूर्ति का आज भवन !!

इसने देखी तन्मयता है—
नेहरू के उस शासन की !
जिसने पीड़ाओं को आंका—
इस भारत में जन-जन की !!

भाव चिरंतन देखे थे नित—
इसने वीर जवाहर के !
अनुभव इसको रहे बराबर—
भीतर के अरु बाहर के !!

इसे याद है चोट अभी तक—
भारतवर्ष विभाजन की !
इसने देखी खुलती गुत्थी—
शासन और प्रशासन की !!

इसकी यादों में अंकित हैं—
भाषण उस नर—नाहर के !
जिसने सेवा की भारत की—
पूरी शक्ति लगा करके !!

इसे याद है वह क्षण भी जब–
शान्ति हुई थी भंग यहाँ !
एक घृणित विश्वासघात ने–
थोपी थी जब जंग यहाँ !!

इसे याद है कैसे नेहरू–
दीखे थे मर्माहत से !
इसे याद है वे क्षण कैसे–
विध्वंसक अरु घातक थे !!

है निज में इतिहास समाये, लम्बा–चौड़ा यह आंगन !
करुणा का इतिहास लिख रहा. तीन मूर्ति का आज भवन !

लाल बहादुर का बलिदानी–
स्वर दिल्ली से गूँजा है !
सब कुछ हँस कर करो समर्पित–
यही देश की पूजा है !!

छुरा पीठ में लगा शान्ति को :

एक मित्र ने धोखे से जब–
किया आक्रमण भारत पर !
इसने देखी वह बेचैनी–
जो उभरी थी मस्तक पर !!

छुरा पीठ में लगा शान्ति की–
सिसक उठा मन नाहर का
टूट गया था पंचशील का–
सपना वीर जवाहर का !!

इसने देखे वे भी क्षण–
जब निर्णय लिया सुरक्षा का !
इसे याद वह घड़ी कि जब–
आया था समय समीक्षा का !!

जगी यहीं से जिज्ञासा थी–
भौतिक युग उपकरणों की !
वैज्ञानिक उन्नति के प्रणवत–
कुछ आगामी चरणों की !!

हल–बल में निज बल को आंका–
बनी योजना बड़ी—बड़ी !
बनी सुरक्षा उपकरणों की–
भारत के अनुरूप कड़ी !!

किन्तु घाव वह लगा समय का–
घायल मन बेचैन रहा !
विश्व शान्ति की प्रबल चाह ने–
नित्य-निरंतर दर्द सहा !!

उसे समझ क्या पाई दुनिया, लुटा दिया जिसने तन–मन !
करुणा का इतिहास लिख रहा, तीन मूर्ति का आज भवन !!

मई सत्ताईस सन् चौंसठ के–
दिन की अब तक याद इसे !
पड़ा झेलना गम अपार था–
और नया अवसाद इसे !!

लिये जगत की चिंताओं का–
भार हृदय पर भारी मन !
काल कूट की तरह वेदना–
पिये जा रहा यही भवन !!

शान्ति दूत वह नेहरू नाहर–
जब था बस निश्चेष्ट पड़ा !
उसके अन्तिम दर्शन को भी–
सारा ही जग था उमड़ा !!

तब इन्दिरा थी देखभाल को–
हर आगन्तुक दर्शक की !
यद्यपि खुद थी मर्माहत वह–
दृष्टि मगर तब व्यापक थी !!

यह उस जीवन का विघटन था–
जोकि कमल सा खिलता था !
लुप्त हो गया वह बल था–
जो नित पापू से मिलता था !!

किन्तु यहीं से आत्म शक्ति का–
भी देखा था उद्भव क्रम !
किया असंभव को भी संभव–
तोड़ दिया जग का हर भ्रम !!

अबला, सबला बनी यहीं से कड़ा किया था अपना मन !
करुणा का इतिहास लिख रहा, तीन मूर्ति का आज भवन !!

इसी भवन की ओर बढ़ रहा--
शव था जब कल इन्दिरा का !
उभर चला था विगत आँख में--
क्षण था कैसी दुविधा का !!

याद आ गये थे वे दिन भी--
जब जीवन का विषम विषाद !
लिखा अजब साहस से उसने--
आत्मसात करके अवसाद !!

अपने जीवन--चाव भूलकर--
जुटी रही वह तन--मन से !
संकट झेले धैर्य धार कर--
कभी--कभी तो भीषण से !!

इसी त्याग ने जीवन--विधि का--
नव मूल्यांकन आँका था !
नई शक्ति ने महाशक्ति के--
अन्तर्मन में झाँका था !!

इसी भवन ने आत्मजयी सा--
बना दिया उसके मन को !
किया समर्पित पूर्ण रूप से--
वतन हेतु था जीवन को !!

अनुभव पीड़ा का जन--जन की--
इसको अनगिन बार हुआ !
कर्त्तव्यों से अनासक्ति का--
रुख क्या था स्वीकार हुआ ??

आज पुरानी उन यादों में, डूब रहा है इसका मन !
करुणा का इतिहास लिख रहा, तीन मूर्ति का आज भवन !!

अब तो केवल चित्र वीथिका--
है यह नेहरू के युग की !
पर्ण कुटी, विश्वस्त पीठिका--
है यह नेहरू के युग की !!

खुला भवन यह दर्शनार्थ--
रहता है खातिर जन-जन के !
यहाँ प्रेरणाप्रद दर्शन गुण--
अंकित रहते जीवन के !!

यह इतिहास नियामक है--
जिसका अतीत से नाता है !
लिये अंक में तो है शव को--
पर क्या देखा जाता है ??

किन्तु व्यवस्थित लिये खड़ा है--
फिर भी अपने उस मन को !
जिसने संयम सहित सवांरा--
भारत भू के दर्शन को !!

गई सजीव यहाँ से थी जो--
वह निर्जीव पधारी है !
यह दिन भी था इसे देखना--
यह कैसी लाचारी है !!

गर्व किन्तु है इसको, यह बन--
फिर नूतन इतिहास गया !
जन--जन--मन में भारत भू के--
जाग उठा विश्वास नया !!

कीर्ति इन्दिरा की जग--जग पर आज गई सुस्थाई बन !
करुणा का इतिहास लिख रहा, तीन मूर्ति का आज भवन !!

झुके देखकर नयन--नयन--
भवन आज कर रहा नमन !
दिये जा रही वही प्रेरणा--
जो वीरों का रहा चलन !!

धन्य हो गया आज वतन !
धन्य हो गया यह आंगन !!

प्रण साधे जो बढ़ता आगे, श्रम--युग--पथ पर अंकित !
करता है सत्यार्थ विवेचन, जीवन को नित शोभित !!

इस धरती पर प्रतिक्षण तुलता रहता कर्म मनुज का !
जन--सेवा--व्रत बन जाता है अविचल धर्म मनुज का !!

धरती गाती गीत उसी के, जिसमें यश-गरिमा का बल !
समय--समय पर दुराग्रहों के जो तोड़ा करता है छल !!

हर मनुष्य को नहीं मयस्सर होती ख्याति जगत में !
उसको मिलती जिसकी निष्ठा कर्त्तव्यों के व्रत में !!

धन तो ऐसे--वैसे भी कुछ लोग कमा लेते हैं !
अरु अनर्थ के द्वारा सिक्का खूब जमा लेते हैं !!

किन्तु नाम होता है उसका जिसकी कर्म—विधा से !
मिल जाती है लौ जागृति की उठती जो वसुधा से !!

केवल गरिमा साथ विजय की

गतिमय देखी चाल समय की !
बार-बार गुंजित ध्वनि जय की !!

जन--सेवा, निर्भीक समर्पण !
परिणति है यह उस निश्चय की !!

जिसमें आत्म शक्ति की गरिमा !
और ज्वाल है द्रुत निर्णय की !!

पूर्ण शान्ति है उस चेहरे पर !
जिस पर अंकित साख अभय की !!

सब कुछ त्याग चली इन्दिरा !
केवल गरिमा साथ विजय की !!

भारतीय संसद भवन

देख तनिक उठ करके बेटा !
वह समक्ष जो दीर्घ भवन !!
यहाँ हमारे सांसद अकर–
दिखलाते हैं अपनापन !!

देखे हैं उत्थान, पतन,
और पुनः नव परिवर्तन,
सत्य साक्षी राजनीति का,
पुण्य स्थल यह श्रेष्ठ भवन !

इसकी अपनी व्याकुलता है–
क्षण—क्षण आज प्रदर्शित,
देखो, तो यह भवन, मनन–
कुछ करके होता चिंतित !

जन प्रतिनिधि के साथ–साथ ही–
रहता यह भी चर्चित,
भारत भू की भाग्य लकीरें–
इसमें होतीं निर्मित !

इसका अनुभव सच्चा अनुभव–
गुण अरु कर्म विधा का,
कभी—कभी तो हुआ यहाँ से–
अद्भुत एक धमाका !

पूरे भारत की छवि इसमें–
होती रहती अंकित,
चित्र उभरते हैं बहसों के–
शोभित और अशोभित !

नीति नियोजन, शासन विधि अरु–
देखे मंत्र नियामक,
यहीं पटल पर पारित होते–
जन—कल्याण—विधेयक !

रचे यही निर्माण–प्रगति–स्वर,
बढ़ी यही से हल—चल,
देखे इसने सफलताओं के,
खिलते अनगिन शत दल !

देखी इसने परिधानों की–
रंग—विरंगी रौनक,
देखे इसने सजे धजे–
नित आते—जाते शासक !

परखे इसने तरह—तरह के,
दल—बल अरु नव सांसद,
परखा इसने स्वाभिमान भी,
देखी निरी खुशामद !

इसने देखी उदासीनता
और सजगता प्रणवत,
इसने देखी जन—रुचियाँ भी
चाव निहारे दल—गत !

इसने देखे सरकारों के
जब—तब के परिवर्तन,
इसने देखा पूर्ण नियंत्रित
भारत अरु अनुशासन !

इसको बहसें याद, गुणात्मक
इसे याद नव चिंतन,
अर्थ तन्त्र, सामर्थ याद है
अरु परिवार नियोजन!

नेहरु, लाल बहादुर का युग
इन्दिरा जी का शासन,
इसे याद है पूर्ण रूप से
हर प्रधान का भाषण !

नामी नेता यहाँ विश्व के
आये जब—जब बोले,
शब्द भाव निज भव्य पटल पर
इसने उनके तोले !

इसकी अपनी गरिमा, बेटा,
हर स्वर को है साधा,
जब—जब आया संकट,
भारत एक सूत्र में बाँधा !

दूर—दूर तक फैल रही है
इसके गुण की छाया,
इसने कुछ दिन तक,
मुरार जी का यश भी है गाया !!

गौरव अर्जित किया विश्व मे
इसने शीश उठाकर,
सजता है जब भाषण देते—
राष्ट्रपति है आकर !

सत्यमेव जयते का उद्‌भव—
ज्योतित मत्र गुंजाकर,
इसने की मिसाल है पैदा—
परम्परायें निभाकर !

जिसके मौलिक सिद्धान्तो ने—
पाया इससे बल है,
आज उसे निष्प्राण देखकर—
ससद भवन विकल हे !

हा भो क्यो ना ! याद आ रहा—
है इतिहास पुरातन,
वही कडकते स्वर मे गुँजित—
इन्दिरा जी का भाषण !

याद आ रही, चुस्ती, फुर्ती—
स्वाभिमान गुणवत्ता,
याद आ रहे, है वे दिन—
जब खड़क न पाया पत्ता !

याद इसे व्यक्तित्व आ रहा—
शुचिमय भारत माँ का,
जिसमें इसने पूर्ण देश का—
स्नेह सिंधु है आंका !

याद आ रही गरिमा, महिमा—
नारी के यश—बल की,
याद आ रही भव्य सदन को—
बीते हर क्षण—पल की !

वह कुर्सी हतप्रभ्, हत् संज्ञा—
जिसको किया सुशोभित,
आज पड़ी मासूम वेदना ग्रस्त—
और अति चिंतित !

ग़म का साया इसे कह रहा—
"वह व्यक्तित्व निराला !
देश टूट ना पाये इससे—
पिया ज़हर का प्याला !

तुझे मिला वह गौरव—जिस पर—
जग इतिहास लिखेगा,
कर्मण्यवाधिकारस्ते पर—
रुचि विश्वास लिखेगा" !

विह्वल प्रतिपल हुआ भवन यह—
लख कर रक्खे शव को !
पुनः प्राण भरदे इन्दिरा में—
अगर कहीं संभव हो !

काश ! यहाँ से फिर वह वाणी—
जग को पड़े सुनाई,
जिसने संसद भवन सजाकर—
गरिमा नित्य बढाई !

हुये यहाँ इतिहास पुरुष भी—
चमत्कार दिखलाये,
भीमराव अम्बेडकर भी—
रहे युगो तक छाये !

"महिला होकर किया काम वह—
समता नहीं कि जिसकी,
काट सके जो नर्क तुम्हारे
हिम्मत थी यह किसकी !

जाओ ! इन्दिरा आज अलविदा—
किन्तु रहेंगी यादे,
कालचक्र की ये गति विधिया—
कुछ ना और फँसा दे !

मिले प्रेरणा तव—चरित्र मे—
जन—जन मन को नूतन,
लौह लाडली जाओ—जाओ !
लो अंतिम अभिवादन !

वह देखो अनदीखे आँसू—
बहते आज भवन से,
विलग पार्थिव देह हुई है—
भुला न पाये मन से !"

नेहरू परिवार का उद्भव

इन सबकी झाँकी दिखलाई, जितनी जो भी संभव थी !
सुन बेटा—अब श्रेष्ठ कहानी नेहरू कुल के उद्भव की !!
उनके जीवन--दृश्य मार्मिक कुछ तुझको दिखलाता हूं !
कैसे बनता बड़ा आदमी यह तुझको बतलाता हूं !!

यँ आकाँक्षा तो सब रखते जग में बड़ा कहाने की !
किन्तु ताब तो किसी--किसी में हुई बड़प्पन पाने की !!
इस पदवी के हेतु बहुत कुछ सहना--घिसना पड़ता है !
यहाँ ऐड़ियाँ कदम--कदम पर जमकर घिसना पड़ता है !!

मुगल बादशाह फर्रुखमियर था--
राजकौल दिल्ली आए !
निकट नहर के मिला वास था--
इस कारण नेहरू कहलाए !!

आदिकाल से काश्मीर में--
रहता यह परिवार रहा,
विद्वत्ता का इस कुल में था--
पूर्ण प्रभाव, प्रसार रहा,
उर्दू, संस्कृत और फारसी—
पर रहता अधिकार समान,
स्वाभिमान के साथ–साथ ही—
नित्य बढ़ाया अपना ज्ञान,

विद्वत्ता की जमी धाक थी, राजकीय संरक्षण पाए !
निकट नहर के मिला वास था, इस कारण नेहरू कहलाए !!

उजला रंग, सुमनों सी आभा–
चमक—दमक के साथ सजी,
जन—समाज में घुल—मिलने की–
चाह त्वरित मन मे उपजी,
पाया नित सम्मान, मधुरतम–
वाणी में आकर्षण था,
मन अनीति के आगे किंचित
करता नही समर्पण था,

प्राप्त निकटता की ममाज को–
नम्र भाव से मित्र बनाए !
निकट नहर के मिला वास था–
इस कारण नेहरू कहलाए !!

मुगल काल मे कोतवाल के
पद पर थे गंगाधर जी,
जिनके कारण राजकौल के
हर परिजन की साख बंधी,

अनुशासित अरु मितभाषी थे–
स्वाभिमान की आन रही,
भारत भू के अपनेपन की–
हर पल थी पहचान रही,

पद—गरिमा—अनुरूप स्वयं के जौहर भी थे दिखलाए !
निकट नहर के मिला वास था, इस कारण नेहरू कहलाए !!

सन् १८५६ की स्थिति

षड्यंत्रों का केन्द्र बन गया
दिल्ली का हर धाम सुना !
जिसमें शामिल महल–स्रोत थे–
इसका, उसका नाम सुना !!

था विनाश की ओर मुगल दल–
नहीं दबदबा था किंचित !
कहीं मरहठे, कहीं मेवाती–
अधिकारों से थे परिचित !!

दुर्बलता पर्याय देश में–
लाल किले का वास बना !
रहा देखता युग का प्रहरी–
अवनति का इतिहास बना !!

अंग्रेजों की बन आई थी–
जमकर शासन करते थे !
जो दिखलाते अपनापन थे–
पलक झपकते मरते थे !!

प्रथम क्रान्ति का घोष सन् १८५७

प्रथम क्रान्ति का घोष हुआ था–
जब भारत की धरती पर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी–
पहुंच गई साहस भर कर !!

बढ़े हुये थे खूब हौसले
वीर व्रती मर्दानों के,
दिल्ली दहली देख—देखँ कर
कदम बढ़े दीवानों के,
रंग नया था उत्साहों में–
अपनेपन का चाव रहा,
किन्तु किन्हीं के षड्यंत्रों से–
इसमें था बिखराव रहा,

अंग्रेजों ने पुनः दबोचा,
इन सबको मौका पाकर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी–
पहुंच गई साहस भर कर !!

नाम गदर का दिया क्रान्ति को,
गिरफ्तार थे 'जफर' किये,
फौज मंगा पंजाब प्राँत से—
क्रान्ति पुजारी कतर दिये,
देश प्रेमियों की हालत थी
दिन प्रतिदिन अति दीन हुई,
अरु क्षमता उपनिवेशवाद मे
लड़ने की थी क्षीण हुई,

गंगाधर भी चले आगरा—
अपना सब कुछ लुटवाकर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी—
पहुंच गई साहस भर कर !!

केवल वे ही रहे शेष जो,
नित्य चिरौरी करते थे,
बात—बात में स्वार्थ सने
अंग्रेजों का दम भरते थे,
जिन्हें प्यार था अपनेपन से—
वे दिल्ली को छोड़ गये,
सुख—सुविधाओं तक से सारे
अपने नाते तोड़ गये,

यद्यपि आती रही याद थी,
निज धरती की उभर—उभर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी—
पहुंच गई साहस भर कर !!

युग समाप्त था हुआ एक,
अरु नई कहानी खत्म हुई,
हुये काल कवलित गंगाधर–
भरी जवानी खत्म हुई,
परिजन पर था पड़ा बोझ पर
समझदार परिवार रहा,
रहें एकता सूत्र बाँधकर,
सबका यही विचार रहा,

परिजन में यदि रहे एकता–
फिर कैसा अरु किसका डर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी–
पहुंच गई साहस भर कर !!

रहन—सहन की सुविधा,
दुविधा त्याग प्राप्त की जीवन में,
कर्मठता की पौध रोपकर
सबने मन के आँगन में,
उपजी थी सुस्पष्ट धारणा
शिक्षा —स्वर—संयोग किया,
जो भी साधन मिला प्रगति का
उसका था उपयोग किया,

मंजिल पर मंजिल तै की थी–
साहस से डग भर-भर कर !
मेरठ की लौ दिल्ली तक थी–
पहुंच गई साहस भर कर !!

६ मई सन् १८६१

पंडित मोतीलाल का जन्म

सुख से मिल जुल कर परिजन,
विकसित रखते थे जीवन,
जिसमें निखरी सबकी खुशियाँ–
महक उठा था वह आंगन !

हासिल नये कमाल हुये,
परिवर्तन तत्काल हुये,
षटम् मई अठारह सौ इकसठ,
पैदा मोती लाल हुये !

परिजन मिलकर एक रहे,
संयत भाव विवेक रहे,
यही भावना थी : जन—जन की,
सुख से अब प्रत्येक रहे !

मन में रखकर सुदृढ़ विचार,
नित जीवन को रहे निखार,
बढ़े योग्यता जिससे कुल की;
शिक्षा का था किया प्रचार !

पालन—पोषण एक समान,
बुद्धि प्रखरता अरु सदज्ञान,
सबके हेतु प्रगति द्वार का—
मिला हुआ था नित आह्वान !

बुद्धिमान अरु दृढ़ वाचाल,
अपनेपन की एक मिसाल,
कर्मठ, चंचल, शिक्षा पथ पर;
रहे अग्रसर मोती लाल !

भरण और पोषण—पर्याय,
चुना वकालत अध्यवसाय,
रहा कानपुर का प्रवास था—
जीवन में अत्यन्त सहाय !

कर्मठ रह कर कार्य प्रसार,
और साथ ही सद्व्यवहार,
बना नये जीवन का वाहक—
विधि धाराओं पर अधिकार !

तीव्रम् गति से ख्याति—संदेश,
पहुंच रहा था देश—विदेश,
विधि वेत्ताओं में नेहरू को–
रहता है अधिकार विशेष !"

चली ठाठ से जीवन नाव,
स्वाभिमानयुत रहा स्वभाव,
कानपुर से इलाहाबाद तक–
बढ़ता जाता रहा प्रभाव !

ग्रहस्थ धर्म की पकड़ी डोर,
नाम हुआ जब चारों ओर,
इलाहाबाद आवास बनाया;
सजा ख्याति से था हर छोर !

सुनी गरीबों की फरियाद,
लगे जीतने प्रतिदिन वाद,
नेहरू मोतीलाल नाम से;
लगा चमकने इलाहाबाद !

तर्कों का अति उत्तम चाव,
रहा बनाता सुदृढ़ स्वभाव,
राजे और महाराजे तक;
मान चुके थे पूर्ण प्रभाव !

अल्पज्ञों से रहकर दूर,
हुये चतुर्दिक थे मशहूर,
इलाहाबाद के हाईकोर्ट में;
दौलत अर्जित की भरपूर !

बातें करके तीन तड़ाक,
रक्खी अपनेपन की साख,
अधिकारीगण सब थे मित्र;
अंग्रेजों तक पर थी धाक !

कुल गरिमा को रख कर उच्च
ख्याति प्राप्ति गुण भर कर उच्च,
किया स्वयं के श्रम साधन से;
रहन—सहन का सुस्तर उच्च !

विधिवेत्ता अत्यन्त प्रवीण,
स्वर–विकास था सर्वाङ्गीण
रहे सदा सर्वत्र प्रतिष्ठित,
ज्योतिर्मय जीवन शालीन !

सन् १८७१

सहन नहीं थी ब्रिटिश सत्ता–
जन—मन में जागा विद्रोह !
उठा त्वरित ललकार राज्य को–
कूका, रामसिंह का गिरोह !!

पकड़, जकड़ कर बाँध तोप से–
मार दिये तत्तकाल पचास !
अटठारह को फाँसी लगवाई–
रौंदा गोरों ने इतिहास !!

सन् १८८३ स्वत्व लौ

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध निज साधन डोर पकड़ के,
उठे सिंह की तरह बिफर बलवंत राज जीं फड़के,
सहन कहाँ थे स्वतन्त्रता के भाव यहाँ शासन को,
दिया अदन को भेज पूर्णतः बन्धन बांध जकड़ के !

सन् १८८५ भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस कीस्थापना

उपनिवेशवादी सत्ता के–
जुल्मों से जब त्रस्त हुआ !
दृढ़ विचार का मार्ग हृदय में–
खुलकर और प्रशस्त हुआ !!

राजनीति वैचारिक गति को–
ह्यूम—अवलंबन प्राप्त हुआ !
बौद्धिक प्रण से संदेहों का–
भीषण ज्वार समाप्त हुआ !!

जिससे हो कल्याण देश का–
ऐसे पथ की खोज हुई !
उस युग के नेताओं की थी–
बहसें भी थीं रोज हुईं !!

अगुआ रहे सुरेन्द्र बनर्जी–
योजनाओं का चयन हुआ !
अट्ठारह सौ पच्चासी में–
काँग्रेस का गठन हुआ !!

त्याग राग की नींव डालकर-
साधन नये जुटाये थे !
तत्परता से नये तरीके-
जागृति के अपनाये थे !!

तोड़ दिया था तन्द्रालस को-
पहले ही अधिवेशन में !
जिसमें द्रुत संभावनाओं का-
चित्र लखा जन—जीवन ने !!

जन-धन-जीवन-ज्योति सुरक्षा-
बहसों के आधार बने !
इनकी खातिर आन्दोलन के-
मन में नये विचार बने !!

इन पर टिकी विदेशी सत्ता-
जिसको थे सारे अधिकार !
देशवासियों की अपने ही-
घर में हालत थी लाचार !!

१४ नवम्बर १८८९ पंडित जवाहर लाल का जन्म :

मुदमय मोती लाल प्रगति पथ पर थे चालित मन से !
उच्च स्तर, शालीन भाव का ताल्लुक था जीवन से !!
संगम-तट शालीन भावना प्रतिदिन निखरा करती !
नवोल्लास के प्रतिमानों की दमकें बिखरा करती !!

चौदह नवम्बर अटठारह सौ–
नव्वासी की घड़ियाँ !
ले आई थी जीवन–वृत में–
शोभा की फुलझडियाँ !!

जन्मा सुन्दर सुमन सरीखा–
घर में पुत्र सलोना !
हुआ देखते ही जग—मग था–
घर का कोना—कोना !!

गौरवर्ण, कश्मीरी छवि का–
था प्रतिमान सुहाना !
नेहरू कुल में प्राप्त हुआ था–
गौरव का नजराना !!

लख करके पहलौटा बेटा–
मोती लाल मगन थे !
सुबह–शाम नित देख–देख कर–
रखते पुलकित मन थे !!

नव गुलाब सा पुष्प खिला था प्यार भरे आंगन में,
प्रकृति छटा की पूर्ण महत्ता रोपी जिसने मन में,
थी स्वरूप की आँखें चमकीं लख प्रकाश सा उद्‌भव,
नव तरंग के साथ भर गई खुशियाँ थीं जीवन में,

कहा किसी ने–धन्य हो गये–
परिजन यह सुख पाकर !
संस्कार विधि परम्परा से–
रक्खा नाम 'जवाहर' !!

लगा बधाई का जब ताँता–
बेशुमार शुभ—चिंतक !
रहे देखते शिशु की छवि को–
खड़े–खड़े ही अपलक !!

नेहरू मोतीलाल, लाल को–
छवि जब—जब भी देखें !
आत्मजयी सा गौरव भरकर–
उभरें सुख की रेखें !!

जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर–
परिजन पुरजन आये !
शिशु–खातिर उपहार सभी थे–
भाँति—भाँति के लाये !!

मित्र, मुसाहिब, अधिकारीगण–
सबने कहा– "बधाई !
धन्य, आपके जीवन—आँगन–
घड़ी सुहानी आई !!

ज्योतिर्विद की शुभाकांक्षा–
सुत यह नाम करेगा !
निश्चय ही इतिहास पुरुष–
बन करके काम करेगा !!"

निश्चय ही सौभाग्य बिन्दु पर स्नेह मिला था जीभर,
सब सुख जैसे उतर स्वयं ही आये थे धरती पर,
शुभाकाँक्षा पुलक लिये नित कवच बनी जीवन का;
लगा बीतने लाड़—प्यार में शिशु का प्यारा जीवन !

चन्द्र कला सा लगा भला था–
बढ़ता बचपन शिशु का !
लगा कमल सा खिलने पल–पल–
स्वस्थ भाव मन शिशु का !!

पूर्ण रूप संपन्न घराना–
नौकर चाकर अनगिन !
राजकुमारों के जैसे थे–
बीता करते पल—छिन !!

हर सुविधा उपलब्ध रही थी–
हर दिन जीवन मग में !
जो चाहा सुख प्राप्त हुआ था–
तब नेहरू को जग में !!

प्राप्त खिलौने रहे एक से एक–
वहाँ तब घर में !
मनोरंजन के सारे साधन–
जुड़ते जब पल भर में !!

आस—पास कश्मीरी जीवन–
अरुणिम आभा घर की !
नजर टिकी थी इस घर पर ही–
तब भी दुनिया भर की !!

लाल–लाल गाल लख लाल के प्रसन्न मन,
बार--बार मुख छवि छायी कश्मीर की !
लास्य पूर्ण हाव--भाव, ज्योति का स्वभाव देख–
लालिमा थी होड़ लिये गंधमय अबीर की !!
कान्तियुक्त इन्दु सा प्रमोदपूर्ण रम्य रूप–
आँकता अनेक बार भावना समीर की !
कामना अनेक बार करते थे मोतीलाल,
मन में आकांक्षा की श्रेष्ठ तस्वीर की !!

लाड़ प्यार, व्यवहार सबका शालीन ढंग,
रंग नित्य निखरा था परिजन-प्यार से !
द्वार से अनेक बार झाँक--झाँक देखते थे--
आने--जाने वालों को चुहल अधिकार से !!
गढ़ती स्वरूप रानी, नित्य ही कहानी एक--
पुत्र को सुनाने हेतु चाव से दुलार से !
प्यार से सदैव पिता रूठते को गोद लिये--
घूमके मनाया किये जाते मनुहार से !!

घर में सम्पन्नता का राज था न कोई कमी--
आई कहीं दूर मे भी कोई बचपन में !
वही वस्तु प्राप्त हुई माँगने की देर बस--
जो कि खेल--खेल मध्य आ गई थी मन में !!
उच्च वर्ग--श्रेष्ठता का नित्य ही बाहुल्य देख--
कायदे से खेलने की रीति थी सहन में !
भूल नहीं सकती थी चेष्टा जवाहर की,
जो भी बात एक बार बैठ गई मन में !!

मोती लाल स्वयं अनुशासित

मोती लाल स्वयं अनुशासित–
निज नियमों के पालक !
सोचा करते उच्च स्तर की–
शिक्षा पाये बालक !!

घर में मुस्लिम नौकर भी थे–
अरु हिन्दू भी चाकर !
सबका पाकर स्नेह नित्य ही–
बढ़ते रहे जवाहर !!

यह भी था संयोग कि वे दिन–
पिछली घोर व्यथा के !
अनुभव लिये गढ़ा करते थे–
रूपक नित्य कथा के !!

वृद्धकाय मुन्शी के द्वारा–
किस्से सुने ग़दर के !
कैसे होते रात दिवस थे–
चर्चे फिर घर—घर के !!

कैसे चलती रही गोलियाँ—
कौन कहाँ से भागा !
सुन कर इन किस्सों को मन में—
कौतूहल था जागा !!

दादी ने पौराणिक गाथा प्यार सहित बतलाकर !
चंचल अरु चातुर्य बुद्धि था निर्मित किया जवाहर !!
भारत के गौरव—वृतान्त की नित्य झलक थी पाई !
यादरखीं गाथायें जितनी दादी ने बतलाई !!

जाग रही थी राष्ट्र भावना उधर देश में प्रतिपल !
नेहरू—घर तक पहुंच रही थी धीरे—धीरे हल चल !!

रहे प्रभावित अधिकारी भी

जग में ख्याति चतुर्दिक फैली—
बात बनी संपर्कों से !
बड़े—बड़े विद्वान न्यायविद:-
रहे प्रभावित तर्कों से !!

गहराई से पढ़ना, पढ़कर—
मोतीलाल निखरते थे !
भरी अदालत चौंका करती—
जब—जब बहसें करते थे !!

रहे प्रभावित अधिकारी भी–
असरदार व्यक्तित्व रहा !
अधिवक्ताओं के समाज में–
ऐतिहासिक कृतित्व रहा !!

पूर्ण शान से जीवन यापन के साधन थे जोड़ लिये !
जो रिवाज थे दकियानूसी अपने घर से छोड़ दिये !!
अहँकार का नाम नहीं था, स्वाभिमान पर साथ रहा !
शाह खर्ची में कमी नहीं थी खुला सदा ही हाथ रहा !!

सजता था देदीप्यमान मुखमंडल कुल के गौरव से !
दमका करता भाल सदा था स्वाभाविक गुण शौष्ठव से !!
वीरों जैसी मूछें हर दम वह व्यक्तित्व सजाती थी !
जिसको राजे महाराजों की सूरत देख लजाती थी !!

कर्म की समझी महत्ता

कर्म की समझी महत्ता, नित जुटे जी जान से,
जिन्दगी को जिन्दगी का रुख दिया था शान से,
स्वाभिमानी गुण परक थी आन मोती लाल की;
जिन्दगी के साथ ही था, प्यार हिन्दुस्तान से !

स्नेह का भण्डार अक्सर प्रियजनों को बाँटते,
और निज मन की खुशी सब आँगनों को बाँटते,
जन्म दिन पर वे जवाहर लाल के हर वर्ष ही;
वस्त्र, खाना और धन थे निर्धनों को बाँटते !

सन् १८९३ में एनीबेसेंट का भारत में आगमन

वह युग था जब जाग रहा था करवट लेकर आयर लैंड !
सहम रहा तब जिसके रंग को देख–देख कर था इंगलैंड !!
उधर विश्व को जगा रहे थे संत विवेकानंद महान !
देख रहा था टुकर–टुकर तब सब कुछ अपना हिन्दुस्तान !!

ऐसे में जाग्रति की जिसने प्राप्त प्रेरणा कर ली थी !
और स्वयं में शक्ति नई ही क्रान्ति–विधा को भर ली थी !!
थियोसोफी से रही प्रभावित, एनीबेसेंट शुभ नाम रहा !
भारत में आने पर भी था जन–जागृति का काम रहा !!

निर्भय होकर स्वतंत्रता के भाव प्रसारित करती थी !
मानवता की सेवाव्रत की नई प्रेरणा भरती थी !!
भ्रमण किया था अखिल विश्व का–वैचारिक गहराई थी !!
रुचि रखकर आध्यात्मवाद में खेल रही चतुराई थी !!

नाम सुना नेहरू कुल का, था इलाहाबाद प्रस्थान किया !
क्या होगा निष्कर्ष भेंट का, लगा स्वयं अनुमान लिया !!
नेहरू मोती लाल व्यस्त थे, नव स्फूर्ति निवेचन में !
जन–सेवा–रुचि अनुभव करने लगे स्वयं के जीवन में !!

इस महिला की भव्य भावना देखी भारत हित में थी !
जनोद्धार की प्रबल कामना हर दम उसके चित में थी !!
दृढ़ विचार अरु तर्क बुद्धि से नेहरू मोतीलाल खिले !
पूर्ण रूप अपनत्व भाव से उस महिला से आप मिले !!

चूँकि कसक थी भारत के प्रति कब से हाय गुलाम रहा !
अपनों की ही दुर्बलता का यह सारा परिणाम रहा !!
नई चेतना का युग आया, जन–मन–भाव जगाने का !!
अरु भारत की ओर तभी था रुख भी फिरा जमाने का !

सहयोगात्मक दृष्टिकोण को परख लिया अरु जान लिया !
गुणवत्ता को एनीबेसेंट की क्षण में था पहचान लिया !!

पुत्र जवाहर की शिक्षा का–
समुचित किया प्रबन्ध तभी !
एनीबेसेंट से इसी क्षेत्र से–
बढ़े और सम्बन्ध तभी !!

एक पादरी शिक्षक ब्रुक को–
शिक्षा हेतु लगा करके !
रुचिमय सुख के स्वप्न सजाये–
अपने पुत्र जवाहर के !

सन् १८९९ पंडित मोती लाल नेहरू के युरोप भ्रमणोपरान्त–कश्मीरी पंडितों की प्रतिक्रिया–

कैसे थे तब रीति–रिवाज,
अंधकार में जिया समाज,
घोर नर्क का अनुगामी था;
भारत में अंग्रेज़ी राज !

असमंजस का ऐसा दौर,
पकड़ न पाया सुख का छोर,
था निषेध युरोप जाने का;
कदम न बढ़ पाते उस ओर !

चाव सफर का था अभिशाप,
धर्म भ्रष्ट हो सकते आप,
घोर अशिक्षा का द्योतक था;
पंडितवर्गी कार्यकलाप !

किन्तु सुशिक्षित थे जो लोग,
कैसे तज पाते संयोग ?
जोकि समय ने दिया उन्हें था;
क्यों न करें उसका उपभोग !

मन में रखकर लक्ष्य विशाल,
युरोप वालों का जो हाल,
उसे देखने बहुत निकट से;
पहुंचे लंदन मोतीलाल !

नई सभ्यता का विस्तार,
देख सका उनका परिवार,
नव परिवर्तन निज जीवन में;
लाने को था किया विचार !

सुख–सुविधा के तुले प्रमाण,
जीवन विधि के खुले प्रमाण,
प्राप्त हुये सुस्पष्ट भाव से;
सुस्थिर मन से घुले प्रमाण !

भाँप लिया सब था तत्काल,
देखी नित अंग्रेजी चाल,
लिये राज़ युरोप जीवन के;
अनुभव के सांचे में ढाल !

अपनेपन की रखकर टेक,
देखा था सब साध विवेक,
जमकर बुद्धि तुला पर तोला;
गुण वत्ता का स्वर प्रत्येक !

शैक्षिक विधि के देखे रंग,
नव उद्भव के छुए प्रसंग,
बात-चीत अरु चाल-ढाल में;
रखा था अंग्रेजी रंग !

लंदन उस युग का सिरमौर,
छूता था जग का हर ठौर,
युग परिवर्तन के हर गुण को;
प्राप्त कर रहा शिक्षा—दौर !

रचकर प्राप्तव्य—तस्वीर,
गोरे बदल रहे तकदीर,
ज्ञान और विज्ञान सभी कुछ;
जैसे उनकी थी जागीर !

भारत की संस्कृति की बात,
यद्यपि होती थी दिन रात,
किन्तु देश में भेद-भाव के-
हावी थे तब उल्कापात !

धर्म भीरुता थी व्यवधान,
सदियों जिसकी ओर रुझान;
रखकर पनप न पाया अब तक;
अपना प्यारा हिन्दुस्तान !

काश ! निजी संस्कृति का प्यार,
रखता मन को और निखार,
कदम-कदम पर जन समाज पर;
पड़ा न करती दुख की मार '

चला न यदि यह युग के साथ,
कभी न होगा ऊँचा माथ,
स्वयं सिद्धि की ओर कभी भी;
बढ़ न सकेंगे इसके हाथ !

जब लौटे तो अपना देश,
भुगत रहा था नूतन क्लेश,
'—धर्मभ्रष्ट हैं मोतीलाल'
जनादेश में था आवेश !

इस विडंबना का प्रतिकार,
करने को नेहरू तैयार—
होकर आये थे भारत में;
साथ लिये अपना परिवार !

युक्ति युक्त सब करके ठीक,
लिया पंडितों को नजदीक;
"आखिर कब तक रहो पीटते,
वही पुरानी अपनी लीक !

देखो जीवन—ज्योति—विकास,
बदल रहा जग का इतिहास;
निश्चय ही हर ओर चाहिए;
परिवर्तन का सत्य—प्रकाश" !

लगा बदलने स्वजन—स्वभाव,
देख—देख कर रुचि—प्रस्ताव,
हुये सफल थे मोतीलाल;
बढ़ता प्रतिपल रहा प्रभाव !

सबके मन में था विश्वास,
प्रगति पूर्ण गुण–गौरव खास,
समझ लिया था पंडित जन ने;
यही व्यक्ति बदले इतिहास !

श्रीमती एनीबेसेंट व्यक्तित्व गरिमा / पं० मोतीलाल सान्निध्य

ज्यों–ज्यों बढ़ती गई महत्ता, स्वतंत्रता की ज्वाल की !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी, त्यों–त्यों मोतीलाल की !!

यद्यपि नर्मदली थे मन से–
किन्तु सजग थे हर घड़ी,
रहे देखते कहीं अवाँछित–
तत्व करें ना गड़बड़ी,

अवगत रहकर गर्म दलों से–
परखा था औचित्य को,
तोल रहे थे संघर्षों के–
युग में निज व्यक्तित्व को,

आंक रहे थे साथ–साथ ही, गति अंग्रेजी चाल की !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी, त्यों–त्यों मोतीलाल की !!

मानवता की मित्र थी,

सत्य साध, निर्बाध प्रचारित–
करती, सौम्य विचित्र थी,

थियोसोफी की मान्यताओं की–
तह में थी सत्यार्थी,
यहाँ, वहाँ आकर्षित उसकी–
ओर हुये विद्यार्थी,

वह नारी, निर्भीक स्वयं में, अपनी एक मिसाल थी !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी त्यों–त्यों मोती लाल की !!

इलाहाबाद संगम के तट पर–
आकर होती रही मगन,
अरु कालान्तर में आकर्षण–
केन्द्र बना आनन्द भवन,

उत्पीड़न को भुगत चुकी थी–
वह खुद अपने देश में,
इसीलिये तादाम्य बिठाया–
भारत के परिवेश में,

थी पोषक वह आजादी के हर जीवन्त ख्याल की !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी त्यों–त्यों मोती लाल की !!

भारत आकर देखा, समझा–
जाना मोतीलाल को,
तीव्र दृष्टि से निरखा–परखा–
उनके ऊँचे भाल को,

भावी का सुस्तंभ, हिंद के–
हित चिंतन पहचान कर,
परामर्श था किया निरन्तर–
विधिवेत्ता—गुण मान कर,

रही सामने कई समस्या भारत देश विशाल की !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी, त्यों-त्यों मोतीलाल की !!

वह आध्यात्मिक गुण-गौरव से–
युक्त, महा विद्वान थी,
उसे मित्रता, व्यवहारिकता–
हर गुण की पहचान थी,

नेहरू कुल से थी घनिष्ठता–
उसकी इस विश्वास पर,
एक दिवस निश्चय यह छाये–
भारत के इतिहास पर,

समझ गई थी सौम्य चेष्टा बाल जवाहर लाल की !
ख्याति चतुर्दिक फैल रही थी, त्यों–त्यों मोती लाल !!

जवाहरलाल की शिक्षा का प्रबन्ध

पंडित मोतीलाल सजग थे, मत् जीवन द्रुत मान रहा !
और जवाहर की शिक्षा का मन में श्रेष्ठ विधान रहा !!
जमींदार, मंसबदारों से यद्यपि था नैकट्य रहा !
अपनेपन में थी विशेषता, जिसका हर दम ध्यान रहा !!

राजकुमारों की अवनति को देखा अक्सर महलों में !
कुप्रभाव कुछ पड़े न सुत पर, यह भी लक्ष्य महान रहा !!
देख लिया दिन–रात नवाबों का भी था माहौल यहाँ !
सबसे अलग सुशिक्षा के प्रति भरता हृदय उड़ान रहा !!

जमीदार घर में सुख--वैभव की रहती भरमार सदा !
सच्ची शिक्षा के प्रति उनका किंचित नही रुझान रहा !!
समझी थी अंग्रेजी संस्कृति किया अध्ययन जी भर कर !
तह में जाकर यह जाना क्यों धावक इंगलिशतान रहा !!

युवक श्रेष्ठतम शिक्षा पाकर उसके रहते आये थे !
इस कारण हर एक क्षेत्र में उसका सफल प्रमाण रहा !!
प्राप्त श्रेष्ठता का जीवन है इंगलिशतानो को जग में !
उनकी ऐसी जीवन पद्धति पर जाता नित ध्यान रहा !!

मिली जवाहर हेतु प्रेरणा एनीबेसेंट के माध्यम से !
व्यापक दृष्टि—विकास मिल गया इससे बढ़ता ज्ञान रहा !!
जीवन क्या है ? क्या है संस्कृति ? बढ़े सभ्यता रुचि कैसे ??
जीवन के उत्कर्षों के प्रति नित्य नया आह्वान रहा !!

जाग उठी गम्भीर चेतना मन में तभी जवाहर के !
"आखिर पिछड़ा युगों युगों से क्यों यह हिन्दुस्तान रहा" ??
ज्ञान और विज्ञान विधा का समुचित लाभ उठाकर के !
जलता मन की वीथिकाओं में दीपक ज्योतिर्मान रहा !!

चाव था इतिहास पढ़ने का
लगा इस देश का !
और सारे विश्व के रुचिकर
नये परिवेश का !!

पुस्तकें पढ़ नित्य नामी लेखकों की,
ज्ञान का अर्जन किया !
था असर पड़ता गया—
तब गोर्की—संदेश का !!

संत विवेकानन्द का

गाँव–गाँव अरु नगर–नगर में
जीवन की हर एक डगर में,

नई लहर व्याख्यानों की,
संतों के वरदानों की,

खोल रही थी मार्ग यहाँ पर
समुचित ही आनन्द का !
कड़क रहा था बोल विश्व मे
मंत विवेकानन्द का !

सभी ध्यान से सुनते थे,
सुन करके नित गुणते थे,

भारत भू की संस्कृति को,
जानो, पहचानो, समझो !
धर्म–मर्म का ध्यान करो,
खुद अपनी पहचान करो,

शक्ति भरो उत्साहों में,
स्वतन्त्रता की चाहों में,

देखो तो है सत्य कहाँ पर,
सचमुच ही आनन्द का !
कड़क रहा था बोल विश्व में,
संत विवेकानन्द का !!

बड़े-बड़े दिग्गज थे हारे,
सिर पटके थे झुककर सारे,

लगी जागने देश भक्ति थी,
मानस-रग में नई शक्ति थी,
उच्च गगन तक ओंकार का,
होता जाता नित प्रचार था,

सिन्धु पार था मचा तहलका,
संत आत्मा के शुचि बल का,

दृश्य लखो नित यहाँ-वहाँ पर,
समुचित ही आनन्द का !
कड़क रहा था बोल विश्व में
संत विवेकानन्द का !!

पंडित मोती लाल नेहरू का पुस्तकालय

यद्यपि विधि के पंडित थे पर अन्य साध भी थी मन की !
प्रथक–प्रथक विषयों को पढ़ कर, खिली कामना जीवन की !!
इंगलिश, अरबी, उर्दू, हिन्दी और फारसी की पुस्तक !
नित्य ज्ञान भण्डार सजाकर रखी साख मनोरंजन की !!

पाँडुलिपियो की बहुतायत रहती थी नित शौक से !
गरिमा बढ़ती रही शान्तमन रहकर शिक्षा साधन की !!
राष्ट्र चेतना बढ़ी निरन्तर, बहुविधि पुस्तक ज्ञान से !
बल पाती थी श्रेष्ठ कामना प्रति पल नीति नियोजन की !!

पुस्तक, गुरु शिक्षक अरु साथी, हर मानव के जीवन में !
जगे भावना स्वाध्याय से सत–जीवन–संयोजन की !!
ज्योति जवाहर के मन की भी बढ़ी सजी नित पुस्तक से !
ग्रंथावलियों को पढ़–पढ़ कर, खुली गुत्थियाँ थीं मन की !

नई–नई अनुभूति प्राप्त कर–करके विद्वत मंडल से !
युक्ति–युक्त धारायें नित बल पाती रही प्रयोजन की !!
कुछ आंशिक साहित्यिक जीवन भी मन को बल देता था !
दाद दिया करते थे अक्सर, शायर के अपने फ़न की !!

ज्ञान–विधा, सुविधा से खिलकर, प्रगति प्रफुल्लित थी पग–पग !
यह विशेषता ज्योतिर्मय थी, वीर जवाहर–जीवन की !!
नींव हुई मजबूत यहीं से लगनशील संस्कारों से !
शुभाकाँक्षा फली यहीं से, भावी जीवन––दर्शन की !!

पुस्तकालय में विषद––पुस्तक––प्रभा––भण्डार था,
विश्व का हर ख्यातियुत लेखक सदा स्वीकार था,
काम से निवृत्त होकर, पुस्तकालय ही सदा;
आत्मीय शान्ति का, संतोष का आधार था !

बंगला कवि हेमचन्द्र वंद्योपाध्याय
(सन् १८३८–१९०३)
के
क्रान्ति गीतों का प्रभाव

सहकर प्रति पल के शोषण को दुर्बल हर इन्सान था !
हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय ने किया त्वरित आह्वान था !!

पग–पग पर नित नूतन बन्धन,
गाँव शहर में बढ़ता क्रन्दन,
रक्षक, भक्षक बने निरन्तर,
जाल गुलामी का फैला कर,

लूट रहे हैं जी भर कर,
भूख नाचती है घर, घर

रोज हाथ निलहे गोरों के लुटता रहा किसान था !!
हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय ने किया त्वरित आह्वान था !!

उठो, क्रान्ति का बिगुल बज गया,
बलिदानों का साज सज गया,
चलो, उठा ! स्वाधीन तरंगें,
भरने चल दीं नई उधंगें,

नया सूर्य उगने को तत्पर,
नव प्रकाश छाएगा घर–घर,

देश–मुक्ति का गुंजा दिया शुचि गौरव मंत्र महान था !
हेमचन्द्र वंद्योपाध्याय ने किया त्वरित अह्वान था !!

करवट ले बंगाल उठ गया,
शुभ कर्मों में त्वरित जुट गया,
देश भक्ति की लहर छा गई,
ग्राम्य भावना शहर आ गई,

बहुत बोझ था मन के ऊपर,
जिसे उतारेंगे सब जमकर,

सिद्ध किया—अंग्रेजी शासक पूरा बेईमान था !
हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय ने किया त्वरित आह्ववान था !!

नई चेतना अंकुर—अंकुर,
बजा रही जागृति के नूपुर,
स्वाभिमान के गुण शोभित,
कर्तव्यों से मंत्र समावृत,

नया जोश जीवन में भर कर,
बढ़ा रहे थे सत् जीवन-स्वर,

शंखनाद शंकर, अभयंकर का होता लयमान था !
हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय ने किया त्वरित आह्वान था !!

महाकवि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के वंदेमातरम् गान का प्रभाव—

उन्हें चाहिए थी जमने को हर सुविधा तत्काल ही !
इसीलिये रुचिकर गोरों को थी खाड़ी बंगाल की !!

थे नवाब राजे महाराजे–
पूर्ण निठल्ले भारत में !
उनकी रुचियाँ थी केवल तब–
चौगानों या दावत में !

सर्व प्रथम अंग्रेजों का दल–
उत्तरा हुगली पार था !
व्यापारिक केंद्रों की तह में–
शासन का विस्तार था !

मद मत्सर अरु वासनाओं में–
रमे यहाँ के राजे थे !
शक्ति क्षीण होते ही अक्सर–
बजते उनके बाजे थे !

इसीलिए तो पड़ी मुसीबत सहनी हर जंजाल की !
इसीलिए रुचिकर गोरों को थी खाड़ी बंगाल की !!

कलकत्ते में शासन-सत्ता–
की सुस्थापित शान से !
नए-नए गोरे आते थे–
सज-धज इंगलिश्तान से !

लगे लूटने जमकर, रमकर–
दौलत वे दिन रात थे–
और आम जनता के ऊपर !
टूटे उल्कापात थे–

नाच पतुरिया का देखा तो–
रमते रहे नवाबों में !
पूर्ण रूप भारत की सत्ता–
छायी उनके ख्वाबों में !

दूर-दूर तक पहुंच रही थी डोरी उनके जाल की !
इसीलिये रुचि कर गोरों को थी खाड़ी बंगाल की !!

जी भरकर थे द्रव्य भेजते–
वे लन्दन के ताज को !
खूब लड़ाया था आपस में–
हर रियासत, हर राज को !
कहीं नील की कोठी थी तो–
कहीं विधा व्यापार की !
नई योजना मानचेस्टर के–
बल पर तैयार की !

जाहिल कहते थे उन सबको–
जिनका सारा देश था !
बौद्धिकता को सुन-सुनकर–
तब होता भारी क्लेश था !!

नित्य नई सी एक पहेली, थी भारत के हाल की !
इसीलिए रुचि कर गोरों को थी खाड़ी बंगाल की !!

उठे लेखनी शूर—दूर–
जंगल में जाकर आँकते !
कितना हाय ! हुआ जुल्म है–
युग पट में से झाँकते !
बंकिमचन्द्र बंगाल प्रान्त में–
लगे जगाने सुप्त स्वर !
वंदे मातरम् गान तभी से–
लगा गूँजने था घर-घर !

पत्ते-पत्ते और हवा में–
भरते—नूतन प्राण थे !
आत्म—शक्ति के द्वारा–
प्रति पल खोज रहे कल्याण थे !

साथ-साथ ही आँका करते थे ताकत वाचाल की !
इसीलिए रुचि कर गोरों को थी खाड़ी बंगाल की !!

टूट गया भ्रम–
जागें हम दम !
ज्योति जगाकर–
बंधा नया क्रम.

गली, नगर अरु गाँव-गाँव से !
लगा गूँजने बड़े चाव से–
वंदेमातरम् वंदेमातरम् !!

कदम-कदम पर हीन भावना–
को बढ़कर ललकार दिया !
सुजलाम, सुफलाम घोष गँजाकर–
फिर अपनत्व निखार दिया !
बल की करके विपुल कामना–
रग-रग में भर जोश दिया !
कण-कण में प्रण भरा स्नेह का–
और संचरित होश किया !

टूट गया भ्रम–
जागे हम-दम !
ज्योति जगाकर–
बंधा नया क्रम !

कण्ठ-कण्ठ से हुआ निनादित–
अब न रहेंगे में हम अभिषापित,
वंदेमातरम् ! वंदेमातरम् !!

तंद्रालस से त्वरित जगाकर–
निष्प्राणों को प्राण दिये !
वंदेमातरम् के द्वारा थे–
शब्द-भाव के वाण दिये–
निज धरती बलिदान माँगती–
सुना दिया आह्वान यही !
है आवश्यकता अब भारत की–
ओ, भोले इन्सान यही !

कर-करके श्रम,
बदले आलम,
ज्योति जगाकर–
बंधा नया क्रम.

प्राण-प्राण में शक्ति संयोजन,
भरता जाता था नव जीवन,
वंदेमातरम् ! वंदेमातरम् !!

सन् १६०५ में बंगाल विभाजन की प्रतिक्रिया :

हरेक क्षेत्र में नित्य प्रदर्शित अंग्रेजों ने दंभ किया :
सबसे पहले कलकत्ते से शासन का आरंभ किया !!

शक्ति देखकर जन—समूह की निज शासन को रंग दिया !
रच करके षडयन्त्र मंत्र बंगाल प्रान्त को भंग किया !!

भूमि भाग को ऐसा बाँटा,
हिन्दू से मुस्लिम को काटा,
चाल नियोजित थी लंदन की,
करने को अपने ही मन की !

घृणित भावना का सलूक था, जन–जीवन के संग किया !
रच करके षडयंत्र मंत्र बंगाल प्रान्त को भंग किया !!

भूमि हड़पने को नित आतुर,
रोज–रोज कम्पनी बहादुर,
किये प्रताड़ित रहते जन को,
खुश करने को नित लंदन को !

दीर्घकाल शासन का अपने एक नया ही ढंग किया !
रच करके षडयन्त्र मंत्र बंगाल प्रान्त को भंग किया !!

कब तक सहते अत्याचार,
घृणित भावना का व्यवहार,
बंग भंग को देख देश के वीर,
क्रान्ति को थे तैयार !

विजय वरण को, कण–कण–
भरता एक नया अनुराग उठा !
बिगुल क्रान्ति का बजा दिया–
बंगाल प्रान्त था जाग उठा !!

दिशा—दिशा में जगी चेतना,
देश हेतु कुछ करने की,
वारीन्द और अरविन्द घोष को,
चिन्ता रही न मरने की,
क्रान्ति–स्वरों की उत्कट चाहें,
देश–भक्ति लौ भरती थीं,
युवकों में उत्साह जगाकर,
पग—पग प्रेरित करती थीं !

युवा चेतना का गुण—गौरव नया खेलने फाग उठा !
बिगुल क्रान्ति का बजा दिया, बंगाल प्रान्त था जाग उठा !!

अब न अधिक दिन सहें गुलामी,
भारत भूमि स्वतन्त्र बने,
राष्ट्र काज हित मर मिटने की
चाहें मौलिक मंत्र बनें,
लोकमान्य से मिली प्रेरणा,
लगन सहित श्रम करते थे,
चलते थे निर्भीक सदा,
अरविंद न किंचित डरते थे,

प्रीत। प्रेरणा का उज्ज्वल व्रत—
करने अमर सुहाग उठा !
बिगुल क्रान्ति का बजा दिया—
बंगाल प्रान्त था जाग उठा ! !

लिये क्रान्ति की उच्च मशाल,
और दमकता उन्नत भाल,
एक नया आन्दोलन छेड़ा,
जन जागृति की नींवें डाल !

झुकी अन्ततः गोरी सत्ता—
रखकर निज लज्जा की टेक !
हुआ पुनः बंगाल प्रान्त था—
साम्य भावना से जुट एक ! !

गुरु देव रवीन्द्र नाथ टैगोर :

तज करके लालित्य पूर्ण छवि–
और कल्पना—आँगन को !
उठे त्वरित गुरुदेव सँवरने–
भारत जीवन—दर्शन को !!

अखिल विश्व था रहा दृष्टि में–
प्रकृति छटा गुण व्रत भी था,
मानव प्रेम, क्षेत्र रचने को,
आतुर कवि की थी कविता,
जाग्रत की, यौवन आकांक्षा,
उच्च शिखर पर चढ़ने की,
उस असीम को पा लेने की,
युग व्रत सत्, पथ पढ़ने की !

कहा—"स्वर्ण से भी उज्ज्वलतम–
करो स्वयं के जीवन को !
उठे त्वरित गुरुदेव सँवरने–
भारत जीवन दर्शन को !!

लक्ष्य, लक्ष्य हाँ, वह समक्ष है,
बढ़ो तीव्र गति भर पग में,
मार्ग स्वयं ही चुनकर, गुण कर,
मेट चलो तम को जग में,
मातृ—भूमि की सुनो टेर रे,
कर्त्तव्यों के पृष्ठ पढ़ो !
उठो ! उठो ! अब धरा धाम के,
कष्ट मेटने चलो ! बढ़ो !!

तनिक गौर से देखो, माँ की–
आँखों में रे ! सावन को !
उठे त्वरित गुरुदेव सँवरने–
भारत जीवन—दर्शन को !!

हे माँ, दीन–हीन तुम हो पर,
स्नेह अपार लुटाती हो !
बन्धी बन्धनों में हे, जननि,
रात दिवस अकुलाती हो !
लखकर तुमको पीड़ित, त्रासित–
तड़प मुझे कलपाती है,
अपने घर, असहाय हाय !
यह दशा न देखी जाती है !

कैसे देखूं साहस करके–
अश्रु प्रपूरित लोचन को !
उठे त्वरित गुरुदेव सवँरने–
भारत जीवन—दर्शन को !!

आज युक्ति के श्रेष्ठ मंत्र का,
कर ले विश्लेषण मन रे !
आयें जिससे खुली हवायें–
तोड़ सभी दे बंधन रे !
गीत रचो मन नवोल्लास के–
कवि का कर्म निभाना है,
जाग उठी है नव्य चेतना–
सारा विश्व जगाना है !

बढ़ो सौम्य अरु चलो काटते–
अवसादों के बन्धन को !
उठे त्वरित गुरुदेव सँवरने–
भारत जीवन—दर्शन को !!

चलो विजय का सूत्र पकड़ कर–
अरे, साहसी नव यौवन,
निडर, प्रवरजन, धैर्यवान तुम !
उठो दिखाओ अपनापन,
नवयुग आया द्वार तुम्हारे,
त्याग बढ़ो रे ! हर उलझन,
ज्वाल किरण नव स्वतन्त्रता की,
देगी अब सुखमय जीवन !

नव ऊषा वरदान दे रही–
उठ कर देखो कण—कण को !
उठे त्वरित गुरुदेव सँवरने–
भारत जीवन दर्शन को !!

सन् १९०७—१९१० का भारत

नित्य वेदना ग्रस्त समस्त,
भारत भू का जीवन त्रस्त,
दहक रहा था ज्यों श्मशान,
मिल जाते थे खुले प्रमाण !

वसुन्धरा का सब सुख चैन,
लुटता रहता था दिन रैन,
बन्धक से थे रीति-रिवाज,
घर में जमा विदेशी राज !

इससे ज्यादा क्या परिताप,
थे गुलाम निज घर में आप;
लगा किसी का था क्या श्राप ?
पड़ा भोगना जो अभिशाप !

कलपा करते आठों याम,
जितने भी थे देश गुलाम,
अपनेपन से ले वैराग्य,
भारत भी तो था हत् भाग्य !

अन्तर्द्वन्दों का इतिहास,
रोक रहा था स्वत्व–विकास,
कुण्ठा जड़ता का था दौर,
नहीं सूझता था कुछ और !

सुख का किंचित रहा न नाम,
दुख की छाया में विश्राम
कब था सम्भव, हर ग्रामीण,
तन अरु मन दोनों से क्षीण !

बढ़ा किन्तु था तब मद्धम,
जन–आन्दोलन का वह क्रम,
पूछा करती थी तकदीर,
कब जागेंगे हिन्दी–वीर ?

सप्त सिन्धु की लहरों बीच,
सुख सोता था आँखें मींच,
कुटिल काल के लम्बे हाथ,
छुड़ा रहे अपनों का साथ !

किसे दासता में सुख–चैन,
मिल पाता है दिन या रैन,
लुटता रहता सुख–संसार,
बढ़े वेदना का नित भार !

जमींदार अरु सरकार,
कर देते थे दुहरी मार,
जो भी लग जाता था हाथ,
ले जाते थे अपने साथ !

दुखी हुई थी जनता आम,
आठ पहर रोने से काम,
कौन करे किससे फरियाद,
देश नही था जब आजाद !

रहे जिन्दगी की गति नाप,
फटे चीथड़ों से तन ढाँप,
यह थी भारत की तस्वीर,
दे करके अपनी जागीर !

गिरी झोंपड़ी, टूटे धाम,
घोर गुलामी का अंजाम,
भोगा करते थे दिन रात,
किससे कहते मन की बात !

केवल कुछ ही ऐसे लोग,
जुड़ा रहे थे व्रत संयोग,
करने को आन्दोलन तेज,
भ्रमते थे संदेशे भेज !

किन्तु अधिकतर थे असहाय,
और विवशता का पर्याय,
मन में लेकर नूतन चाह,
चले बनाने अपनी राह !

हाय ! मगर किस्मत का खेल,
पड़ी देखनी थी झट जेल,
कैसा, किसके घर संतोष;
देते थे किस्मत को दोष !

डी० एस० पी० से ले प्रतिकार,
दिखलाया जनता—अधिकार,
यद्यपि भोगा था परिणाम;
किन्तु न मानी युग से हार !

कुछ ऐसे थे मूढ़ किसान,
जमींदार की बातें मान,
बनकर रहते थे मजबूर;
जैसे थे बंधुआ मजदूर !

चला 'युगान्तर' लिये प्रवाह,
उज्ज्वल देश भक्ति की चाह,
जो कि भटकते रहे सदा थे;
दिखलाती थी उनको राह !

प्रतिपल लखकर दुख की रेख,
कदम—कदम उत्पीड़न देख,
रोया करता था आकाश;
चहुंदिशि होता सत्यानाश !

हर दयाल अमरीका बीच,
स्वाभिमान की क्यारी सींच,
'गदर' पत्र के द्वारा, सारे;
जग का ध्यान रहे थे खींच !

१३ मई सन् १६०५ इंगलैंड में नेहरू परिवार

जवाहरलाल की शिक्षा का आरम्भ

उपजा था जीवन में हर्ष,
पूर्ण किये जब पन्द्रह वर्ष,
शिक्षा अरु अध्ययन डगर पर,
मिला जवाहर को उत्कर्ष !

सुख—सुविधा सम्पन्न विशाल–
हृदय, समादृत मोतीलाल,
पहुंच लेकर निज परिवार,
मन में रखकर यही ख़याल !

श्रेष्ठ, समय का यह संदेश,
सुधरे जीवन, सँवरे देश,
उच्च स्तर का शिक्षा–चाव,
था जीवन का साध्य विशेष !

कैसी दुविधा, कैसा क्लेश ?
प्रचुर अर्थ, सामर्थ विशेष,
तत्परता के साथ बन रहा–
था जीवन का नव परिवेश !

लंदन का हैरो स्कूल,
मिला श्रेष्ठता-रुचि-अनुकूल,
तरुण जवाहर के जीवन में-
खिले उमंगो के थे फूल !

सबसे मिल--जुल अरु हस खेल,
बढ़ा लिया छात्रो से मेल,
लौट चल घर मोतीलाल-
सुन का लख कर सबसे मेल !

तीव्र बुद्धि थी आई काम,
मित्रगणो मे था नित नाम,
मन मे था आनन्द अपार;
मिलने आते खास-ओ-आम !

इंगलिश का अधिकारिक ज्ञान,
बढ़ा रहा था प्रति दिन शान,
किन्तु रहा था हर पल याद;
अपना प्यारा हिन्दुस्तान !

सन् १९०७ जवाहरलाल कैम्ब्रिज ट्रिनिटी स्कूल में

एक नया परिवर्तन दौर,
बढ़ा रहा था साहस और,
तरुणाई के बढ़े कदम;
युवा अवस्था की थे ओर !

विश्व स्तर पर जिसका नाम,
शिक्षा का सुस्तर अविराम,
सु–स्नातक बनने का क्षेत्र;
कैम्ब्रिज ट्रिनिटी विद्या धाम !

नया गर्व स्वाभाविक बात,
प्रगति प्रेरणा थी दिन–रात,
स्वाध्याय के मित्र प्रवीण;
तथ्य कराते थे नित ज्ञात !

रुचिकर विषय लगा विज्ञान,
बढ़ा सफलता हेतु प्रयाण,
भाया हृदय रसायन शास्त्र;
शास्त्र वनस्पति पर भी ध्यान !

करवट लेकर उठा विवेक,
स्वतन्त्रता की रखकर टेक,
खिला ज्ञान का विस्तृत क्षेत्र;
मिली पुस्तकें श्रेष्ठ अनेक !

अनुभव का यह, वह था दौर,
जिसमें सबसे बढ़कर गौर,
रहती थी हर दिन अरु रात;
कष्ट सहे क्या भारत और ?

चूँकि बढ़ी अंग्रेजी चाल,
स्वार्थवाद साँचे में ढाल,
कसती रही शिकंजा खूब;
नित्य नये कानून निकाल !

बृहत्तर था वैचारिक जाल,
जुटते रहे जवाहरलाल,
विचलित हो उठते थे प्राण;
पढ़ करके भारत का हाल !

१९०७–१९०९ कैम्ब्रिज में राजनीतिक हलचल :

देख लिया इङ्गलैंड—वास में–
राजनीति से नित्य लगाव !
भारत की घटनाओं का था–
पड़ता रहता पूर्ण प्रभाव !!

यद्यपि सुख सुविधा के साधन–
जुड़ा रहे थे हर संयोग !
किन्तु अधिकतर बुद्धि प्रखरता–
देती थी रुचि को सहयोग !!

पाल, बाल अरु लाल सभी ये–
और कई नेता दिन–रात !
युरोप के देशों में जाकर–
रखते थे भारत की बात !!

वीर लाजपत और गोखले–
स्वाभिमान की रखकर आन !
जब भी बोले थे कैम्ब्रिज में–
दहल उठा था इंगलिश्तान !!

एक और प्रतिभायुत मानव–
सिद्धि प्राप्त श्री हरी दयाल !
विद्वत्ता में अपना सिक्का–
नित्य जमाते दिखा कमाल !!

किचलू, अहमद सुलेमान अरु–
मुस्लिम भाई कई अनेक !
राजनीति में दिलचस्पी से–
रखते थे भारत की टेक !!

जैसे भी हो संभव पाये–
भारत निज मौलिक अधिकार !
राजनीति में बुद्धिवाद का–
तब लंदन में रहा प्रचार !!

कई संगठन जुड़े शान से–
नवयुवकों में आया जोश !
सुन कर हालत मातृ भूमि की–
उभरा करता था आक्रोश !!

भोग रहे जो हम आजादी–
इसके पीछे क्रान्ति—प्रयाण !
उस युग में भरता था प्रतिदिन–
नव युवकों में नूतन प्राण !!

जो कि एशिया से आए थे–
करने को शिक्षा गुण प्राप्त !
अन्यमनस्कता उनके मन से–
क्रमशः होती रही समाप्त !!

नित्य जवाहर बहसें करते–
मित्र साथियों से हर रात !
तर्क सहित बल देकर कहते–
भारत के गौरव की बात !!

देश हेतु चिंतन की मन में–
पड़ी हुई थी वो बुनियाद !
जो भरती थी दिनचर्या के–
भाव और भाषण आजाद !!

एक नहीं, कतिपय विषयों का–
बढ़ता जाता था नित ज्ञान !
यही सोचते रहते थे कब–
खिले कमल सा हिन्दुस्तान !!

यह जो जीवन है लंदन के–
नगरों और घरों का श्रेष्ठ !
कर सकते क्या नहीं प्राप्त यदि–
करें सभी कुछ यत्न यथेष्ठ !!

जगा देश के प्रति था मन में–
तब नेहरू के प्रेम अपार !
जिसका प्रतिदिन लगन चाव से–
होता रहता था विस्तार !!

श्री गोपाल कृष्ण गोखले:

नमन उन्हें जो जिये देश की–
खातिर प्रति पल शान से,
जो विदेश में भी जाकर थे–
गरजे नित अभिमान से,

"अब न अधिक दिन शोषण का युग–
चल पायेगा विश्व मे,
ओ अंग्रेजो, हटो हमारे–
प्यारे हिन्दुस्तान से" ।

गांधी के गुरु वीर गोखले, शान-ए-हिन्दुस्तान थे !
धनी बात के प्रणवत, सत्पथ फौलादी इन्सान थे !!

बिगड़ चुकी जब दशा देश की,
घर-दर-स्वर सब दीन था,
वह युग था जब हाय ! देश का,
सारा चित्र मलीन था,
पग-पग पर थी रमी दासता,
तड़प रही थी धरती मा
नित्य भुखमरी, बीमारी का,
तांडव सा था जहाँ-तहाँ,

उठे गोखले, बढ़े राह पर सेवा की अरमान से !
धनी बात के प्रणवत, सत्पथ फौलादी इन्सान थे !!

अमर गोखले की वाणी सुन,
जागा भारतवर्ष था,
युग आया है परिवर्तन का,
निकला यह निष्कर्ष था,
किये निरन्तर वे प्रयास जो,
आवश्यक तत्काल थे,
जिधर बढ़े पग, जुड़े हजारों
ही भारत के लाल थे,

सिंह वीर बंगाल प्रान्त के भी दृढ़मन गतिमान थे !
धनी बात के प्रणवत्, सत्पथ फौलादी इन्सान थे !!

उत्तर भारत जाग चुका था,
नई लहर थी देश में,
लगन,मगन मन चेत रही थी,
सारे ही परिवेश में,
मार्ग-दर्शनों की इच्छा से—
नेतागण नजदीक थे,
जुड़े देश की आजादी की—
मनोकामना लीक से,

गीत प्रीत भर स्वतंत्रा की होते नित लयमान थे !
धनी बात के प्रणवत्, सत्पथ फौलादी इन्सान थे !!

गाँधी लौटे अफ्रीका से–
देखा भारतवर्ष में,
सजग विज्ञ जन नेता सारे–
जुटे यहाँ संघर्ष में,
जब देखा गोपाल गोखले–
संगम साहस, बल का हैं,
निज भाषण से खूब–
मचाते रहते नित्य तहलका हैं,

गुरु माना अरु किया समर्पित खुद को था सम्मान से !
धनी बात के प्रणवत्, सत्पथ फौलादी इन्सान थे !!

क्रियाशीलता, स्वयं सिद्धि का–
मार्ग दिखाया गाँधी को,
पूर्ण रूप आशीषें देकर–
स्वयं बढ़ाया गाँधी को,
लौह लाडले की वाणी में–
चमत्कार की गंध थी,
और निरन्तर प्रबल चेष्टा–
तोड़ रही प्रतिबंध थी,

गाँधी को गुरु के वाचन के मिलने लगे प्रमाण थे !
धनी बात के प्रणवत, सत्पथ, फौलादी इन्सान थे !!

एक-एक से ग्यारह होकर
शक्ति बने आन्दोलन की,
रखते थे तस्वीर हृदय में–
तब के भारत जीवन की,
अंग्रेजों से लोहा लेने के–
प्रण मन में ठाने थे,
साथ हो लिये नव प्रयाण में–
सब अपने, बेगाने थे,

जो क्षण पहले लगे कठिन थे हुए वही आसान थे !
धनी बात के प्रणवत्, सत्पथ लोहे के इन्सान थे !!

श्री बाल गंगाधर तिलक:

मान सहित स्वराज्य प्राप्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है !
यही हमारा लक्ष्य, यही नव जीवन का सिंगार है !!

तिलक रूप में लिये गर्जना
पुनः शिवाजी आ गया,
महाराष्ट्र का पौरुष जागा–
दिशा-दिशा पर छा गया,
सिंह सरिस देखी थी हस्ती–
धरती अरु आकाश ने,
प्राप्त किया फौलादी चेतन–
भारत के इतिहास ने,

तोड़ दासता बढ़ो वीर रे, माँ की यही पुकार है !
यही हमारा लक्ष्य, यही नव जीवन का सिंगार है !!

उज्जवल मस्तक, स्वाभिमान था–
अरु वाणी में ओज था,
अति प्रभाव ओजस्वी स्वर का–
पड़ता सब पर रोज था,
महिमायुत व्यक्तित्व निराला–
निडर बढ़ा उस राह पर,
जिसने भारत की जनता में–
दिया नया उत्साह भर,

बोला—"आओ, साथ हमारे जिसे देश से प्यार है" !
यही हमारा लक्ष्य, यही नवजीवन का सिंगार है !!

दिया काँग्रेस को जन-बल था—
अपने श्रम अरु ज्ञान से,
नैतिकता को रंग दिया था—
गरिमा के सोपान से,
मिला सबल नेतृत्व देश को—
जागा—सोया देश था,
नित्य—'केसरी' के द्वारा—
पहुंचाया निज संदेश था,

स्वाभिमान से जीने का प्रण सतजीवन आधार है !
यही हमारा लक्ष्य यही नव जीवन का सिंगार है !!"

दहल उठे अंग्रेज देखकर
रौद्र सरीखे रूप को,
भाँपा करते थे भाषण में—
भावी ज्योति-स्वरूप को,
जुड़ती जाती भीड़ जहाँ भी—
तिलक निकलते शान से,
मन में था यह, निश्चय जायें—
गोरे हिन्दुस्तान से,

यहाँ तोड़नी अब बंधन की हर ऊँची दीवार है !
यही हमारा लक्ष्य, यही नव जीवन का सिंगार है !!

दीन दशा भारत की प्रतिपल—
खलती थी उस वीर को—
जो आँखों में नव भारत की,
लिये रहा तस्वीर को,
गाँधी, मोती और गोखले—
सब को लेकर साथ में,
बढ़े तिलक थे ज्योति पताका—
लेकर कर्मठ हाथ में,

नहीं यहाँ पर पल भर को भी सहना अत्याचार है !
यही हमारा लक्ष्य, यही नव जीवन का सिंगार है !!

नई हलचलें शुरू हो गईं—
जागृति का युग था नया,
मंत्र तिलक का हर प्राणी के—
जीवन पर था छा गया,
सही यंत्रणायें भी अक्सर—
गये जेल थे शान से,
एक नई लौ जागृति की थी—
दहकी हिन्दुस्तान से,

देश-धर्म पर मर मिटना ही इस जीवन का सार है !
यही हमारा लक्ष्य यही नव जीवन का सिंगार है !!

सन् १९१० पंडित जवाहरलाल द्वारा कैम्ब्रिज से स्नातक की उपाधि प्राप्त :

शिक्षण की गरिमा महिमा से—
राजनीति में बढ़ा रुझान !
राष्ट्र प्रेम की ललक–झलक में—
पनपा करते थे अरमान !

थे स्वतन्त्र लंदन वासी सब—
सजा रहे अंग्रेजी गर्व !
नित्य क्लबों में आयोजित थे—
होते उनके सुखमय पर्व !!

जिन्हें देखकर ग्लानि स्वयं पर—
होती थी हर पल, हर रोज !
उपनिवेशवादी चालों का—
देख रहे हर छल, हर रोज !!

मिला अन्ततः था स्नातक का—
शिक्षा व्रत में था सम्मान !
किन्तु साथ ही हर क्षण, हर पल—
था दिमाग में हिन्दुस्तान !!

गर्व सहित उपलब्धि प्राप्त कर–
रमा लिया मन में विज्ञान !
नव जिज्ञासा सहित प्रेरणा–
पाकर मन था अति गतिमान !!

निश्चित ही सब खुशी हुये थे–
जितने जो भी थे समकक्ष !
गर्व सहित अब नेहरू अपना–
रख सकते थे पूरा पक्ष !!

अफसर शाही के सुस्तर पद–
यद्यपि हो सकते थे प्राप्त !
मिला निमंत्रण आई.सी.एस. का–
ज्यों ही शिक्षण किया समाप्त !!

किन्तु देश की भक्ति निरन्तर–
रखती थी मन में सुस्थान !
कर्मठ सेवा व्रत संयोजन–
मांग रहा था हिन्दुस्तान !!

विधि प्रभाव से अवगत रहकर–
उठ सकते थे द्रुत तर पांव !
चूँकि उधर इंगलैंड समूचा–
चलता रहता था नित दाँव !!

किया तभी निर्णय विधि–शिक्षा–
पाने का क्रम बाँधा पूर्ण !
देश काज हित राजनीति पर–
अपना मन था साधा पूर्ण !!

सन् १९११—दिल्ली दरबार :

भारत में कर शासन तेज,
सोचा करते थे अंग्रेज,
सारे राजे और नवाब,
देख रहे हैं सुख के ख्वाब !

हुई सभी की ताकत क्षीण,
भारत माँ का हृदय विदीर्ण,
देख, देख कर ही था 'रोज,
उधर रईसों के नित भोज !

गोरा शासन अति चालाक,
जमा रहा था अपनी धाक,
इसीलिये था किया विचार,
दिल्ली में होगा दरबार !

लंदन का तब प्रतिनिधि श्रेष्ठ,
करके आया यत्न यथेष्ठ,
सब पर अपना जादू डाल,
लंदन होगा मालामाल !

यह था सज धज का त्यौहार ?
और गुलामी का उपहार,
खुश थे राजे और नवाब,
हाकिम थे कहलाये साब' !

रखने को गोरों की बात,
हाथी घोड़ों की हर पाँत,
लिये खुशामद का दस्तूर,
कहती झुक झुक रहीं 'हुजूर' !

मिली देखने को थी शान ?
और बंध गया हिन्दुस्तान,
दुमछल्ले बन गये नवाब,
धुली नरेशों की थी आब !

दिल्ली दल का यह दरबार ?
स्वयं सिद्ध था आखिरकार ?
भारत के कष्टों का दौर,
अन्य लिखा जाये क्या और !

सन् १९१२ पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा

बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त कर भारत लौटना :

पा लिया था विधि-विधा के योग्यतम आधार को !
योग्यता की थी जरूरत उस समय संसार को !!

आई. सी. एस. सिर्फ शासन सूत्र का प्रतिमान था !
साथ में तब नित झलकता, रौब अरु अभिमान था !!

किन्तु भारत के लिये कुछ और ही दरकार था !
इसलिये नेहरू को वह साधन नहीं स्वीकार था !!

चाहिये थी तर्क गुणता, और बौद्धिक चेतना !
किस तरह आजाद भारत, हो यही था देखना !!

आ गई गरिमा विचारों में नयापन था मिला !
बनके बैरिस्टर जुड़ा था विधि-विचारक सिलसिला !!
सात वर्षों में हुआ, युरोप का अनुभव श्रेष्ठ था !
पा लिया संचेतना ने ज्योति उद्भव श्रेष्ठ था !!

था बहुत कुछ अध्ययन से प्राप्त जीवन के लिये!
युक्ति सम्मत तर्क थे, प्रत्येक साधन के लिये !!
अरु पिता माता सभी तो खुश हुये थे देखकर!
लौट कर जब आ गये थे देश के. संकेत पर!!

साध मन में थी यही कि कार्य होगा देश का!
ध्यान था पूरी तरह से वक्त के संदेश का!!
राष्ट्र सेवा की लगन थी, अरु दिशा भी प्राप्त थी!
शैक्षणिक युग अ ंत की संभावना समाप्त थीं!!

थी यही संभावनाएँ कशमकश–
का दौर हो!
साथियों अरु परिजनों का–
रास्ता कुछ और हो!!

किन्तु सुख का दीर्घ अनुभव–
था पिता की छाँव में!
भावना थी राष्ट्रवादी–
स्वस्थ मन के गाँव में!!

दृढ़ विचारों का यहीं से–
बंध गया था सिलसिला!
हो गया वो ही प्रभावित–
जो कि उनसे था मिला!!

सहमत होकर बढ़े जवाहर :

भारत में आतंकवाद को
सुनकर रहते थे बेचैन !
कई बार तो तारे गिनते–
ही बीती थी अक्सर रैन !!

उच्च स्तर की शिक्षा—दीक्षा–
अरु कॉलेज के मारे ठाठ !
लगता था सामंती युग का–
एक निराला रूप विराट !!

नेहरू मोतीलाल चाहते–
पुत्र जवाहर बने वकील !
किन्तु समय के साथ समन्वय–
कर न सकी थी कोई दलील !!

बैरिस्टर बन ख्याति कमाना–
न था जवाहर को स्वीकार !
जाग उठा था उनके मन में–
देश भक्ति का पूरा ज्वार !!

बढ़ा देश के नेताओं से–
उनका अपना भी संपर्क !
तब देखा सुस्पष्ट भाव से–
जन—जीवन अरु जग में फर्क !!

लोकमान्य की गूँज रही थी–
भारत भू पर नित ललकार !
"स्वतन्त्रता है भारत की, अब–
जन्म सिद्ध अपना अधिकार !!"

पूर्ण रूप से इनसे सहमत–
हो कर बढ़े जवाहरलाल !
सोच समझ कर किया फैसला–
मन में रख कर लक्ष्य विशाल !!

सन् १९१२–१४ कॉंग्रेस के साथ मुस्लिम लीग द्वारा सहयोग की चेष्टा

राजनीति के स्वस्थ मच पर–
होते रहे प्रयास नये।
जगी वहाँ स्वराज्य भावना–
लिखे गये इतिहास नये।।

सत्ताधारी अग्रेजो से–
भिडने हेतु तरीका था।
कॉंग्रेस के मचो मे जो–
नेताओ ने सीखा था।।

अधिकारो के लिये जुगत की–
यही एक तो सस्था थी।
इसीलिये तो पीछे—पीछे–
चलती सारी जनता थी।।

बुद्धिवादियो की बहुतायता–
इसमें अक्सर होती थी।
विधिवेत्ताओ की जमात भी–
बढ़कर तत्पर होती थी।।

यद्यपि काँग्रेस को सबका—
प्रचुर मिला सहयोग सदा !
मौलिकता में अधिकारों की—
बहसें होतीं यदा—कदा !!

मुस्लिम लीगी लगे सोचने—
चर्चा देश विदेश रहे !
जन आन्दोलन में ज्यादातर—
लाभान्वित काँग्रेस रहे !!

इस कारण जिन्ना के मन को—
प्राप्त नया संयोग हुआ !
बढ़कर, रुचिकर, काँग्रेस के—
प्रति हितकर सहयोग हुआ !!

लगे सोचने अच्छा होय कि—
मिल जुल कर ही काम करें !
अगर अकेले रहे यहाँ पर—
लोग हमें बदनाम करें !!

महाशक्ति से अंग्रेजों की—
युक्ति सहित लड़ सकते हैं !
उदासीनता के कारण तो—
सब पीछे पड़ सकते हैं !!

कहीं नील पर कहीं झील पर :

इस जग में चालाक बहुत जन,
गोरे सबसे बढ़ कर थे !
नित्य नोचने के गुण सारे,
आते घर से पढ़ कर थे !

अफसर या कि मातहत जो भी लन्दन से आता था,
भारत की जनता को प्रतिदिन बढ़कर नाच नचाता था,
पूर्ण रूप से जब भारत था आया उनके पंजे में,
रात दिवस आरम्भ किया था कसना इसे शिकंजे में !!

नये बहाने तंग करने के,
आते रुचि से गढ़ कर थे !
नित्य नोचने के गुण सारे,
आते घर से पढ़ कर थे !

कही नील पर, कही झील पर, कब्जा किया अचानक था,
अरु कपास की खेती पर षडयंत्र बड़ा ही व्यापक था,
किये यहाँ हथकरघे ठप्प थे, चर्खे, तकुवे तोड़ दिये,
और जुलाहे यहाँ, वहाँ भगवान भरोसे छोड़ दिये !

दोष गरीबी के भारत को,
दिये सदा बढ़–चढ़ कर थे !
नित्य नोचने के गुण सारे,
आते घर से पढ़ कर थे !

नहीं नमक तक भी मिलता था बिना करों के जनता को,
रात दिवस देखा करती थी बढ़ती जुल्म सघनता को,
पंगु बनाकर छोड़ दिये थे कृषक परेशाँ हाल रहे,
दूर-दूर तक फैले बैरी पुलिस दलों के जाल रहे !

इतना निर्बल बना दिया था,
क्या पा सकते लड़ कर थे,
नित्य नोचने के गुण सारे,
आते घर से पढ़कर थे !

कहने को थे सभ्य काम पर करते रहे गवाँरों का,
नाम नहीं लेते थे किंचित जनता के अधिकारों का,
कहीं भूख तो, कहीं सूखते खेत व्यथित थे, तरसे थे,
यदि विरोध कर दिया किसी ने उस पर कोड़े बरसे थे !

अरु इसकी भी जिम्मेदारी,
जाते सिर पर मढ़ कर थे !
नित्य नोचने के गुण सारे,
आते घर से पढ़ कर थे !

पं० जवाहर लाल नेहरु द्वारा अपने पिता के सहायक के रूप मे इलाहाबाद हाई कोर्ट में वकालत आरम्भ :

सन् १६१२

माँग रही धरती सहयोग–
और समय का सदुपयोग,
साथ–साथ ही जीवन यापन–
के भी जुड़ने थे संयोग !

यद्यपि घर था आलीशान,
तना हुआ था सौख्य—वितान,
अर्थ व्यवस्था रही पिता की–
उच्च स्तर पर थी गतिमान !

स्वयं सिद्धि का पर् था चाव–
कर्मठता का बना स्वभाव,
इसीलिए मन ने प्रस्तुत था–
किया वकालत का प्रस्ताव !

बने पिता के पूर्ण सहाय–
यह भी जीवन था सुखदाय,
विधि वेता रुचि की करवट में–
आजादी के थे संकाय !

नहीं मुकदमें थे दस बीस–
किन्तु रहे ना थे उन्नीस,
मिला पाँच सौ रुपये का धन;
जो पहली अधिवक्ता फीस !

थे प्रसन्न मन मोतीलाल,
देख पुत्र का नया कमाल,
स्वावलम्ब की ओर अग्रसर;
हुआ आज था उनका लाल !

शुभाकाँक्षा अरु विश्वास–
बना रहे थे नव इतिहास,
लगन शीलता लिये जवाहर–
लगे आँकने तीव्र विकास !

सन् १६१२ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित हो गये :

भारत की दुर्दशा देखकर मन हो उठता था बेचैन !
कैसे हो आजाद देश यह, चिन्ता रहती थी दिन रैन !!
पढ़कर सोचा था अतीत को, भारत बदलेगा इतिहास !
वर्तमान ने जगा दिया था भावी के प्रति नव विश्वास !!

घर का था माहौल देश के प्रति चिन्तन का उन्नत केन्द्र !
खुले विचारों की धरती पर नहीं बना था दलगत केन्द्र !!
पिता पुत्र की वैचारिक गति, युग का लख परिवर्तन दौर !
विधि वेत्ता गुण मे हटकर भी सोचा करती थी कुछ और !!

अधिकारों के हेतु नये नित संघर्षो पर सोच विचार !
करके, त्वरित जवाहर ने था-बना लिया मन का आधार !!
हुये सम्मिलित काँग्रेस में रख कर भारत लक्ष्य, समक्ष !
कामनायें थी जन-सेवा की, भावनायें थी श्रेष्ठ सुदक्ष !!

तिलक जेल में थे गोरों की-उत्पीड़न का था आरम्भ !
जगह-जगह पर मार-धाड़ ने बढ़ा दिया शासन का दंभ !!
नर्मी का रूख रखने वाले, नेता गण थे वहाँ अनेक !
निजी सुखों के परिधि-जाल में सोचा करता था प्रत्येक !!

कुछ उनसे भी जुड़े हुए थे जो थे दौलत मंद अमीर !
अरु कुछ ऐसे थे जिनकी थी लम्बी चौड़ी तब जागीर !!
उन्हें कहाँ स्वीकार कि जनता उठ कर भंग करे विश्राम !
उनका तो बस यह अभीष्ठ था गोरों को दें नित्य सलाम !!

माँग रहा था युग चिंगारी, और नया जीवन–उत्साह !
था पुकारता खड़ा उसी को, स्वाभिमान की जिसमें चाह !!
उधर क्रान्ति की लौ का भी था, किन्तु रहा था क्षीण प्रकाश !
इन थोड़े से ही वीरों से बदल न सकता था इतिहास !!

इसीलिए तब वीर जवाहर हुये सम्मिलित सब कुछ सोच !
अब न रहेगा कांग्रेस का किंचित मात्र मुकद्दर पोच !!
एक नया जीवन–डग उन्नत भावों के संग था आरम्भ !
चला तोड़ने नवोल्लास था, अंग्रेजों के दल का दंभ !!

सन् १९१२-१९१३ तुर्की पर इटली का आक्रमण :

बलकान युद्ध का आरम्भ :

कूटनीतिक चाल थी अरु शहंशाही था दिमाग !
देश इटली ने अलापा था नया विध्वंस—राग !!
योजना थी कुछ नया हड़पें दिखायें चमत्कार !
इसलिये तुर्की हुआ था दंभ का पूरा शिकार !!

छिड़ गया बलकान का रण शांति कोसों दूर थी !
और पाशा सल्तनत भी युद्ध को मजबूर थी !!
था लगा हिलने वह युरोप जो नियामक था बना !
और हर क्षण हो रहा था युद्ध ज्वर से सामना !!

बात थी अस्तित्व की तुर्की घिरा परिताप से !
था रखा संयम, न लेकिन मुक्त था अभिपाप से !!
चाल अंग्रेजों ने चलकर साथ इटली का दिया !
था प्रभावित भारतीय क्षेत्र भी तब हो गया !!

यह था स्वाभाविक कि मुस्लिम वर्ग तुर्की के लिये !
कर रहे थे यत्न कि वह शान से उठ कर जिये !!
पूर्व से अंग्रेज के प्रति खिन्नता थी हर घड़ी !
चूंकि सहनी मार थी तब दासता की भी पड़ी !!

ले रहे थे जो कि दिलचस्पी सदा अंग्रेज में !
थी दिखाई लहर उनको दी मरण की स्वेज में !!
इसलिये बेहतर समझने थे लगे इतिहास को !
काँग्रेस के साथ आये बाँध कर विश्वास को !!

सिर्फ यह ही एक दल था, जागृति के वास्ते !
खोलता आन्दोलनों के था नये जो रास्ते !!
आत्म बल, गौरव, कनूठा भर दिया इन्सान में !
चेतनाओं का सजाया क्षेत्र हिन्दुस्तान में !!

तब विदेशी सल्तनत के प्रति उभरता क्रोध था !
"दासता निष्कृष्ट जीवन" हो चुका नव बोध था !!
स्वत्व के प्रति चेतना थी हर तरफ ही छा गई !
जागने की देश में फिर श्रेष्ठ वेला आ गई !!

सन् १९१४ आस्ट्रियाई युवराज फ्रांज-फर्दीनांद की हत्या—

प्रथम विश्व युद्ध का आरम्भ :

शान्ति अरु सद्भाव का वातावरण सारा गया !
रुग था विध्वंस का हर एक क्षण धारा गया !!
सरायेवो में अचनाक चाल से जब फिलिप द्वारा !
आस्ट्रियाई लाडले युवराज को मारा गया !!

नीव थी साम्राज्यवादी चाल की पहले डली !
और युरोप में लगी मचने अचानक खलबली !!
फ्रान्स, जर्मन और थे इंगलैड के जो मनचले !
गढ़ रहे थे साधिकारिक युद्ध के नव चोचले !!

हो गया जब युद्ध का आरम्भ तो गश खा गये !
दूर नभ तक थे त्वरित बारूद के घन छा गये !!
बढ़ चला चालाक जर्मन दाबता हर क्षेत्र को !
फोड़ता साम्राज्यवादी साथियों के नेत्र को !!

गाँवों, नगरों में हुये सब ओर अत्याचार थे !
खुल गये हर ओर से बारूद के भंडार थे !!
तोप के गोले धड़क कर थे तबाही ला रहे !
और बम थे चील, कौवों की तरह से छा रहे !!

आग की लपटें उठीं बरतानिया पर छा गई !
गर्व को थी अहंवादी मानसिकता खा गई !!
दृष्टि भारतवर्ष की थी ओर, हर इमदाद को !
हर तरह से था प्रचारित कर दिया फरियाद को !!

खोल दफ्तर थे दिये तब सैन्य भरती के लिये !
लोभ लालच गाँवों में हर ओर जाकर थे दिये !!
लाभ था तब दीनता का भी उठाया चाव से !
भारतीय आत्मा कुछ झुक गई सद्भाव से !!

दे दिये थे लाडले सुत युद्ध के मैदान को !
स्यात आजादी सके मिल, देश हिन्दुस्तान को !!
किन्तु वह अंग्रेज था चालाक हद से ही अधिक !
स्वार्थ पूरित हो चुका तो बन गया पूरा बधिक !!

चाव रखने को सुरक्षित देश इंगलिश्तान के !
झोंक लाखों ही दिये थे वीर हिन्दुस्तान के !!

समन्वित दृष्टिकोण

श्री मुहम्मद अली जिन्ना प्रतिनिधि के रूप में :

युग आया था अहसासों का, विश्वासों का जीवन में !
दिन–प्रति दिन थी चाल नई जब चलती जाती लन्दन में !!

विश्व युद्ध भी लड़ा जा रहा था भारत की कीमत पर !
अन्य देश भी जो गुलाम थे रोते थे नित किस्मत पर !!
मुस्लिम वर्गों ने तुर्की को जब देखा था लुटा–पिटा !
रोज स्वयं के अस्तित्वों की होने लगती थी चिन्ता !!

मुस्लिम लीगी थे भारत में करवट लेकर जाग रहे !
अंग्रेजों से कुछ ज्यादा अधिकार स्वयं के माँग रहे !!
गोरों के छोरों की चलती रहती थी नित चाल नई !
विश्व युद्ध की विभीषिका भी बनी उन्हें थी ढाल नई !!

काँग्रेस के नेताओं की नीति सदा ही व्यापक थी !
भावी युग के लिये देश की गरिमा की संवाहक थी !!
जिन्ना ने था त्वरित विचारा करके अब सहयोग चलें !
यदि कट करके रहे अकेले सदा पालते रोग चलें !!

आपस में समझौता करके आँके रुचि इंसानी को !
इमसे समुचित लाभ मिलेगा अपने हिन्दुस्तानी को !!
किन्तु अटपटी बातों से कुछ बात अधिक ना बन सकी !
और निरर्थक बहमों से थी काँग्रेस भी थकी–थकी !!

जिससे सब ही लाभान्वित हों काँग्रेस का लक्ष्य रहा !
स्वाभिमान की रक्षा का तब सर्वोपरि था पक्ष रहा !!
किन्तु हाय रे ! बदकिस्मत युग, रौंद दिया सद्भावों को !
जिन्ना अपनी सी कर बैठे लेकर तुनक स्वभावो को !!

यही चाहिये था गोरों की चालो, रीति—रिवाजो को !
बाँटो, काटो भारतीय गुण, गौरव और समाजो को !!
जब देखा सहयोग भावना खड—खंड को तत्पर है !
हिन्दू, मुस्लिम दोनो को ही अलग बिठाना बेहतर है !!

इमी चाल ने दिया डाल था भेद–भाव का बीज यहा !
"हम हिन्दू है, हम मुस्लिम हैं' बोई नई तमीज यहाँ !!
हत्प्रभ लखकर काग्रेस थी, टूट गया विश्वास यहाँ !
सांप्रदायिकता की तह मे था जन्मा नव इतिहास यहाँ !!

दमन चक्र का आरम्भ—

भारत सुरक्षा कानून—१६१५ (रोलैट एक्ट) :

करने लगे अंग्रेज जब फौजों का संगठन,
हर गाँव, नगर, राह में देखा गया दमन,
भड़के न कहीं हिन्द की जनता यह देखकर;
लंदन ने लिया जायजा कर पूरा आकलन !

युद्ध छिड़ गया था युरोप में—
हुआ प्रभावित इंगलिश्तान !
इस कारण ही उपनिवेश पर—
पूरा केंद्रित था तब ध्यान !!

प्रबल परिस्थिति की तह में लख—
किया रात दिन यही विचार !
भारत में जन आन्दोलन को—
मिले न कोई दृढ़ आधार !!

अपने में शंकालु हृदय थे—
जमींदार, अधिकारी वर्ग !
समझ रहे थे जो अपने को—
उस युग का सुविचारी वर्ग !!

कहीं एकता हो न प्रजा में–
कही न हो पावें सब एक !
इसीलिये प्रतिबन्धों पर ही–
लगा दिया था पूर्ण विवेक !!

चहुंदिशि हो शासन का सिक्का–
कंपन पैदा हो हर ओर !
और कहीं भी मचे न किंचित–
अधिकारों की लय का शोर !!

वफादार जो हैं सत्ता के–
सेठ, सिपाही अरु सामंत !
बने नीति विधि कोई ऐसी–
हो न सके अब इनका अंत !!

रौलेट एक्ट बना लेने का–
सत्ता–सिर पर चढ़ा जनून !
नाम दिया था जिसको रुचिकर–
हिन्द—सुरक्षा का कानून !!

दूर–दूर तक इससे भय का–
नित्य कराया था विस्तार !
और पुलिस के हत्याकाण्डों से–
किया गया था खूब प्रचार !!

ताकि युद्ध के समय हिन्द में—
मचे न किंचित भी उत्पात !
साथ—साथ ही यातनाओं की—
प्रतिदिन होती थी बरसात !!

इस प्रकार अंग्रेजी सत्ता—
निष्पादित कर जुल्मी राज !
दबा रही थी जगह—जगह पर—
जनता की हर दिन आवाज !!

जुल्म की लेकिन अधिक दिन चल न पाती नाव है !
टूटता आखिर किसी दिन तो दमन का चाव है !!
दुर्बलों में स्वतः बल आ जागता अरमान से !
हारने लगती समय की आँधियाँ इंसान से !!

१५ मई सन् १९१५ को श्री मोहनदास कर्म चन्द गाँधी द्वारा चटव गाँव में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना—

वह अतीत जो गौरवमय था, कब का हाय ! विलीन हुआ !
खो करके अपनत्व भावना भारत था आधीन हुआ !!
बार—बार के हमले झेले, दीन हुआ, कमजोर हुआ !
जोर आँधियों का अक्सर था, इसकी ही तो ओर हुआ !!

किन्तु रहा था शेष आत्म गुण, स्वयं सुरक्षा साधन को !
यही एक था तत्व शेष जो बदल सका जन–जीवन को !!
प्रबल भाव था अपनेपन का, जिसने सत्य प्रकाश दिया !
आत्म चिन्तनों की विधि का था, एक नया इतिहास दिया !!

आत्मबल के नव परीक्षण का नया युग आ गया !
देश -सेवा मंत्र बनकर आत्म–संयम छा गया !!

जिसने बढ़कर धारा पलटी उसके युग इतिहास की !
जग ने देखी नवल प्रेरणा गाँधी मोहनदास की !!

झोंक दिया था सब कुछ अपना जन-सेवा की आग में !
झण्डा गाड़ा था यश का जा अफ्रीकी भू-भाग में !!
अंग्रेजों की रीति-नीति अरु हवस निराली देखकर !
नैतिकता जोहंसबर्ग में दिखलाई परिप्रेक्ष्य पर !!

जग का खींचा ध्यान दमन का चित्र दिखाया विश्व को !
गोरा शाही के प्रपंच को था बतलाया विश्व को !!
किस प्रकार निर्बल देशों को धकियाते थे भार से !
मानवता को वंचित करके नित मौलिक अधिकार से !!

जब आये भारत में देखा—चित्र घिनौनी चाल का !
कहीं भुखमरी, बीमारी थी, धावा कहीं अकाल का !!
मिले तिलक से, प्राप्त किये थे तथ्य सभी विश्वास के !
वर्क पढ़े आतंकवाद के भारत में इतिहास से !!

गुरुवर ज्ञानी, प्रवर गोखले—बने निदेशक राह के !
जुड़े त्वरित आयाम नये थे—दीर्घकाल उत्साह के !!
ग्राम, नगर सब आतंकित थे—अजब हठीला दौर था !
सुख की साँसों की आशा का सूखा अक्सर बौर था !!

जो समर्थ थे फाँस लिये थे, शासन ने निज चाल में !
देख-देखकर बढ़ी वेदना—भारत था जिस हाल में !!
राजनीति की लचर नीति को लखकर चिन्तित गोखले !
अनुभव करते सुविधा भोगी नेताओं के चोचले !!

सब कुछ सोचा और विचारा—लिया युक्ति से काम था !
नित आन्दोलन का सत्याग्रह दिया स्वयं ही नाम था !!
त्वरित आश्रम निर्मित करके—संचालित था कर दिया !
अधिकारों की नई लगन में एक नया स्वर भर दिया !!

सत्य, अहिंसा पर आधारित, योजना निर्माण की !
जिसमें भाव विलक्षणता थी उभरी जन–कल्याण की !!
यद्यपि उत्साहों का देखा ज्वार उभरता देश में !
किन्तु न गाँधी आये थे तब किंचित भी आवेश में !!

नम्र भाव अरु विनयशीलता संग सभी से वास्ता !
कहते थे—"भारत के माथे है कलंक यह दासता" !!
इसे मिटाने हेतु देश में करने हैं संघर्ष अब !
देख रहा है निज स्वत्वों के सपने भारतवर्ष अब !!

अंधकार में आशा–दीप,
रख कर बढ़ते रहे समीप !
ऊँचा करते चलते माथ,
जन बल को ले करके साथ !

आँक लिया था युग का फेर,
कहीं न किंचित करते देर !
रहा सामने लक्ष्य समान,
जाग उठे बस हिन्दुस्तान !

नहीं सूझता था कुछ और,
कटु अनुभव का देखा दौर!
अखबारों के द्वारा बात,
करते रहते थे दिन-रात!

हरने को जीवन-संताप,
बढ़ता जाता रहा प्रताप!
उत्साहों में था नव ज्वार,
जब होती थी जय-जयकार!

हवा गा रही गीत मधुर :

हवा गा रही गीत मधुर!
बजे जागरण के नूपुर!!

सत् जीवन अहसास हुआ!
मन में यह विश्वास हुआ!!

आजादी के लिये कारवाँ अब नित बढ़ता जाएगा!
भारत क्या है लन्दन के हर गुर्गे को दिखलाएगा!!

एक नई सुबह आई है, जागो रे! इन्सान उठो!
उठो! उठो! हाँ आज भोर में अपना सीना तान उठो!!

वह देखो तो पथ प्रशस्त है,
मंजिल तुम्हें बुलाती है,
कदम मिलाकर चलना है अब–
याद यही दिलवाती है,
घना आवरण उतर चुका है
अब आलस का उठो! चलो!
हर घर के अब गम को बढ़कर–
आज खुशी में तुम बदलो!

करो समय की पूर्ण रूप से आज यहाँ पहचान उठो!
उठो! उठो! हाँ आज भोर में अपना सीना तान उठो!!

बढ़ो आँधियों का रुख मोड़ो,
कर दो सफल जवानी को,
उच्च गगन तक पहुंचा दो रे!
स्वतन्त्रता की वाणी को,
बलिदानों के नये पर्व ये–
उत्सर्गों के मेले हैं,
उनकी यादें रखो हृदय में–
जो प्राणों से खेले हैं,

उठो, देश के मजदूरों रे! तनकर आज किसान उठो!
उठो! उठो! हाँ आज भोर में अपना सीना तान उठो!!

योग्य जीवन संगिनी हो

आयु के उद्दाम स्वर पर,
देखते मोती नजर भर,
गृहस्थ की दहलीज कहती;
हो गया काबिल जवाहर !

कार्य करती है अथक वो,
देखती है एक टक जो,
यह भवन आनन्द गृह है;
नाम इसका सार्थक हो !

नित्य नव संगीत गूँजे,
बन हृदय का मीत गूँजे,
ये उमंगें अरु तरंगें;
चाहती नव गीत गूँजें!

पुष्प सा खिल जावे जीवन,
चाहता था बस यही मन,
सौम्य, सुन्दर श्रेष्ठ कन्या;
आये इस घर की बहू बन !

भाग्य की अपने धनी हो,
और हीरे की कणी हो,
सुत जवाहर के लिये जो,
योग्य जीवन संगिनी हो !

चाह का आधार देखा,
सभ्य एक परिवार देखा,
संस्कारों में पगा जिसका—
भरा घर, द्वार देखा !

साधते अपना चलन थे,
साफ बातें, साफ मन थे,
कौल परिजन काश्मीरी;
बन्धु, बाँधव श्रेष्ठ जन थे !

श्रेष्ठता थी शान्त स्वर में,
और कन्या श्रेष्ठ घर में,
छोड़कर कश्मीर घाटी;
आ गये दिल्ली नगर में !

दम—दम—दमका :

अरुणिम आशा, प्रबल ओजमय स्वर्णिम सा मुखमंडल !
दम–दम दमका आभायुत शुचि, शान्त सजीला प्रतिपल !!
सरल चेष्टा युत शोभा प्रिय, दीप्ति प्रखरतम अमला !
कुंकुम जैसी त्वचा, ऋचा सा नाम सुहाना कमला !!

मिलकर मोती लाल प्रभावित हुये और यह देखा !
कमला पुत्र बधु बन खींचे संकल्पों की रेखा !!
दिया पुत्र को विवरण-सुन्दर कन्या अति मितभाषी !
पूर्ण रूप से योग्य संगिनी सत जीवन अभिलाषी !!

मन में था संकोच जवाहर, कर न सके कुछ निश्चय !
बिन देखे स्वाभाविक था कुछ उभर रहे हों संशय !!
इंगलिश्तानी रंग स्वयं पर, रहन-सहन भी वैसा !
घर का वातावरण बनाया था अंग्रेजों जैसा !!

दिल्ली का परिवार सरलतम, रुचि-मन हिन्दुस्तानी !
अरु कश्मीरी संस्कृतिक गुण की भी थी एक कहानी !!
सजग सभ्यता भारतीय गुण कैसे निभ पायेगी !
क्या आकर आनन्द भवन में वह रम जायेगी ??

उहापोह की परिधि छोड़ जब मन में स्वयं निहारा !
स्निग्ध, सौम्य, सौदर्य, देखकर क्षण मे यही विचारा !!
"अपनापन है अपनापन ही" किया त्वरित अनुमोदन !
सौम्य भावना, सरल ज्योति से खिला कमल सा आनन !!

मात पिता सब थे प्रसन्न लख, महकी मृदु फुलवारी !
शुभ सायत मे थी वसंत के शादी की तैयारी !!

संस्कृति का आवरण था यद्यपि तन पर विदेशी !
किन्तु रक्खा था जवाहर ने हृदय अरु मन स्वदेशी !!
कुछ युवक अग्रेजियत मे रम गये थे इस तरह !
जिन्दगी उनकी बनी थी अन्ततः ! घर की कलह !!

किन्तु बनना शीर्षक था जिसको नव आदर्श का !!
वह जवाहर था, जवाहर देश भारतवर्ष का !!
जो सवाँरे जिन्दगी को भाव से निज देश के !
शक्ति देते तत्व उसको देश के परिवेश के !!

विवाहोत्सव—सन् १६१६

पूर्ण उत्सव युक्त घर था :

भावनाओं का मृदुल क्रम,
रच रहा था ज्योति-संगम,
छा रहा था हर दिशा में;
एक नव उत्साह अनुपम !

पुष्प प्लावित क्यारियां थीं,
नव्यतम गुलकारियाँ थीं,
श्रेष्ठ मंगल गीत गातीं—
हर्ष मग्ना नारियाँ थी !

ऋतु वसंती छा रही थी,
शान्त छवि छिटका रही थी,
द्वार पर आनंद गृह के,
कामना सुधि गा रही थी !

यों गये घर-दर सजाये,
देखकर मन झूम जाये,
स्वयं मोती लाल कहते—
"कुछ कमी रहने न पाये" !

रंग अजब था क्यारियों का–
जमघटा था नारियों का,
था महीनों तक जुड़ा यह–
सिलसिला तैयारियों का !

नेहरू, उस युग की कड़ी थे,
साध रखते हर बड़ी थे,
मुक्त कर से खर्च करते;
हो रहे खुश हर घड़ी थे !

लकलका जब बाम पर था,
साधनों से युक्त घर था,
वस्त्र अरु आभूषणों का;
चयन रुचिकर, श्रेष्ठतर था !

लहर थी उत्साह की वह,
श्रेष्ठ, रम्य विवाह को वह,
मित्र, परिजन और पुरजन;
देखते छवि चाह की वह !

देखते अरमान की छवि,
दीप्तियुत संतान की छवि
द्वार मोतीलाल के थी,
आन की अरु बान की छवि !

दिल्ली में विवाहोत्सव :

बसत पंचमी–१६१६

चहुं दिशि शोभा थी अनन्त,
रुचि–रुचि आया था वसन्त,

दिल्ली सजी स्वयं दुल्हिन सी, स्वागत में बारात के !
सारे मित्र हितैषी खुश थे लख, नेहरू के साथ के !!

नवोल्लास के खिले कमल,
छिड़ी उमंगों युक्त गजल,

अभिनव रंग लगे चमकने, जीवन के जल जात के !
सारे मित्र हितैषी खुश थे, लख, नेहरू के साथ के !!

जग–मग राहें, जग—मग मन,
सजे सभी के मन आँगन,

मचल रहे थे स्वागतार्थ तब चाव समग्र धरात के !
सारे मित्र हितैषी खुश थे लख, नेहरू के साथ के !!

चाँद सा दूल्हा जवाहर :

साँझ आई थी विहँसती,
सज रही दिल्ली की बस्ती,
आ गई बारात दर पर;
चाँद सा दूल्हा जवाहर !

स्वागतों का था सजा क्रम,
छा रहा अनुराग अनुपम !
समधियाने की तैयारी,
थी अनूठी शुचि समागम !

सज रही अँगनाइयाँ थीं,
ज्योतिमय परछाइयाँ थीं !
मधुर–मादक स्वर गुँजाती–
बज रही शहनाइयाँ थीं !

शुभ दिवस का क्षण वसंती,
तन वसंती, मन वसंती,
लग्न की उस शुभ घड़ी में,
द्वार का विवरण वसंती !

चाह स्वागत द्वार पावन,
चारु तोरण मन, सुहावन,
झूलते झिलमिल चंदोए,
भर रहे थे पुलक शोभन !

दृष्टि युग की घूमती थी,
वर—विभा को चूमती थी,
गीत गाता नील नभ था;
और धरती झूमती थी !

भाव मन में था निराला,
प्रिय मिलन का था उजाला,
और कन्या पक्ष शोभित–
कर रही थी दीप माला !

मंत्र गुंजित थे मिलन के,
भाव मुखरित थे लगन के,
कर रहे थे पुष्प वर्षा;
देवता सारे गगन के !

स्वागत गान :

स्वागत–स्वागत हे, अभ्यागत!
धन्य हुये कर दर्शन !
बार—बार सौ बार आपका–
आज यहाँ अभिनंदन !!

ऋतु बसंत यह स्वागतार्थ प्रिय,
झुकी झुकी यश गाये !
हुआ सफल जीवन यह अपना–
प्रिय पाहुन घर आये !

अभिनव जीवन सुख स्रष्टा है–
आज घड़ी यह पावन !
बार–बार सौ बार आपका;
आज यहाँ अभिनंदन !!

गरिमा बढ़ी हमारे घर की–
हुआ आगमन जब से,
क्षमा करें यदि स्वागत में;
कुछ त्रुटियाँ हों हम सबसे !

उसकी समता कहाँ हमें जो,
मिला आप से जीवन !
बार– बार सौ बार आपका–
आज यहाँ अभिनंदन !!

भारत की संस्कृति की समता :

नव जीवन के चित्र सज्जिता शोभा रमती दृग में !
भारत की संस्कृति की समता और कहाँ है जग में !!
पग––पग पर शुचि संस्कार की रहती यहाँ महत्ता !
परिणय बंधन, वास्तविक सुख–सौरभ की है सत्ता !!

आगत, स्वागत, अभ्यागत रुचि कन्या पक्ष सवाँरे !
मधुर मिलन पर प्रकृति छटा झुक अपना सब कुछ वारे !!
परिजन, पुरजन के महत्व की होती है रखवाली !
सबसे आशीर्वाद प्राप्ति की है यह प्रथा निराली !!

दो कुल मिलकर एक बनें, नव जीवन सूत्र सवाँरें !
स्नेह युक्त सम्मान भाव को रुचि से और निखारें !!
गरिमा युत बंधन जीवन का नित आदर्श कहाया !
यही जवाहर के जीवन का अनुपम हर्ष कहाया !!

स्वयं दिल्ली एक दुल्हिन सी बनी थी !
छवि मनोहर, भव्य आँगन की बनी थी !!
रंग-बिरंगे द्वार पर मंगल कलश थे !
और बन्दनवार भी इक साथ दस थे !!

राग गुंजित था मिलन की भावना का !
सत्य जीवन साधना की कामना का !!
रूप गुण माधुर्ययुत कमला मगन थी !
नत नयन से देखती निज रत्न धन थी !!

मुग्ध झूमे उस घड़ी सत् प्रण जवाहर !
मृदुल, मंजुल, कामना सुस्पर्श पाकर !!
इस मिलन पर हर किसी का मन मगन था !
पुष्प वर्षा कर रहा नीला गगन था !!

हर तरफ आह्लाद था मन में सुशोभित !
तन समर्पित, मन समर्पित और जीवन धन समर्पित !!
भाव अनुपम शान्त कन्या पक्ष का था !
और इंगित सत्य जीवन लक्ष्य का था !!

अग्नि समक्ष पक्ष दो बैठे, शुचि गठबंधन पूर्ण हुआ !
जो कि अधूरा रहा अभी तक वह था जीवन पूर्ण हुआ !!

कई दिनों तक रास रंग, भर कर उमंग नित चले वहाँ !
जनवासे के टैंट, कनातें दीखे बड़े भले वहाँ !!
कमी न थी, आतिथ्य, भाव नित नव्य स्नेह का जड़ता था !
यहाँ, वहाँ पर अपनापन हर ओर दिखाई पड़ता था !!

धूम, धाम के साथ हुई सम्पन्न जवाहर की शादी !
लगे सोचने अपने मन में—गई व्यक्तिगत आजादी !!
मित्रों ने भी कसी फब्तियाँ"—अब आये हों बंधन में !
बहुत आधुनिक बने हुये थे इकले रहकर लंदन में" !!

विदा की बेला :

चली सजाने को ससुराल—

लाड़ प्यार से पाला जिसको मृदु भावों से जीवन में !
कभी किया था नहीं विलग, रक्खा नयनों के आंगन में !!

आज चली ससुराल वही,
बुन सपनों का जाल वही,
नव जीवन की डोर संभाल,
चली सजाने को ससुराल,

लिये हुये मैके की सारी सुस्मृतियों को निज मन में !
कभी किया था नहीं विलग रक्खा नयनों के आँगन में !!

रोती सखियाँ बन्धु खड़े,
टपके आँसू बड़े—बड़े,
सहन न हो पाते पल हैं,
मात—पिता सब विह्वल हैं,

सिंधु स्नेह का उमड़ चला है, उमड़ चला है नयनन में !
कभी किया था नहीं विलग, रक्खा नयनों के आँगन में !!

सुखी रहे हर पल जीवन,
जीवन का प्यारा उपवन,
तुम से प्रिय घर द्वार सजे,
रुचि का बन्दनवार सजे,

सौख्य मिलेगा नित जीवन का आदर सहित समर्पण में !
कभी किया था नहीं विलग, रक्खा नयनों के आँगन में !!

एक नया जीवन सरगम :

जब आई बारात लौट कर थी आनंद भवन में !
नव उमंग का समावेश था इलाहाबाद के जीवन में !!

पुलक उठा धरती का–
कण—कण मगन मना !
नगर समूचा नई–
ज्योति का केन्द्र बना !!

जीवन का उत्साह—
कि जैसे खिला सुमन !
सचमुच था आनन्द केन्द्र—
आनन्द भवन !!

परम प्रफुल्लित परिजन—
थे उत्साह सहित !
मित्र हितैषी देख सजावट—
रहे चकित !!

उक्चस्तर की रही सभी की—
आव भगत !
तरह—तरह के व्यंजन पाकर—
बनी सेहत !!

खुश थे मोतीलाल व्यस्त—
दिन रात रहे !
यही चेष्टा रही कि—
उनकी बात रहे !!

एक लाडला प्यारा बेटा फिर क्यों कमी रहेगी !
ऐसा था विश्वास चांदनी यूँ ही थमी रहेगी !!
वर अरु बधु को देख देख करके हर्षाते थे !
अतिथि वृंद जो सुहृद बधाई देने आते थे !!

पुलक रही थी गंगा यमुना, संगम रुचि से लखता !
पुनि पुनि आशीषें देता था, सुन्दर चयन परखता !!

धूम मची आनन्द भवन में–
सज्जित थी दीवारें !
झूम रही थीं देख देख कर–
सुमन, सुमन की डारें !!

मंगल भाव प्रवाह युक्त थे–
महिला गान मधुरतम !
सजा रहा आनन्दोत्सव को–
शहनाइयों का मृदु क्रम !!

मिले सिया को राम–
राममय ज्यों जीवन था सिय का !
नमित नयन के भाव चाव थे–
आँक रहे सुख प्रिय का !!

मिला सौख्य वरदान ज्ञान का–
शुचि भण्डार मिला था !
'लक्ष्मीकान्तम्' के शुभ स्वर से–
सुख संसार मिला था !!

स्वागत स्नेहिल भाव प्राप्त कर–
कमला खुश थी मन में !
एक नया जीवन सरगम था–
शुभ आनन्द भवन में !!

ज्यों ही कमला ने छुये थे सास के झुक कर चरण !
झूम उठी स्वरूप रानी, परम स्नेहिल मन मगन !!
ली बलैयाँ संस्कारिक भावना उद्यत हुई !
गा उठा उन्मत्त स्वर में झूमता प्यारा भवन !!

माह जून १६१६ आकर्षण काश्मीर का:

एक नया सुख सपना रचकर चले स्वयं तस्वीर का !
खींच ले गया प्रिय नेहरू को आकर्षण कश्मीर का !!
मुदित जवाहर, कमला दोनों स्वप्न सजाते चाव के !
पहुंच गये घाटी में रखकर भाव भ्रमण प्रस्ताव के !!

जब - जब जिक्र हुआ फूलों का—
बात चली कश्मीर की !
मंद—मंद मुस्कान छेड़ती—
हँसी कली कश्मीर की !!

शोभायुत अनंत काल से—
गौरव भारतवर्ष का !
स्वर्गिक सुख की कामनाओं में—
साध पली कश्मीर की !!

कल्पनाओं में रूप उभर कर–
आ जाता सौंदर्य का !
अनुपम उच्छवास में मन के–
साँझ ढली कश्मीर की !!

उषा के संग–रंग दहकता–
अरुणाई का तीव्रतम !
जब अलसाई आँख खोलती–
गली–गली कश्मीर की !!

दृश्य मनोरम जमकर खींचें–
आँखों में चित्रावली !
गीतकार को घाटी माटो–
लगे भली कश्मीर की !!

राज कौल परिवार यहीं पर–
जन्मा कभी अतीत में !
पंडिताई में आन यहीं से–
थी उजली कश्मीर की !!

जवाहर लाल नेहरू द्वारा कश्मीर छटा का अवलोकन

गिरि श्रृंगों पर सजा रही थी रुचि की स्वप्निल वेणियाँ !
हरिताभा से सज्जित पर्वत की संयत थी श्रेणियाँ !!
देवदारु अरु चीड़, नीड़ से युक्त पाखियों से खड़े !
चतुर चँदोए उल्लासों के बुनते रहते बड़े–बड़े !!

झरने झर–झर, मृदु स्वर भर–भर गीत सलोने गा रहे !
दूर–दूर तक दृष्यावलि पर बिन्दु–बिन्दु छिटका रहे !!
चारु, चपल स्वर में ऋतु–आभा भरती मोद–प्रमोद रे !
रंग–बिरंगी पुष्पावलि में सजी प्रकृति की गोद रे !!

जब-जब हिलते–डुलते, जुडते ऊँचे वृक्ष चिनार के !
लौकिक सुख का चारण रमकर रचता गीत बहार के !!
दिशा–दिशा बहुरंगी आभा, नव उमंग के साथ है !
चित्रांकन की श्रेष्ठ सारणो हर तरंग के साथ है !!

स्वच्छ गगन अरु हवा लजीली, दृश्य मनोरम प्रात के !
रखते अमित प्रभाव हृदय पर ये उद्यान निशात के !!
कुछ सूनी चट्टानों की रुचि जुड़ी हुई है त्याग से !
रखकर अपने को विरक्त सा सुख–सौरभ–अनुराग से !!

इस घाटी की माटी सुन्दर, आकर्षण की खान है !
इसीलिए तो आदिकाल से गर्वित हिन्दुस्तान है !!
होती है अनुभूति स्वर्ग की, हर चप्पे, हर गाँव में !
चलते–फिरते बिजली जैसी ताकत आती पाँव में !!

झीलों का सुख मीलों तक ही रखता पूर्ण प्रभाव है !
फिरकी जैसी फिरती जल पर मचल–मचल कर नाव है !!
उल्लासों से भरा हृदय था युवा जवाहर लाल का !
यह प्रदेश था उनके अपने कुल का अरु ननिहाल का !!

रुचिकर मन को लगा घूमना–चले बढ़े लद्दाख तक !
चाँदी जैसी चमक–दमक से बुद्ध धर्म की साख तक !!
मिली प्रेरणा नई यहीं से दृश्यावलियाँ अंकन की !
अनुभव की विस्तीर्ण धरा पर जीवन में नव लेखन की !!

चिन्ता थी लग रही देश की

घटना क्रम चल रहा साथ था–
जाग रहा था कण–कण
चिन्ता थी लग रही देश की–
तब सबको ही हर क्षण !!

एक ओर थे गर्म स्वभावी–
प्रण के अपने पक्के !
जिनकी गतिविधि से शासन के–
छूट रहे थे छक्के !!

ओर दूसरी नर्म स्वभावी–
रखकर अपनेपन को !
सोच रहे थे किसी तरह भी–
राहत मिले वतन को !!

गाँधी और तिलक दोनों का–
लक्ष्य रहा आजादी !
लेकिन कुछ राजे बाधक थे–
बनकर अवसरवादी !!

इस कारण आन्दोलन में थी–
पड़ती अड़चन भारी !
'जी हुजूर' की लगी हुई थी–
उन सबको बीमारी !!

नहीं समन्वय हो पाता था–
उन सबसे उस लय का !
जिसमें आशय रहा निरन्तर–
जनोद्भवों की जय का !!

पग–पग पर अंग्रेजी सत्ता के–
जासूस खड़े थे !
कदम–कदम पर प्रतिबन्धों के–
विस्तृत जाल पड़े थे !!

रौलेट एक्ट उधर हावी था–
कसने को हर बन्धन !
भारत माता तड़प उठी थी–
दुष्कर था नव–जीवन !!

यही नया कानून बनाया–
लन्दन—चाव—हविश ने !
दहल उठा मन उसका सुनकर–
समझा था जिस–जिसने !!

जन–अधिकारों के ऊपर था–
कस कर बाँधा बंधन !
जिसके था आभास मात्र से–
बिलख उठा जन–जीवन !!

रौलेट एक्ट, एक्ठ था ऐसा–
जिसमें अरि, दुःशासन !
जब चाहे तब कर सकता था–
जनता का उत्पीड़न !!

लखकर उसकी धाराओं को–
खुश थी गोरी सत्ता !
यही चाहती थी कि बिना–
मर्जी के हिले न पत्ता !!

गाँधी जी ने वायसराय से–
करके नम्र निवेदन !
चाहा—यह कानून न थोपें–
कसें नहीं जन–जीवन !!

किन्तु प्रभाव न किंचित भी था–
पड़ा क्रूर के दिल पर !
लिया जायजा नेताओं ने–
गाँधी जी से मिल कर !!

कहाँ चैन था लौट जवाहर–
आए त्वरित सफ़र से !
पहले ही संपर्क बराबर–
रखा निरंतर घर से !!

उनका युरोप का अनुभव भी–
आँक रहा था हर छल !
लगे दिखाई देने उनको–
घिरते गम के बादल !!

"पूर्ण रूप से जन–सेवा के–
हेतु उतरना होगा" !
किया यही निश्चय अब जम कर–
कुछ तो करना होगा !!

जगा समर्पण-भाव :

जगा समर्पण-भाव हृदय में—

ज्यों—ज्यों बढ़ती थी जिज्ञासा,
त्यों—त्यों उपजी नूतन आशा,
जन—बल बढ़ता देख निरंतर,
आंदोलन का हुआ खुलासा !

था अटूट विश्वास विजय में !
जगा समर्पण भाव हृदय में !!

दिशा—दिशा गाँधी की आँधी,
जिसने सारी जनता बाँधी,
सबके मन में एक नाम था;
मोहनदास करमचन्द गाँधी !

प्राण जगे, सूखे किसलय में !
जगा समर्पण भाव हृदय में ! !

नेहरू भूले शान अरु शौकत,
सादेपन की डाली आदत,
दूर विदेशी पहनावा था;
खद्दर से हो गई मुहब्बत,

बदला वातावरण निलय में !
जगा समर्पण भाव हृदय में ! !

शक्ति स्रोत को था पहचाना,
लक्ष्य प्राप्ति का पथ भी जाना,
किया निरन्तर श्रम साधन से;
तजकर वातावरण पुराना,

मिला लिया स्वर, जन–मन–लय में !
जगा समर्पण भाव हृदय में ! !

शिष्ट भावना का आधार

कीर्ति शिखर पर था परिवार

साख बनी आनन्द भवन की,
जहाँ सभी सुविधा जीवन की,
देखा करता हर आगन्तुक;
रीति-नीति विख्यात चलन की,

जो जिसके था योग्य वहाँ पर,
उससे वैसा था व्यवहार !
कीर्ति शिखर पर था परिवार !!

जीवन का शालीन तरीका,
घर में था उस वक्त सभी का,
आवभगत की थी विशेषता,
आन-बान का रहा सलीका,

था अंग्रेजों तक को भाया,
नेहरू-घर का शिष्टाचार !
कीर्ति शिखर पर था परिवार !!

जो भी आता, आदर पाता,
देश भक्ति के गुण से नाता,
जिनका रहता उनका गौरव;
नेहरू का घर और बढ़ाता,

अक्सर होती रही बैठकें–
दिन में कई–कई बार !
कीर्ति शिखर पर था परिवार !!

निष्ठा व्रत युत नौकर चाकर,
श्रम करते थे जान लगाकर,
मगन मना थी लगन सभी में;
ख्याति पहुंचती जिसकी बाहर,

सुदृढ़ होता रहा रात दिन,
शिष्ट भावना का आधार !
कीर्ति शिखर पर था परिवार !!

धार्मिक सहिष्णुता

सर्व धर्म समभाव चेतना,
सर्वोपरि थी चाह रही !
नेहरू कुल की नई जिन्दगी,
लिये नया उत्साह रही !!

उच्च श्रेष्ठतम कुल था लेकिन,
निराभिमान व्यक्तित्व रहा !
सर्वोत्कृष्ट जीवन के पथ पर,
प्रतिपल तीव्र निगाह रही !!

हिन्दू–मुस्लिम–भेद–भाव को,
मिटा दिया था निज घर से !
नहीं सँकुचित दृष्टि कोण था,
नहीं किसी से डाह रही !!

शिक्षा और दीक्षा का था,
नित रुझान भी परिजन में !
कुल की रीति-नीति सम्मत,
गुण, गौरव कर निर्वाह रही !!

घर में जितने नौकर-चाकर,
सबके प्रति था स्नेह रहा !
दुख में, सुख में एक साथ ही,
सबकी थी परवाह रही !!

शिक्षा दी थी समता की ही सबको ही तो यदा सदा !
भेद भाव को निज जीवन में समझा था निष्कृष्ट सदा !!

जब तक होगा दूर न दुर्गण, ऊँच-नीच अरु नफरत का !
तब तक कुछ कल्याण न सम्भव हो सकता है भारत का !!

प्रथम विश्व युद्ध (१६१४-१६१७) का प्रभाव

दहल उठे थे धरा गगन लख-
यूरोप में रण का उन्माद !
देश-देश की धरती पर था-
बजा निरन्तर ही फौलाद !!

फ्रांस और इटली जर्मन सब-
रहे, विनाशक रण में जूझ !
अधिकाधिक कर रही सफलता-
प्राप्त वहाँ जर्मन की सूझ !!

अरु इंगलैंड फंसा था ऐसा–
नहीं चैन था दिन अरु रात !
शत्रु सैनिकों के धावे से–
लन्दन में थे उल्कापात !!

युद्ध ! युद्ध !! उस महायुद्ध में–
बदला था प्रतिपल इतिहास !
कुछ दिन को तो किसी देश को–
नहीं जीत का था विश्वास !!

घातक अस्त्र–शस्त्र थे अनगिन–
बमबारी से थे सब पस्त !
डगर-डगर में आग भयंकर,
नगर लगे थे होने ध्वस्त !!

जहाँ-जहाँ थी अंग्रेजों के–
उपनिवेश की अपनी शान !
वहीं किया जाता था पैदा–
रण की खातिर तीव्र रुझान !!

नित प्रभाव इसका भारत पर–
करता रहता दशा खराब !
सैनिक भरती हेतु त्वरित ही–
चुना गया था तब पंजाब !!

चुन-चुन कर अनिवार्य रूप से–
भेजे जाते रहे जवान !
तुर्की–इटली और रोम की–
ओर कराया था प्रस्थान !!

सोच रहे थे भारतवासी !
युद्ध अरे, यह सत्यानाशी !!
जाने कितने लेगा प्राण !
कब सम्भव था इससे त्राण !!

होते थे नित अत्याचार

आजादी के थे बन्द द्वार,
होते थे नित अत्याचार !
मोहन दास करमचन्द गांधी–
सोच रहे थे बारम्बार !

मानवता बिल्कुल निष्प्राण,
माँग रही कष्टों से त्राण !
दिशा-दिशा लपटों की छाया,
संकट में जनता के प्राण !

शोषित जन-मन नित्य विपन्न,
शोषणकर्ता हैं सम्पन्न !
भारत में लन्दन के नन्दन;
बने हुये है ज्योति, प्रपन्न !

औपमिवेशिक क्षुद्र विचार,
शोषण का करके विस्तार !
आधे से भी अधिक विश्व को,
बना रहे यश का आधार !

उभर रही थी गम की रेख,
अफ्रीका की स्थिति देख !
अनुभव स्वयं किया पीड़ा का-
लिखे निरन्तर जिस पर लेख !

खाये थे जब मुक्के—लात,
सही यातना थी दिन रात !
निडर और उदात्त भाव से-
रक्खी लेकिन अपनी बात !

कटु अनुभव थे बो आधार,
जिन पर करके पूर्ण विचार !
असहयोग की किलष्ट मूर्ति का-
लियां रूप गाँधी ने धार !

नई भावना में भर जोश,
कहा—'प्रजा जन तो निर्दोष !
यह तो शासक को लाजिम है—
रख कर चले सदा ही होश !

लिया स्वयं में संयम साध,,
नित्य साधना की निर्बाध !
लडना स्वत्वों की खातिर है—
नही जगत मे कुछ अपराध !

ये जो भूखे—प्यासे दीन,
खुशियाँ जिनकी हुई विलीन !
कब तक आखिर रह पायेंगे—
गोरी सत्ता के आधीन !

उठे किसी दिन ऐसा ज्वार,
चौक—चौक देखे संसार !
बढ़कर छीनेंगे शोषक से—
अपने जीवन का अधिकार !

निर्धन जन पर पड़ते टूट,
देकर केवल वर्दी बूट !
ये अंग्रेज स्वयं की खातिर;
रहे हिन्द का गौरव लूट !

अरु कुछ उनके नये दलाल,
अल्प समय में माला माल !
करते रहते हैं भारत की–
स्थिति अत्यन्त ही विकराल !

बढ़कर त्वरित जगाना होगा–
एक नये परिवर्तन को !
अधिक नहीं अब चलने देना–
भारत में उत्पीड़न को ! !

किन्तु देश की क्षमता

नेहरू मोतीलाल देश के नामी कर्मठ रहे वकील;
श्रेष्ठ व्यक्ति, युग–दर्शन महिमा उनके जीवन की तफसील,
कटु अनुभव की लम्बी सूची भरती थी बेचैनी रोज;
जनता का दुख–देख–देखकर हृदय हुआ संवेदन शील !

देखे घौर गुलामी के गुर, गिन–गिन कर पल ढलते थे,
नये नये कानून धार, अजगर का रूप निकलते थे,
कूटनीति नित अंग्रेजों की जन–मन–चाव मसलती थी;
दँभ–भाव शासन, सत्ता के–जीवन–ज्योति निगलते थे !

पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बोल यहाँ पर बाला था,
जाल यहाँ पर अंग्रेजों ने इस प्रकार का डाला था,
यद्यपि निज का जीवन सुस्थिर अरु संपन्न जगत में था;
किन्तु देश की क्षमता का तो ढलता गया उजाला था !

सितम्बर १६१६ होम रूल स्थापना

भारत की थी मित्र बेसेंट,
मन से अति संवेदन शील !
स्वस्थ भावना तर्क बुद्धि को—
मोती जैसा मिला वकील !

जिस प्रकार भी संभव पाये,
भारत अपने वे अधिकार !
जो कि उसकी क्षमता से हो—
मौलिक जीवन का आधार !

उसने भोगी स्वयं गुलामी,
अंग्रेजों के देखे रंग !
इसीलिये वह हिली-मिली थी—
भारतीय जीवन के संग !

न्यायपरक अरु सही बिचार,
उसका आन्दोलन–आधार !
लगी समझने भारत की–
जनता को अपना ही परिवार !

दिसम्बर १६१६ लखनऊ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन

युवा हृदय अति चिंतन शील,
बैरिस्टर अरु श्रेष्ठ वकील,
बाँध रहा था उत्साहों की–
अपने मन में नई सफील !

गांधी में जीवन—आलोक,
जिससे हुआ तिरोहित शोक;
जो कि ज्यादती से शासन की–
बढ़ता जाता था बिन रोक !

जागा मन में था उत्साह,
हुलस रही थी नूतन चाह,
काँग्रेस—अधिवेशन मध्य;
दिखलाई गाँधी ने राह ?

नर्म–गर्म के जो मतभेद,
उनको छोड़ा गया सखेद,
माँग स्वसासन की पुरजोर;
उठवाई थीं–लख–जन–स्वेद !

स्नेहिल मन ने लिया निहार,
कर्त्तव्यों के प्रति सत्कार,
युवा जवाहर में भाँपा था;
नूतन युग का कर्णाधार !

मानव–सेवा का रुचि भाव,
बना लिया था स्वयं स्वभाव,
गाँधी–मन पर टालस्टॉय के;
चिंतन का था पडा प्रभाव !

सुनकर नव चेतन आह्वान,
मिला जागरण सहित प्रमाण,
वीर जवाहर ने देखा था;
गाँधी जी में संत महान !

१७ जून १९१७ को पं० मोतीलाल नेहरू—होम रूल लीग के अध्यक्ष—

जवाहरलाल नेहरू—मंत्री

आंकता प्रधान्य गुण—
था कार्य होम रूल का,
देश हेतु चिन्तनीय;
भाव था उसूल का !

भारतीय दीन-हीन—
जन रहे समक्ष थे,
इसलिये संभाल भार;
वे बने अध्यक्ष थे !

योग्यता प्रसिद्ध थी श्रेष्ठ मोतीलाल की !
वाक्पटुता खोलती थी गाँठ क्लिष्ट जाल की !!

सचिव जवाहरलाल बने तो कार्य बढ़ा, निर्बाध किया !
किन्तु दृष्टि ने गोरों की था इसे मान अपराध लिया !!
तीव्र भावना आन्दोलन की, बढ़ी रही दिन-रात वही !
जो की कांग्रेस के चिंतन में खरी उतरती रही सही !!

गिरफ्तारियाँ शुरु हो गईं, ऐनीबेसेंट थीं कारा में !
थे अनेक नेता भी शामिल उस आन्दोलन की धारा में !!
देश-काज की सेवा का हर भाव उभरता चित में था !
पिता-पुत्र दोनों का निर्णय त्वरित देश के हित में था !!

गाँधी जी द्वारा चम्पारन (बिहार) में सत्याग्रह सन् १९१७

निलहे गोरों के छोरों ने कृषकों के हित छीन लिये !
लूट-पाट के साथ-साथ थे कृषक सभी आधीन किये !!
गाँधी जी ने सुने कष्ट मर्माहत और उदास हुये !
स्वयं सिद्धि की प्रबल-भावना—स्वर के तीव्र विकास हुये !!

चम्पारन की ओर चल दिये, सत्याग्रह की ठान ठनी !
पूर्ण रूप ग्रामीण चेष्टा हाथ लिये लकुटी अपनी !!
नहीं जुल्म के आगे झुकना सीखा था उस गाँधी ने !
दहलाए थे अफ्रीका में गोरे जिसकी आँधी ने !!

प्रबल भावना थी भारत के, सारे श्रमिक किसान उठे !
स्वत्व सुरक्षा हेतु साथ में लेकर हिन्दुस्तान उठे !!

नेहरू के मन, मचल रहा था

यद्यपि, पैतृक प्रतिभा के गुण,
रखते थे रुचि पूर्ण प्रभाव !
किन्तु वकालत करते रहने का—
खटका था नित प्रस्ताव !!

धनार्जन का मार्ग सुगम था—
यद्यपि तब जीवन के द्वार !
किन्तु नित्य उद्वेलित था मन—
लख शासन के अत्याचार !!

अरु अभीष्ट भी यही लगा था—
निज देशज-सेवा का काम !
रहे सोचते इसी विषय पर—
व्यस्त जवाहर आठों याम !!

हितकर सिद्ध हुआ गुणता से–
अब पिछला इंगलैंड प्रवास !
लीन हृदय में मचल उठा था–
भारत माता का इतिहास !!

स्वाभिमान के गुण–गौरव ने–
बना दिया था वह इन्सान !
जो कि हृदय में लिये हुये था–
एक अनूठा हिन्दुस्तान !!

कुप्रभाव को लखकर युग के–
विचलित होते थे अरमान !
मन–मस्तिष्क संजोया करता था–
जीवन के नव उपमान !!

विश्व युद्ध के परिणामों को–
आँक रहे थे सद्य प्रयास !
देख चुका था, एक तिहाई–
विश्व हुआ है दीन उदास !!

क्या कीमत रह गई मनुज की–
केवल ईंधन, व्यक्ति अजीब !
युद्धोंन्मादों का शिकार था–
प्रतिदिन हर इन्सान गरीब !!

निखरे दृढ़ निश्चय के शतदल

नवलय गुँजित हुई पवन में !

चप्पा–चप्पा था आनन्दित– चहुं दिशि खुशियाँ छाई थीं,
मित्र–बन्धुओं, जन–समाज से हर पल मिली बधाई थी,
शिशु ने खुशियों का जीवन में एक नया संसार दिया,
भरा [illegible] पूर्ण भवन में– शोभा का विस्तार किया,

गहमी–गहमी शुरु हो गई– सजे हुये आनन्द भवन में !
नवलय गुँजित हुई पवन में !!

अनुपम शान्त छटा कन्या की– लखी जवाहर लाल हँसे,
कन्या के प्रति यश का सिक्का मन में खूब उछाल हँसे,
कमला लज्जा से मुस्काई, भाव भंगिमा प्रीत भरी,
जीवन की हर एक घड़ी थी– उन्हें लगी संगीत भरी,

अनुपमेय जो सिद्ध हुई थी, ऐसी कलिका खिली चमन में !
नवलय गुँजित हुई पवन में !!

विस्तृत अनुभव नव जागृति के थे सुस्पंदन जीवन में,
लड़के–लड़की मे कुछ अन्तर– नही जगा उनके मन मे,
किया त्वरित मन ही मन निर्णय, शैक्षिक पथ निर्माण करें;
कन्याओं का भी युगव्रत हो अनुभव ज्योतिर्मान करें,

निखर उठे, दृढ़ निश्चय शतदल–हरे भरे प्रिय आँगन मे !
नवलय गुँजित हुई पवन मे !!

शिशु के प्रति सद्भाव स्नेह का सिंधु लहरता दीख रहा,
कन्या का यह पदार्पण– युग बोध सँवरता दीख रहा,
भावी युग सुखमय वृतांत की नवल प्रभा पहचान रही,
धैर्य प्रवण नेहरू के मन मे, एक नवेली आन रही,

गतिमय सद् विचार हो गया, मानवता के नये चलन मे !
नवलय गुँजित हुई पवन मे !!

जन्मी भारत भूमि आत्मा

परिजन, पुरजन, आत्मजयी सब-
अरु जो नौकर चाकर थे !
देते रहे सभी बधाई–
बारी–बारी आकर के !!

१६ नवम्बर १६१७

जिस क्षण कन्या लाभ हुआ

झूम-झूमकर चूम, रहा था-
घर-आँगन अरु द्वार पवन !
परम प्रफुल्लित होकर मुदमय-
नाच उठा आनन्द भवन !!

कोमल किसलय सी आशा का मुख मंडल अरुणाभ हुआ !
कमला और जवाहर को था जिस क्षण कन्या लाभ हुआ !!
पृष्ठ भूमि में शुभाकांक्षा के गुलाब थे महक रहे !
नवोल्लास के पाखी प्रतिपल-भर उमंग थे चहक रहे !!

शुभ घड़ियों में लक्ष्मी का था-
पुण्य प्रभायुत शुभागमन !
परम प्रफुल्लित होकर मुदमय-
नाच उठा आनन्द भवन !!

दादा मोतीलाल विहँसकर कन्या का मुख देख रहे !
पुत्र जवाहर ने जो पाया था वह असीम सुख देख रहे !!
केवल दादी की अभिलाषा थी कि काश होता लड़का !
सुख नैसर्गिक प्राप्त कराता उनका यह प्यारा पोता !!

कुल का होता नाम, सफल–
हो जाता सबका ही जीवन !
परम प्रफुल्लित होकर मुदमय–
नाच उठा आनन्द भवन !!

सुनकर मोती लाल छोड़ते शब्द प्रभाव विचारों में !
बोले—"बेटी, बेटों से भी होगी श्रेष्ठ हजारों में" !!
इतना सुन्दर, कोमल कलिका सुमन–वृन्द की शान बने !
अरु लाखों में गुण वत्ता की इसकी नव पहचान बने !!

मंद–मंद थे गान गुंजरित–
मुखरित था महिला गायन !
परम प्रफुल्लित होकर मुदमय–
नाच उठा आनन्द भवन !!

रूस-क्रान्ति—

अक्टूबर १९१७

जर्जर होता गया रूस था, पड़ा युद्ध का प्रबल प्रभाव,
मित्र देश भी अति माहिर थे, चलने मे नित नूतन दॉव,
घोर विलासी जीवन पद्धति कब तक थी स्वीकार उन्हे,
अधिकारों के लिये क्रान्ति को बना चुके थे जो कि स्वभाव !

सुनी अन्ततः युग-क्रम ने थी, मानव-जीवन की फरियाद,
उत्साहों की नई लहर ने, मिटा दिया सारा अवसाद,
ध्वज फहरा था समाजवाद का केरेन्स्की को दिया उतार,
लेनिन ने सत्ता कायम की, दमक उठा था पेत्रोग्राद !

उदित हुई जन-क्रान्ति रूस मे—
जाग उठा ज्यो सूर्य प्रवीण !
सभी नागरिक थे प्रसन्न अरु—
पुनि, पुनि झूम उठे ग्रामीण !!

लेनिन कर्मठ, क्रियाशील स्वर–
भर कर करते रहे प्रचार !
"और अधिक अब सहन न होंगे–
धनाश्रयी के अत्याचार !!

मानव आखिर मानव ही है–
नही काठ है या पाषाण !
जीने की ख्वाहिश है इसमे–
नवोल्लास के है अरमान !!

एक ओर साम्राज्यवाद है–
ओर दूसरी घोर अभाव !
नित सक्षम ने अक्षम के प्रति–
निर्मित कर रक्खा अलगाव" !!

नई क्रान्ति देखी तो युरोप–
लगा दहकने ज्यों कि अलाव !
क्रान्ति परक बन गया जवाहर का–
था तब से नित्य स्वभाव !!

तथ्य किये जुटकर एकत्रित–
अनुभव था यात्रा का प्राप्त !
किया अध्ययन तन्मयता से–
मन की उलझन हुई समाप्त !!

भारत भी था हुआ प्रभावित–
सुन कर सारा श्रेष्ठ वृतान्त !
लहर–लहर को देख रहा था–
ठहर–ठहर कर हृदय प्रशान्त !!

सुन्दर कन्या सुमन सरीखी,
सबको प्यारी–प्यारी दीखी,
महक उठा आनन्द भवन,
नाच उठा हर उलसित मन,

भारत–कोकिल सरोजिनी ने–
वर्णे भाग्य जवाहर के !
देते रहे सभी बधाई–
बारी–बारी आकर के !!

जन्मी भारत भूमि–आत्मा,
प्यारा मुखड़ा खिला चाँद सा,
हो भविष्य मुदमय शोभन,
महक उठा आनन्द भवन,

हाव–भाव शिशु के चेहरे पर–
भासित पूर्ण सुधाकर के !
देते रहे सभी बधाई–
बारी–बारी आकर के !!

कोमल सुमनावलि सा मन,
कायम रक्खे अपनापन,
कान्ति युक्त आकृति की लय,
करे गुँजरित हर पल जय,

गूँज उठे उज्ज्वल प्रभावमय–
भाव श्रीमती टेलर के !
देते रहे सभी बधाई–
बारी–बारी आकर के !!

मुदमय ज्योति किरण बिखरो थी

प्राणों में नव पुलक भरी थी !

आया उपवन में नव जीवन,
महक उठा धरती का कण–कण,
गेह, स्नेह का सिंधु बन गया;
अग-जग शोभित, जग-मग आँगन,

पात-पात की छवि निखरी थी !
प्राणों में नव पुलक भरी थी !!

स्वप्न हुये साकार प्यार क,
राष्ट्र-चेतना भव्य द्वार के,
गंगा-यमुना के संगम पर,
दिवस जगे थे बड़े प्यार के,

जिसमें राष्ट्रवाद स्वर खनके–
स्वप्न सज गये उस जीवन के,
होनहार बिरवान सजीला–
द्वार खड़ा सुख रंग-रंगीला,

देख जिसे जन-मानस विस्मित !
अंग-अंग नव रंग सुशोभित !!

आजादी की यह कविता है

अरमानो की बगिया महकी !

खड़े पितामह लाड़ लड़ावें–
मुख चूमें, झूमें, दुलरावें,
रग-रग में नव शक्ति संचरित–
पलक द्वार दीवाली ज्योतित,

वंश-वेलि लखकर निज गृह की !
अरमानों की बगिया महकी !!

"देखो, कैसा प्यारा लेटा,
इंदु, हमारा प्यारा बेटा,
कन्या यह वरदान सुता है,
आजादी की यह कविता है,

यह चिंगारी क्रान्ति सतह की !
अरमानों की बगिया महकी !!

एक नया विश्वास हमारा,
बदले यह इतिहास हमारा,
एक नया युग आया द्वारे,
जाग उठे हैं भाग्य हमारे,

मनो कामना हँस-हँस चहकी !
अरमानों की बगिया महकी !!

निंदिया देखे, चोरी-चोरी :

स्वर्ण पालना रेशम डोरी !

हिल-हिल डोले सहज सुहावन-
मंद-मंद झूले मन भावन,
सुख कर, मुख पर आभा नाचे-
विमल ज्योति की गीता बाँचे,

झुकि-झुकि मैया गाये लोरी !
स्वर्ण पालना रेशम डोरी !!

चहुं दिशि आभा अति सुखदाई !
भव्य द्वार बज रही बधाई !!

महिला मंडल बड़ा प्रफुल्लित,
अन्तरात्मा मुदिता, ज्योतित,
मधुर-मधुर स्वर गूँजे गतिमय,
क्षितिज-छोर तक पहुंची मृदु लय,

फैल रही सुषमित अरुणाई !
भव्य द्वार बज रही बधाई !!

जन्मी ज्योति सुकोमल कन्या,
धन्य जवाहर, कमला धन्या,
मृदुल कली की गंध बड़ी थी,
स्वयं प्रकृति आ द्वार खड़ी थी,

चारु चन्द्रिका दूध नहाई !
भव्य द्वार बज रही बधाई !!

स्वयं लक्ष्मी घर में आई

अंग-अंग, नवरंग सुशोभित !

अमर सौख्य की अद्‌भुत प्रतिमा,
नेह जड़ित जीवन की महिमा,
प्रबल भाग्य की स्वर्णिम रेखा,
सत्य सनातन का शुभ लेखा !

मस्तक भव्य विभा आलोकित !
अग-अंग नव रंग सुशोभित !!

वर्तमान लख झूम रहा था,
नव भविष्य पद चूम रहा था
चिहुंक-चिहुक उठती अंगनाई,
स्वयं लक्ष्मी घर में आई,

नूतन आन-बान से पोषित !
अंग-अंग नवरंग सुशोभित !!

मुदमय ज्योति किरण बिखरी थी।
प्राणों में नव पुलक भरी थी !!

सौम्य सरल सी कलिका प्यारी,
थी परिजन को, जग से न्यारी,
नव भविष्य के लिये हृदय में,
कामनाओं की कविता सारी,

चारु चन्द्रिका सी उतरी थी !
प्राणों में नव पुलक भरी थी !!

नवोन्मेष भरकर तन-मन में

धूम मची आनन्द भवन में !

ज्योति प्रभा उन्नीस नवम्बर,
सन् उन्नीस सौ सत्रह सुखकर,
धन्य दिवस अरु धन्य घड़ी थी;
भावनाओं की सरि उमड़ी थी,

कमला के तपसी जीवन में !
धूम मची आनन्द भवन में !!

लखकर प्यारा रूप सलोना,
चमक उठा था कोना–कोना,
उल्लासो के दीप जल उठे,
दिल के बहुत समीप जल उठे,

नवोन्मेष भरकर तन–मन मे !
धूम मची आनन्द भवन मे !!

दिशा-दिशा थी मगल गाती,
किरण-किरण थी खुशियाँ लाती,
फूली, फली मृदुल अभिलाषा,
कुदरत ने वह रूप तराशा,

नई उमगा के उपवन मे !
धूम मची आनन्द भवन मे !!

चारु चन्द्रिका दूध नहाई

भव्य द्वार बज रही बधाई !

स्वर सोहर के गूज प्रतिपल,
झूम उठे भावो के शतदल,
रसमय गीतो की लय प्यारी,
सजा रही जीवन की क्यारी,

मृदु माधुर्य परक सुस्पंदन—
किलक-किलक दमकाये आँगुन,
बालों के गुच्छे लहराये—
सुन्दर अनुपम चित्र बनायें,

खेले जैसे चाँद चकोरी !
स्वर्ण पालना रेशम डोरी !!

पवन थिरक कर झुकि-झुकि झूमे—
स्नेहिल स्वर भर मुख को चूमें,
वर विनोद के उभर निरंतर—
खेल रहे मुस्कानें भर-भर,

निंदिया देखे चोरी-चोरी !
स्वर्ण पालना रेशम डोरी !!

प्रिय दर्शनी इन्दिरा रानी

नामकरण की वेला आई !

प्रातः से ही नया रंग था—
उल्लासों की नव उमंग का,
छटा मनोहर भव्य निराली—
अद्‌भुत जीवन ज्योति-प्रणाली,

फूल-फूल पर थी अरुणाई !
नामकरण की वेला आई !!

परिजन-पुरजन सब हर्षाते—
दीख रहे सब आते-जाते,
भव्य सदन आनन्द भवन का—
चित्र सुसज्जित उस दिन मन का,

ज्यों सबने जीवन निधि पाई !
नामकरण की वेला आई !!

मग्नमना आगत, अभ्यागत—
प्राप्त हार्दिक करते स्वागत,
लाहर-लहर मन लहर रहा था—
शिशु का झण्डा फहर रहा था,

शुभ वेला थी अति सुखदाई !
नाम करण की वेला आई !!

सब विधि शुचि सम्पन्न व्यवस्था—
मानवीय संस्कार अवस्था,
नामकरण की ज्योति सुहानी—
प्रियदर्शनी इन्दिरा रानी,

गूँज उठी द्वारे शहनाई !
नामकरण की वेला आई !!

नित्य नयेपन से दमकाया :

ज्यो-यो बढती रही इन्दिरा–
रहा विकसता शैशव काल !
नित प्रसन्न मुख देखा करते–
निज पोती को मोतीलाल !!

नीति-महल आनन्द भवन मे–
रुचिकर रही देश की बात !
राजनीति चैतन्य व्यवस्था–
रही प्रकाशित दिन अरु रात !!

नगर-डगर का व्यक्ति निकट था–
और जानते थे ग्रामीण !
उच्च स्तर के अधिवक्ता है–
नेहरू मोतीलाल प्रवीण !!

राजे और नवाबों के रख करके–
नित्य मुकदमे हाथ !
परम्परागत स्वस्थ भावना–
रहती न्यायालय के साथ !!

श्रेष्ठ सुशिक्षा देकर सुत को–
कार्य किया था एक विशाल !
लगे दमकने थे जीवन में–
ज्योतिर्मान जवाहरलाल !!

यद्यपि शिक्षा के जैसी ही–
जीवन की छवि थी अनुरूप !
किन्तु स्वप्न में भावी युग का–
देख लिया संघर्ष स्वरूप !!

यही चाहते थे बेटी भी–
उच्च स्तर का पाये ज्ञान !
नित्य नयेपन से दमकाये–
अपने जीवन का दिनमान !!

रुचि-रुचि देखा करते सूरत,
कोमल-कान्ति विभायुत मूरत,
रम्य मनोहर छवि आकर्षण,
बढ़ता जाता था हर इक क्षण,
'इन्दु' प्रभा है सबके मन की,
नवल रागिनी सुख की खनकी,

बोले पत्नी से मुस्काकर–
"देखो कमला कन्या सुन्दर"!

उठा लिया मुदमय तत्काल !
खुश थे बहुत जवाहर लाल !!

सबकी प्यारी बनी इन्दिरा,
प्रियदर्शिनी नाम सजा,
आशा के अनुरूप सुसंयत,
देख–भाल को सब थे सहमत,
चंचल–चपल–चतुर, विश्वासी,
होगी पापू–प्रण अभ्यासी,

माँ का रहे प्रभाव सुमन पर,
स्वाभाविक गुण रख जीवन भर,

रहे तोड़ती भय का जाल !
खुश थे बहुत जवाहर लाल !!

कन्या सुत-सुख से क्या कम है,
रहे वही जो प्रकृति-नियम है,
भेद–भाव अल्पज्ञ क्रिया है,
रुचिमय जीवन आप जिया है,
लाड़ प्यार सब मिले बराबर,
नहीं चाहिये किंचित अन्तर,

कायम कर दी नई मिसाल !
खुश थे बहुत जवाहर लाल !!

वीर जवाहर नाहर ज्ञानी !
लन्दन रहते-रहते देखा,
हमा-हमीं का क्रमवत लेखा,
देखा प्रगति-प्राण जीवन भी,
रुचिकर जिम्मेदारी विकसी,

युद्ध काल में संयम देखा,
धैर्य और साहस—क्रम देखा,

हर विनाश की पढ़ी कहानी !
वीर जवाहर नाहर ज्ञानी !!

द्वार-द्वार पर काल खड़ा था,
विध्वंसों का जाल बड़ा था,
किन्तु सजगता भी वह देखी,
जिसने युग की चाल परेखी,

जर्मन, फ्रांस, ब्रिटेनी रण में,
रंग बदलता था क्षण-क्षण में,

जहर बना सागर का पानी !
वीर जवाहर नाहर ज्ञानी !!

होते–होते खत्म लड़ाई,
भारत से चाही भरपाई,
कोई था षडयंत्र न बाकी,
नित्य दिखाई थी चालाकी,

लन्दन का हर एक इशारा,
बनता खंजर रहा दुधारा,

नेहरू ने रग–रग पहचानी !
वीर जवाहर नाहर ज्ञानी !!

युग आया था नई लगन का !
युग आया था नई लगन का !

महायुद्ध के बढ़े चरण थे,
भीषणतम विनाश के क्षण थे,
पश्चिम में भड़के थे शोले,
बरस रहे थे प्रतिपल गोले,

रंग हुआ था लाल गगन का !
युग आया था नई लगन का !!

एक ओर थी तानाशाही,
करने को अपनी मनचाही,
और दूसरी ओर क्रान्ति थी;
लगी टूटने भ्रमित भ्रान्ति थी,

चक्र टूटने लगा दमन का !
युग आया था नई लगन का !!

अंग–अंग के कंपित रोए,
अभिभावी जन खोए-खोए,
परिवर्तन यह बहुत बड़ा था;
जन-बल रक्षा हेतु लड़ा था,

लेकिन युग था नये सृजन का !
युग आया था नई लगन का !!

क्रान्ति सुता भारत में जन्मी,
परिवर्तन-स्वागत में जन्मी,
क्रान्ति लगन का अमिट प्रभाव;
लेकर उतरा दीप्ति स्वभाव,

था भविष्य भी अपनेपन का !
युग आया था नई लगन का !!

१० दिसम्बर १९१७

जस्टिस रोलेट की अध्यक्षता में ब्रिटिश सरकार द्वारा कमेटी की नियुक्ति

राष्ट्र भावना बढ़ी चतुर्दिक–
बलिदानी नर तत्पर थे !
नर प्रताप सिंह से योद्धा तब–
लेते बढ़कर टक्कर थे !!

शासन-चूलें हिला रहे थे–
राष्ट्रवाद के नारों से !
उठता अक्सर शोर रहा था–
गलियों अरु बाजारों से !!

"जो सरकार निरन्तर जालिम–
पल भर भी हनीं रखनी है !
देश हेतु सर्वस्व सौंपकर–
अपनी शक्ति परखनी है" !!

चिढ़ी तभी सरकार विदेशी–
जुल्मों का विस्तार किया !
जस्टिस रौलेट को नियुक्त कर–
बढ़ा दिया भार नया !!

था कुठार मौलिक चिन्तन पर–
सुनता कोई दलील न था !
कोई भी तो देशभक्त, कर सकता–
कोई वकील न था !!

रौलेट एक्ट हिन्द के हित को–
प्रति पल क्षति पहुंचाता था !
बिना बात भी चलता-फिरता–
मानव पकड़ा जाता था !!

कसा शिकंजा अंग्रेजों ने–
निजी स्वार्थ के कारण था !
खुले हृदय से रो न सके थे–
दूभर जीवन का क्षण था !!

सन् १६१८

पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा वकालत छोड़ने का निणय

"सुन बेटा उस कठिन समय में, जब प्रिय भारत था बेहाल !
बेचैनी अनुभव करते थे दिन अरु रात जवाहर लाल" !!
कहा वृद्ध ने निज पोते से– छोड़ी चुप से थी निःश्वास !
अपने भारन का पग–पग पर भरा त्याग से है इतिहास !!

देश हित में—

पाँव उसके ही उठेंगे नित्य बढ़ने के लिये !
जो यहाँ पैदा हुआ, इतिहास गढ़ने के लिये !!
त्याग की शुचि भावना, सधती उसी के द्वार है !
देश हित में जो समर्पण भाव से तैयार है !!

लक्ष्य पाने की ललक की हर कसक वह पा सका !
जो सदा बढ़ता रहा अरु रुक न किंचित भी थका !!
हो न विचलित, अरु नहीं विश्वास खोता है कभी !
बैठ रहने का न कुछ अहसास होता है कभी !!

पग बढ़ाता देश का अवसाद हरने के लिये !
बन्धनों से स्वयं को आजाद करने के लिये !!
स्वयं का हित साधने को बहुत जन संसार में !
व्यक्ति वे भी हैं कि जो लें लाभ नित व्यवहार में !!

किन्तु जो दृढ़ व्रत यहाँ पर कर्म विधि अपना सके !
पार वो ही आपदाओं से जगत में पा सके !!
रोक सकता कब उसे नव राह से तूफान है !
नित्य रहता प्रगति-पथ पर ही कि जिसका ध्यान है !!

वायु मण्डल भी हुलसकर साथ उसके ही चले !
राष्ट्र के सेवार्थ जिसके प्राण-मन में रुचि पले !!

थी लगन मन में जवाहर लाल के–
विश्वास की !
सोचता था मोड़ सकता धार–
वह इतिहास की !!

पूर्व के अनुभव हृदय में–
हलचलों के केन्द्र थे !
और जन-आन्दोलनों के–
जल जलों के केन्द्र थे !!

राजनीतिक चाव कहता था–
उतर मैदान में !
है जरूरत संगठन की–
आज हिन्दुस्तान में !!

किन्तु मुश्किल थी पिता की–
अनुमति सम्भव न थी !
व्यक्तिगत आधार पर भी–
कार्य–क्षति सम्भव न थी !!

था बहुत संघर्ष मन में–
डोलता आधार था !
साथ ही हर पल उमड़ता–
देश हित का प्यार था !!

अंततः निर्णय किया–
मन-प्राण बंधन मुक्त हों !
देश—सेवा के लिये–
रुचि—भावना संयुक्त हों !!

जब पिता ने थी रुचि लखी नित्य ही अनुराग में,
गाँधी जी को था बुलाया त्वरित ही वेग प्रयाग में,
मंत्रणा सुस्पष्ट कर गाँधी, जवाहर से कहे–
"हो पिता को कष्ट ना वह कार्य हो भू–भाग में" !

कुछ काल तक संयत रहे !
खोजते अभिमत रहे !!

चूंकि हालत देश भर की—
उस समय विकराल थी !
तब पिता की भी इजाजत—
मिल गई तत्काल थी !!

छोड़ दी हँसकर वकालत, स्वस्थ मन आजाद था !
और जीवन में प्रथम तट त्याग की ईजाद था !!

अधिक न कुछ रोड़ा अटकाया, दुविधा या संशय ने,
संघर्षों पर विजय प्राप्त की मन के दृढ़ निश्चय ने,
जब-जब भी संवेदन शीला भावनाएँ थीं जागीं;
दिया जगा नव तत्व लगन का बढ़ते हुये समय ने !

देश दासता-बन्धन में

नर्म दलों की धारणाओं का–
किया आकलन जब-जब भी !
दुर्बलता की गंध मिली थी–
हर विश्लेषण में तब ही !!

काँग्रेस में दो विचार-धाराओं–
का बाहुल्य रहा !
गर्म दलों अरु नर्म दलों का–
नपता-तुलता मूल्य रहा !!

गर्म विचारों के जोशीले–
भाषण में दम रहता था !
व्यंगोक्ति के साथ-साथ ही–
नव-चेतन-क्रम रहता था !!

इसी धरातल पर पग रखकर–
उठे जवाहर नजरों में !
उनके स्वागत सत्कारों की–
ललक बढ़ गई नगरों में !!

गाँधी जी के आशीषों से रहते स्वयं प्रसन्न सदा !
नेहरू मोतीलाल पुत्र से रहते रहे प्रसन्न सदा !!
दृढ़ निश्चय अरु योग्यताओं का पड़ता रहा प्रभाव सदैव !
इससे पहले के आन्दोलन सहते रहे अभाव सदैव !!

पूर्ण रूप निर्भीक चेष्टा—
अभिनव लक्ष्य सँवरती थी !
जन-जीवन में आत्म शक्ति की—
ललक निराली भरती थी !!

झेल रहा था कष्ट आये दिन—
देश दासता बन्धन में !
घोर निराशा भरी हुई थी—
जन-मानस के जीवन में !!

ताँडव करती रहे गरीबी—
यह किंचित स्वीकार न था !
लुटे-पिटे हर एक कृषक को—
दुख का पारवार न था !!

देश समूचा साथ ले लिया—
गाँधी ने आन्दोलन में !
भरी नई स्फूर्ति लगन की—
बढ़-चढ़ करके जन-मन में !!

मुर्दा जीवन करवट लेकर—
धीरे-धीरे जागा था !!
दान नहीं, अनुदान नहीं—
अधिकार स्वयं का माँगा था !!

१२ जुलाई सन् १९१८

मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार

लन्दन में थी कब क्षमता, जन आन्दोलन स्वीकार करे !
ब्रिटिश शासन ने देखा, हर भाषण में अंगार भरे !!
सोचा था साम्राज्यवाद के अन्तर्गत सरकार रहे !
मांटेग्यू चेम्सफोर्ड का हर सुधार स्वीकार रहे !!

कहाँ अपेक्षा थी कि युद्ध की परिणति पर,
अधिकारों को !
जन-मन के सत्कार सहित बल—
देंगे नये विचारों को !!

किन्तु नया रुख था बंधन को—
और अधिक ही कसने की !
अरु भारत के लिये जाल था—
कड़ा तीव्रतर फँसने का !!

अगस्त १९१८

कांग्रेस अधिवेशन बम्बई

जन हितार्थ सुधार न थे–
अधिवेशन मध्य विचार हुआ !
कांग्रेस के नेताओं ने–
तनिक नहीं स्वीकार किया !!

यह धोखा है और सरासर–
भारत की तौहीन है यह !
इस चालाकी से लन्दन की–
और हुआ आधीन है यह !!

सन् १९१८

अली बन्धुओं द्वारा खिलाफत कमेटी की स्थापना :

देश भक्ति का प्रबल दौर था,
चहुं दिशि रुचि ने किया गौर था,
मुस्लिम लीगी प्रथक प्रभायुत,
अली बान्धव का बढ़ा जोर था !

बेईमानी प्रकट हुई थी खुलकर इंगलिश्तान की !
नित मुखालफत करता था वह तुर्की के सुल्तान की !!
चाल चली साम्राज्यवाद ने राज्य बँटे उस्मान का !
दृष्टि खिलाफत पर थी केंद्रित सारे हिन्दुस्तान की !!

मौहम्मद अली अरु शौकत अली ने–
किये संगठित अरु तैयार !
वे मुस्लिम जो देश भक्ति की–
लौ से करते थे नित प्यार !!

अली बान्धव का द्रुत प्रभाव था–
फैला भारतवर्ष में !
कितने ही नर साथ हो लिये–
उनके उस संघर्ष में !!

गाँधी जी के हुये साथ थे,
ब्रिटिश शासन के खिलाफ थे,
उपनिवेशवादी चालों पर;
करते धावे नित्य आप थे !

अंग्रेजों को लगा दीखने, नया सिलसिला आफत का !
गाँवों तक में बढ़ा जोर था प्रति दिन खूब खिलाफत का !
होते थे जोशीले भाषण, जलसों की भरमार थी !
देख खिलाफत के प्रवाह को काँप उठी सरकार थी !!

क्रान्ति—भावना का प्रभाव भी—सन् १६१६

एक ओर थी पूर्ण अहिंसक रुचिवत्ता दीवानों में !
और दूसरी ओर क्रान्ति के भाव जगे मर्दानों में !!
सत्याग्रह, आन्दोलन विधिवत चमक–दमक से चलता था !
क्रान्ति भावना का प्रभाव भी रुचि–साँचे में ढलता था !!

लखे रूस के क्रान्ति सुफल थे जिनका त्वरित प्रभाव पड़ा !
किन्तु साथ ही शान्ति वाहिनीं-चाहों जनित स्वभाव खड़ा !!
लक्ष्य देश की आजादी का रहा सामने उन सबके !
देख रहे थे जो कि न जाने--बैठे राहें तब कब के !!

क्रान्तिकारियों की हलचल थी, शस्त्रों के सुविधा बल पर !
अरु शासन कीं तीव्र दृष्टि थी, जमी हुई इस हल चल पर !!
सुदृढ़ भाव तरु की दो शाखें—फैल रही थीं भारत में !
नित्य नया भूकम्प दिखाई देने लगा सियासत में !!

युद्धोन्मादी चाव वहाँ साम्राज्यवाद का डगमग था !
जहाँ देखने को आतुर नव परिवर्तन सारा ही जग था !!

भारत से कर–कर के वादे–
गोरे शासक मुकर गये !
जो समझौते के ओढ़े थे–
सभी मुखौटे उतर गये !!

कुछ कल खाने चला यहाँ पर–
अपना ही हित साधा था !
सारे भारत की जनता को–
कूट नीति से बाँधा था !!

केवल ईंधन समझा रण की–
ज्वाला का था भारत को !
पड़ा झेलना हाय ! देश को–
नित्य घिनौनी आफत को !!

जो लाभान्वित हुये यहाँ पर–
वे ही बस गुण गाते थे !!
नित्य नये ठेके बढ़ चढ़ कर–
अंग्रेजों से पाते थे !!

सत्य–अहिंसा के सुझाव से–
हर–दम रहे बिदकते थे !
जो कि दौर बर्बरता का–
रखने में नहीं हिचकते थे !!

जागी थी बलिदान भावना :

काम नहीं चल सकता था तब, कुछ भी रोने-धोने से !
जागी थी बलिदान—भावना—प्रण के कोने—कोने से !!

तड़प देखकर धरती माँ की-
छाया रोष किसानों में,
नया जोश संचरित हुआ तब-
हिन्दी—वीर—जवानों में,
युग का बदला रुख तो देखा-
शक्ति नव्यतम आई थी,
मानव मन ने अधिकारों की-
समझी तब गहराई थी,

जाग चुके थे तब आंखों में, सबकी स्वप्न सलोने से !
जागी थी बलिदान-भावना प्राण के कोने—कोने से !!

सिंधु पार जो भारतवासी-
थे वे यत्न सवँरते थे,
लन्दन, जर्मन, अमरीका में-
नई चेष्टा करते थे,
लन्दन की सड़कों की जग-मग-
देन हिन्द के धन की थी-
इसीलिये इस ओर बढ़ी तब-
रुचि कुछ-कुछ जर्मन की थी,

समय—समय पर सजता था इंगलैंड हिन्द के सोने से !
जागी थी बलिदान भावना, प्रण के कोने—कोने से !!

युरोप के अनुभव के बल पर—
लक्ष्य किये निर्धारित थे,
संघ बनाकर मुक्ति हेतु—
प्रस्ताव कराये पारित थे,
नई क्रान्ति की ज्योति, जवाहर—
गुण जन—जन में भरती थी,
सफल श्याम जी कृष्ण चेतना—
मन के द्वार विचरती थी,

कहीं न चूके, देश भक्ति के बीज विश्व मे बोने से !
जागी थी बलिदान भावना, प्रण के कोने—कोने से !!

थे प्रयास जुट किये निरन्तर,
नई भोर के साथ उठें,
आजादी के लिये साध रख—
कोटि—कोटि अब हाथ उठें,
हो बंगाली, या मद्रासी—
गुजराती या उत्तर का,
"जैसे भी हो मिटे गुलामी"—
सब का एक यही स्वर था,

दाग दासता के मिट सकते हैं कल्मष को धोने से !
जागी थी बलिदान भावना, प्रण के कोने—कोने से !!

बुद्धि जीवियों के स्वर गूँजे–
दहला आसन लन्दन का,
अन्त निकट आ रहा-लगा कि–
अब भारत में शोषण का,
एक ओर था असहयोग का–
अस्त्र मिला जनता–कर को,
और दूसरी ओर क्रान्ति का–
शस्त्र मिला हर नाहर को,

नहीं हटाते कदम वीर थे, रक्त--बीज के बोने से !
जागी थी बलिदान भावना–प्रण के कोने-कोने से !!

विश्व समूचा था निगाह में–
जब भारत था जाग रहा,
लड़ता था अधिकार हेतु वह–
नहीं भीख था माँग रहा,
जन प्रवाह की लहर–लहर पर–
गूँज उठा था द्रुत नारा,
"विश्व विजयी तिरंगा प्यारा–
झण्डा ऊँचा रहे हमारा,'

सहम रही थी ब्रिटिश सत्ता--भारत के हर छोने से !
जागी थी बलिदान भावना, प्रण के कौने–कोने से !!

स्वाभिमान की इस धरती पर :

"ऐसे ही यह नहीं मिली आजादी, जिसको भोग रहे,
प्रणवत भावों के बेटा रे ! जुड़े यहाँ संयोग रहे,
भाव समर्पण का रुचि के प्रति बड़ा हुआ था तेजी से,
सत्याग्रह के कारण, कारा जाते अक्सर लोग रहे !

बिफर रहा था देख जुल्म को नित–नित जन साधारण,
अंधा रौलेट एक्ट रोष का बना हुआ था कारण,
गांधी ने था कहा—प्रार्थना सभा करें अरु धारें,
सत्याग्रह का गाँव–गाँव में, नगर–नगर में सब प्रण !

प्रान्त–प्रान्त में शोषण का था दौर चला निर्बाध दिया !
थी मिसाल जिसकी न कहीं पर, वह जघन्य अपराध किया !!
हरा भरा पंजाब नजर में अंग्रेजों की खटका था !
इसीलिये तो दिशा–दिशा में खड्ग जुल्म का लटका था !!

रहा लाजपत अरु अजीत का योगदान हर एक दिशा !
आत्म व्यथा रणजीत सिंह की आंक रही जन–बोध कथा !!
वीर भावना जगी, लगी जब रुक—रुक मन पर चोट नई !
देख रहे थे चाटुकार कुछ, फिट करके कुछ गोट नई !!

स्वाभिमान की इस धरती पर, स्वत्व भावना देख सके !
नवोन्मेष की स्वस्थ चेतना, आँक निरन्तर लेख सके !!
वीर लाजपत पकड़ लिये थे और देश से दूर किये !
अरु अजीत भी देश छोडने को थे फिर मजबूर किये !!

नग्न रूप मे तानाशाही करवट स्वय बदलती थी !
देश भक्त वीरो से जलकर, चाले नूतन चलती थी !!
इस कारण आक्रोश प्रान्त मे, जन–मन मे उद्वेलन था !
शासन से नित असहयोग का एक नया आमत्रण था !!

हडतालो का क्रम विरोध मे प्रतिपल बढना रहता था !
स्वर, शासन को धकियाने का भाषण गढता रहता था !!
सहन कहाँ, अग्रेज क्रुद्ध थे गिरफ्तार सतपाल किये !
और डॉक्टर किचलू भी थे, त्वरित जेल मे डाल दिये !!

उन्हे किया निर्वासित ऐसा--
जन–मानस से तोड दिया !
पता नही कि कहाँ उन्हे–
ले जाकर के था छोड दिया !!

स्वावलम्ब अरु स्वयं सिद्धि पर :

पश्चिम रुख, पश्चिमी सभ्यता, रहते असमंजस में !
समझ सके जो भारतीय गुण, नहीं किसी के वश में !!
सीधे, सादे लोग यहाँ के पूर्व प्रभा से पोषित !
संसृति गुण, शुचिकर्म भावना युगों–युगों से शोभित !!

सत्य सधा है संकल्पों से, दुविधा रही न किंचित !
त्याग भावना के प्रकाश से धरा रही आलोकित !!
अरु मर्यादा की रक्षा में, क्या कुछ नही किया है !
स्वावलम्ब अरु स्वयं सिद्धि पर ही तो देश जिया है !!

इसमें गंगा की पवित्रता यमुना की समरसता !
जो आया, यदि घुला, मिला वह जन्म–जन्म को बसता !!
इसके वासी अभ्यासी हैं, श्रद्धा स्नेह सुमन के !
भाँति–भाँति के पुष्प सुगन्धित, है इसके उपवन के !!

विविध भाँति का रहन सहन अरु धर्म भाव वा भाषा !
एक सूत्र में किन्तु बंधे मुक्ता की यह परिभाषा !!
एक वृक्ष, शाखाएँ अनगिन, किन्तु आस्था सत् की !
पूजित होती आई आदि से हर श्रेणी पर्वत की !!

उच्च भावना का प्रतीक यह, शिवमय चित्र सुशोभित !
बिन्दु–बिन्दु से सिन्धु प्राण भर, किया जगत आलोकित !!
वाह्य प्रभाव दुःख दे गया, मोड़–तोड़ कर मन को !
छली भावना खण्डित कर गई, हाय ! भव्य सदन को !!

स्वस्थ चेतना इस धरती की, जब–जब खली किसी को !
लक्ष्य बनाया गया ध्वंस का, तब–तब अरे इसी को !!
वाह्य संस्कृति जब—जब भी थी, हावी होकर नाची !
तब—तब घायल हुई भारती, और कराही प्राची !!

किया बन्धु से बन्धु अलग, अरु बीज स्वार्थ के बोए !
कलह ईर्ष्या के कारण हम, जन्म– जन्म को रोए !!
जब तक वाह्य प्रभाव रहा है, यहाँ धरातल घेरे !
तब—तब रचते रहे व्यूह हैं, आकर यहाँ लुटेरे !!

प्रबल भावना देश हितों की मन में रखे जवाहर !
सोचा करते थे ऐतिहासिक गहराई में जाकर !!
कितनी हास्यास्पद स्थिति है बनते वही खरे हैं !
संस्कृति के वास्तविक गुणों से अब तक जो कि परे हैं !!

और अजब आश्चर्य कि सीधेपन का लाभ उठाते !
शोषण करके, निज घर भरके, पिछड़ापन बतलाते !!
कुछ भी हैं पर स्वाभिमानयुत, हम क्या भारतवासी !
आदिकाल से तूफानों से भिड़ने के अभ्यासी !!

गौरवशाली, निज अतीत पर, हमको गर्व मिला है !
दुनिया खूब समझती है कि पश्चिम संस्कृति क्या है !!
अब अपने अधिकारों के हित- रखकर लड़ना होगा !
पूर्ण शक्ति संयम से बढ़कर, लक्ष्य पकड़ना होगा !!

यही नहीं अपनेपन का- विश्वास दिलाना होगा !
भारत क्या था, क्या है, वह इतिहास बताना होगा !!

प्रेरणा उसको

वह उठा, आगे बढ़ा है, एक नव विश्वास से,
राह में किंचित न विचलित हो सका है त्रास से,
ज्ञान जिसको, आत्म चिन्तन भावनाओं का रहा;
प्रेरणा उसको मिली है, नित्य ही इतिहास से !

चिंतित थी जनता लख करके, इस बेशर्म हिमाकत को !
थी तुरन्त दे नई चुनौती बढ़ी, विदेशी ताकत को !!
डगर-डगर आन्दोलन से था, एक नया उत्साह बढ़ा !
टकराने को बढ़े जुल्म से- लेकर मन में चाह बढ़ा !!

आखिर कब तक, सहन दुर्दशा, हो अपने अरमानों की !
कब तक हो स्वीकार चेष्टा, युवकों पर शैतानों की !!
इसी भावना ने आन्दोलन, डगर-डगर में बढ़ा दिया !
जन विरोध ने सत्ताधारी का पारा था चढ़ा दिया !.

गाथा अमृतसर की :

"गिरफ्तारियों के विरोध में–
होनी एक सभा है !
जिसमें जनता के समक्ष–
अब रखनी एक व्यथा है" !!

किसी स्वार्थी नेता ने थी–
यह करवाई मुनादी !
त्वरित जिसे थी अंग्रेजों ने–
बढ़कर और हवा दी !!

प्राप्त हुई सहयोग भावना–
इस धुन को घर-घर की !
रक्त रंजिता बनी अचानक–
गाथा अमृतसर की ! !

बैसाखी से पूर्व नगर में–
हुये प्रदर्शन भारी !
पूछ रहे थे—"सत्यपाल है
कहाँ ?" प्रदर्शनकारी ! !

बढ़ जुलूस पर किया–
पुलिस ने तभी अचानक धावा !
फूट पड़ा जन-क्रोध उबल कर–
जैसे तपता लावा ! !

तब दंगे की संज्ञा दी थी–
अंग्रेजों ने इसको !
उसका मारा, पीटा, कुचला–
देख लिया, जिस-जिस को ! !

घायल होकर गिरे बहुत जन–
दगी गोलियाँ दन-दन !
लील लिया गोरों की जिद ने–
कितनों का ही जीवन ! !

घिरी एक अंग्रेजी महिला–
इस भगदड़ में आकर !
सुना बाद में नाम 'शेरवुड'
जो कि मिशनरी डाक्टर !!

घायल होकर कहीं भीड़ में,
लगी काटने चक्कर !
केवल उसकी पिसी साइकिल–
निकल गई वह बचकर !!

चूँकि मिशनरी के कारण–
इसका सम्मान अधिक था !
महा क्रूर डायर ने जमकर–
बदला लिया इसी का !!

गिरते-पड़ते बन्धु देखकर–
बिफर उठी थी जनता !
हिन्दू-मुस्लिम अरु सिक्खों का–
जोश त्वरित था भड़का !!

जो कि अहिंसक था वह हिंसक–
बना दिया शासन ने !
पलटा खाया आहत होकर–
पुरजन और स्वजन ने !!

बैंक, डाक घर और रेलवे
स्टेशन थे फूंके !
प्रतिकारों की उस वेला में–
कौन, कहाँ, क्यों चूके ??

काँग्रेस की नीति अहिंसा–
किन्तु रही मजबूरी !
चन्द बागियों ने बढ़-चढ़ कर–
साध करा ली पूरी !!

घृणा बढ़ा दी, अंग्रेजों के–
प्रति कि चुन-चुन मारें !
ज्यों ही ज्ञात हुआ गोरों को–
छिपे किले में सारे !!

जिला प्रशासन. भयाक्रान्त था–
सेना थी बुलवाई !
और घोषणा कर वादी थी–
"हावी—हैं बलवाई" !!

सहमा शहर, अंधेरी गलियाँ–
रात भयंकर दिखती !
घड़ी भयानक, कुटिल चाल से–
पृष्ठ दमन का लिखती !!

थर-थर कांप रहे थे गोरे,
क्या होगा; अब रब रे !
पूरा शहर खिलाफ हो गया–
चेत गये जन सब रे !!

कहीं न फिर से सन सत्तावन,
ये सारे दौहरायें !
और सभी परिवार सहित–
अंग्रेज न मारे जायें ??

गिरफ्तारियों के कारण ही–
जन-जन दुखी हुआ था !
अति विस्फोटक जन–
मानस मन ज्वालामुखी हुआ था !!

सोचा केवल एक रास्ता–
सेना करे प्रशासन !
इसके बल पर बच सकता था–
अंग्रेजों का जीवन !!

रात दस बजे लेकर सेना–
डायर पहुंचा धम्म से !
संभले गोरे, थोड़े-थोड़े–
मुक्त हुये कुछ गम से !!

पुनः दौर था चला रात में,
नये दमन का भारी !
पकड़-धकड़ में माहिर था ही—
डायर अत्याचारी !!

नाम चुस्त, चौकस शासन का—
किन्तु जुल्म का स्वर था !
जिसमें भी कुछ रही चेतना—
बचा नहीं वह घर था !!

खड़े हो गये थे विरोध में,
अमृतसर के वासी !
किन्तु किसी के कहने से—
कर बैठे भूल जरा सी !!

जलियाँ वाला बाग क्षेत्र में,
उन्मत्त सभा बुलाई !
वह गायब हो गया वहाँ से—
जिसने की अगुवाई !!

सूत्रपात यह षडयंत्रों का,
हुआ अनोखे ढंग से !
किया रंग बदरंग समय का—
चालाकी के रंग से !!

"इस भारत को अपनों ने भी,
बेटा, किया कलंकित !
वर्ना क्या इतिहास हमारा—
रहता यहाँ सशंकित !!

१३ अप्रैल १९१९ जलियां वाला बाग कांड

निर्भीक व्यक्ति मर्दाने थे

चल पड़े देश–दीवाने थे,
निर्भीक व्यक्ति मर्दाने थे !
जिस ओर जहाँ जनता उमड़ी,
महिलायें भी थी साथ खड़ीं !

संगठित हुये नर-नारी थे,
भिड़ने को अत्याचारी से !
जो तीन मंजिले भवन खड़े,
देख रहे भर चाव बड़े !

हर दिल में थे अरमान भरे,
श्रोताओं से मैदान भरे, !
विश्वास जमा सबका अपना,
जिस ओर जहाँ था मंच बना !

वक्ता जो भी था बोल रहा,
जुल्मों की परतें खोल रहा !
"यह अपनों की सरकार नहीं,
जो किंचित भी स्वीकार नहीं !"

"उत्तर दे-किचलू' आज कहाँ, !
है दिया जेल में डाल कहाँ !
अंग्रेज हमें बतलायें अब,
हैं वन्द किये सतपाल कहाँ ?"

दो घंटे तक थी सभा चली,
मच गई अचानक हौलबली !
जब तक जनता संभली, संभली,
थी हुई भीड़ से बंद गली !

डायर ने धावा बोल दिया,
था द्वार मृत्यु का खोल दिया !
थी सभा अहिंसक जनता की,
पर डायर ने कब परवाह की !

जो सैनिक थे हथियार बंद !
चल रहे सभी थे मंद मंद !
गुरखों ने स्थिति जानी थी–
झिझके, कुछ आना–कानी की !

जो साथ वहाँ अधिकारी थे,
सब पुतले थे मक्कारी के !
गुरखों को डाँटा, उबल पड़े,
आदेश दिये थे खड़े-खड़े !

"तुम सैनिक हो या कायर हो,
अब देर नहीं झट फायर हो !"
डायर बढ़कर चिल्लाया था–
फायर हो, हाँ बस फायर हो !"

दनदना उठी बन्दूकें थीं,
थी निकली चीखें-हूकें थीं !
था तड़--तड़--तड़ का शोर हुआ,
इस ओर बढ़ा, उस ओर हुआ।

जो मुड़े गोलियों मध्य घिरे,
कुछ इधर पड़े, कुछ उधर गिरे !
थी लगी नाचने मृत्यु वहाँ,
थे रक्त फुहारे जहाँ--तहाँ !

मरने गिरने का शोर हुआ,
इस ओर दबा, उस ओर हुआ !
था समय हाय ! वे दर्द बड़ा,
रह सका कौन हमदर्द खड़ा !

बच्चे, महिलायें चीख रहे,
आहत, मर्माहत दीख रहे।
जब तनिक निकलती बोली थी,
सीने पर आतीं गोली थी !

था डायर बोला—"मत चूको,
जो आए सामने बढ़ फूंको !"
दिन ढलते अविरल खून किया,
अनगिन लोगों को भून दिया !

था पलभर में कुहराम मचा,
वह भाग्यवान था जो कि बचा !
हा ! घायल बढ़ती टोली थी,
हर एक दिशा से गोली थी !

सुधि किसकी कौन कहाँ लेता,
तब किसको कौन बचा लेता !
महिलायें तक बेहाल हुई,
थी धरती सारी लाल हुई !

लख रोने दर-दीवार लगे !
थे लाशों के अम्बार लगे !
पहचान नहीं शव आते थे,
जो जिन्दा थे गश खाते थे !

जो भाग चले तकदीर लिये,
वे संगीनों ने चीर दिये,
कुछ गिरे, मरे, बेहोश हुये–
थे हा ! शिकार निर्दोश हुये !

थे हिन्दू, मुस्लिम. सिक्ख सभी,
जिन सबने मिलकर जानें दी !
वह रक्त, बहा इन्सानी था;
जो केवल हिन्दुस्तानी था !

जिस ओर सहमकर भीड़ चली,
थी तंग जगह, अरु तंग गली !
उसमें से अनगिन मार दिये,
बचते-बचते संहार दिये !

यह डायर का था क्रोध वहाँ,
जो खूनी था प्रतिशोध वहाँ !
धरती थर्राई हवा बंद,
था अम्बर तक को गम दुचंद !

था सूर्य ढला, ले रुंधा गला,
अब जुल्म कौन सा हो अगला !
सहमा-सहमा नभ लाल हुआ,
रोया, कलपा, विकराल हुआ !

हर ओर लहू के धारे थे,
हा ! लोग सहस्रों मारे थे !
बलिदानी स्वर का मेला था–
जब फाग लहू से खेला था !

पूर्ण गुलामी का पंजा था—

अत्याचारों की आँधी से हुआ प्रभावित था गुजरात !
मार दिये थे अंग्रेजों ने कितने ही जन रातों रात !!
जैसे अमृतसर बिखरा था, वैसे क्लान्त अहमदाबाद !
देख कहाँ सकता था, हालत भारत भू की, हो बर्बाद !!

अफरा-तफरी के शिकार थे बच्चे, बूढ़े और जवान !
ऐसे जुल्म किये गोरों ने काँप उठा था हिन्दुस्तान !
पूर्ण गुलामी का पंजा तक कसा गया तब चारों ओर !
जिधर दृष्टि जाती थी युग-वृत देख रहा था हर पल शोर !!

एक ओर अमृतसर दहका—
और दूसरी दिशि गुजरात !
माडरेट तब सोच न पाये-
कैसे क्या कह पायें बात !!

मुस्लिम लीगी उदासीन थे—
दिल न सका था हाय पसीज !
गोरों के मुँह लगे हुये दल—
मना रहे थे मन की तीज !!

पूर्ण भारत ही नहीं तब विश्व भर में शोर था !
जुल्म था साम्राज्यवादी, जुल्म चारों ओर था !
दिल हिला सुन कर सभी का, क्रूर डायर का नशा !
आँख से जिसकी न टपके अश्रु ऐसा कौन था ??

थी नियुक्ति हंटर समिति की–
तब यहाँ सरकार ने !
चूँकि लन्दन तक हिलाया–
रोष के विस्तार ने !!
काँग्रेस सहमत न थी अब–
और दुगनी आँच हो !
था कहा गाँधी ने तब–
कि सत्यता की जाँच हो !!

पंडित जवाहर लाल ने नेहरु का जलियाँ वाला बाग का दौरा

दिसम्बर १९१९

देख लिया जब जन–आक्रोश,
लंदन को तब आया होश,
जाँच कराने के नाटक का;
दिखलाया था पूरा जोश !

सहम उठा सुनकर ब्रह्माण्ड,
ऐसा जलियाँ वाला काण्ड ?
लेकिन वह डायर हत्यारा—
बना हुआ फिरता था सांड ?

कांग्रेस का अपनापन,
उभर चला जन—साथी बन,
स्वयं बनाई जाँच समिति थी;
दिया जिसे था निर्देशन !

"देखो, जाकर वह भू भाग,
जहाँ जमे हत्या के दाग,
जहाँ किये डायर ने जुल्म;
तड़पा जलियाँ वाला बाग !

देशबन्धु अरु प्रिय अब्बास,
चले देखने धरा उदास,
गाँधी मोतीलाल समेत;
चले सत्य का ले विश्वास !

भरा जवारह्—मन में रोष,
किन्तु रखा संयम अरु होश,
प्रथक पहुंच कर अमृतसर में;
देखा, लुटे—मरे निर्दोष !

इस धरती पर ऐसा पाप ?
काँप उठे खुद लख संताप,
रक्त रंजिता धरती पर थे;
डायर पशु के कार्य कलाप !

देखा परखा करके गोर,
मृत्यु नाचती थी हर ओर,
काँप उठे थे रोंएँ सहसा;
सुना सहम कर जब वह दौर !

यह जघन्य अपराध देखकर

ऐसा था वह वक्त, सख्त हो गया लहू था दुश्मन की !
थे सैनिक कानून मगर खतरा था सबको जीवन का !!
जगह–जगह, जन- आँदोलन की नई फेरियाँ होती थीं !
वे कौमें थी उठी जाग जो पड़ कर सुख से सोती थीं !!

सत्याग्रह का चला दौर तब दहलाने को शासन को !
एक बार फिर दोहराया था, जनता ने सत्तावन को !!
दिल्ली अरु गुजरात प्रान्त में–चलीं गोलियाँ जनता पर !
सुन–सुन कर खुश हुआ अधिक था, जालिम कर्नल ओं, डायर !!

थे कतिपय नेता भारत के–जो आगे बढ़ पंजाब गये !
अरु गोरों का हर उन्मादी वे वहाँ तोड़ने ख्वाब गये !!
इस खूनी होली से शापित –जो भी थे परिवार हुये ?
उन्हें मदद पहुंचाने के थे–निर्मित नव आधार हुये !!

मदद चाहिये थी दुखियों को जैसी जो भी जहाँ–तहाँ !
मालवीय अरु श्रद्धानंद जी, तत्परता से जुटे वहाँ !!
पंडित मोतीलाल द्रवित थे, जब ताँडव–परिणाम लखे !
अरु उदारवादी तुलना में, अंग्रेजों के काम लखे !!

गाँधी जी की पीड़ाओं का–अन्त न था मन रोता था !
देश बन्धु अति दुखी हुये पर्याप्त न साधन होता था !!
किन्तु जवाहर किंचित भी उत्साह न खोने देते थे !
यद्यपि–खूनी दृश्य भयंकर उन्हें न सोने देते थे !!

तंग गली वह घिरी जगह थी–तीनों ओर कतार लिये !
द्रवित हुये नेहरू लख कर के हाय ! सहस्रों मार दिये !!
यह जघन्य अपराध देखकर–भीगी आँख जवाहर की !
साँस, रुकी की रुकी रह गई-तड़प उठी रग नाहर की !!

कैसे, कहाँ पड़े शव थे–
दीवार गवाही देती थी !
गोली के द्वारा छिद्रों की–
भरमार गवाही देती थी !!

जब सिसक – सिसक कर–
महिलायें उस दिन का हाल सुनाती थी !
पत्थर का दिल भी हिलता था–
सहमी धरती थर्राती थी !!

थे लूटे सुख अबलाओं के–
दुधमुंहे बिना माँ बाप पड़े !
सुन कर थे नेहरू सोच रहे–
क्यों सहने हा ! ये श्राप पड़े ??

थी स्वयं समीक्षा कर देखी–
रख मन में पूर्ण अतीत लिया !
हर घायल जन, आहत का मन–
था बढ़ नेहरू ने जीत लिया !!

हा ! कितना क्रूर भयानक था–
जो काल चक्र घिर आया था !
हर चित्र हृदय में आँक लिया–
उस नर पिशाच की छाया का !!

थी मन पर गहरी छाप पड़ी–
जुल्मों की उन अंग्रेजों के !
जो लंदन में बैठे–बैठे–
थे जुगत जुड़ाते मेजों के !!

कहते हैं खुद को सभ्य अरे ?
ये डायर जैसे क्रूर बड़े !
हैं खुली असलियत आज यहाँ–
थे सभ्यताओं से दूर बड़े !!

जिनके त्याग अमर हैं :

योग्य पिता, संतान-सौख्य के प्रति नित आकर्षित !
लगे सोचने जीवन-विधि सब रहनी है मर्यादित !!
साथ-साथ ही सिंधु सरीखा, मोतीलाल–हृदय था !
संघर्षों की उस वेला में आया कठिन समय था !!

घर में पुत्र-पुत्रियाँ सब की अपनी जीवन विधि निज !
सबके मन में खिलते रहते अरमानों के सरसिज !!
वह युग का संक्रमण काल था, प्रश्न अहम थे आगे !
कैसे बदलें परम्पराएँ—सजें चाव के धागे !!

बार-बार युग बोध लिये था, अनुभव–चित्र–अनोखा !
और सत्य से हट कर चलना—देना खुद को धोखा !!
पिता चाहते थे कि जवाहर, अभी नहीं पथ मोड़ें !
एक पुत्र वह भी सहसा ही—चालित पद्धति छोड़ें ??

सत्याग्रह का खुला अर्थ था, पग-पग कष्ट उठाना !
जब-जब भी आ पड़े जरूरत—बढ़ कर कारा जाना !!
है इतना आसान कहाँ ? सुख-वैभव घर-दर तजना !
पिता चाहते रहे पुत्र को—संयम साध बरजना !!

पला, ढला जो आन-बान से—
रखा शान से जीवन !
कैसे सह पायेगा सहसा—
कारा के उत्पीड़न !!

पुत्र मोह था हावी मन पर, जो स्वाभाविक क्रम था !
किन्तु दिखा यह कालान्तर में—मन का कोरा भ्रम था !!
गाँधी जी से स्वयं मंत्रणा की—प्रयाग जब आए !
"पला जवाहर अरमानों से—कैसे कष्ठ उठाए" !!

दयानन्द—शंकर चार्य

स्वार्थ त्याग बन सके सहिष्णु नर, मन उदारता भरकर !
ऋद्धि, सिद्धि सब मोहित हो उठती हैं उसके स्वर पर !!
एक नहीं अनगिन चरित्र हैं जिनके त्याग अमर हैं !
दयानन्द, शंकराचार्य के गुँजित अब तक स्वर हैं !!

त्याग अमर गुरु अर्जुन का है, निज इतिहास गवाह है !
जिसमें अंकित वलिदानों का—क्रमवत एक प्रवाह है !!
गोविन्द सिंह की त्याग भावना—स्वर्ण अक्षर में अंकित !
देश-धर्म, कर्त्तव्यों के प्रति शोभित, अरु अनुरंजित !!

इन सबकी अनुभूति त्यागमय, संकल्पों की रेखा !
विश्व वंद्य बापू गाँधी में, जिसको जग ने देखा !!
यही त्याग जोहंसबर्ग, नैटाल प्रान्त में चमका !
झण्डा ऊँचा हुआ विश्व में गाँधी जी के दमका !!

जीवन का ऐश्वर्य त्याग कर, जन-सेवा अपनाई !
साबरमती आश्रम में जा कुटिया एक बनाई !!
इसी त्याग के हाव-भाव से दृढ़तर करके मन को !
नई दिशा से रहे सजाते वे आनन्द भवन को !!

कहा—"जवाहर, पिता न दुख से कातर होकर डोलें !
ऐसा करो कि जैसा जो कुछ, तुम से हित कर बोलें" !!
किन्तु समय के अन्तराल ने— रखी जवाहर-मन की !
बदला रुख था स्वयं पिता का हालत देख वतन की !!

जलियाँ वाला बाग कांड ने— हिला दिया था मन को !
उठे स्वयं भी वे झटके से— देने दिशा वतन को !!
त्याग राग से हुये प्रभावित— मोतीलाल—जवाहर !
किया स्वदेशी, तन-मन भूषण, दृढ़ निश्चय अपना कर !!

खादी की सादी गरिमा से—सन् १६२०

जहाँ, पूर्ण ऐश्वर्य युक्त, जीवन का श्रेष्ठ उजाला !
जिसने राजों, महाराजों तक को अचरज में डाला !!
वहाँ बदलती पद्धतियाँ थी, सारे ही जीवन की !
परम सादगी थी विशेषता, अब आनन्द भवन की !!

रहन-सहन अंग्रेजो जिसका जग में नाम बड़ा था !
सरल, स्वदेशीपन से अब तक कैसा रे ? पिछड़ा था !!
कदम-कदम पर प्रहरी, गहरी लख छाया साधन की !
लोग मिसाल दिया करते थे नित आनन्द भवन की !!

आज वही आनन्द भवन था, गांधी युग का द्योतक !
स्वयं जवाहर बने हुये थे नव विधि के संयोजक !!
जो विलायती वस्तु जहाँ पर, पहले रही सुशोभित !
उसकी जगह स्वदेशी चीजें कर दो गई सुनिश्चित !!

परिवर्तन ने वहाँ खींच दी— संकल्पों की रेखा !
तड़क-भड़क अरु चमक-दमक को फिर न किसी ने देखा !!
बढ़ कर मोतीलाल स्वयं भी पथ को मोड़ चुके थे !
जिसके आदी थे शराब तक पीना छोड़ चुके थे !!

धोती, कुर्ता वह भी सादा, सादी चप्पल पग में !
थी मिसाल यह अपनेपन के परिवर्तन की जग में !!
गाँधी जी का था प्रभाव रंग जिसका बड़ा खरा था !
एक बार, जो चढ़ा, चढ़ा वह फिर न कभी उतरा था !!

अचरज हुआ सभी को लखकर— अचरज हर अफसर को !
देख रहे थे भौंचक्के से, सब परिवर्तित घर को !!
खादी की सादी गरिमा से, महिमा बढ़ी भवन की !
पड़ी छाप हर एक हृदय पर गरिमामय जीवन की !!

चर्खे का नित चक्र घूमता— काता सूत स्वयं था !
जो समझे थे कुछ का कुछ, बढ़ तोड़ा उनका भ्रम था !!
त्याग राग की मूर्ति बन गये मोतीलाल – जवाहर !
सादे ढंग से महिलाओं ने घर को रखा सजाकर !!

शक्ति सामयिक संकल्पों को

जन सेवा के हेतु समर्पित वही मनुज हो सकता !
पथ पर चल निःस्वार्थ भाव से कभी नहीं जो थकता !!
यों तो अनगिन व्यक्ति धरा पर, खा-पीकर नित तनते !!
अरु कितने हो सुबह-शाम हैं बोझ धरा का बनते !!

व्यष्टि सुखों से दूर देखते, जो कि समष्टि सुखों को !
अरु महत्व देते किंचित भी अपने नहीं दुखों को !!
ऐसे मानव कम दुनिया में, देश हितार्थ जिये हैं !
जनोद्भव की बलि वेदी पर अर्पित स्वार्थ किये हैं !!

जनाभिमुख रह कर जिसने भी पथ पर कदम बढ़ाये !
मंजिल ने उसकी राहों में झुक कर फूल बिछाये !!
वह अनुभूति लिये चलता है हर पड़ाव की पथ पर !
प्राप्त किये श्रम-नग हैं जिसने उत्साहों को मथकर !!

शक्ति, सामयिक संकल्पों की भर जाती है प्रण में !
कष्ट नष्ट कर देती दृढ़ता और लगन द्रुत क्षण में !!
बनता है इतिहास उसी के भव्य-भावना-स्वर से !
होता है भयभीत नहीं जो कहीं कष्ट के डर से !!

सन् १९२०—

अधरों पर थीं सदा सिसकियाँ :

नर्क समान बना रहता था, सदा कृषक का जीवन !
कसा हुआ था पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बंधन !!

कर पर कर थे लगे निरन्तर, फसलें कटीं समूचीं,
जमींदार के हाथ वसूली की रहती थी सूची,
कहीं बिक रहे बैल, कहीं पर बिकतीं गाएँ-भैंसें,
जीवन की गाड़ी गाँवों में रही घिसटती ऐसे !

अधरों पर थीं सदा सिसकियाँ आँखों में था सावन !
कसा हुआ था पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बंधन !!

ताना-बाना था हड्डी का जिस्म हरेक कृषक का,
खाने को बस मकी-बाजरा साग चने-पालक का,
बिटिया हुई सयानी तो था कर्ज चढ़ा साहू का,
ज्यों ही विदा हुई बेटी तो हाथ बढ़ा राहू का !

कभी उऋण हो सका कर्ज से नहीं बिचारा" कुंदन" !
कसा हुआ था पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बंधन !!

थे लठैत कारिन्दे प्रात: से ही धावा करते,
कई पुश्त बर्बाद हो गई ब्याजी भरते भरते,
खून पसीना बहा कृषक जो करता था तैयारी,
घर जाती ताल्लुकेदार के थीं तब फसलें सारी !

रोती रहती टूटी मड़िया, सिसका करता आँगन !
कसा हुआ था पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बंधन !!

घूमा करतीं लाल पगड़ियाँ जब-तब ग्राम-नगर में,
चीत्कार के शब्द छुपे थे ललनाओं के स्वर में,
अफसर शाही के गुर्गे नित, गढ़ते रहे मुकदमे,
ज्यों-ज्यों चढ़ती रही उम्र थी, बढ़ते रहे मुकदमे !

सफल कमाई बनी अदालत का थी हर दिन ईंधन !
कसा हुआ था पूर्ण रूप साम्राज्यवाद का बंधन !!

तब न चिंता जेल की थी—असहयोग आँदोलन :

रवि किरण सा प्रण सधा था, चेतनाएँ जागतीं थीं !
दीन जन की आस्था तब प्रेरणा नव माँगती थी !!
छा रहा था जो युगों से वह अँधेरा हट रहा था !
जाल जो मजबूरियों का था बंधा वह कट रहा था !!

जागरण के नव बिगुल का दूर तक होता असर था !
तब न चिंता जेल की थी, और मरने का न डर था !!
गाँव के मजदूर तक भी जागरण की सोचते थे !
पूर्व इससे असह्य बंधन में पड़े वे लोचते थे !!

आँकनी पड़ती तभी जन–भावना सरकार को भी !
गौर से सत्याग्रहों के देखती हथियार को थी !!
सत्य का संचार गुण था,, था नहीं भटकाव में जो !
शान्ति से नव क्रान्ति का था, रुख उभरता गाँव में जो !

राजनैतिक चेतना से हर नगर, हर गाँव जागा !
साधिकारिक भावना भर श्रेष्ठतम जन–भाव जागा !!

बंधे फसल की राखी

कृषि पर निर्भर जन जीवन है, कृषि पर निर्भर पाखी,
सहे कष्ट पर गाये फिर भी जुट कबीर की साखो,
ऐसा भारत का किसान है स्वाभिमान स्वर चेतन;
हर्ष न मिलता, किन्तु वर्ष भर बन्धे फसल की राखी !

आँसू पीकर, गम खा–खा कर काटा करता जीवन,
डिगा न पाया कर्तव्यों से इसको कोई प्रलोभन,
लाख दिखाये लालच थे अंग्रेजों के गुर्गा ने,
किन्तु कलंकित दिया न होने कर्तव्यों का आंगन !

धरती के प्यारे पुत्रों की :

बढ़ रही विजय की साध लिये,
टोली थी वीर जवानों की,
धरती के प्यारे पुत्रों की,
मजदूरों और किसानों की !

आँखों में सपने स्वत्वों के,
हाथों में बल था वीरों का,
दृढ़ता का मन में प्रचुर भाव,
संबल था युग—रणधीरों का !

अब और ज्यादती सहन नहीं,
युग देख चुके बर्बादी का,
चल दिये हाथ में लेकर के,
झंडा थे. सब आजादी का !

जय गाँधी और जवाहर की,
उत्साह सहित उच्चार रहे,
नभ चुँबी द्रुत तर नारों से,
अंग्रेजों को धिक्कार रहे !

सदियो के बंधन काटेंग,
वह घड़ी निकट अब आनी है,
बढ़ चलो, उठो रे, भारत माँ,
तुम सबको आज बुलाती है !

भारत की धरती निखर उठे,
बढ़ चलो मंजिलें टेर रहीं,
अब लेने को अधिकारों को,
करनी है किंचित देर नहीं !

उठ चले सहस्रों पग सहसा,
जिस ओर चरण थे गाँधी के,
दिल में उत्साह जवाहर का,
आँखों में प्रण थे गाँधी के !

अब मेटेंगे सदियों के दुख,
कर देंगे बन्द सलामी को,
अब और नहीं सह सकते हैं,
किंचित भी यहाँ गुलामी को !

बढ़ते थे कदम जवाहर के :

नव चुम्बक जैसी शक्ति लिये बढ़ते थे कदम जवाहर के !
थे ग्राम डगर पर दल के दल कुछ भीतर के कुछ बाहर के !!
चल पड़े साथ में भोजन को बस केवल चना, चबेना था !
हर एक ज्यादती का बढ़ कर प्रतिकार शत्रु से लेना था !!

गर्मी का मौसम तीव्र वार लूओं के तन पर झेले थे !
गोरा रंग काला पड़ता था, कपड़े भी होते मैले थे !!
थी कहीं साइकिल की सुविधा, दुविधा पैदल चल बाँटी थी !
अरु दूर गाँव में अंधियारे के साथ रात भी काटी थी !!

गाड़ी को छोड़ दिया जाता, कुछ दूर किनारे डगरों के !
गाँवों के दौरे किये बहुत आराम भूलकर नगरों के !!
कीचड़ से सनते हाथ पाँव, पर किंचित ग्लानि न होती थी !
उन दिनों जवाहर के तन पर, कुर्ता, टोपी अरु धोती थी !!

जो रहा सदा आराम तलब, सुविधा से जीवन काटा हो !
आँखों में जिसकी चित्र सरिस, युरोप का सैर सपाटा हो !!
उसने बदला खुद को इतना, आता उनको विश्वास न था !
जिनको कि वीर जवाहर के कर्मठ पन का अहसास न था !!

थे दहल उठे सत्ताधारी, खलबली मची हर दफ्तर में !
हर बंगले, में हर क्लब में अरु हर जमींदार के भी घर में !!
इसलिये विचारा शासन ने कुछ नई इनायत देने को !
कुछ पाने को हमदर्दी या कृषि कार्य-रियायत देने को !!

चल रहे मुकदमे ढेरों थे आपस में झगड़े बढ़ते से !
गाँवों की अनपढ़ जनता पर हर दोष पहरुवे मढ़ने थे !!
पंचायत विधि फिर शुरू हुई, थे गाँवों को अधिकार दिये !
अरु न्याय पुरातन पद्धति के थे शासन ने स्वीकार किये !!

कुछ और नये सम्मान जनक थे जीवन के अधिकार दिये !
अरु जमींदार की बर्बरता के कुछ थे बोझ उतार दिये !!
जो जोतेगा वह मालिक हो, जो बोएगा वह काटेगा !
अब साहूकार खलिहानों से जाकर के जिंस न बाँटेगा !!

यह था प्रभाव उस जनता का जो बढ़ी एकता के स्वर में !
ले नई प्रेरणा नेहरू से ध्वज उठा लिया था निज कर में !!
पर यह तो था पर्याप्त नहीं था ध्यान लगा अन्यत्र रहा !
अभियान छिड़ा आजादी का मन में स्वराज्य का मंत्र रहा !!

हिन्दू-मुस्लिम एक हो गये सन् १६१६-१६२०

ऊब रहा था सारा भारत-
नित बन्धनमय जीवन से !
नई चेतना प्राप्त हो गई-
गाँधी के आन्दोलन से !!

एक ओर गाँधी ने बाँधी-
थी जनता को निज स्वर मे !
और दूसरी ओर प्रभावित-
जन-बल हुआ जवाहर से !!

तड़प रही जो मानवता थी-
बंधी दासता—बंधन में !
उसे चाहिये आजादी अब-
अपने प्यारे जीवन में !!

जो व्यापारी देख चुके थे–
महायुद्ध के प्रतिफल को !
भ्रमित कर रहे थे बातों से–
अपनी अक्सर जन-बल को ! !

चूंकि मिले उद्योग उन्हें थे–
सुविधा भोगी जी भर कर !
जबकि कृषक, मजदूर काटता–
दिन था अपने मर-मर कर ! !

गौरवान्वित हुये बहुत से–
व्यापारी जब लाभ मिला !
ऐसा लगता था कि उन्होंने–
जीत लिया हो एक किला ! !

इससे बढ़ती थी बेचैनी–
था परिवर्तन हालत में !
रुचि थी बढ़ी मुसलमानों की–
भी तो त्वरित खिलाफत में ! !

तुर्कीस्तानी हमदर्दी को–
जन-आन्दोलन बढ़ता था !
हर कोई आगे बढ़-बढ़ कर–
अखबारों को पढ़ता था ! !

अली बन्धु थे नेता उनके–
स्वतन्त्रता मतवाले थे !
अमनबाई ने बड़े चाव से–
ये दो बेटे पाले थे !!

सौंप दिये खिदमत को दोनों–
बस आजादी प्यारी थी !
सुख की ड्योढ़ी त्याग–
दुखों के स्वागत की तैयारी थी !!

घबराई थी सरकार देखकर–
इस बढ़ते आन्दोलन को !
तीव्र लहर में बदल दिया था–
इसने तब जन-जीवन को !!

हिन्दू-मुस्लिम एक हो गये–
कुछ करके दिखलाने को !
असहयोग के आन्दोलन में–
एक रूपता लाने को !!

अली बन्धुओं के भाषण से–
नई चेतना जगती थी !
आजादी की बात सभी को–
मिलकर अच्छी लगती थी !!

यद्यपि मुस्लिम लीग मंच पर–
आन्दोलन के आती थी !
किन्तु स्वयं की स्वार्थवादिता–
हर पग पर दिखलाती थी !!

अमनबाई की ललकारों से–
अंग्रेजी गढ़ दहल गये !
देश भक्त युवकों के दल सब–
त्याग हेतु थे मचल गये !!

गाँधी के स्वर में तब स्वर था–
मिला खिलाफत—वाणी का !
असहयोग की ओर मुड़ गया–
ध्यान यहाँ हर प्राणी का !!

निम्नाँकित ये अमर पंक्तियाँ–
थीं तारीखी राग बनी !
बलिदानों की प्रबल भावना–
उस युग की थी आग बनी !!

"जान बेटा खिलाफत में दे दो !
कहती अम्मा, मौहम्मद अली की !!"

अंग्रेजों की पोल खोल दो :

हर प्रकार की प्रखर चेतना—
खेल गई नव-जीवन में !
असहयोग आन्दोलन पर थी—
मुहर लगी सम्मेलन में !!

वह युग था जब किया समर्पित—
सब कुछ हँस कर अपनों ने !
नई सुबह के साथ स्वत्व की—
ली थी करवट सपनों ने !!

जुल्मों के अध्याय निरन्तर—
किये उजागर जनता ने !
अंग्रेजों की पोल खोल दी थी—
जा-जाकर जनता ने !!

नित्य नये परिवर्तन देखे तब भारत की धरती ने !
आतंकित कर रखा देश को था सेना की भरती ने !!
महायुद्ध की भेंट चढ़ाए कितने ही थे हिन्दी वीर !
कुछ जाते थे इस कारण, शायद पलटेगी तकदीर !!

लालच देते थे अधिकारी—
फिर कर नगर-नगर अरु गाँव !
"भरती होकर सुख पाओगे"—
पैदा करते थे नव चाव !!

साथ-साथ ही निर्धनता का—
खूब उड़ाते रहे मजाक !
"सेना में हैं ठाठ निराले—
यहाँ मुकद्दर में है खाक" !!

सूट-बूट का लालच देकर, करते नित्य प्रभावित थे !
सिक्ख, डोगरा अरु क्षत्री सब हो जाते आकर्षित थे !!
और उधर नैपाली गुरखा भरती को लालायित थे !
नई चाल के हथकण्डों में— सेना के छल रोथित थे !!

इस प्रकार कर सुदृढ़ लिये थे, गढ़ अपने अंग्रेजों ने !
हर प्रकार साकार किये थे निज सपने अंग्रेजों ने !!
विश्व युद्ध में विजयी होकर गोरे नित बौराए थे !
जो वादे थे किये हिन्द से— सारे ही झुठलाए थे !!

अविश्वास की लहर-लहर ने गाँव-गाँव झकझोर दिये !
कतिपय सैनिक आकर्षित थे असहयोग की ओर किये !!

जिसकी परिणति का नया रूप—सन् १९२१-२२

था जाग रहा सोया भारत अरु छोड़ सका वह लगन न था !
जिसकी परिणति का नया रूप, लंदन शाही को सहन न था !!
देखा था रूप खिलाफत का, आफत का हर दिन दौर चला !
लख शीर्ष नागपुर अधिवेशन नित सत्याग्रह कुछ और चला !!

था सोच रहा साम्राज्वाद दिन आये प्यारे, प्यारे थे !
सत्रह नवम्बर इक्कीस को तब प्रिंस आफ वेल्स पधारे थे !!
मंतव्य रहा उनका, भारत लंदन की धुन स्वीकार करे !
निष्कर्ष निकाले जो शासन, वह झुक करके सत्कार करे !!

पर कांग्रेस ने बहिष्कार कर दिया वेल्स के स्वागत का !
यह चाल गुलामी की ही है हर नेता का यह अभिमत था !!

था फौजों में भी असंतोष—
लड़ करके धोखा खाया था !
शासन ने रुख दुःशासन का—
हर एक तरह दिखलाया था !!

अली बन्धु उगलते आग रहे–
लंदन की तह तक आँच गई !
खुफिया के द्वारा जम करके–
करवाई फिर से जाँच नई !!

चल पड़ा अवज्ञा दौर तीव्र, बल मिला तिलक के भाषण को !
थे हिन्दू मुस्लिम वचनबद्ध, बढ़ रोज उखाड़ें शासन को !!
था किया तिलक को गिरफ्तार कारा में जाकर डाल दिया !
अलीबन्धु पकड़ में आये थे, फिर बन्द जवाहर लाल किया !!

घेरे में मोतीलाल लिये कारा के अन्दर डाल दिया !
फिर एक मुकदमा कायम था अंग्रेजों ने तत्काल किया !!
थी राजद्रोह की संज्ञा दी, अरु नाटक किया मुकदमे का !
छः माह कैद की सजा मिली अरु दाँव गढ़ा जुर्माने का !!

जुर्माना किसका, क्यों देते कारा का वृत स्वीकार रहा !
तब पिता, पुत्र दोनों का मन दुख सहने को तैयार रहा !!

मच गया तहलका भारत में–
जनता के वीर जवान चले !
करने को रोष प्रकट अपना–
दल बल के साथ किसान चले !!

बलिदान भावना स्वर में :

जब देख लिया था रौद्र रूप, भारत में नित आन्दोलन का !
था विश्व चकित हो गया स्वयं अरु तख्त हिल गयी लंदन का !!
जेलों में पहुंचे तीस हजार के लगभग नर अरु नारी थे !
ये धूमकेतु से जनता के पड़ रहे शत्रु को भारी थे !!

हो आन गर्व से जीने की था गाँधी का संदेश यही !
बलिदान भावना के स्वर में था मांग रहा तब देश यही !!
थे गिरफ्तार अब्दुल कलाम, नव रंग लिये आजादी का !
अब सहन नहीं था किंचित भी भारत में क्षण बर्बादी का !!

मिलता था किसको न्याय यहाँ, नाटक सा खेला जाता था !
घेरे में सत्याग्रहियों को पशुओं सा ठेला जाता था !!
पर *देश हेतु बलिदानों में विश्वास यहाँ पर जिनको था !
डंडे, लाठी अरु गोली का डर रहा न किंचित उनको था !!

खबरों का तांता समाचार पत्रों में प्रतिदिन रहता था !
थी मुश्किल उस संपादक की जो सत्य—सनातन कहता था !!
प्रतिबन्धों की भरमार लगी हर एक डगर पर रहती थी !
अरु क्रूर दृष्टि बिफराई सी हर एक नगर पर रहती थी !!

जब—जब गाँधी के चेले बढ़ जय इनकलाब की बोले थे !
तब—तब खुफिया के चालबाज कबरें खबरों की खोले थे !!

गुजरात उठा बल्लभ—स्वर में–
नर वीर बिहारी जाग गये !
जब लखा, तना है महाराष्ट्र–
थे गोरे पानी माँग गये !!

थे उठे बढ़े राजेन बाबू–
पुरोषत्तम स्वर गंभीर हुआ !
भारत का बच्चा—बच्चा था–
कारा के हेतु अधीर हुआ !!

चल दिया वीर ले लाठी, काठो शौर्य विभासी सजती थी !
त्यागमयी दुल्हिन की वापस जाते पायल बजती थी !!
आँखों में था रोष, जोश रग-रग में उसकी छाया था !
वीरोचित अधिकार भाव का नशा बहुत गहराया था !!

चन्द क्षणों में जमींदार के-
दरवाजे को तोड़ दिया !
जो प्रहरी था खड़ा वहाँ पर
घायल करके छोड़ दिया !!

जमींदार को ललकारा था, पकड़ा उसके आँगन से !
"बोलो क्यों तुम खेल रहे हो, ग्रामीणों के जीवन से !!
घिघियाया वह देख सुनर को, उठा चिरौरी करने को !
बोला वीर—"उन्हें छुड़वाओ, या तत्पर हो मरने को" !!

अगले दिन तब साँझ ढले तक— आये वे ग्रामीण सभी !
जिनकी मुश्कें पहले दिन ही क्रूर पुलिस ने थी जकड़ी !!
इससे पहले मने खुशी कुछ, रख धोखे में नाहर को !
जमींदार, कारिन्दे दोनों, चले साथ ले बाहर को !!

सुना, पुलिस थी उसे पकड़कर, त्वरित ले गई थाने को !
मारा-तोड़ा, बन्द कर दिया हवालात मर्दाने को !!
किसका, कैसा, कहाँ मुकदमा— युग था अत्याचारी का !
चन्द महीनों बाद सूत्र पाया था— क्रान्ति पुजारी था !!

तब उसने कहलाया अपनी दुल्हिन से सन्देश नया !
"तभी मिलेंगे जब उभरेगा अपना प्यारा देश नया !!
किंचित भी चिंतित मत होना, निश्चय वे दिन आएँगे !
जब होंगे आजाद मिलन का हम त्यौहार मनाएँगे !!

चर्खा संघ में शामिल होकर, वह बंजारन जेल गई !
कई बार तो हुआ कि ऐसा— वह प्राणों पर खेल गई !!

"ऐसा त्याग कहाँ अब बेटा !
सब कुर्सी के भूखे हैं !!
इसलिये तो राष्ट्र भक्ति के–
स्रोत यहां पर सूखे हैं" !!

सन् १६२१ में नव्य चेतना :

जो पहले किलकारी से गुँजित था होता हर पल क्षण !
नव्य चेतना इन्दिरा में सरसाता वह आनन्द भवन !!
राजनीति का पूर्ण केन्द्र था— चहल-पहल नित रहती थी !
किसी-किसी से इन्दु बालिका भी निज मन की कहती थी !!

अन्य नहीं था शिशु कोई भी, साथ खेलने की खातिर !
केवल अपनी गुड़ियों से ही रही खेल में वह माहिर !!
प्यार बड़ों का मिला बहुत था, सब ही स्नेह लुटाते थे !
बड़े चाव से हुलस गोद म दादा उसे उठाते थे !!

और जवाहर पापू तो बस— बेटा ही नित कहते थे !
देख-देखकर चुहलबाजियाँ नित मुस्काते रहते थे !!
एक बार अधिवेशन में भी गई साथ थी पापू के !
भाव बालिका के मन में तब तीव्र और जिज्ञासू थे !!

टुकर-टुकर थी देख रही वह इधर-उधर तब मेला सा !
चहल-पहल था अविकल मन को भला लगा वह खेला सा !!
कभी-कभी गम्भीर भाव से सुनती थी उस भाषण को !
जो कि हिलाता रहा मंच से था अंग्रेजी शासन को !!

अरु जब बोले पापू उसके बड़ा मजा तब आया था !
लोगों के संग पीट तालियाँ मन आनन्द उठाया था !!
था प्रभाव पड़ गया हृदय पर गाँधी के उद्बोधन का !
प्रगति पंथ की ओर अग्रसर प्रथम चरण था जीवन का !!

पहली बार पुलिस दल देखा :

पहली बार पुलिस दल देखा,
तो मस्तक पर उभरी रेखा,

स्वाभिमान–गुण गौरव की,
तीव्र चेष्टा शैशव की,

गिरफ्तार जब हुये जवाहर,
आई वह कमरे से बाहर,

क्रोध दिखाया पूरा मन का,
गर्व बढ़ा आनन्द भवन का,

दादा ने बढ़ शान्त कराया,
गोदी में था हुलस उठाया,

रही क्रोध से आँखें जलती,
काश साथ में वह भी चलती,

और पुलिस को मजा चखाती,
अपनी सी करके दिखलाती !

गाँधी का जादू था छाया :

राजनीति द्रुत गति से विकसित हुई देश के अन्दर !
जिसमें थे सम्मिलित वकालत पेशे के भी कई धुरंधर !!

अग्रगण्य हिन्दू नेता थे–
तन्मय और लगन से !
था जो कुछ भी करना उनको–
करते थे तन-मन-धन से !!

अरु मुस्लिम नेता भी बढ़-चढ़ कर-
भाग स्वयं ही लेते थे !
असहयोग आन्दोलन को–
सहयोग निरन्तर देते थे !!

थी दृष्टि जहाँ तक गाँधी की–
मिटने को तत्पर रहते थे !
था नहीं कहीं भटकाव तनिक–
वह करते थे जो कहते थे !!

गोरों के व्यापारिक हित कर गये खोखला भारत को !
थी इसी तथ्य ने ताकत दी, गाँधी स्वर और खिलाफत को !!
मिश्रित होने लगी सभ्यता अरु संस्कृति भी आहत थी !
मन्दिर-मस्जिद, गुरुद्वारों की दशा हुई मर्माहत थी !!

थी अर्थव्यवस्था व्यथापूर्ण, उपलब्ध न कपड़े तन पर थे !
अंग्रेज कुण्डली मार-मार बैठे भारत के धन पर थे !!
क्लाइव जैसों ने भर खच्चर भेज दिये जब लन्दन को !
क्या बचता हिन्दी जनता के तन को, जीवन साधन को !!

असहयोग के समय अभय हो–
चेत गई थी जनता !
और तिरंगा चला उभरता–
उच्च गगन तक तनता !!

प्रिंस ऑफ वेल्स यहाँ आए जब–
था विरोध तब भारी !
चमत्कार कुछ ला न सकी थी–
गोरों की तैयारी !!

था विरोध हर एक जगह पर–
अरु आक्रोश प्रबल था !
जन-नेताओं को लेकिन तब–
मिला आत्मिक बल था !!

थी न किंचित स्वार्थ की पुट

भावना थी उच्च मन में—त्याग के अनुराग की !
बढ़ रही थी नित प्रतिष्ठा देश हित में त्याग की !!
तज दिया ऐश्वर्ययुत जीवन वतन के वास्ते !
नित्य झेलीं आपदायें थीं चमन के वास्ते !!

सिर्फ खादी, वह भी सादी, नित्य शोभा,—वस्त्र थी !
साधना तब जिन्दगी का एक मौलिक मंत्र थी !!
कामना करती विजय की सादगी थी देश में !
गाँधीवादी रह रहे थे, तपसियों के वेश में !!

था अजब मंतव्य पावन, क्रान्ति की उद्भावना !
जन समूहों से हुई थीं प्राप्त नित सद्-भावना !!
था स्वदेशी मन, स्वदेशी आचरण की ज्योति थी !
आत्म-गौरव से विकसती नव किरण की ज्योति थी !!

थी न किंचित स्वार्थ की पुट कर्म-पथ-व्यवहार में !
देश सेवा थी प्रवर विश्वास के आधार में !!
पूर्णता मन में प्रखर थी बौद्धिक परिवेश था !
आचरण के दृश्य लखकर, नित्य गर्वित देश था !!

प्राप्तव्यों की तरफ जाता न उनका ध्यान था !
जिन्दगी से भी अधिक प्यारा जिन्हें सम्मान था !!
देश की खातिर लगाते बाजियाँ थे प्राण की !
झेलते थे कष्ट, अरु थी चेष्टा कल्याण की !!

भाव जिसमें देश–हित की कामना के थे भरे !
और चिन्तन था यही कि देश की खातिर मरें !!
त्याग तन सुख, और मन सुख—मार्ग था सन्यास का !
बढ़ चुका था मर्त्तबा उस दौर में उपवास का !!

थी उभरती हर कदम पर भावना बलिदान की !
देखने के योग्य थी तस्वीर हिन्दुस्तान की !!
त्याग देखा निर्धनों तक का भी उस युग में अहा !
था लुटा सब कुछ दिया पर अश्रु तक भी क्या बहा ??

नारियों का त्याग भी कुछ कम नहीं था देश में !
हाथ में ले ध्वज बढ़ी थीं देवियों के वेश में !!
तज दिये धन–धाम–वैभव, चल पड़ी थीं टोलियाँ !
साथ पुरुषों के सही निज वक्ष पर थी गोलियाँ !!

भूल रहे हैं लोग कि–
आजादी यह कैसे आई है !
इसको पाने हेतु यहाँ–
कितनों ने जान गवाँई है !!

कितनी उजड़ी माँगें अरु–
कोखें कितनी बर्बाद हुई हैं !
किसे याद है भारत माँ ने–
क्या-क्या विपद उठाई है !!

बने महल पर सब हैं हावी–
झगड़े होते जमकर हैं !
प्राप्तत्य की ओर एक से–
एक यहाँ पर बढ़ कर हैं !!

लेकिन उनके प्रति यह कैसी–
हाय ! उदासी जीवन में !
दिया स्वयं निज रक्त, जिन्होंने–
बने नींव के पत्थर हैं !!

फरवरी सन् १९२२—चौराचौरी काण्ड (गोरखपुर)

आक्रोशों की लहर प्रबल थी, परिचित था ब्रह्माण्ड हुआ !
आवेशों के उद्वेगों से चौरा–चौरी काण्ड हुआ !!
पिटती थी साधारण जनता ग्राम—डगर खलिहानों में !
इससे गहरा रोष उभर कर आया था इंसानों में !!

थी पुलिस चलाती दमन चक्र–
अरु वक्र दृष्टि थी थानों की !
उस अहंकार के तांडव में–
क्या कीमत थी इंसानों की !!

आतंक पुलिस का ऐसा था–
कि साहस अर्न्तध्यान हुआ !
गाँवों में संध्या होते ही–
लगता था सब वीरान हुआ !!

जाड़ों के दिन थे भयाक्रान्त–
फिर भी अलाव ना जलते थे !
इस ओर नहीं, उस ओर चलो–
ग्रामीण प्रवास बदलते थे !!

भर चुका सब्र का प्याला जब सहने की सीमा पार हुई !
था बाँध धैर्य का टूट गया, अरु युग की नई पुकार हुई !!
थी उमड़ी लहरें हिंसा की, संयम का बंधन खोल दिया !
करने को चुकता हर हिसाब थाने पर धावा बोल दिया !!

ज्यों—ज्यों था बढ़ता वह जुल्म–
खुलकर जय बोली जाती थी !
मन प्राण पुलिस के जलते थे–
बदले में गोली आती थी !!

थे कृषक और मजदूर साथ–
अरु स्वयं सेवकों के दल थे !
कुछ दूर खड़े सत्याग्रह के–
सविनय आन्दोलन के पल थे !!

धमकाया, डाँटा, तितर-बितर-
करने को बढ़े सिपाही थे !
खूँखार बने बन्दूकों से-
वे करते मन की चाही थे !!

थी सहसा गोली चली, छली-
जनता की टोली टोली थी !
मच गया शोर, हर ओर छोर-
तड़, तड़ाक, तड़ातड़ गोली थी !!

कुछ गिरे पिटे मर्माहत थे-
जिस ओर बढ़े झठ घीयल थे !
कुछ शान्ति—शान्ति चिल्लाते थे-
जो सीधेपन के कायल थे !!

यह देख हुये ग्रामीण क्षुब्ध-
हाथों में शस्त्र संभाल लिये !
चढ़ चली भीड़ थी थाने पर-
मन में प्रतिशोध-उबाल लिये !!

खलबली मची तब थाने में-
उपलब्ध पुलिस घबराई थी !
उस वक्त कहीं भी छुपने की-
तरकीब न चलने पाई थी !!

जो जहाँ मिला था क्रांतिदास—
उसको पकड़ा अरु मार दिया !
थे लिये छीन सब शस्त्र और—
अनहोनी पार उतार दिया !!

थी हवा चली बर्बादी की, बर्बाद लहू था भारत का !
अपनों के हाथों से ही तो, अपनों का बेड़ा गारत था !!
प्रतिशोध भावना खुले आम, तत्परता से थी खेल गई !
भर-भर कर टोली गाँवों से, ग्रामीणों की थी जेल गई !!

निश्चय ही हिंसक पग था, पर—
दायित्व वहाँ ग्रामीणों का !
उभरा था खाकर प्रबल चोट—
कृतित्व वहाँ ग्रामीणों का !!

पर गाँधी जी की नीति न थी—
हिंसा से कोई काम बने !
हिंसक बन उभरे क्रोध भाव—
अरु उनका लोग गुलाम बनें !!

इस कारण किंचित दुखी हुये—
क्रम असहयोग का बंद किया !
रुक गये कदम थे जनता के—
जब निर्णय यह स्वच्छंद किया !!

था कष्ट हुआ उन लोगों को–
जो उस प्रयाण पर हावी थे !
थे क्षेत्र सभी स्तंभित से–
गंगा यमुना अरु रावी के !!

था मौलिक चिंतन भी क्रम को–
गति में परिवर्तन माँग रहा !
अरु विश्व समूचा युग–युग से–
लखता लंदन का स्वाँग रहा !!

थी चौरा–चौरी की तह में–
शासन ने चल दी चाल नई !
हर ओर ज़ुल्म का तांडव था–
हो सकी न थी हड़ताल नई !!

गाँधी ने मार्ग अहिंसा पर–
था अपना पूरा जोर दिया !
"हाँ, क्षमा वीर का भूषण है"–
बस पकड़ नम्रता छोर लिया !!

प्रतिकार न हो अब इस प्रकार–
आन्दोलन का क्रम शान्त रहे !
सन्नद्ध अहिंसा के व्रत से–
जुड़ करके अब हर प्रान्त रहे !!

बदली थी नीति, प्रवाह रुका–
थे क्षुब्ध हुये जो आगे थे !
कुछ कायर ऐसे भी थे जो–
यह ढील देखकर भागे थे !!

इस असहयोग के ही क्रम में,
गाँधी जी कारा भेज दिये !
कुछ अन्तर से थे जवाहर लाल
भी दोबारा भेज दिये !!

शासन ने सोचा डण्डे से–
जन-बल को रोका जायेगा !
अरु पकड़-धकड़ कर भट्टी में–
जेलों की झोंका जायेगा !!

पर इससे तो मौलिकता बढ़ गई–
क्रान्ति की हर मन में !
सर्वस्व त्याग की भावनाएं–
द्रुत हुई उजागर जीवन में !!

फिर वही किया था नाटक सा–
किसकी क्या कहां अदालत थी !
थी बात दमन के चक्रों की–
किसकी, कब कहाँ वकालत थी !!

जनता का जब आक्रोश बढ़ा–
पैदा फिर नये बवाल किये !
जब देख लिया रुख जन–मन का–
तब छोड़ जवाहर लाल दिये !!

दिसम्बर १९२३ बम्बई में कांग्रेस अधिवेशन :

बहसों का मुद्दा केवल तब–
जन–जीवन–भाव स्वराज्य रहा !
अरु रुख कोई भी निर्भीक–
अग्रिम बातों में त्याग रहा !!

बन गये जवाहर मंत्री थे–
व्यक्तित्व उभर कर आया था !
कुछ नेता दल से अलग हुये–
अरु प्रथक मार्ग अपनाया था !!

१२ जनवरी १९२४––५ फरवरी १९२४

गांधी पूना कारा में, दुख भोगे ज्वलित अवस्था में !
आँतों की गड़बड़ के कारण निर्भर थे शल्य चिकित्सा में !!
जब बढ़ी अधिक ही दुर्बलता, शासन ने रस्ता मोड़ दिया !
अरु पाँच फरवरी को गांधी जी को कारा से छोड़ दिया !!

जितना बोते लहू पसीना–सन् १६२४

जिनके दम से मिट्टी सोना बनती है इस देश में !
क्या विडंबना भूखे प्यासे रहें सदा वे क्लेश में !!
जितना बोते लहू पसीना, सब जाता बेकार था !
पकी हुई सारी फसलों पर शोषक का अधिकार था !!

उपनिवेश वादी सत्ता ने शै दी थी जमींदार को !
जिसने हर हालत में जमकर प्राप्त किया अधिकार को !!
भय था उसको जाग उठा यदि प्रणमय जोश किसान का !
चित्र बदल जायेगा क्षण में, सारे हिन्दुस्तान का !!

चल न सकेगा पलभर को भी राज यहाँ इग्लैंड का !
और चाटता धूल फिरेगा ताज यहाँ इंगलैंड का !!
यदि सुविधायें प्राप्त कर सके ये किसान इस देश में !
जाने क्या से क्या कर डालें-ये आकर आवेश में !!

"इनको यहीं दबा रहने दो," बड़ी घिनौनी चाल थी !
देख रही थी ये ही हरकतें दृष्टि जवाहर लाल की !!
तभी हुआ सहसा ही वतन में साम्प्रदायिक विस्फोट था !
यही क्रूर दुर्भाग्य एकता पर करता नित चौट था !!

इधर उभारा था मुस्लम को, उधर हिन्दुओं से कहा !
"वह देखो इस गली मुहल्ले में इस–उसका खून बहा" !
फिर क्या था अंग्रेजों की हर घृणित चाल थी सफल हुई !!
बने खून के ग्राहक सब अरु घृणित भावना प्रबल हुई !

नगर-नगर में यह विस्फोटक स्थिति सायं प्रातः थी !!
कहीं-कहीं तो पुलिस ठाठ से देख रही हालात थी !
दिल्ली दहली, अन्य नगर भी चीत्कार से भर गये !!
जाने कितने लोग अचानक इन दंगों में मर गये !

बीज फूट का बोया रुचि से अंग्रेजों की चाल ने !!
भाँप लिया था इस फिसाद का राज जवाहर लाल ने !
अहंकार था पलता उनका जो नित बोने स्वार्थ थे !!
नहीं दूर का रहा वास्ता उनको था परमार्थ से !

कहीं राम लीला पर झगड़ा, दंगा कब्रिस्तान पर !!
गिरी बिजलियाँ पूर्ण कलह की तब थी हिन्दुस्तान पर !
विष साम्प्रदायिकता का फैलाकर खुश होते अंग्रेज थे !!
उधर जल रहे नगर समूचे, अरु वे सजाते सेज थे !

गुर थे चले अमीरों के तब, पिसते मगर गरीब थे !!
वे आपस में टकराये थे रहते जो कि करीब थे !
जातिवाद का जहर फैलते देर न लगती थी यहाँ !!
हिंसा की हर चिंगारी चुप-चाप सुलगती थी यहाँ !

दंगों के दुष्परिणामों से

दंगों के इस रुचि प्रभाव ने दंभ भरा विध्वंसों का !
हुआ अवतरण इस धरती पर नित्य नये ही कंसों का !!
यहाँ, वहाँ पर नये राक्षक अपना जोर जमाते थे !
साम्प्रदायिक, सौहार्द्र भाव को प्रति पग डसने जाते थे !!

कितनी होती रही हानियाँ इसका क्या अनुमान रहा !
खुद को भी पहचान न पाया धोखे में इन्सान रहा !!
किया सदा गुमराह जिन्होंने, उनको अपना मित्र कहा !
संक्रमण काल में चित्र देश का पग-पग यहाँ विचित्र रहा !!

किसी नगर के गलियाँ, कूचे जब दंगों मे घिरते थे
भूखे, प्यासे और उपेक्षित बालक रोते फिरते थे !!
घोर यंत्रणा से दंगों की घर के घर बरबाद हुये !
मानव जीवन के आँगन में पैदा नव अवसाद हुये !!

कहीं कटे तन, फटे जिगर थे, सब थे लहू लुहान हुये !
खूँखार जानवर से भी बदतर हाय रे, इन्सान हुए !!
जिनकी थी यह चाल सफलता मिलो सामयिक उनको थी !
दुखी हुये वे सभी देख कर ज्ञात हकीकत जिनको थी !!

रोती थी भारत माता लख कर मरघट अरु वीरानों को !
पूछा करता था अम्बर क्या हुआ आज इन्सानों को ??
कहती थी वह सिसक, सिसक कर, इन सब में शैतान घुसा !
मानवता की इस बगिया में अति हिंसक हैवान घुसा !!

वृद्ध तनिक सोचे अरु बोले–
"देखो : बेटा ध्यान करो !
वक्त सदा कहता आया–
संकुचित भावना से उभरो !!

जब–जब दंगे हुए देश में–
तब–तब घोर विनाश हुआ !
युगों–युगों तक हाय कलंकित–
भारत का इतिहास हुआ !!

बुद्धि ठगी सामान्य मनुज की–
इन दंगों में जातीं है !
और अधिक चालाक मनुज की–
चालाकी रंग लाती है !!

देखो ? कैसे भारत माता–
तड़प–तड़प कर रोती थी !
तुम्हें बताऊँ किस प्रकार वह–
अश्रु कणों को बोती थी !!

फिर नये शगूफे छोड़े

रोती थी भारत माता—
पलकों पर तिरता गम था ?
हर ओर गुबार भ्रमों के—
तब कौन किसी से कम था ?

जिनका था राज यहाँ पर—
उनकी थी बाँछें खिलती !
पग–पग पर उन्हें सफलता;
दंगों से, ही थी मिलती !

जनता का ध्यान हटाकर—
जीवन की मौलिक धुन से !
भिड़ने को विवश किया था—
दुष्कृत्यों से अवगुण से !

अक्सर थी तोड़ी बढ़कर,
सद्भावों की चट्टानें !
अपनों को अपनेपन से—
हट कर था कहा—बेगाने !

डाली थी फूट हमेशा,
हिन्दू से मुस्लिम तोड़े !
लेकर के उन्हें बगल में,
फिर नये शगूफे छोड़े !

इसको था इधर गिराया–
उसको था उधर उठाया !
खेली थी नगर–नगर में–
अंग्रेजी धून की माया !

दंगों के कारण सारे,
निर्धारित लक्ष्य अधूरे !
जो ग्राम्य सुधार चलाये,
वे हुये नही थे पूरे !

सबसे हैं घातक दंगे,
कट जाता अपनापन है !
रुक जाते पाँव प्रगति के,
रोता दिन रात वतन है !

इस कारण इन्हें न किंचित,
होने है देना घर में !
मिल कर के दूर हटाना,
बोए जो ग़लत डगर में !

खोले अब आँखें जनता,
अरु कर्त्तव्यों को जाने !
जो तत्व यहाँ हैं हिंसक,
उन सबको अब पहचाने !

सोई शक्ति जगाकर बढ़ते :

तपती धूप तपाया करती थी सोने सी देह को !
कच्ची, पक्की डगरों पर चल दिये त्याग संदेह को !!
छूटा शीष से तीव्र पसीना जो एड़ी तक आ गया !
कभी--कभी आँखों के आगे घोर अंधेरा छा गया !!

ऊबड़-खाबड़ सी धरती पर जब-जब पड़ते पाँव थे !
चलते-चलते तलुवों तक में हो जाते कुछ घाव थे !!
गौर वर्ण था मैला होता गर्मी के परिपात से !
मन ही मन कुछ कह लेते थे नेहरु अपने आप से !!

उड़ती धूल, फूल से तन पर चन्दन बनती धूप में !
एक नया परिवर्तन होता था कंचन से रूप में !!
वह मानस जो सुबिधा भोगी पितृ चाव का लाडला !
आत्मसात करके कष्टों को कृषक जनों से जा मिला !!

भूल गया आनन्द भवन की चमक-दमक अरु शान को !
देख-देखकर ग्रामीणों के असली हिन्दुस्तान को !!
भूल गया ऊँचे लोगों की संगत और स्वभाव को !
जब से देखा सायं होते ग्रामों मध्य अलाव को !!

भूल गया शिक्षा सत्रों की आन-बान इतिहास को !
जब से मन में जमा लिया था-जन-सेवा-विश्वास को !!
भूल गया लन्दन की सड़कें-बंगले आलीशान को !
जब से देखा था मिट्टी में सने हुये इन्सान को !!

नये दौर में और नहीं कुछ भाता था अन्दाज को !
केवल समयोचित बल देना था जनता की आवाज को !
बिना कष्ट के प्राप्त नहीं सुख होते हैं संसार में !
यह अनुभूति हुई नेहरु के लेखन अरु व्यवहार में !!

व्यक्ति परक सुख अर्थ हीन हो जाता है दिन रात को !
अगर समझ ले मानव निर्धन जनता के जज्बात को !!
सोई शक्ति जगा देते हैं रुचिमय चाव अधीर के !
खुल जाते हैं बन्द द्वार भी झटके से तकदीर के !!

साहस भरता चला गाँवों की मेड़-मेड़ अरु खेत में !
जादू जैसा दृढ़ प्रभाव था नेहरू के संकेत में !!
अहसयोग आन्दोलन फिर से बढ़ा सिंधु के ज्वारसा !
लगे देखने कृषक स्वप्न थे फिर मौलिक अधिकार का !!

ग्रामीणों के संग रंग में रंगा स्वयं की चाह को !
इसी तथ्य ने बढ़ा दिया था जनता में उत्साह का !!

पं० जवाहर लाल नेहरु-इलाहाबाद म्युनिस्पैलिटी के चेयरमैन १६२३-२४

उन्नत शिक्षा और विचारों का था ऐसा संगम !
जिसमें शासकीय गुण–गौरव का भी नव क्रम !!
चेयरमैन का यह शोभित पद भार लिया था नूतन !
किया गवर्नर तक ने भी था नेहरू का अभिनन्दन !!

प्रखर योग्यता, धैर्य धारिता मन चातुर्य लगन का !
सबको भाया, सबने पाया चेयरमैन निज मन का !!
जन–सेवा की प्रारम्भिक थी सीढ़ी मिली वतन में !
और नया उत्साह स्वयं भी जागृत था निज मन में !!

एक साल से अधिक कार्य थे करते रहे लगन से !
किन्तु ऊब सी होने लगती थी शासन-बन्धन से !!
नहीं मिली थी वह स्वतन्त्रता जो कि प्रगति को हित कर!
इसीलिये कुछ कार्य स्वच्छता का न हुआ था जमकर !!

मन से चाहा नगर–डगर का स्वरूप नया कुछ निखरे !
इलहाबाद की गली–गली में नई रोशनी बिखरे !!
किन्तु अन्ततः हुआ बाध्य मन देने को इस्तीफा !
जो कि वांछित रहा, मिला ना वह सहयोग सभी का!!

कार्य व्यवस्तता ने नेहरू को :

कार्य व्यवस्तता ने नेहरू की–
गति दी थी उस मन को !
जो कि चाहता था स्वतन्त्रता,
जल्दी मिले वतन को !!

काँग्रेस के दफ्तर का भी,
कार्य बढ़ा था अक्सर !
दिन अरु रात लगन से पूरी,
श्रम था किया निरन्तर !!

साथ–साथ ही जनता का रूख,
देख–देख कर चलना !
साम्प्रदायिक दंगों की अक्सर,
छलती रहती छलना !!

उठे एक से एक बवंडर,
लुट जाती थी जनता !
वह पड़ता था करना प्रति दिन,
जितना जो कुछ बनता !!

इससे बोझ सदैव चढ़ा–
रहता था मन के ऊपर !
चंद क्षणों को सोचा करते थे–
मस्तक को छूकर !!

निज सुख की मुक्त माल—सन् १६२५–२६

जन–सेवा–क्रम की धुन मे,
भूले थे जीवन—सुविधा,
थे समय न घर दे पाते,
थी सत्याग्रह की दुविधा !

थी अधिकाधिक अभिलाषा,
आन्दोलन तीव्र रहे नित,
अब कार्यक्रमों की गरिमा,
रखनी ही होगी निश्चित !

ग्रामों से आते अक्सर,
मिलने को कृषक बिचारे,
रोते थे अपना रोना,
आकर किस्मत के मारे !

सुनकर के त्वरित जवाहर,
नित तत्परता दिखलाते,
जो जैसे सम्भव होता,
खुद उठकर मदद कराते !

लिखने का क्रम भी जारी,
रखना था श्रेष्ठ विधा से,
अधिकाधिक स्वर चिंतन में,
संपर्क जुड़े जनता से !

पत्रों में लेख प्रभावी,
होते थे युग की लय में,
किंचित भी ढील नहीं थी,
भारत के कठिन समय में !

विश्राम न था मिल पाता,
थक जाते थे श्रम कर—कर,
पीड़ा थी होती मन में,
दुखिता पत्नी को लखकर !

जन–सेवा हेतु समर्पित,
जब जीवन ही कर डाला,
रह पाती कैसे संयत,
निज सुख की मुक्ता—माला !

कमला जी स्वस्थ नहीं थीं,
वे दिन थे नित विपदा के,
इन्दिरा भी देखा करती;
कष्टों को मात—पिता के !

अस्वस्थ हुई जब कमला,
दुर्बलता ने द्रुत घेरी,
जन्मा था पुत्र मगर वह,
रह पाया अधिक न देरी !

सहसा यह चोट बड़ी थी
कमला के कोमल मन पर,
सदमे का भार अधिक था,
खुद नेहरू के जीवन पर !

मोती बस पोती से ही,
बहलाते अपने मन को,
सूना सा देख दुखी थे,
उस क्षण आनंद भवन को !

अब समुचित स्नेह उमड़ कर,
इन्दिरा की ओर मुड़ा था,
बापू की भाव प्रवणता का,
गरिमा—सम्बन्ध जुड़ा था !

चिन्ता का करें निवारण,
सोचा अब युरोप जाकर,
जमकर उपचार कराना,
कमला को वहाँ दिखा कर !

किंचित भी सफल न होने,
पाये थे श्रम के धागे,
कमला की स्वास्थ्य प्रगति को,
लखनऊ, कानपुर भागे !

कहते थे यही चिकित्सक
उत्तम विधि स्विस की बेहतर,
जलवायु बदलने से भी,
निश्चय ही तन हो सुख कर !

सोचा था नेहरू जी ने,
वांछित है ऋतु परिवर्तन,
कुछ शान्ति मिलेगी खुद को,
सम्भले कमला का जीवन !

वेनिस की ओर बढ़े थे,
चढ़कर जलयान समय से,
कुछ दिन को दूर हृदय था,
दुविधा से अरु संशय से !

युरोप में उथल-पुथल थी,
श्रम में थे इंगलिश्तानी,
जन-जीवन बदल रहा था,
रुचिकर थी नई कहानी !

नैतिकता जाग रही थी,
पहुंचे तो चहुंदिशि देखा,
जर्मन अरु फ्रांस लगन से,
रचते थे श्रम की रेखा !

भारत के बारे में भी,
चिंतित वे मूल निवासी,
भारत से आ करके थे,
जो रुचि से बने प्रवासी !

उनमें ही श्याम जी वर्मा,
रखते थे रुचि वह मन की,
चुपके से आंदोलन को,
दी सारी निधि जीवन की !

थे यद्यपि अंत समय में,
वे घोर निराशावादी,
थी अंकित किन्तु हृदय पर,
भारत की ही आज़ादी !

वैचारिक अन्तर था पर,
विविधा के दर्शन पाकर,
उन्मुक्त लगन के गुण से,
आये थे निकट जवाहर !

कमला जी स्वस्थ हुई कुछ.
उपचार व तत्परता से,
इन्दिरा थी देखा करती,
तब माँ को आतुरता से!

घूमे थे कई नगर भी,
जी भर कर देखा युरोप,
परिवर्तन की तब मन पर,
खीचा था रेखा युरोप !

अच्छा था लगा जेनेवा,
भायी थी घाटी–घाटी,
फूलों के झूलों ने थी,
महकाई चंचल माटी !

बौद्धिक गुण गरिमा परखी,
भेंटे थे कवि अरु लेखक,
लिखने के भाव हृदय में,
जागे थे वहाँ अचानक !

कितने ही जीवट वाले,
जन सेवा—व्रत को धारे,
लिखते थे निर्भय होकर,
निर्बल के अनुभव सारे !

विद्वत्ता जिसकी मानी,
लेखक वह रोमा रोलाँ,
नेहरू के मन को भाया,
जब जुट कर हृदय टटोला !

सब का हो सुखमय जीवन,
अनुभव की यही कड़ी थी,
राहों में किन्तु हठी की,
हठवादी चाल बड़ी थी !

जितने थे हिन्दुस्तानी,
सब में भी यह ही चर्चा,
मोती का लाल जवाहर,
भावी युग का है नेता !

भारत की ओर नजर थी,
मिलती थी रहती खबरें,
क्या कुछ अब नया हुआ है,
कहती थी रहती खबरें !

भारत में नेतागण में,
आपस में भेद नये थे,
कुछ नर्म बढ़े थे आगे,
कुछ होकर गर्म गये थे !

हिन्दू अरु मुस्लिम में भी,
बढ़ते मतभेद रहे थे,
भारत के अपनेपन में,
करते जो छेद रहे थे !

दुख होता था सब सुनकर,
चिंता थी होती मन को,
छुटकारा कब हो हासिल,
दुर्गुण से हाय, वतन को !

अनुभव था बचपन का यह,
इंदिरा के लिये नया सा,
रहता था चित्र हृदय में,
भारत की दीन दशा का !

क्रान्ति लहर—१९२५-२६

नये रक्त से किया वक्त ने

जब भारत की पावन भू पर जन्मा था विश्वास नया !
अंकित होना शुरु हुआ था तभी क्रान्ति—इतिहास नया !!
गाँधी जी के आन्दोलन के, असहयोग के भावुक स्वर !
देशभक्ति की चेतनाओं को देते थे नवरंग प्रखर !!

साथ-साथ ही क्रान्तिकारियों के मन का चैतन्य-प्रवाह !
बढ़ा रहा था भारत भू के नवयुवकों में नित उत्साह !!
नये रक्त ने किया वक्त से—दुःशासन पर कड़ा प्रहार !
जोकि द्रौपदी की लज्जा को सरे-आम था रहा उतार !!

ट्रेन डकैती काकोरी से खुले स्वत्व-संवर्धन द्वार !
मचा नया हड़कंप देश में, सहम उठी गोरी सरकार !!
ढीठ बनी सरकार नग्न हो करके नाची उसकी चाल !
राम प्रसाद अरु अशफाकउल्ला, दिये पकड़ कारा में डाल !!

राजेन्द्र लहड़ी सहित यहाँ पर पकड़े प्रतिदिन युवक अनेक !
क्रान्ति मन्यु–आजाद मगर बच गया दिखाकर पूर्ण विवेक !!
चला मुकदमा नाटक झेला, भारत की जनता ने जूझ !
किन्तु अन्त में घातक बन कर गई काम मुखबिर की सूझ !!

जो नेता थे गुप्तचरों के, मुखबिर थे रख नई दलील !
क्रीत दास कुछ अंग्रेजों के अपने युग के चतुर वकील !!
शक्ति लगाकर सबल किया था, अपने में सरकारी पक्ष !
गिरी बिजलियाँ क्रान्ति लहर पर सारी जनता के समक्ष !!

राम प्रसाद अरु अशफाकउल्ला, राजेन्द्र लहड़ी उन्मत्त झूम !
गये शहादत के दीवाने तन कर फांसी—फंदे चूम !!
दमन चक्र बढ़ गया देश में—कष्ट क्लेश में थे दिन रात !
असहयोग अरु क्रान्ति विधा दोनों ही की बिगड़ी बात !!

नगर–नगर में फिर विप्लव की चिंगारी थी भड़की रोज !
कानपुर अरु इलाहाबाद में मुखबिर करते थे जुट मौज !!
गिरफ्तारियों के वे दिन थे—घर–घर जाते थे वारंट !
सीधे–सादे लोगों को नित भय दिखलाते थे वारंट !!

किन्तु न सहमे क्रान्ति पुजारी जुगत जुड़ाकर करते काम !
उन्हीं दिनों था 'भगतसिंह' का क्रान्ति डगर पर चमका नाम !!
क्रान्ति क्षेत्र के नव प्रांगण में जैसे ही मिल गया प्रवेश !
संयम–साधन, निर्देशन के इंगित लेकर मिले 'गणेश' !!

चली लेखनी अखबारों में भरे क्रान्ति के थे उद्‌गार !
ज्यों–ज्यों बीता समय, हृदय में और भरा उत्साह अपार !!

हर ओर देख आतंकवाद :

थकते न रहे, रुकते न रहे,
मंजिल पर कदम बढ़ाते थे !
जिस ओर इशारा बापू का–
उस ओर दनादन जाते थे !

था प्रश्न स्वत्व की रक्षा का–
उन दिनों बहुत ही मूल्यवान,
था तथ्य उजागर जनता पर
पिसता नित रहता है किसान,

हर ओर देख आतंकवाद–
खोते थे अपना धैर्य लोग,
डण्डे के बल पर छल उभार–
लेते थे कारिंदे लगान,

यह घोर गुलामी देख–देख,
आँखों में आँसू आते थे !
जिस ओर इशारा बापू का–
उस ओर दनादन जाते थे !

था कौन कहाँ जो लुटा न हो–
धन वैभव अरु सम्मान लुटा,
जिसने भी बढ़ टकराव लिया–
बस वो ही था इंसान लुटा,

जो भक्त रहे अंग्रेजों के–
मन–प्राण सुरक्षित समझे थे,
अरु जो अवगत थे तथ्यों से–
उन सबका भी सम्मान लुटा,

पर वीर देश के गौरव मय–
इतिहास पृष्ठ दौहराते थे !
जिस ओर इशारा बापू का
उस ओर दनादन जाते थे !

स्वार्थ सनी सामंत टोली :

जहाँ देश के हित साधन की–
बातें कीं गुणवन्तों ने !
वहीं सदा रोड़े अटकाए–
बढ़ करके सामंतों ने !!

अपने हित सब बाँध रखे थे–
उन अंग्रेजी खूंटों से !
जिनकी चमक–दमक बढ़ती थी–
लन्दन शाही बूटों से !!

उनको केवल अपनी चिंता–
दिन अरु रात सताती थी !
इस कारण ही असहयोग से–
उनकी रुचि कतराती थी !!

उनको थे पुटियाते गोरे–
'क्या स्वराज्य से' पाओगे ?
जितना जो है आज प्राप्त–
इससे वंचित हो जाओगे !!

उनकी अपनी बुद्धि ठगी थी–
ललक–झलक में सत्ता की !
फिर क्या चिन्ता रहती उसको–
साहस या गुणवत्ता की !!

और क्रान्ति के वीरों को भी–
नित्य हानि पहुंचाते थे !
असहयोग आन्दोलन में भी–
वे रोड़ा अटकाते थे !!

"उनके ठाठ–बाट में किंचित–
आँच न आने पाये तो !
और कही आन्दोलित जनता–
उन्हें नहीं धकियाये तो !!

वे तटस्थ रह सकते हैं"–
यह कहते थे नेताओं से !
कहीं–कहीं तो ऊपर से–
मिल रहते थे नेताओं से !!

काश ! साथ वे दे पाते–
उस युग की बढ़ती लहरों का !
चित्र बदल जाता निश्चित ही–
गाँव–गाँव अरु शहरों का !!

लुटा दिये थे तन–मन–धन

लाठी खाई, गोली झेली, झोंक दिये थे निज जीवन !
आजादी के संघर्षों में लुटा दिये थे तन–मन–धन !!
वे भी थे इंसान आन पर जो बढ़कर मर मिटते थे !
कहीं सुबह तो कहीं शाम को नंगे भूखे पिटते थे !!

रखकर केवल देश धर्म को चलते अपने आगे थे !
इन्हीं त्यागमय गरिमाओं से भाग्य देश के जागे थे !!
हर विपदा का स्वागत करके, बढ़ कर गले लगाते थे !
संकटकारी जीवन विधि को हँस–हँस कर अपनाते थे !!

महिला चर्खे पर गीतों से बच्चा को बहलाती थीं !
दादी, नानी, वीरवरों के किस्से रोज सुनाती थी !!
मर्द, गर्द को सह कर गम की युग–धारा में बहते थे !
देश काज-हित जेलों में वे खुशी–खुशी से रहते थे !!

अनगिन बच्चे रुग्ण दशा को अक्सर झेला करते थे !
अंगारों से निर्धन सारे जमकर खेला करते थे !!
आन्दोलन में जीवन जाना था मामूली बात यहाँ !
चलता रहता दमन चक्र था इस प्रकार दिन रात यहाँ !!

किन्तु आज तो सुविधा भोगी बिना कष्ट सब प्राप्त करें !
जनता सुख से रहे विमुख अरु वह बस अपना कोष भरें !!

कुछ खोकर ही पा सकता है–
मानव अपने जीवन में !
प्राप्तव्य की लौ है सच्ची–
अगर लगी उसके मन में !!

बिना राग अनुराग न पलता–
विजय मार्ग अपनाने का !
लगनशील मानव ने बदला–
अक्सर चित्र जमाने का !!

इसी तथ्य का परिचय देते–
रहे जवाहर इंदिरा को !
बतलाते थे दशा देश की–
घर या बाहर इन्दिरा को !!

लक्ष्य समक्ष रहा करता था–
जन–जीवन - परिवर्तन का !
और साथ ही अवगत रहते थे–
क्या रुख है लंदन का !!

सन् १६२६—देखती जब इन्दिरा थी:

जब उमंगों का बढ़ा था यात्रा को काफिला,
एक अनुभव था अनूठा, उन दिनों जो कि मिला,
प्रेरणादायक बहुत ही था सफर ब्रसेल्स का;
कम्युनिस्टों की नई अनुभूतियों का सिलसिला !

औपनिवेशिक भावना के प्रति लखा आक्रोश था,
और नित साम्राज्यवादी चाल का देखा निरंतर दोष था,
जोश था मानव-हितों के वास्ते बचपन से ही;
तथ्य के इतिहास का तब इन्दिरा को होश था !

सभ्यता कुछ अन्य देशों की निहारी शान से,
खूब परिचित था हुआ मन तब उभरते ज्ञान से,
देखती जब इन्दिरा थी प्रगति की उज्ज्वल किरण;
साधती थी नव समन्वय देश हिन्दुस्तान से !

काश ! हम आजाद होते और खिल उठता वतन,
काम आती देश के विज्ञान की उन्नत किरण,
एक मामूली सी सूई तक न बन सकती जहाँ;
कारखानों से सजाते देश का हम बाँकपन !

काम करती थी रही शिक्षा जवाहर लाल की,
थी चकित करती स्वयं को चाह शैशव काल की,
ये विदेशी, माल लूटें देश हो निर्धन सदा;
हाय कब हो दूर बीमारी यही चिरकाल की !

आ गई थी तीव्रता तब सोच की रफ्तार में,
जुट रही थी साथ ही तब मातु के उपचार में,
यह प्रशिक्षण काल था, या कि जीवन की लहर;
नव उमंगों का सदा था सिलसिला व्यवहार में !

चूँकि जिज्ञासा सदा विकसित हुई थी ज्ञान की,
आँख में रख कर नई तस्वीर हिन्दुस्तान की,
था रहा परिचित हृदय, आन्दोलनों के चाव से;
और मन में चाह थी रहती सदा सम्मान की !

प्राप्त तब साम्राज्यवादी चाल का भी ज्ञान था,
साथ ही निज देश की गरिमाओं का भी ध्यान था;
मान था, सम्मान था कोमल हृदय में चेतना का;
और सम्यक् भावना का ज्योतिमय दिनमान था !

इन्दिरा जी का बचपन

बचपन था कितना प्यारा,
मिलती थी छाँव सुहानी !
पापू अरू दादी माँ से–
सुनती थी सदा कहानी !

कैसा था प्यारा भारत,
कैसी हैं यमुना—गंगा !
दर्शन से इनके प्रतिदिन–
रहता है मन भी चंगा !

कैसा—इतिहास रहा है,
भारत के वीरवरों का !
धरती की छवि ने प्रतिदिन–
पाया था बल सुनरों का !

देवों की भूमि रही है,
असुरों को मार भगाया !
सत जीवन-ज्योति जगाकर-
नूतन इतिहास बनाया !

गीता—रामायण इसकी,
युग—युग से उज्ज्वल पाती !
दादी थी, महिमा इनकी-
गा—गाकर रोज़ सुनाती !

पापू की इच्छा थी यह !
पाकर के अच्छा जीवन !
बन जाए इन्दिरा—वीरा-
पढ़कर इतिहास पुरातन !

लिख—रानी लक्ष्मी बाई,
शोणित से यश की गाथा ?
करके है उच्च गई वह-
भारत गौरव का माथा ?

ह्यूरोज जहाँ चकराया,
वह ही बुन्देला धरा है !
जिस के कण—कण में गौरव-
भारत का श्रेष्ठ भरा है ?

थी झुकी नहीं वह लक्ष्मी--
जुल्मों के आगे किंचित !
करती थी जो रण थल में--
हर सैनिक को उत्साहित !

लोहा था लिया रणों में,
बढ़ करके उसने प्रतिदिन !
मारा था शत्रु दलों के,
नर—वीरवरों को गिन गिन !

लौ मन में स्वतंत्रता की,
आँखों में चमक अभय की !
हाथों में शक्ति अपरिमित,
मन में थी लगन विजय की !

कहते थे वे भी सारे,
अंग्रेज कि जो थे लड़ते !
रण थल में वार सभी को,
भारी रानी के पड़ते !

वह कौतुक भरी विलक्षण,
संगम थी उत्साहों का !
रहता था मन में उद्गम,
उन्नति की द्रुत चाहों का !

थी यद्यपि होम हुई वह,
पर जग में नाम अमर है !
भारत की यश—गाथा पर–
उसकी ही ज्योति प्रखर है !

थी जॉन आफ आर्क

थी जॉन आफ आर्क–
जगत में वह युरोप की बलिदानी,
उसकी भी अमर कथा है–
नित प्रेरक गुणी कहानी !

मानबता—सेवा–व्रत में–
निज प्राण किये थे अर्पित !
इस कारण ही तो जग में,
यश उसका प्रतिदिन ज्योतित !

क्षण भंगुर समझा जीवन–
अपना था कर्म—विधा में !
थी रही न वह संशय में–
अरु रही न थी दुविधा में !

निज धरती के गौरव को
सद्‌कृत्यों से चमकाया !
वह अड़ी रही पर्वत सी–
जब विपदा का क्षण आया !

मन में थी लगन सजीली–
निज धरती की रक्षा की !
चिन्ता न रही थी सुख की–
चिन्ता न रही सुविधा की !

दुश्मन के दल को अक्सर–
रण में था खूब छकाया !
तब–तब था नक्शा बदला–
जब–जब था मौका आया !

हँस–हँस कर संघर्षों को–
झेला था निज जीवन में !
नित देश भक्ति की लौ थी–
जगती रहती द्रुत मन में !

तन में थी बिजली प्रण की,
रग-रग में गर्व धरा का !
तब-तब वह टूटी उस पर,
जब-जब दुश्मन ने ताका !

थी अंतिम क्षण तक रक्खी–
जीवन में आन समय की !
रहती थी सदा चमकती–
आँखों में ललक विजय की !

बलिदान चढ़ाकर अपना,
कर गई काम दुनिया में !
नव शक्ति स्रोत जीने का—
भर गई आम दुनिया में !

इनका था असर हृदय पर,
इन्दिरा के कोमल मन में !
प्रेरक मंतव्यों के सब,
क्षण जुड़ते थे जीवन में !

गुड़ियों का खेल सलोना

गुड़ियों का खेल सलोना—
लगता था मन को प्यारा !
दमका नित उसकी द्युति से—
आनन्द भवन था सारा !

देखा जब पुलिस दलों को—
आते अरु जाते घर में !
अक्सर रुचि—गरिमा प्रकटी,
अपने ओजस्वी स्वर में !

इसका था ज्ञान बराबर,
आती है पुलिस पकड़ने !
पापू अरु दादा जी से,
लड़ने और खूब झगड़ने !

वानर सेना—

तब बाल सुलभ नव चेतन,
अद्‌भुत चिंतन के नाते !
रखता था मन में जमकर,
उन सबकी लम्बी बातें !

मन में थी जागी रुचि नव,
सेना थी स्वयं बनाई !
अरु यही फौज बच्चों की,
वानर सेना कहलाई ?

इसका था काम सहायक,
बनना कष्टों के दिन में !
था लिया उन्हीं बच्चों को,
उत्साह लखा जिन-जिन में !

बन गये सहस्रों बच्चे,
सैनिक थे उस सेना के !
जिनने जुट-जुटकर प्रतिदिन,
थे कार्य किये सेवा के !

सेवा भाव चिकित्सा,
का क्रम रखती थी जारी !
उत्पीड़ित जो भी आता,
जुट जाती सेना सारी !

इतना ही क्यों संदेशे,
थे गुप्त रूप जो चलते !
उनके सब माध्यम तब थे,
इस सेना से ही पलते !

जब बढ़ती पुलिस पकड़ने,
नेता या आम जनों को !
पहले से ही सूचित कर देते,
थे अपनों को !!

थी पुलिस बहुत ही खिजती,
पर कर सकती भी तब क्या थी !
इन्दिरा के चतुर चलन से,
बढ़ जाती त्वरित व्यथा थी !

सन् १९२६—स्वामी श्रद्धानंद जी की हत्या

साम्प्रदायिकता जहर का था असर इतना बढ़ा !
आदमीयता रो उठी शैतान सिर पर था चढ़ा !!
जिस समय थी चाहिये नव शक्ति उस विश्वास को !
जो पलट सकता धरा के द्वन्द्वमय इतिहास को !!

उस समय दुर्दान्त चावों ने मिटा सद्भावना !
जोड़ दी थी गृह कलह अरु युद्ध की सम्भावना !!
चाल थी यह शासकों की, हिन्द नित घुटता रहे !
और वैभव शक्ति का—इसकी सदा लुटता रहे !!

था अलंबदार जोकि शान्ति–सुख–सद्भाव का !
एकता का था हितैषी, हर्ष था समभाव का !!
बल मिला जिससे वतन की चाह को, संयोग को !
खूब चमकाया लगन से जिसने असहयोग को !!

धर्म का जो था प्रवर्तक ज्ञान का विश्वास था !
जागरण की ज्योति का जो कि स्वयं इतिहास था !!
दर्शनों से जिसके मिलता, नित्य नव आनन्द था !
देश–गौरव, शक्ति–साधक संत श्रद्धानन्द था !!

हाय ! उसको मार डाला, सिरफिरे इंसान ने !
आदमीयत कर रखी गुमराह थी शैतान ने !!
कुछ दिनों के पूर्व ही तो हो गये बीमार थे !
किन्तु फिर भी कर रहे वे स्वस्थ सा व्यवहार थे !!

स्नेह की उस छाँव का बदला दिया शैतान ने !
जो कि शाश्वत भाव से रक्खी थी मेहरबान ने !!
ख्याति जिसकी पूर्णतः थी विश्व भर में छा गई !
साम्प्रदायिकता एक नूतन कहर उस पर ढा गई !!

क्या पता उसको कि उसने ह्रास कितना कर दिया !
और ग़म से किस तरह से देश भर को भर दिया !!
एक दिन स्वामी ने ही था वक्ष अपना खोलकर !
स्वाभिमानी भावना को था उदात्त स्वर दिया !!

"मारना है यदि तो गोली मार दो तुम शान से !
पर मिटा सकते नहीं हो स्वत्व हिन्दुस्तान से !!
झुक गई थी राइफल हर एक की लख ओज को !
याद करता गर्व से इतिहास है उस रोज को !!

झुक गया अंग्रेज का सिर गोरखे चुपचाप थे !
लग रहा था—कर रहे सब आप पश्चाताप थे !!
हाय रे ! वह क्षति हुई अब, पूर्ति कुछ सम्भव नहीं !
देख पाती साम्प्रदायिकता देश का उद्भव नहीं !!

८ नवम्बर १९२७ मास्को यात्रा :

क्रान्ति धरा उर्वरा रूस की आकर्षण का केन्द्र बनी !
और जवाहर लाल हेतु द्रुत संभाषण का केन्द्र बनी !!
चहुंदिशि देखे नई प्रगति के चिन्ह उभरते चावों से !
श्रम साधक में उत्साहों का सृजन हुआ सद्भावों से !!

नई चेतना देखी मन में लगन शील नवयुवकों के !
उल्लासों के मेले जुड़ते देखे थे नित कृषकों के !!
समष्टि चेतना पूर्ण रूप से निखर चुकी थी ग्रामों में !
अरु समाजवाद का गुण—गौरव था जुड़ता जाता नामों में !!

वहीं पिता जी और बहन भी साथ-साथ आनन्दित थे !
जबकि इन्दिरा के मन में कुछ नूतन सपने शोभित थे ! !
सबको अच्छा लगा रूस में, पग–पग पर सम्मान मिला !
मित्र भावना, बन्धु भावना का सबमें अरमान मिला ! !

राजनीति के चेतन—गुण पर भी विचार गरिमायुत था !
मिलन वहाँ के नेताओं से पूर्ण सुखद अरु अद्भुत था ! !
पड़ी यहीं से नींव श्रेष्ठतर, मैत्री अरु अनुबन्धों की !
और आपसी हित चिन्तन की युग द्रष्टा संबन्धों की ! !

प्रतिनिधि मंडल यह भारत का था तत्पर सम्मान मिला !
सुनकर जिसको द्रुत गुलाब सा सारा हिन्दुस्तान खिला ! !
लखा लाल मैदान वहाँ का— श्रद्धायुत सद्भावों से !
लेनिन के प्रति आदर मिश्रित उद्भव के समभावों से ! !

उस महान मानव ने जिनको पंथ दिखाया जीवन का !
उसके अपने प्यारे रूसी भाव भरे अभिनन्दन का ! !
नत मस्तक श्रद्धाँजलि अर्पित करते थे नित लेनिन को !
मुक्ति प्रवर्तक महामनुज को, मन में शोभित लेनिन को ! !

अर्थव्यवस्था और संस्कृति नित्य प्रगति की ओर बढ़ी !
जहाँ बढ़ी, जिस ओर बढ़ी हर मन को थी झकझोर बढ़ी ! !
सुखद सफर यह रहा रूस का अनुभव था नव जीवन का !
सुदृढ़ भावना, श्रेष्ठ कामना, प्रगति चाव के उपवन का ! !

यह प्रभाव था आजादी की–
नव किरणों के उद्गम का !
टूट रहा था तब भारत में–
बांध पुरातन संयम का !!

भारत में सन् १६२७ ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन का विरोध :

भारतीय रक्त में नव चेतना का था उफान !
सामने रख लक्ष्य को था बढ़ रहा हिन्दुस्तान !!
थे बहुत कुछ दुख सहे परतन्त्रता के रास्ते !
था प्रबल उत्साह तब स्वतन्त्रता के वास्ते !!

देखकर परिवर्तनों को सोचते अंग्रेज थे !
काश ! लंदन से किसी को संयमन को भेजते !!
थे इधर बेचैन हिन्दी निज वतन के वास्ते !
औ उधर आदेश थे तब साइमन के वास्ते !!

किया साइमन को नियुक्त था–
निज हित में उस शासन ने !
जिसको प्रतिदिन किया प्रकंपित–
नेहरू जी के भाषण ने !!

अनुभव की नव श्रेष्ठ तुला पर–
निज प्रतिनिधि को तोला था !
द्वार सुलह का अंग्रेजों ने–
तब लंदन से खोला था !!

किन्तु हिन्द में स्वतन्त्रता का–
तब दुर्बल संगठन न था !
भाग्य विधाता बने अन्य–
यह किंचित भी तो सहन न था !!

ध्येय धार कर मन में अपना–
चला साइमन भारत को !
किन्तु यहाँ हर चप्पे पर तब–
जन विरोध था स्वागत को !!

जब पहुंचे पंजाब, त्वरित ही–
लपटें बढ़ीं विरोधों की !
कदम कदम पर बाढ़ लगी थी–
राहों में अवरोधों की !!

बढ़े स्वयं पंजाब केसरी–
राय लाजपत क्रोध भरे !
कहा उन्होंने–"जनता आगे आकर–
हर प्रतिरोध करे" !!

किया स्वयं नेतृत्व, प्रेरणा–
दी थी बढ़ कर उस दल को !
जिसने नये मार्ग पर मोड़ा–
जनोद्भवों की हलचल को !!

ज्यों ही द्रुत लाहौर नगर में–
उतरा गोरा नामी था !
लगा त्वरित उसको कलंक था–
एक नयी बदनामी का !!

"जाओ साइमन ! वापस जाओ–
काम नहीं है भारत में !"
देखी उसने क्रोधित लहरें–
उभरी क्षण—क्षण स्वागत में !!

यह था कड़ा तमाचा मुँह पर–
तब उस गोरे शासन के !
झंडे गड़े हुयें थे जग में–
जिसके दृढ़ अनुशासन के !!

लोग सहस्रों खड़े हुये–
हाथों में झंडे काले थे !
और पुलिस ने सभी तरफ से–
अपने घेरे डाले थे !!

किन्तु तनिक भी चिन्ता या भय–
कहीं नहीं दिख पाया था !
और समय का सजग चितेरा–
यह विवरण लिख पाया था !!

पुलिस अधीक्षक गोरा काफी क्षुब्ध हुआऔर उबल पड़ा !
देखा उसने जन विरोध जब इधर-उधर से प्रबल बड़ा !!

बोला—"मारो और खदेड़ो, दूर-दूर तक धकियाओ !"
कहा सिपाहियों से–"दौड़ो रे, इन्हें पकड़ कर ले आओ !!"

स्वयं हाथ में लेकर लाठी लाला जी पर टूट पड़ा !
वीर लाजपत संभल न पाये रक्त फुहारा छूट पड़ा !!

अंधाधुंध प्रहारों से जनता के घेरे टूट गये !
नया कहर जो बरसा सहसा, सारे संबल छूट गये !!

लाला जी आहत मर्मांतक पीड़ा का दुख झेल गये !
और अंततः देश काज हित निज प्राणों से खेल गये !!

प्रतिकार लिया था वीरों ने :

देख न सकते थे जुल्मों को खड़े-खड़े मर्माहत से !
नये रक्त में नया जोश था लाला जी की आहुति से !!

क्रान्तिकारियों में हलचल थी, बदला लेंगे दुश्मन से !
वह दुश्मन जो खेला बढ़ कर लाला जी के जीवन से !!

बनी योजना चतुर चाव ने बढ़ चढ़ कर प्रतिकार लिया !
राजगुरु अरु भगत सिंह ने चुकता तभी उधार किया !!

उड़ा दिया सांडर्स द्वार पर वहीं पुलिस के-गोली से !
नया धमाका दिखलाया था क्रान्ति विधा की झोली से !!

लखनऊ में साइमन कमीशन का विरोध :

काँग्रेस के आन्दोलन से–
थी सत्ता की नींद हराम !
सोच रहा था शासन, इसकी–
गतिविधियों को लगे लगाम !!

किन्तु, वाह रे ! लौह लाडलो,
निकले सिर से बाँध कफन !
जिधर टोलियाँ बढ़ जाती थीं–
गुँजित—"जिन्दाबाद वतन" !!

कदम–कदम पर अवरोधों को–
रही तोड़ती तीव्र लगन !
आजादी के मतवालों ने–
किये समर्पित थे जीवन !!

खून खौलता था वीरों का

जब से थे पंजाब प्रान्त में–
बढ़े पुलिस के अत्याचार !
अरु जनता पर अनायास ही–
पड़ती थी लाठी की मार !!

खून खौलता था वीरों का–
नई जवानी थी बेचैन !
अत्याचारों की रफ्तारें–
साल रही थीं दिन अरु रैन !!

चला साइमन अवध प्रान्त को–
जिस दिन था होकर तैयार !
उसी समय से नेताओं ने–
था विरोध का किया विचार !!

"दिखें साइमन को विरोध के–
नव चेतनयुत चित्र विशाल !
ऐसा घोर प्रदर्शन हो अब–
कहीं न जिसकी मिले मिसाल" !!

यद्यपि भारत है गुलाम पर–
यह तो हैं मौलिक अधिकार !
जबकि कुशासन, दु:शासन सा–
करे निरन्तर अत्याचार !!

उस विरोध के आयोजन में–
व्यस्त रहे थे सब दिन रात !
उधर पुलिस के हथकण्डे भी–
बने हुये थे उल्कापात !!

लिया तभी नेतृत्व हाथ में–
देखी जब स्थिति विकराल !
ओजपूर्ण गरिमा भर मन में–
बढ़कर चले जवाहर लाल !!

इलाहाबाद से चले हृदय में–
ले करके अभिनव तूफान !
पहुंच गये लखनऊ तो देखा–
कुछ लोगों में नया रुझान !!

कुछ नेता तत्पर स्वागत में–
जिन्हें साइमन पर विश्वास !
भूल चुके थे ज्यादतियों का–
वे सारा ही तो इतिहास !!

किन्तु देश के गरिमा–गुण का–
जिसे तनिक भी था कुछ ज्ञान !
वह तत्पर था तब देने को–
ऊँचे से ऊंचा बलिदान !!

बढ़ी बढ़ी दुर्धर्ष पूर्ण थी–
उठा जोश में था नव ज्वार !
अरु प्रतिकारों को तत्पर थे–
सब हो करके तब तैयार !!

किन्तु काँग्रेस का निर्णय था–
पूर्ण अहिंसक रहे विरोध !
रहें प्रदर्शक शान्ति समर्थक–
बढ़े नहीं किंचित भी क्रोध !!

साथ, साथियों के नेहरू जब–
करने हेतु पूर्वाभ्यास !
खड़े हुये थे बीच सड़क के–
तभी पुलिस ने आकर पास !!

लाठी, डण्डों से उन पर थे–
किये तड़ातड़ तीन प्रहार !
दाँत भींच कर सही चोट थी–
किया नहीं किंचित प्रतिकार !!

इस जघन्यता ने गोरों की–
जन–मन में था सिरजा क्रोध !
सब साथी तत्पर होकर के–
करने को जुट गये विरोध !!

और साथ ही प्रबल क्रोध का–
                    रहा न कुछ भी पारावारा !
वार निहत्थे लोगों पर हो–
                    यह कैसा रे, अत्याचार ??

चार बाग स्टेशन पर :

यद्यपि सहनशीलता का था तब प्रभाव भी जीवन पर !
किन्तु न थी स्वीकार विदेशी सत्ता, घर या आँगन पर !!
साफ लक्ष्य था रहा–हमें स्वाधीन देश करवाना है !
अरु स्वतन्त्रता की देवी पर हर बलिदान चढ़ाना है !!

थी विरोध की कड़ी योजना–
                    अरु सब साथी थे तैयार !
अगले दिन के घोर प्रदर्शन का था–
                    सबका बना विचार !!

प्रथम किरण के साथ जगी लौ–
देश भक्ति का लेकर नाम !
करें साइमन का विरोध सब–
चाहे जो कुछ हो परिणाम !!

उच्च स्तर के अवध प्रान्त के–
सब नेता थे मिलजुल साथ !
करने को मजबूत देश के–
नेता नेहरू जी के हाथ !!

गोविन्द बल्लभ, चन्द्र भानु जी–
देव नरेद्र अरु जुगल किशोर !
संग जवाहर के पहुंचे सब–
चारबाग स्टेशन छोर !!

चारबाग स्टेशन पर थी–
खड़ी पुलिस की कई कतार !
अश्वारोही पूर्ण प्रशिक्षित–
अरु पैदल का न था शुमार !!

गली–गली से निकल प्रजा जन–
पहुंच रहे थे ठाठें मार !
चढ़ते—चढ़ते दिवस वहां पर–
हुये इकट्ठे कई हजार !!

श्वेत वेश में खड़े जवाहर—
चेहरे की आकृति गम्भीर !
खटक रही थी विगत दिवस की—
मन ही मन में रह—रह पीर !!

किन्तु अहिंसक रहकर करना—
प्रकट वहाँ पर था प्रतिरोध !
था प्रयास यह झलक न पाये—
चेहरे से किंचित भी क्रोध !!

आत्म शक्ति की यही परीक्षा—
होनी थी उस दिन पुरजोर !
देख रहे थे वहीं चतुर्दिक—
जन बल का भी बढ़ता शोर !!

सिंधु असीमित प्रतिकारों का—
गुंजित करता था ललकार !
"जाओ साइमन वापस जाओ—
नहीं हमें तुम हो दरकार !!"

"स्वयं हमारे भाग्य विधाता हम—
हम अपना लें अधिकार !
नहीं चाहिये हमें रियायत—
या निर्देशित नये सुधार !!"

हरेक मोड़कर पुलिस डटी थी–
रोक रही थी सतत प्रवाह !
सिर ही सिर थे पड़े दिखाई–
गई जहाँ तक दूर निगाह !!

सहसा तब ही किये पुलिस ने–
खड़ी भीड़ पर कई प्रहार !
चौंके सब अरु दौड़े भागे–
देख पुलिस की मारा—मार !!

बिफर उठा जन–मानस क्रोधित–
हुए वहाँ पर सब तत्काल !
संयत मन गाँभीर्य भाव से–
बोले तभी जवाहर लाल !!

"रहे प्रदर्शन पूर्ण अहिंसक–
प्रकट करें हर ओर विरोध !
हमें न हिंसक होकर अपना–
दिखलाना है किंचित है क्रोध" !!

घोड़े दौड़े खड़ी भीड़ पर–
मचा दिया सहसा कुहराम !
नये प्रहारों में जुल्मों के–
लगा न किंचित कहीं विराम !!

वार पुलिस के सहे स्वयं भी–
शांत भाव दाँतों को भींच !
मन ही मन में था उबाल यह–
हैं गोरे ये कितने नीच !

हिंसा का कर रहे प्रदर्शन–
और निहत्थे जन पर वार !
इससे अधिक और क्या होगा–
इस दुनिया में अत्याचार ! !

कटु अनुभव अरु तन पर चोटें–
लिये, गये जब अपने धाम !
पूर्ववत् ले लिया हाथ में–
कांग्रेस दफ्तर का काम ! !

लेख–लिखे, भाषण दे–देकर–
जाग्रति का था किया प्रचार !
और घोषणा की कि शीघ्र ही–
मिले देश को निज अधिकार ! !

इस संयम–साहस दृढ़ता ने–
भरा जवाहर में खुद जोश !
ऐसे जुटे कार्य में प्रतिदिन–
रहा नहीं था किंचित होश ! !

नई दमक के साथ उभरकर :

हुई समूची देश–धरा पर थीं प्रतिक्रियायें भी तत्काल !
नई दमक के साथ उभर कर आया नाम जवाहर लाल !!
गाँधी जी अत्यन्त प्रभावित होकर बोले—"जिन्दाबाद !
मुक्ति दिलाने हेतु देश को— मेरा पूरा आशीर्वाद" !!

नहीं निरर्थक गया रक्त वह— जो टपका था बारंबार !
लख नेहरू की सहनशीलता, पड़ी पुलिस पर थी फटकार !!
प्रतिकारों, अरु प्रतिरोधों ने पलट दिया सारा इतिहास !
असफल सारा मिशन हो गया, गये साइमन लौट उदास !!

पूर्ण देश में थी प्रसन्नता, चमका भारत–गर्व महान् !
तत्परता से देश बढ़ चला करने को सब कुछ बलिदान !!
जन–प्रियता लख कर नेहरू की–सजग हुआ सरकारी तंत्र !
वीर जवाहर के भाषण थे पूर्ण रूप से मुक्तिम्–मंत्र !!

गाँव-गाँव में डंका बजने लगा

जवाहर लाल का :

शिविर-शिविर में अंग्रेजों के आया था भूचाल सा !
गाँव-गाँव में डंका बजने लगा जवाहर लाल का !!
नेहरू ने पीड़ा को समझा, जाना अरु पहिचान लिया !
भूख और तंगी का देखा रूप स्वयं विकराल सा !!

उन्हें चाहियें थे जागृति स्वर, स्वावलम्ब की भावना !
समय-समय पर झेल रहे जो गाँवों मध्य अकाल सा !!
जिधर बढ़े नेहरू क पग थे, जिज्ञासायें बढ़ चली !
लगा टूटने आलस्यों अरु अवसादों का जाल सा !!

बढ़े सहस्रों, लाखों जन थे दर्शन हेतु जहाँ गया !
सिर आँखों पर लिया देश ने बेटा मोती लाल का !!
जिधर कारवाँ बढ़ जाता था जलसे और जुलूस में !
देश भक्ति की भावनाओं में आता रहा उबाल सा !!

उच्च भाव प्रस्ताव देश की युक्ति हेतु थे हर तरफ !
कदम-कदम पर दुश्चिताओं का रहा टूटता जाल सा !!

गूंजा नभ जयकारों से :

गूंजा नभ जयकारों से–
"वीर जंवाहर जिंदाबाद !
जय हो भारत माता की–
जय अरु नर नाहर जिंदाबाद !!

जिंदाबाद, जिंदाबाद–
वीर जवाहर जिंदाबाद !

लोग सहस्रों की संख्या में–
आगे पीछे चलते थे !
द्वार—द्वार से भर–भर कर–
नूतन उत्साह निकलते थे !!

हाथों में था सजा तिरंगा–

उच्च गगन तक था नारा !!

"झंडा ऊंचा रहे हमारा–

झंडा ऊँचा रहे हमारा !

झण्डा ऊँचा रहे हमारा !

इस झण्डे पर बलि–बलि जायें–

अपना भारत प्यारा सारा !!

झण्डा ऊँचा रहे हमारा !!

लहर–लहर लहराता जाता,

फहर–फहर फहराता जाता,

नील गगन पर छाता जाता,

दिशा–दिशा उत्साह जगाता !

धूर्तता से कम्पनी ने :

धूर्तता मे कम्पनी ने ठग लिये उद्योग थे,
आर्थिक साधन सभी तो कर लिये उपभोग थे,
देश मे था क्या रहा सब मानचेस्टर खा गया,
भुखमरी नगी कलह के जुड गये सयोग थे !

फटे पुराने चिथडो मे जब–
नित ग्रामीण निकलते थे !
देख–देख कर भारत माँ की–
आँख से आँसू ढलते थे !!

कभी कपनी लेकर निज व्यापारिक–
हित को आई थी !
किन्तु बाद को राज्य लाभ की नीति–
यहाँ अपनाई थी !!

कहीं–कहीं प्रारम्भिक स्तर–
केवल रहा चिकित्सक था !
जाँच लिये बीमार शहँशाह,
भेद पा लिया भारत का !!

और साथ ही रंगरलियाँ भी–
देखी यहाँ नरेशों की !
स्वयं झाँकियाँ खूब निहारी–
खुले, बिखरते केशों की !!

भेद ले लिये थे हरमों के–
रात दिवस मयनोशी के !
मिले नवाबों के थे अक्सर–
चित्र उन्हें बेहोशी के !!

खूबसूरती के कटाक्ष पर–
बढ़ कर मरते रहते थे !
या शिकार दिन--दिन भर दौड़–
फिक्कर करते रहते थे !!

किसकी मान प्रतिष्ठा, कैसा–
था चरित्र सब भूल गये !
उस युग के भारत के शासक–
नियमों के प्रतिकूल गये !!

अपने महल—दुमहलों की तो–
छवि में लाखों फूंक दिये !
पर न प्रजा को कहीं खुशी से–
भोजन के दो टूक दिये !!

एक और भी चित्र देश की–
उभरा था कमजोरी का !
सेनाओं में रहता किस्सा–
तब था जोरा–जोरी का !!

विस्मृत करके भारत गौरव–
शक्ति समूची खोई थी !
देख–देखकर दशा देश की–
भारत माता रोई थी !!

आज हुआ क्या लालों को ?
भारत के उजियालों को !!

वीर भाव सब खोया–खोया,
जिसे देख अपनापन रोया,
हुआ कोष ताकत का रीता,
आपस में लड़–लड़कर बीता !
लगा दिया है हाय पलीता;
यश की सब दीवालों का !
आज हुआ क्या लालों को !!

इसको मारा उसको काटा,
पूर्ण राष्ट्र टुकड़ों में बाँटा,
अनहोनी का चक्र चल गया,
था कोई षड्यंत्र फल गया,
या छलिये सा रूप छल गया,
जलती हुई मशालों को !
आज हुआ क्या लालों को ??

कोई लाया चुन फ्राँसीसी,
पुर्तगाल की भी पी० टी० सी०,
अंग्रेजों की गोरी पलटन,
करवाती है जम कर अनबन,
और देश की धरती-आँगन,
सहता उनकी चालों को !
आज हुआ क्या लालों को ??

इस प्रकार भारत में घुस कर—
नीति विदेशी आई थी !
तोड़-फोड़ की यहाँ प्रणाली—
आ करके अपनाई थी !!

धीरे-धीरे प्राप्त कर लिये—
थे अधिकार प्रयोजन के !
सूत्र संभाले थे फिर जमकर—
इस भारत में शासन के !!

कुछ आपस का बैर खा गया,
रहा सहा सा गैर खा गया !

स्वार्थ सनी सामंती टोली,
मद–मत्सर में डूबी थी !
अधः पतन की दशा देख कर–
जनता उससे ऊबी थी !!

आया हाय ! देश समूचा–
अंग्रेजों के पंजे में !
उपनिवेश वृत कसे हुये था–
पूरी तरह शिकंजे में !!

खड़ा–खड़ा रो रहा हिमालय,
हुये अपावन सब देवालय !

जमींदार, कारिंदे मुखिया–
अंग्रेजों के चाकर थे !
प्रथम किरण के साथ कृषक को–
तंग करते सब आकर थे !!

लाल पगड़ियाँ धौंस दिखा कर–
सब कुछ हथिया लेती थीं !
भारत में सुविधा की घड़ियाँ–
पड़ती गई पछेती थीं !!

उस पर भी, नित चले मुकदमे,
निर्धन थे सब सहमे, सहमे !

जिसे आ गई अंग्रेजी बू–
वह अपनों से कटता था !
परिजन—पुरजन तौर–तरीका–
संघर्षों में बँटता था !!

संस्कृति लुटी, सभ्यता खोई–
अपनेपन का दौर गया !
धन तो पहले चला गया–
जो शेष रहा वह और गया !!

नाम रह गया जीने का,
घुट घुट आँसू पीने का !

असह्य वेदना से गाँधी जी–
रहने नित्य दुखी मन में !
कैसे आये नव परिवर्तन–
इस भारत के जीवन में !!

यह जो पग—पग रंग विदेशी–
करते हिन्दी धारण हैं !
यही वास्तव में धोखा है–
यही पतन का कारण है !!

इसे त्यागने की लय हो;
आरंभ यहीं से अब जय हो !

दिया मंत्र था बहिष्कार का–
माल विदेशी त्याग बढ़ो !
बढ़ो ! बढ़ो !! हिन्दुस्तानी का–
भर मन में अनुराग बढ़ो !!

खादी की सादी परिभाषा–
जन—मन को समझाई थी !
गाँव–गाँव में पूर्ण स्वदेशी की–
लौ नित्य जगाई थी !!

उच्च गगन तक था यह स्वर;
बढ़ा विजय का ध्वज लेकर !

सन् १९२८—२९

लौ लगी थी :

जगमगाई चेतना थी–
एक नव अनुराग से !
लौ लगी थी जब विदेशी–
वस्तुओं के त्याग से !!

नव्य परिवर्तन दिशा में,
जिंदगी की आ गया,
दूर तक इसका असर था,
विश्व भर में छा गया,
हर स्वदेशी वस्तु प्यारी,
थी लगी अरमान से,
हर विदेशी वस्तु का था,
त्याग हिन्दुस्तान से !

स्वाभिमानी नाद गूंजा–
देश के भू—भाग से !
लौ लगी थी जब विदेशी–
वस्तुओं के त्याग से !!

हर किसी घर के सहन में,
इस तरह थे प्रण पले,
कीमती वस्त्रों की होली में,
खिलौने तक जले,
बहिष्कारों की लहर थी,
हर गली बाजार में,
वह किया जितना अधिक से,
था अधिक अधिकार में !

भस्म होने दीखने–
अंबार थे तब आग से !
लौ लगी थी जब विदेशी–
वस्तुओं के त्याग से !!

दौर—दौरा था पिकेटिंग का,
नगर अरु गाँव में,
बोस. साटन बिक रहे थे,
कौड़ियों के भाव में,
ढाई आने गज तलक भी,
कोई लेता था नहीं,
और ग्राहक कोई भी,
सहयोग देता था नहीं !

आ गये दूकानदारों के लबों पर झाग से !
लौ लगी थी जब विदेशी वस्तुओं के त्याग से !!

तोड़ती थी नित पिकेटिंग को—
पुलिस की टोलियाँ,
किन्तु जनता सह रही थी—
लाठियाँ अरु गोलियाँ,

दौड़ते घोड़े मसलने थे—
खड़े इंसान को,
हर तरह से था मनाया—
देश हिन्दुस्तान को.

हिल रही सरकार की थी—
कुर्सियाँ इस लाग से !
लौ लगी थी जब विदेशी—
वस्तुओं के त्याग से !!

और इन्दिरा खुश होकर

"भाई, बहनों खादी पहनो"
हो गये नारे बुलन्द !
उस स्वदेशी भावना की—
ज्योति होती थी न मंद !!

इन्दिरा का था बाल्यकाल तब–
पढ़ा स्वदेशी मंत्रों को,
देखा घर में आग लगी है–
सभी विदेशी वस्त्रों को,

दौड़–दौड़ कर लाई अपने–
वस्त्र सभी थे डाल दिये,
जलते–जलते कई हवा में–
पकड़े और उछाल दिये,

परिजन सब ही खुश थे लखकर–
बिटिया की चतुराई को,
जब लाकर रक्खी फराक थी–
स्नेह सहित पहनाई जो,

गुड़िया, चुनिया, मुनिया, सुखिया–
सभी अग्नि की भेंट चढ़ी,
और इन्दिरा खुश हो करके–
देख रही थी खड़ी–खड़ी,

यह था प्यार स्वदेशी का जो–
उसके मन पर छाया था!
अरु स्वतन्त्रता की धारा से–
अपनापन दिखलाया था!!

मैं पहनूँगी सिर्फ स्वदेशी :

जागी थी बलिदान भावना–
भारत के हर कोने से !
नहीं स्वराज्य यह मिला देश को–
केवल रोने—धोने से !!

महात्याग का रूप लखा था–
तब हर ओर जमाने ने !
कहीं–कहीं तो घनी बस्तियाँ–
दाबी थी बीराने ने !!

एक गाँव में शादी के दिन–
दुल्हिन ने प्रण साध लिया !
और मंत्र था गाँधी जी का–
कस कर मन में बाँध लिया !!

मैं पहनूंगी सिर्फ स्वदेशी वस्त्र,
स्वदेशी बाना रे !
गांधी जी का मंत्र सभी को–
आज यहाँ अपनाना रे !!

नहीं चाहिये मुझे रेशमी वस्त्र,
इन्हें ले जाओ रे !
सज–धज का ये सारा ही तो–
ताम–झाम उठवाओ रे !!

खादी की कुर्ती हो प्यारी–
खादी की हो धोती रे !
देश स्वदेशी बना जा रहा–
अम्मा तू क्यों रोती रे !!

बाबा तुम क्यों हो अधीर से–
बापू खद्दर लाओ रे !
करो स्वदेशी ही सिंगार अब–
खादी ही पहनाओ रे !!

मैं दूल्हे को भी खद्दर का–
ही बाना पहनाऊँगी !
वह खादी में होगा तब ही–
मैं फेरों पर जाऊँगी !!

हमको अपना भाग्य आज से–
अपने हाथ बनाना रे !
गाँधी जी का मंत्र सभी को–
आज यहाँ अपनाना रे !!

समाचार उस रक्तपात का :

समाचार उस रक्तपात का–
फैल गया था दिग् दिगन्त !
जिसमें चोटें खाये बढ़कर–
वीर जवाहर और पंत !!

इसी वीरता ने गोरों की–
लगा लिया था स्वयं कलंक !
इससे पहले डायर जैसे–
मार चुके थे अपना डंक !!

मानवता हर एक देश के—
धरा धाम में होती है !
वह होती कुछ बात कि पड़ कर—
कब तक को वह सोती है !!

ऐसा नहीं कि सारे ही अंग्रेज—
बुद्धि के दुश्मन थे !
कुछ ऐसे भी थे मनस्वी—
जो आ करके लन्दन से !!

लिखते सच्ची बातें थे—
अरु साफ—साफ कह देते थे !
बदले में वे हर प्रकार का—
दण्ड स्वयं सह लेते थे !!

हुआ बहुत बदनाम विश्व में— तब अंग्रेजों का व्यवहार !
उभर गये इतिहास पृष्ठ पर— उनके सारे अत्याचार !!
हुए नर्म दल वाले भी थे देख—देखकर नित नाराज !
समझ गये थे सहज नहीं मिल सकता भारत को निज राज !!

नित्य गर्म दल वालों का था आन्दोलन का बढ़ता वेग !
फूट रही थी चौराहों पर अंग्रेजों के जुल्मों की देग !!
गाँव—गाँव अरु नगर—नगर में, हुआ यही तत्काल प्रचार !
अधिक दिनों तक नहीं रहेगी, भारत में खूनी सरकार !!

बनी बवण्डर भावनाएँ थीं, अरु उत्तेजक भाषण दौर !
"भारत मध्य विदेशी सत्ता, सहन नहीं पल भर भी और" !!
यह कैसी रे, विडंबना है, भारत देश, विशाल महान !
पिद्दी से इंगलैंड देश के लिये बना सोने की खान !!

बढ़ी सामुहिक सद्य चेतना, खड़ा हो गया हर इंसान !
निश्चय ही अब दृढ़ स्वर में उठ माँगेगा हक हिन्दुस्तान !!

उस समय बालिका इन्दिरा का :

था गाँधी का चमत्कार या–
जौहर खिले जवाहर के !
जुड़े सूत्र थे असहयोग के–
सारे—अन्दर बाहर के !!

इलाहाबाद में हलचल थी–
रुचि और काँग्रेस दफ्तर में !
प्रखर तेज पाया शासन ने–
पल–पल नया जवाहर में !!

अरु वाणी में जादू, जादू वह भी–
जो कि कमाल बना !
भारत ही क्या, अखिल विश्व में–
जो था एक मिसाल बना !!

नया तमाशा देखा उस दिन–
घर की कुर्सी मेजों ने !
जिस दिन था आनन्द भवन को–
रौंदा फिर अंग्रेजों ने !!

खूब तलाशी ली थी जी भर–
उलट–पलट कर देखा था !
पर प्रभाव हर ओर लखा था–
स्वतन्त्रता की रेखा का !!

हुई इन्दिरा क्रोधित थी जब–
देखा रूप तबाही का !
पड़ा स्वदेशी खेल, खिलौनों
तक पर हाथ सिपाही का !!

थी बिगड़ी वह खूब, हरेक–
सामान बिगड़ता देखा था !
उस नन्हीं सी कलिका ने–
निज बाग उजड़ता देखा था !!

प्रियदर्शनी के मन में–
प्रतिशोध भावना पूरी थी !
खड़ी रही चुपचाप समय की–
ऐसी ही मजबूरी थी !!

आँसू पीकर, दृढ़ निश्चय–
कर लिया तभी था निज मन में !
सत्याग्रह को अपनाएगी–
वह भी अपने जीवन में !!

और साथ ही बच्चों की दृढ़–
व्रत सेना को लय देगी !
साँय प्रातः पूर्ण शक्ति से–
उनको मंत्र—विजय—देगी !!

बाल-वृन्द की यह टोली–
वानर सेना विख्यात रही !
समय—समय पर–
कांग्रेस के संकल्पों की बात रही !!

जहाँ-कहीं आवश्यक होता–
त्वरित मदद पहुंचाती थी !
घायल और जरूरतमंदों–
की सेवा को जाती थी !!

इस टोली के ही कमाल ने–
साहस भरा जवानों में !
उत्साहों के फूल खिलाये–
बढ़ करके वीरानों में !!

नेहरू की प्रारम्भिक शिक्षा–
काम कर गई जीवन में !
युवकों जैसे वस्त्र पहनकर–
तन जाती थी आँगन में !!

ढीला कुर्ता अरु पाजामा,
सिर पर टोपी गाँधी थी !
तरुणाई के द्वार साख–
निज पौरुषेय की बाँधी थी !!

कूट--कूट कर राष्ट्र भावना–
भरी हुई थी रग--रग में !
उस जैसी क्या और बालिका–
थी कोई भी तब जग में !!

गाँधी जी आनन्द भवन में–
उन्हीं दिनों जब आते थे !
प्रियदर्शिनी पर अपना–
सारा ही स्नेह लुटाते थे !!

अपने थे भाव मौलिक :

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" !
चर्चित हुई जगत में इकबाल की गजल थी !!
हम बुलबुले हैं इसकी यह गुल्सिताँ हमारा !
यह प्रेरणा सभी में भरती अपार बल थी !!
मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना !
हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा !!
तब यह विचार धारा हनती हरेक छल थी !
गूँजा था हर तराना, अपनत्व भाव भरकर !!
अभिव्यक्ति सामयिक थी, भाषा बड़ी सरल थी !!
अपने थे भाव मौलिक–अपनी ही व्यंजना थी !
पश्चिम के काव्य रस की होती नहीं नकल थी !!

देश धर्म पर मर मिटने के

गीत लिखे थे गीतकार ने देश भक्ति की धरती पर !
देश धर्म पर मर मिटने के नित्य नये स्वर भर-भर कर !!

नई रागिनी देश-प्रेम की–
घर–घर गाई जाती थी,
प्रबल प्रेरणा उत्सर्गों की–
नित्य जगाई जाती थी,

ओरे ! मेरे देश जाग रे !
उठ आलस को आज त्याग रे !
बलिदानों का समय आ गया–
गूँज रहा है नया राग रे !

अब न उठे तो रोना होगा, तुझको प्यारे जीवन भर !
देश धर्म पर मर मिटने के, नित्य नये स्वर भर--भर कर !!

गुँजित लय थी आस्मान तक–
पँक्ति-पंक्ति में ओज भरा !
कलमकार दायित्व निभाकर,
खरा कसौटी पर उतरा !

नई सुबह रंग लाई है,
दिशा-दिशा में अरुणाई है,
जिन्हें नींद ने अब भी घेरा,
उन्हें जगाने आई है,

करवट ले अरमान उठ रहे-अब स्वत्वों के सँवर-सँवर !
देश, धर्म पर मर मिटने के नित्य नये स्वर भर-भर कर !!

झंडे लेकर बढ़ी टोलियाँ,
कवि के गाती गीत चलीं,
महा आलसी मनुजों तक की,
तबियत बढ़ने को मचलीं,

खेत जगे खलिहान जगे,
दौड़े साथ किसान लगे,
जन प्रवाह से आन्दोलन में,
प्यारा हिन्दुस्तान जगे,

कदम चूमने आती थी छवि तब अम्बर से उतर, उतर
देश धर्म पर मर मिटने के नित्य नये स्वर भर-भर कर !!

गीत किये कंठस्थ,
नारियाँ पनघट तक पर गाती थीं,
जिनको सुनकर सेनाओं की,
टुकड़ी लरजा खाती थीं !

चुड़ियाँ पहनों ओ, मर्दानों,
जाओ जाओ, अरे जवानों,
अपनों पर ही गोली वर्षा,
रक्त स्वयं का तो पहचानों !

कुछ दिन में सब खो जायेगी, यह बिल्लो की जगर मगर !
देश धर्म पर मर मिटने के नित्य नये स्वर भर-भर कर !!

सुथरे साई लिये हाथ में-
डंडा गाते फिरते थे !
कड़े बजाते निज हाथो के-
दिशा जगाते फिरते थे !!

"गंगा-उठो कि नीद मे सदियाँ गुजर गई,
सोते ही सोते देख लो जाने किधर गई',

मोती मन के श्याम वस्त्र पर आभा नव छिटकाते थे,
वतन परस्तो की गलियो मे बढकर धूम मचाते थे,
बच्चे, बूढे, युवा सभी पर पड़ना अमर तरानो का,
दिल साहस से भर जाना था सुनकर वीर जवानो का,

धर्म सिसकता, मजहब रोता,
ऐसा भी क्या जग मे होना
उसे नही खाने को रोटी,
लहू पसीना जो नित बोता,
अब भी सम्भलो, आदत बदलो,
बदला आज जमाना है,
जो सदियो मे है गुलाम-
उसको आजाद कराना है,

क्या हालत हो गई देश की–
चित्र दिखाते फिरते थे !
कड़े बजाते निज हाथो से–
दिशा जगाते फिरते थे !!

पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा इन्दिरा को शिक्षा का भावात्मक चित्रण

सयम रुचि से जीवन के परिवेश बना करते है !
कठिन तपस्या, श्रम साधन मे देश बना करते है !!
देश श्रेष्ठ उद्देश्य हेतु है प्रगति पथ पर बढ़ते !
सत्य मार्ग सकेत चतुर्दिक ऊँचाइयो पर चढ़ते !!

देश धरा–रत्नेश ज्योति मे दिन और रात दमकते !
जिनके वासी कर्त्तव्यों को करने कभी न थकते !!
देश किये जाते है निर्मित अथक कर्म के बल से !
भय के भ्रम को तोड़ा जाता श्रम के गगा जल से !!

देश धर्म के समावेश से स्वर्ग सरिस बन जाते !
जो कि मानवीय मर्म विधि को सत्य विधि अपनाते !!
देश बड़ा होता है सबसे जिसने यह गुण जाना !
उस मानव ने मानव–सेवा–व्रत का गुण पहचाना !!

देश धर्म अरु कर्म समन्वय गुण हैं सत् जीवन के !
सृजन भावना रखती गौरव प्रतिक्षण अपने पन के !!
देश सुदृढ़ होता है यदि तो विजय सदा है चेरी !
उन्नति के हर एक मार्ग में होती कहीं न देरी !!

देश माँगता बलिदानों का क्रम है जन जीवन से !
वही श्रेष्ठ मानव जो सेवारत है तन से, मन से !!
सत्य तत्व को समझा जिसने जीवन के हर मग में !
उसका रहता ध्येय निरन्तर-सुख फैले इस जग में !!

देश प्रेम का स्वाद जिसे है निज जीवन में आया !
वर्तमान को सुदृढ़ बनाकर वह भविष्य पर छाया !!
लेश मात्र भी नहीं जिसे है देश प्रेम में संशय !
अंतर्वाह्य सजग रहता है कर मन में दृढ़ निश्चय !!

पशोपेश में पड़कर किंचित देश नहीं हैं बनते !
उहा पोह में सत् जीवन परिवेश नहीं हैं बनते !!
दृढ़ निश्चय अरु धैर्य प्रथा से बनते देश सुहाने !
गर्व युक्त देशों का गौरव रक्खा है जनता ने !!

देश योजना बद्ध माँगता कार्य सुरुचि सम्पादन !
सुदृढ़ नीति से ही हो सकता सत् जीवन संचालन !!
बिखरे-बिखरे अंश, कंस से राक्षस को बल देते !
सुदृढ़ एकता के आगे अति बल भी साँस न लेते !!

अगर नींव मजबूत देश की राष्ट्र भवन सजता है !
नील गगन भी उसके आगे शीष झुका लजता है !!
नींव अगर कमजोर, शोर होता है प्रति पल भय का !
बीज पनपने लगता मन में, जीवन के संशय का !!

देश--भक्ति की रामायण यदि उसके वासी पढ़ते !
उनके यत्न सफल होते हैं, स्वस्थ योजना गढ़ते !!
देश प्रेम—गाथाओं आगे झुकता जग का माथा !
संततियों के हेतु सुयश की रहती प्रतिपल गाथा !!

नियमित क्रम के कर्मबोध से— निर्मित होता यश है !
सत निष्ठा के धर्म शोध से शोभित होता यश है !!
देश--सुरक्षा सर्वोपरि होनी है प्रगति चरण में !
आत्म शक्ति के भाव चाहियें, हर मन में, हर कण में !!

सीमाओं पर प्रहरी गाने जिसके गंगा लहरी !
उसके आगे तूफानों की हिम्मत कब है ठहरी !!
एक नहीं अनगिन हैं जग में सच्ची प्रेम कहानी !
देश प्रेम की भव्य भावना, रही नहीं अनजानी !!

जड की रक्षा करते चेतन, सर्मुचित सौम्य प्रथा से !
कभी न विचलित होते किंचित जीवन भ्रान्ति व्यथा से !!
देश प्रेम से वंचित रहता जिस मानव का जीवन !
उसका धर्म, कर्म बन जाता सेवा भाव सचेतन !!

देश प्रेम के स्वाभिमान की बहती जिसमें गंगा !
कभी न सह सकता वह मानव साम्प्रदायिक दंगा !!
युग के साथ बदलते रहते रंग देश के बल के !
अमिय कलश ज्यों--ज्यों भरते हैं, त्यों-त्यों अक्सर छलके !!

उत्साहों की सजग लहर थी :

चले जवाहर लाल जिधर थे,
कोटि–कोटि जन बढ़े उधर थे,

जनोल्लास का ऐसा रेला,
जिधर देखिये अद्‌भुत मेला,

भारत आलस त्याग चुका था,
केहरी बनकर जाग चुका था,

अपनेपन का समा बंधा था,
यहाँ बँधा था, वहाँ बँधा था,

सजी हुई हर एक डगर थी !
उत्साहों की सजग लहर थी !!

कैसी दुविधा, कैसा डर रे !
जाग उठा था, नगर–नगर रे !!

देश भक्ति का प्रबल दौर था,
सुदृढ़तम हर एक छोर था,

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
उच्चारण का रहता था क्रम,

साथ--साथ ही यह था नारा–
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !

दृष्टि सभी की मंजिल पर थी !
उत्साहों की सजग लहर थी !!

अनासक्ति थी निज जीवन से,
जीवन कब था—श्रेष्ठ वतन से ?

सर्वोपरि थी आन वतन की,
यही भावना थी जन--जन की,

मिटे दासता चाह यही थी,
सर्वोत्तम द्रुत राह यही थी,

जिस पर चलते रहे फख्र से,
प्राण मचलते रहे फख्र से,

विजय कामना भरती स्वर थी !
उत्साहों की सजग लहर थी !!

नेहरू–गौरव का सत्कार :

तीव्र लगन थी आजादी की,
चेतनाओं का था विस्तार !
देख रही थी लन्दन शाही–
कदम–कदम पर उठता ज्वार !!

पूर्ण रूप से जन मानस पर–
छाया प्रति पल वीर–प्रभाव !
बहसें हुईं, हुये प्रचारित–
त्वरित जवाहर के प्रस्ताव !!

ज्यों–ज्यों रमते गये हृदय में–
नर नाहर के श्रेष्ठ विचार !
त्यों–त्यों होता रहा चतुर्दिक–
नेहरू–गौरव का सत्कार !!

योग्य विचारक, कुशल प्रणेता–
सिद्ध जवाहर लाल सुवीर !
तेज भाषणों के द्वारा थे–
रहे खींचते रुचि—तस्वीर !!

जिसमें शासन के जुल्मों का–
रहता था पूरा विस्तार !
गाँव–गाँव में कृषक मजूरों–
पर कैसे थे अत्याचार !!

सिंधु लहर के जन–प्रवाह ने–
कोटि–कोटि का देकर स्नेह !
सर्वमान्य कर दिये, जवाहर–
नेता—जेता, निःसंदेह !!

दृढ़ विचार भर दिया हृदय में–
पूर्ण रूप से हों आजाद !
झलक न हो कुछ उपनिवेश की–
रहे न किंचित भी अवसाद !!

नर्म विचारों की गुत्थी का–
डटकर देते रहे जवाब !
तत्पर होकर अंग्रेजों का–
चुकता करने हेतु हिसाब !!

यही सफलता का गुण उनका–
रहा सभी को प्रति पल मान्य !
जहाँ कहीं भी बढ़ा कारवाँ–
साथ हो लिया जन–सामान्य !!

सत्याग्रह प्रयाण :

देख रही थी डगर इन्दिरा,
गड़ा–गड़ा कर नजर इन्दिरा,
जिधर निकल जाते स्वयं सेवक,
बढ़ जाती थी उधर इन्दिरा ?

मन में नूतन सपन जगाये,
नव जीवन की लगन लगाये,
झण्डा लेकर अक्सर बोली–
भारत अब स्वतन्त्र बन जाये !

मर मिटने की आन समाए,
हिन्दुस्तानी बान समाए,
चले देश के नौजवान थे;
गाँधी का आह्वान जगाए !

जनवरी १९२८ बालचर्खा संघ की स्थापना—

गाँधी जी का मंत्र देश को-नव जीवन का था आह्वान !
अन्तरात्मा के सवाल पर उभर रहा था हिन्दुस्तान !!
अपना बोयें, अपना कातें और बुनें अपना ही सूत !
पहनें अपने वस्त्र देश में, स्वयं सिद्धि का लिये सबूत !!

इसी प्रेरणा से चर्खा था—
चलता चक्र सुदर्शन सा !
चित्र विश्व के था समक्ष तब—
भारत जीवन दर्शन का !!

नव प्रवाह था श्रम चिन्तन में—
स्वाभिमान में जान पड़ी !
बढ़ी इंदिरा महायज्ञ में—
लेकर मन में आन बड़ी !!

बच्चों को एकत्रित करके–
लिया आचरण गाँधी का !
लगा दमकने क्रान्ति विभासा–
तब जीवन–प्रण गाँधी का !!

इन्दु, बिन्दु कर्त्तव्य विधा के–
देखा करती चावों से !
चला वालचर्खा संघ प्रतिदिन–
जन–बल के सद्भावों से !!

बच्चों में बन गया रिवाज था -
तकली और अटेरन का !
लगी होड़ थी दौड़–दौड़ कर–
नक्शा बदला जीवन का !!

महिलाओं के मह यज्ञ में–
बाल–बालिका कूद पड़े !
अग्रिम कर्त्तव्यों की मुदमय–
लिये तालिका कूद पड़े !!

लाहौर कांग्रेस अधिवेशन–दिसम्बर १९२९ :

उस दिन जीवन खिला–खिला था,
जन–समाज को लक्ष्य मिला था !
रावी–तट लाहौर नगर में–
टूटा अरि का दंभ–किला था !

ऐतिहासिक अधिवेशन था वह–
काँग्रेस का नव प्रण था वह,
जब निर्णय था लेना जमकर,
स्वस्थ चिन्तनों का क्षण था वह !

स्वाभिमान की आन जवाहर,
युवा वर्ग–सम्मान जवाहर,
कार्यकारिणी ने पहचाना ;
गुण–गौरव की खान जवाहर !

जब प्रधान पद किया सुशोभित,
नगर–डगर तक थी आलोकित,
चहुं दिशि-खुशियों की फुलझड़ियाँ ;
छूट रही करती नभ–ज्योतित !

निर्णयक था यह अधिवेशन,
जनता करती थी अभिनंदन,
गाँधी, मोती लाल बहुत–खुश;
देख रहे सर सिजसा आनन !

प्रणवत उठे, जवाहर बोले,
"उठो ! दासता–बंधन खोले" !
यूरोपीय प्रभुत्व खत्म हो;
जो होना है अब वह होले !"

"उठा एशिया, आज पुकारा,
जन्म सिद्ध अधिकार हमारा,
परिवर्तन हों समाजवादी;
बहे स्वतन्त्रता की अब धारा !

राजस नियमन और प्रणाली,
उनकी निज–सीमित खुशहाली,
नहीं चाहिये इस भारत को,
आज सेठियों की दीवाली" !

"हम स्वतन्त्रता के मत वाले,
लिये अहिंसक भाव उजाले,
काँग्रेस के वीर सिपाही;
कर्मठता साँचे में ढाले !

लक्ष्य प्राप्ति ही है श्रेयस्कर,
बढ़ते रहना हमें निरन्तर,
यद्यपि हिंसा प्रवृति बुरी है;
किन्तु गुलामी उससे बदतर" !

अमिट प्रभाव पड़ा भाषण का,
नेहरू के अलबेले प्रण का,
धरा गगन ने आँका रुचि से;
चित्र समूचा था उस क्षण का !

कण-कण में उत्साह लहर थी,
शोभा बढ़ती गई नगर की,
जिसे देखिये उसके मन में,
चर्चा रही जवाहर-स्वर की !

तभी उठे, गाँधी जी बोले-
शब्द भाव स्वर हौले-हौले,
"कलकत्ता अधिवेशन निर्णय;
आज अमल की गुत्थी खोले-

"जन–जीवन से दूर क्लेश हो,
यह उद्‌बोधन युग संदेश हो,
अब स्वराज का अर्थ यही है;
पूर्ण रूप स्वाधीन देश हो !

सद प्रयास हर एक करेगा,
एक्य सूत्र–भारत उभरेगा,
घोर गुलामी का जामा यह;
देश–धरा से अब उतरेगा" !

सुनते ही उल्लास भर गया,
जन–जन में विश्वास भर गया,
कांग्रेस प्रस्ताव अनूठा,
ज्योतित नव इतिहास कर गया !

सफल हुआ अधिवेशन प्रण मय,
प्राप्तव्य का करके निश्चय,
तय की थी छब्बीस जनवरी;
मने दिवस स्वाधीन निरामय !

स्वतन्त्रता का नव प्रण धारे,
नवोल्लास युत ले उजियारे,
साथ उमंगें लिए हृदय में,
लौट चले थे प्रतिनिधि सारे !

जनवरी १९३०—माघ मेला—इलाहाबाद :

चमक रहा था गंगा घाट,
यमुना तट पर थे नव ठाठ,
संगम—तट पर इलाहाबाद में,
जन समुद्र था महा विराट !

कल्पवास की भव्य भावना,
सत्य साध की मनोकामना,
साधु संत थे पंक्ति बद्ध सब;
अक्षय वट का सजा आंगना !

ग्राम्य-नगर की रुचिमय जनता,
जिससे पर्व सुयश का मनता,
हाथी, घोड़ों की जमात में;
दीख रहा जन–सिंधु उमड़ता !

सफल धार्मिक कृत्य सुशोभन,
राष्ट्र एकता भव्य प्रयोजन,
अमिट प्रभाव लिये युग–युग से;
पुलकित करता था जन-जन-मन !

जनोद्भव का यह विश्वास,
भरे जवाहर मन—उल्लास,
गंगा माँ के पुण्य पर्व का,
देख रहा पुलकित इतिहास !

था आँखों में लक्ष्य विशाल,
देश धर्म संस्कृति की माल,
इस मेले का जो महत्व था;
समझे उसे जवाहर लाल !

वानर सेना का पुनर्गठन :

जब घर में उत्साह लहर से परिजन हों उत्साहित !
बच्चे कैसे हों न वहाँ पर पूरी तरह प्रभावित !!
देश-भक्ति की लौ निज मन में जो परिवार सहजता !
संयम, साध, धैर्य की गरिमा बारंबार सहजता !!

त्याग–राग का गीत गुंजाता जो परिवार लगन से !
स्वयं बढ़े अरु संतति बनती सहयोगी निज मन से !!
जिसके श्रेष्ठ विचारों में आ जाती है समरसता !
प्रण पूरित होते हैं उसके वह परिवार चमकता !!

इन्दिरा अद्‌भुत भाग्यवान थी, भाग्यवान थे दादा !
जिनके गुण निज स्वाभिमान के पनप रहे थे ज्यादा !!
त्वरित बुद्धि वह चतुर बालिका लगन–शीलता–प्रतिमा !
सजा रही थी बाल्यकाल से गुण–गौरव की महिमा !!

देखे प्रतिदिन आन्दोलन थे— सत्याग्रह भी देखा !
देखी थी बापू के मुख पर संकल्पों की रेखा !!
पिता और दादा दोनों से सीखा लक्ष्य पकड़ना !
सीख लिया था स्वतन्त्रता के हित में बढ़कर लड़ना !!

देखे थे नित जुल्म पुलिस के अपने घर के अन्दर !
कैसे–कैसे ले जाते थे हर सामान उठा कर !!
सुनी मुकदमों की परिणति थी, देखी क्षोभ लहर भी !
अरु देखा उत्तेजित अक्सर होता स्वयं नगर भी !!

सोचा करती—"देश–भक्ति क्या दुर्गुण है जीवन का" !
क्या सम्भव है नहीं प्रदर्शन हमको अपनेपन का !!
एक नई प्रतिभा ने कर्मठता रोपी जीवन में !
नई शक्ति का उदय हुआ था तब आनन्द भवन में !!

काँग्रेस के दफ्तर पहुंची त्वरित सदस्य बनने !
उत्साहों में संकल्पों का गुण था रोपा मन ने !!
जब पाया यह उत्तर— है वह अभी बालिका छोटी !
सोचा—हाय ! रीति-नीति यह है कैसी खोटी !!

लौट वहाँ से मन में अपने नव उत्साह जगाया !
निर्मित करके अपनी सेना चमत्कार दिखलाया !!
वानर सेना, संज्ञा समुचित दे दी थी परिजन ने !!
नया मोर्चा खोल दिया था शैशव के जीवन ने !!

चतुर और चालाक—
वीरता पूरित चाह समर की !
उभर रही थी देख-देख कर—
हालत अपने घर की !!

बड़े, बड़े थे देश काज के—
हित नित चिन्तन में !
फिर क्यों अति उत्साह न जगता—
छोटों के भी मन में !!

आन्दोलन था जन आन्दोलन तब—
धरा, धाम के हित में !
यही धारणा लिये इन्दिरा—
बढ़ती थी नित चित में !!

स्वयं सेवकों की वर्दी में—
सजता कोमल तन था !
पुलकित जिसको देख–देख कर—
नित आनन्द भवन था !!

कुर्ता अरु पाजामा टोपी—
धवल वसन ये तन पर !
डाला करते स्वयं सिद्धि का—
ही प्रभाव थे मन पर !!

अति उत्साहित लड़का बनकर—
नेहरू जी की लड़की !
मिटा रही थी अविश्वास की—
नव युवकों में कडकी !!

वानर सेना का संचालन—
रखकर अपने कर में !
तौर तरीके बतलाती थी—
जा करके घर–घर में !!

मन में लगन, मगन मन साहस बढ़ता जाता हर पल !
तोड़ रही थी वानर सेना पुलिस दलों के छल–बल !!
काँग्रेस की अग्रिम पंक्ति सिद्ध हुई थी हर क्षण !
जिधर गई तो हुये प्रभावित देख–देख कर जन–गण !!

गुप्त सूचना कर एकत्रित रखना नित्य नियम था !
निर्धन जन, बीमारों अरु महिला–दल–सेवा–क्रम था !!
सुलझाई थी कई समस्या काँग्रेस की प्रतिदिन !
क्या करना अरु कैसे करना साध लिये क्रम गिन, गिन !!

पीछे रहना कब रुचिकर था– आगे बढ़ना क्रम था !
अक्सर बढ़कर सत्ता दल का तोड़ा जी भर भ्रम था !!
तीव्र बुद्धि की हुई परीक्षा कई बार थी घर में !
सब ने पाया विश्वासों का प्रचुर भाव था स्वर में !!

वह ऐतिहासिक कार्य किया था जिसमें अद्‌भुत लेखा !
नेहरू, गाँधी सबने ही था बड़े ध्यान से देखा !!

गाँधी जी की आशीषों की–
छाँव तले नव जीवन !
उठा रहा था युग का झण्डा–
सन्नद्ध होकर प्रति क्षण !!

सुभाष चन्द्र बोस :

नवोद्‌भव के साथ-साथ है चक्र समय का चलता !
सुदृढ़ विचारों का मानव ही व्रत साँचे में ढलता !!
होनहार बिरवान, रंगमय रुचि उमंग से भरता !
उत्साहों के आँगन में प्रण, समयानुकूल निखरता !!

प्राणवान विश्वास, सुमन मन जब—जब पाते अवसर !
जन सेवा सिद्धान्त धार कर लेते जन्म धरा पर !!
नर सुभाष ऐसे ही थे इतिहास पुरुष युग व्रत में !
जन्मे थे बंगाल धरा पर पुण्य प्रभा सायत में !!

बचपन में शिक्षा के अनुभव मे सब कुछ था सीखा !
किन्तु एक दुर्गुण समाज में बहुत बड़ा था दीखा !!
उच्च कोटि परिवार घराना इनका अपना घर था !
किन्तु रूढ़िवादी लोगों से प्रगति मार्ग पर डर था !!

एक दिवस इस भेद–भाव की देखी चौड़ी खाई !
ऊँच–नीच का चित्र साफ था प्रतिपल पड़ा दिखाई !!
भरी ग्लानि निज मन में ऐसी घृणा हुई उस पथ से !
जो कि हुआ आतंकित था नित स्वार्थ–साधना मत से !!

मानवता की मूर्ति विखंडित दीखी थी हर पल क्षण !
कष्ट सदा पहुंचाता रहता घृणित भावना विवरण !!
यह कैसी रे ! विडम्बना किसका है इससे उद्‍भव !
कदम–कदम पर लक्षित होता रहता नित्य पराभव !!

धर्म भीरु जनता का जमकर लाभ उठाते वे सब !
लिये देश को चले रसातल जिन सबके ही करतब !!
जब तक टूटे नहीं भयंकर भेद–भाव दीवारें !
जब तक ढहती नहीं अहं की ऊँची ये मीनारें !!

जब तक मानव सुखी न हो पायेगा किंचित जग में !
शंका अरु संदेह जमे पायेंगे हर इक दृग में !!
उठा नया तूफान हृदय में, बचपन हुआ चुटैला !
इस दुर्गुण के कारण ही था माँ का आँचल मैला !!

इससे मिले शीघ्र छुटकारा प्रण था साधा मन में !
जैसे भी हो यह कलंक मिट जाये शीघ्र वतन से !!
इसने दुर्बल किया देश है हाय ! निरन्तर सारा !
अंधकार ही अंधकार है इसने रोज प्रसारा !!

गये सुभाष हिमालय :

मिला क्रान्ति आह्वान ज्ञान की गरिमा युक्त लगन से !
लिया बहुत कुछ सीख, स्वयं के अनुभवयुत जीवन से !!
शान्ति त्याग अरु सहिष्णुता का पाने को सद् परिचय !
तज कौटुम्बिक सीमाओं को गये सुभाष हिमालय !!

जात-पाँत अरु भेद भाव का अखर रहा था ताँडव !
आँक चुके थे जन समाज में सद्वृत्ति ज्ञान पराभव !!
किन्तु न वनश्री दे पायी थी सुख कुछ क्लान्त हृदय को !
लौट चले थे लिये हृदय में दुखदायी संशय को !!

पुनः जुटे अध्ययन किया लग कर दिन रात समय से !
स्वाध्याय ने अलग कर दिया था उनको संशय से !!
अपने पन का गर्व दिखाया अध्यापक को तब था !
अंग्रेजों का घोर दबदबा हावी पूरा जब था !!

क्या होते हैं हिन्दुस्तानी दिया उसे था परिचय !
और देश की आजादी का समझाया था आशय !!
सिंधु लाँघ कर गये विलायत जमकर शिक्षा पाई !
साथ-साथ ही आन्दोलन की समझी थी गहराई !!

आई. सी. एस. वृति ठुकराकर देश धर्म को पाला !
प्रगति मार्ग की ओर बढ़ा पग देखा नया उजाला !!
गाँधी जी के असहयोग की क्रान्ति निहारी ,पल-पल !
विकसित होते रहे हृदय में भावनाओं के परिमल !!

यश गरिमा को अक्षुण रख कर अपनापन था साधा !
आजादी के लिये युद्ध का लक्ष्य निरंतर बाँधा !!
आग उगलते भाषण पावन कर्म धार कर संयत !
प्रकट किया करते थे हर दिन देश हितों के अभिमत !!

थे सदस्य जब कांग्रेस के कार्य क़िया नित मन से !
सोते जगते, हर पल, हर क्षण रहता प्यार वतन से !!
बंधन में जकड़े भारत की दीन दशा के मारे !
धूल धूसरित लगते थे तब अपने सपने सारे !!

सुख सुविधा त्यागी अनुरागी बन कर दृढ़ निश्चय का !
लगा संजोने स्वप्न देश की गौरव पूर्ण विजय का !!
नर सुभाष विश्वास बन गया भारत भर का !
वचनामृत बन गया देश को उसके स्वर का !!

निष्प्राणों में प्राण भर

सब कुछ छोड़, होड़ जीवन में लगी हुई थी त्याग की,
भरी प्रेरणा कदम–कदम पर जन–सेवा–अनुराग की,
सत्य अहिंसा मंत्र दिया था एक अमर विश्वास से;
किया सभी को ही अवगत था उस युग के इतिहास से!

निज मन में अरमान भर,
ध्वज को ऊँचा तान कर,
चले देश के नौजवान थे;
गाँधी के आह्वान पर !

संयम, स्वस्थ चेतनाओं का करने बड़े प्रचार थे,
इनकलाब के नारे ऊँचे होते बारम्बार थे,
गौरव रख कर बढ़े देश का मन में नव उत्साह से,
जोड़ दिये अध्याय, ध्येय के मर–मिटने की चाह से !

निष्प्राणों में प्राण भर,
हावी थे तूफान पर,
चले देश के नौजवान थे;
गाँधी के आह्वान पर !

तजकर गहने, खादी पहने बहनें भी थीं साथ में,
लहराता था प्यारा झण्डा उच्च गगन तक हाथ में,
किसका कैसा डर, ऊँचा स्वर, दिशा–दिशा पर छा गया;
गोरी सत्ता का सैनिक दल, लख सकते में आ गया !

मोहित झण्डा गान पर,
प्यारे हिन्दुस्तान पर,
चले देश के नौजवान थे,
गाँधी के आह्वान पर !

समाचार पत्रों की भूमिका :

अब एक नया युग ले आएँ ?

मन में नव विश्वास भरे,
शब्द भाव निखरे, निखरे,
अद्भुत चेतनता साहस की;
नई प्रेरणा रुचि सँवरे;

वे सचमुच स्वत्व उभार रहे,
जो पूर्ण स्वतन्त्र विचार रहे,
थी पत्रकारिता चमक उठी;
नित नये उगल अंगार रहे,

उपनिवेशवाद का अन्त करें,
तब पुत्र धरा के कहलाएँ!

अब एक नया युग ले आएँ!

जो जिये खुशामद के बल पर,
गिर पड़े चन्द डग ही चल कर,
अरु रहे सिसकते यहाँ नित्य;
जो पिये शासनामृत पल कर!

पर स्वाभिमान के मन्त्र भरे,
जो यत्र, तत्र सर्वत्र हरे,
दे रहे प्रेरणा बढ़ने की;
शुचि, रुचि भावों से पत्र भरे,

निज गौरव की रक्षा में अब,
हर एक कदम बढ़ते जाएँ!

अब एक नया युग ले आएँ!!

सरकार विदेशी सहन नहीं,
पल भर कर सकते वहन नहीं,
अब स्वयंसिद्धि, आजादी का—
टूटेगा अपना वचन नहीं,

इस भारत के नर पत्रकार,
हैं आत्मजयी, बल बेशुमार,
निर्भीक शक्ति का साध बढ़ें;
लाएँ जन—जीवन में निखार,

हैं हिन्दू–मुस्लिम एक सभी,
इस दुनिया को हम दिखलाएँ !

अब एक नया युग ले आएँ !!

नित नई मुसीबत ठेल–ठेल,
अरु अंगारों से खेल–खेल,
जिनको थी प्यारी देश–भक्ति;
वे खूब सजाते रहे जेल,

करते थे रुचि से आत्म शोध,
चलते थे लेकर आत्म बोध,
झेला था बढ़–बढ़ कर सदैव;
शासन की कटुता और क्रोध,

जब बाँध कफन सिर निकल पड़ें,
फिर कहाँ किसी का भय खाएँ !

अब एक नया युग ले आएँ !!

जनता के इन उत्साहों पर :

मिटने को आतुर चाहों पर,
रुकते न कदम थे राहों पर,
थे संकल्पों के फूल खिले;
जनता के इन उत्साहों पर !

जिस ओर कारवाँ गाँधी का चल पड़ा, हजारों वीर चले,
मन मगन, लगन से लिखने को इस भारत की तकदीर चले,
उठ करके वीर किसान चले, हर घर से कई जवान चले;
आँखों में लेकर एक नया स्वर्णिम सा हिन्दुस्तान चले,

उन मन के शहँशाहों पर,
थी मार पड़ी चौराहों पर !
थे संकल्पों के फूल खिले,
जनता के इन उत्साहों पर !

नित बहिष्कार के नारे से, घर अरु द्वार जगाते थे,
यह बाढ़ देख संघर्षों की कई एक विदेशी आते थे,
जत्थे पर जत्थे गिरफ्तार होते थे खुद नित हँस–हँस कर,
अरु समय कसौटी खरा उन्हें बतलाती थी नित कस–कसकर,

बढ़ते थे नेक सलाहों पर,
नजरें थीं दीन कराहों पर,
थे संकल्पों के फूल खिले,
जनता के इन उत्साहों पर !

जो चाटुकार थे छुप–छुप कर अपना व्यापार चलाते थे,
इस महापाप के खड्डे में गिरते भी नहीं लजाते थे,
नित लूटी दौलत जनता से, अरु सिंधु पार थे भेज रहे,
शाबासी देते नित्य उन्हें उनके आका अंग्रेज रहे,

पर्दा था पड़ा गुनाहों पर,
पर पोल खुली चौराहों पर,
थे संकल्पों के फूल खिले,
जनता के इन उत्साहों पर !

आत्म शक्तियुत भव्य तपस्या :

समय आ गया महात्याग का, देश स्वतन्त्र कराने को,
बढ़–चढ़ कर चलते रहे वीर थे, निज बलिदान चढ़ाने को,
थी हुई शराब की भंग महफिलें, दुर्गुण से नर दूर हुये,
वे हेय समझने लगे सभी थे, पीने और पिलाने को !

किया त्याग था यहाँ राम ने–
राज—पाट सब छोड़ा !
निस्पृह अरु निश्चिंत भाव से–
वन को रुख था मोड़ा !!

त्याग दिये सुख वैभव सारे–
कष्ट भरा पथ पकड़ा !
पथ प्रशस्त कर चले स्वयं का–
स्वयं सिद्धि रथ पकड़ा !!

पत्नी सीता रमी त्याग में–
डोली जंगल—जंगल !
प्रखर भव्य रुचि बन कर प्रण की–
साथ रही थी प्रति पल !!

बन्धु लखन ने प्रणवत रह कर–
सौख्य तजा जीवन का !
महा त्याग की मूर्ति उर्मिला–
साथ दिया पति—मन का !!

त्याग–राग की ही महिमा से–
ये सब नाम अमर हैं !
राम– नाम के साथ जुड़े–
भारत—जीवन के स्वर हैं !!

एक अमित आनंद राम में–
राम हृदय में सबके !
युग बदलेंगे पर प्रभाव–
निश्चित जीवन करतब के !!

त्याग—राग—महिमा से मंडित–
बुद्ध बन गये गौतम !
आत्म-शक्तियुत भव्य तपस्या का–
फल पाया अनुपम !!

ज्ञान प्राप्ति के लिये सभी कुछ—
त्याग दिया जीवन में !
नव प्रकाश की किरण अन्ततः—
फूटी उनके मन में !!

विश्व विजय करके दिखलाया—
धर्म क्षेत्र पर छाये !
सत्य अहिंसा व्रत सत् पथ के—
लक्ष्य नये दिखलाये !!

महावीर भगवान आन पर—
रहे त्याग की कायम !
दूर किये दुखिता जनता के—
शान्ति विधा से मति भ्रम !!

त्याग, समर–उन्माद अशोक नृप—
प्रिय सम्राट बने थे !
विश्व शान्ति निर्माण भाव के—
वृक्ष विराट वने थे !!

जन हितार्थ त्यागा जीवन को—
ईसा ने हंस—हंस कर !
खूब परीक्षण किया समय ने—
भाव कसौटी कस कर !!

महान तीर्थ प्रयाग त्याग का–
देता यही निमंत्रण !
बिना त्याग के राग न समझे–
जनता जन साधारण !!

भारत की संस्कृति में इसका–
मूल्य बड़ा है कवि रे !
त्याग भरा है मृदुल चंद्रमा–
त्याग भरा है रवि रे !!

दोनों देते हैं प्रकाश शुचि–
शीतल, ज्वाल किरण से !
जुड़ी रही है भव्य भावना–
सदा त्याग के प्रण से !!

और धरा उर्वरा सदा ही–
सब कुछ जग को देती !
निरुपमा है उपादेयता–
बदले में क्या लेती ??

गगन, मगन मन भरता आँचल–
धरती का निज रुचि से !
बन्धा त्याग का कर्म–धर्म से–
और—चाव व्रत शुचि से !!

प्रिय भारत की है महानता–
त्याग भावना—कारण !
हर मौसम की पृष्ठभूमि में–
लिखा त्याग का विवरण !!

शंकर, अभयंकर त्यागी ने–
शोभित किया हिमालय !
ज्योतिर्मय, जीवन–महिमा व्रत–
स्वयं सिद्धि का परिचय !!

सिंधु मथा था गया यहाँ जब–
रत्न अनेक पड़े थे !
जो समर्थ अरु चाहवान थे–
लेने को उमड़े थे !!

ललक–झलक में देख सभी तो–
लालायित थे बढ़कर !
प्राप्तव्य की चाव—नाव में–
पहुंचे थे सब चढ़कर !!

लेकिन जब विष कलश सामने–
आया तो सब चौंके !
कौन करे साहस पीने का–
शुचि अमृत को खो के !!

अमृत अरु रत्नों के प्रति थी—
त्वरित चेष्टा मन से !
किन्तु भयंकर ताप मिटाये—
बढ़ कर कौन भुवन से !!

अमृत पायी ! अमृत पायी—
शेष न चिंता भव की !
है अद्‌भुत सी दशा कथा यह—
देवों के कलरव की !!

हाँ जिसमें थी ताब आब थी—
प्रणव्रत जिसके मन में !
अनासक्ति अरु महात्याग—
आदर्श रहा जीवन में !!

किंचित भी न रहा आकर्षण—
सुख वैभव से जग में !
जन हित ही आदर्श, हर्ष था—
जिसके प्रणव्रत दृग में !!

उसने देखा महाताप की—
शंका से जग डोला !
उठा आत्मजित ओजस्वी स्वर—
और हृदय से बोला !!

"लाओ यह विष, यह साहस तो–
केवल है शंकर में" !
चमक उठी थीं दसों दिशायें–
दिव्य भाव लख स्वर में !!

बढ़कर साहस युत शंकर ने–
जब विषपान किया था !
नीलकंठ हो गये स्वयं–
जग को वरदान दिया था !!

आत्मसात कर लिया जहर था–
जगतीतल का हंस कर !
हुये अमर शंकर अभयंकर–
जन–जन के मन बस कर !!

गाँधी ने जन सेवा के हित–
छोड़ी सुख सुविधा थी !
व्यथित हृदय की दशा देखकर–
हारी स्ययं व्यथा थी !!

केवल लकुटी और लंगोटी–
के बल पर जग जीता !
गाँधी होता कैसे गाँधी–
विष न अगर वह पीता !!

और जवाहर नर नाहर ने–
त्यागे थे सुख वैभव !
यदि न त्यागमय होता जीवन–
क्या उन्नति थी संभव ??

उस युग के सब ही नेता थे–
त्याग मूर्ति अरु सच्चे !
इस कारण ही कहीं न उतरे–
इम्तिहान में कच्चे !!

लक्ष्य यही था कटें देश के–
बंधन सब सुख पावें !
स्वाभिमान युत सुदृढ़ भावमय–
भारत नया बनावें !!

किन्तु, आज तो प्राप्तव्य की–
ऐसी होड़ लगी है !
मानवता ही मानव–मन का–
आँगन छोड़ भगी है !!

काश ! पुरातन त्याग भरा–
इतिहास पढ़ें अरु जानें !
कैसे बढ़ कर रहे त्यागमय–
भारत के दीवाने !!

गांधी के मन का उत्साह

जागृति के वे नूतन पृष्ठ,
करते सुस्थितियाँ स्पष्ट,
बोल रहे थे अपने आप,
जनता सहती कितने कष्ट !

हाय ! विमुक्षित वह बंगाल,
ताँडव सा युग का भूचाल,
रोम—रोम में बन कर दर्द,
करता था जीवन बेहाल !

जुल्मों की थी नई किताब,
जिनमें अंकित रहा हिसाब,
कहती थी देखो रे, हाय !
कसा शिकंजे में पंजाब !

रचतीं थीं लंदन की चाल,
कहीं भुखमरी, कहीं अकाल,
संकल्पों की नई घड़ी को,
कोई न सकता था तब टाल !

काँग्रेस ने छू मन-छोर,
अधिवेशन रक्खा लाहौर,
रावी का तट दृढ़ प्रतिज्ञ सा;
देख रहा था क्षमता और !

गाँधी के मन का उत्साह,
भाँप रहा था युग की चाह,
मुक्ति हेतु नव संकल्पों की;
नई खोजनी होगी राह !

अधिवेशन का रूप विशाल,
जिसमें सजे जवाहर लाल,
गर्वोन्नित मस्तक अध्यक्ष;
बनकर करते रहे कमाल !

प्राप्त किया सबका था स्नेह,
बनकर जीवन–ज्योति–विदेह,
अरु योग्यता में भी उनकी;
नहीं किसी को था सन्देह !

आँखों में था हिन्दुस्तान,
पूर्ण समस्या हेतु निदान,
जन–भावों से थे अभिभूत;
कर्त्तव्यों का रख कर ज्ञान !

रख कर निज अनुकूल स्वभाव,
गाँधी जी का था प्रस्ताव,
तत्परता के साथ स्वमेव,
झलका था ओजस्वी भाव !

स्वत्व कामना–भाव नवीन,
भारत शीघ्र बने स्वाधीन,
दृढ़ शब्दों का यह प्रस्ताव;
दिखा रहा रुख सर्वांगीण !

उन्नति के नूतन आदर्श
शुभ संकल्पों के उत्कर्ष,
अपनी जनता के लक्ष्यों में;
देख रहा था भारतवर्ष !

पूर्ण मुक्ति प्रस्ताव प्रवीण,
अपना घर अपने आधीन,
सभी ओर से सहमति पाकर;
देख रहा युग अर्वाचीन !

सफल चेतना का संयोग,
आत्म शक्ति का सदुपयोग,
शुभारंभ था यह नव युग का;
मुदित मना झूमे सब लोग !

नई आस की नई किरण,
देख रही थी वह विवरण,
जो प्रतिनिधियों के चेहरों पर;
उभर रहा था क्षण प्रति क्षण !

गाँधी जी का नव आह्वान,
स्वाभिमान का उन्नत गान,
शुभ संकल्पों की वेला में;
बढ़ा जवाहर का सम्मान !

अवगत होकर सारा देश,
भेज रहा था शुभ सन्देश,
भारत माता शीघ्र मुक्त हो;
शीघ्र मिटे जन-जन का क्लेश !

बदले अब भारत इतिहास,
इसका सबको था विश्वास,
शुभाकांक्षा का यह सूर्य;
चहुंदिशि करता रहा प्रकाश !

देख रहे थे लाखों व्यक्ति,
भारत के निर्णय की शक्ति,
सजग देश के प्रति सब लोग;
जगा चुके थे अनुपम भक्ति !

सन्तोषों की नई लहर,
दिखा रही थी नई डगर,
जिस पर चल कर अपना देश;
पाये सुख-सम्मान प्रखर !

सविनय आन्दोलन—नमक सत्याग्रह ६ अप्रेल १६३० :

गाँधी जी चिंतिथ थे हरपल,
युग की नई लहर से !
पूर्ण मुक्ति प्रस्ताव कराया—
पास एक ही स्वर से !

चौंक उठा था शासन, भाषण—
सुनकर गाँधीं जी का !
भाव भंगिमायुक्त मंत्र नव—
गुण कर गाँधीं जी का !!

पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति हेतु—
आन्दोलन पर आन्दोलन !
सजा रहे थे भारत माँ की—
भावनाओं का आँगन !!

यद्यपि थे आन्दोलन द्रुततर–
पर प्रभाव अति कम था !
लंदन शाही के सपनों में–
उभर रहा नव भ्रम था !

और अधिक शासन का पंजा–
कसता था जनता पर !
नई यंत्रणा ने रुख बदला–
जनता–हित बतला कर !!

पग–पग दृढ़ता का परिचय थे–
देते वीर यहाँ के !
जिनके मस्तक पर युग–वृत ने–
स्वाभिमान गुण आँके !!

सोच लिया था रंच मात्र भी–
प्रण से कहीं न टलना !
चूँकि देश आजाद कराना–
ध्येय संभाले चलना !!

गाँधी जी यह जान चुके थे–
भारत पूर्ण सजग है !
सोच समझ कर ही लड़ने को–
उठता अगला पग है !!

क्रान्तिकारियों ने भी तो थी–
किंचित कसर न छोड़ी !
क्रूर विदेशी सत्ता की क्षमता थी–
पग–पग तोड़ी !!

यद्यपि वह हिंसक धारा, थी कंपन लिये हुये नव !
किंतु देश स्वाधीन कराने को सब कुछ था संभव !!

कहीं–कहीं तो खुफिया–वृत–
दुविधा से जोड़ दिया था !
और पुलिस के हर गुमान का–
घेरा तोड़ दिया था !!

अंग्रेजों को बनी क्रान्ति थी–
पग–पग तेग दुधारी !
लगा चुके प्राणों की बाजी थे–
सब क्रान्ति पुजारी !!

किन्तु हृदय गाँधी जी का था–
विनय शीलता पथ पर !
हर विचार को दिया, क्रियात्मक–
रूप खूब ही मथ कर !!

उन्हें अहिंसा ही प्यारी थी–
प्रण था साधा जम कर !
रहे अन्त तक डटे स्वयं वे–
अपने इसी नियम पर !!

किन्तु क्रान्ति जब आती अपना–
लक्ष्य करे निर्धारित !
बन्द छुड़ाने हेतु देश के–
पग थे ये न्यायोचित !!

नमक विधा जनजीवन रुचि थी हर साधारण जन की !
क्यों न विषय आन्दोलन का हो, बात लगी यह मन की !!

तोड़ बढ़ें एकाधिकार को,
सरकारी अमले के !
हों कुछ भी परिणाम भले ही–
इसी नये हमले के !!

नेहरू जी ने सुना तो चौंके–
"इसका क्या मतलब है ?
निश्चय ही इसमें बापू का–
कोई नव करतब है !!

वर्ना क्या सम्बन्ध नमक का–
स्वतन्त्रता की धुन से !
किन्तु कौन था पूरा परिचित–
गाँधी गौरव—गुण से !!

गाँधी जी ने वायसराय को–
सूचित किया समय से !
काँप उठी थी शासन–सत्ता–
कुछ संभावित भय से !!

आन्दोलन की गंध चतुर्दिक–
अवगत दिशा–दिशा थी !
गाँधी जी के संकल्पों ने–
बाँधी तीव्र हवा थी !!

उपयोगी है नमक सभी को–
बने न क्यों फिर घर में !
ललक नई कानून–भंग की–
उभरी गाँधी–स्वर मे !!

साबरमती आश्रम से डाँडी प्रयाण :

नवल प्रभा के साथ उगा था, उस दिन सूर्य सुहाना !
नव विशेष पग-क्रम, भ्रम तज कर दिशा–दिशा ने जाना !!
किरण–किरण ने विवरण आँका उठती हुई लगन का !
स्वर था गुँजित हुआ गगन तक रुचि के प्रिय भजन का !!

"वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणें रे !"
गाँधी जी की यही प्रार्थना, बल थी अगले क्रम का !!
नित्य नियम, आराधन चेतन करता पुलकित श्रम था !
श्रेष्ठ आत्मिक बल मिलता था पुण्य प्रभा के कारण !!
और निकट आते रहते थे मिलजुल जन साधारण !

कृषकाय महर्षि चले

तट बना संकल्प व्रत का–
केंन्द्र प्रिय साबरमती का !
रूप अनुपम था सजा–
उस रोज प्यारी भारती का !!

कृष काय महर्षि चले मगन मन, जन-जन बल था साथ में !
पाँवों में थी विद्यु शक्ति नव, और लकुटिया हाथ में !!

आँखों में नव चमक दमक थी, कशिश खुरदरे गात में !
शुभारम्भ था नव प्रयाण का एक अनूठे प्रात में !
साथ साथ अठहत्तर अनुयायी–विषपायी सब धीर थे !!
तोड़ चले संकल्प शक्ति से दुविधा की जंजीर थे !

लहरें ठहरें पर न कदम ठहरे देखे थे वक्त ने !!
दृढ़ निश्चय के और चाव गहरे देखे थे वक्त ने !
शान्त और गम्भीर आत्मा श्री महात्मा संत को !!
बढ़े चले सब छाया में थे, संकल्पों के वृंत की !

साथ–साथ ही सदा रामधुन–क्रम चलता था मार्ग में !
ज्यों–ज्यों बढ़ते कदम शक्ति बल नव पलता था मार्ग में !!
आँधी या तूफान बिजलियाँ तोड़ न पाई आन को !
इसी आन ने नया मार्ग दिखलाया हिन्दुस्तान को !!

ग्रामीणों के दल के दल थे श्रद्धा नत सब आ मिले !
बढ़ते जाते बारी–बारी सत्याग्रह के काफिले !!
जहां–जहाँ पग पड़े वहीं पर उत्साहों की धूम थी !
उल्लासो की छवि, ग्रामीणों–चरवाहों की धूम थी !!

पुष्प बरसते रहे राह में, शीतल जल प्रतिमान था !
स्वतः तरंगित जन जीवन मे यह आन्दोलन जान था !!
लम्बी दूरी मील सैंकड़ों चलते थके न राह में !
लोग सहस्रो हुये सम्मिलित डांडी इस उत्साह मे !!

सत्याग्रह दल लिये आत्मिक बल था पावन नाम पर !
मर मिटने का प्रण साधे था गाँधी जी के नाम पर !!
पूर्ण हुई अन्ततः यात्रा सिंधु निकट थे आ गये !
तीन हफ्ते पश्चात् छोर थे स्वयं लक्ष का पा गये !!

सत्याग्रहियों के इस दल की शोभा अनुपम भव्य थी !
सृष्टि स्वयं भी रही देखती मानव का कर्त्तव्य थी !!
किंचित भी थी थकन नहीं, हर चेहरे पर उल्लास नया !
नर–नारी अरु बाल वृद्ध ने रचा यहाँ इतिहास नया !!

जिधर बढ़े पग, भरी प्रेरणा धरती माँ के कण कण में !
खरे उतरते रहे सभी जन, युग के नये परीक्षण में !!
रग–रग में स्फूर्ति नई थी, ग्रामीणों में ओज था !
गाँधी जी के निज प्रभाव का साया बढ़ता रोज था !!

पाँच अप्रेल की रात पहुंच कर अरब सिन्धु पर आ गये !
हुई प्रार्थना अरु आगामी क्षण आँखों में छा गये !!
जन समूह रम गया भक्ति मय स्वर गूँजा था शान से !
क्षिति की लाली संपर्कित थी लोहे के इन्सान से !!

मुदित मना, शुचि कण्ठ सहस्रों लीन प्रार्थना शक्ति से !
तरु लतिकायें दायें, बायें देख रहे प्रभु भक्ति से !!
नया शक्ति संचार प्राप्त था गाँधी जी को शाम को !
अगला कदम उठाने को थे, लेकर प्रभु के नाम को !!

वर्ष गाँठ पहले सत्याग्रह की निश्चित छः अप्रैल को !
जिस दिन भारत ने था पकड़ा कस कर यहाँ नकेल को !!
संयम साधे, बंधे लक्ष्य से, अनुभव युक्त अनेक थे !
कल प्रातः ही नमक बने, संकल्प लिये सब एक थे !!

जब उगी किरण, उठ गये चरण—
नर सभी लक्ष्य की ओर बढ़े !
लख ज्योति रूप, अनुपम स्वरूप—
नारी दल ने गीत पढ़े !!

शुचि सागर तट, चट पट, चटपट—
था बढ़ी भीड़ से घिरा, घिरा !
गाँधी की गरिमा महिमायुत—
संकल्प रहा सवँरा, सवँरा !!

थे यद्यपि नमक न खाते वे—
अदभुत यह व्रत था साध लिया !
उद्भव नैसर्गिक चावों का—
सदभावो से था बाँध लिया !!

गौरवमय चिंतन गाँधी का

कर दिया यज्ञ आरम्भ त्वरित, पानी से नमक बनाने का !
कानून तोड़ने का बढ़ कर अरु कुछ कर के दिखलाने का !!
वह नई सुबह थी देख रही गौरव मय चिन्तन गाँधी का !
था खिला कमल सा पुलकित शोभित तब मन आँगन गाँधी का!!

यह गौरवमय वह निश्चय था तत्पर जो भाग्य पलटने को !
आतुर से दीखे थे स्वमेव, भारत के बन्धन कटने को !!

चुटकी भर नमक प्रतीक बना–
थे बढ़े सहस्रों हाथ तभी !
करती थी झुक–झुक कर प्रणाम–
रवि किरणें भी थी साथ भी !!

था महाकार्य स्वीकार्य हुआ–
नभ मंडल देख प्रसन्न हुआ !
गाँधी ने बाँधी सृष्टि प्रथा–
नर वैभव क्रान्ति प्रपन्न हुआ !!

था तोड़ दिया वह दंभ–दुर्ग–
जो प्रति पल भय दिखलाता था !!
आँतकवाद की भाषा में–
कानून प्रथा सिखलाना था !!

हतप्रभ था शासन, अरु विचलित–
सारा सरकारी तंत्र हुआ !
ऋतु पाखी सुनकर चहक उठा–
पूरा गाँधी का मंत्र हुआ !!

स्वर गाँव-गाँव में पहुँच गया

हर ओर नमक आन्दोलन था,
हिल गई कुर्सियाँ शासन की !
थी और अधिक तीखी भाषा—
तब नेहरू जी के भाषण की !!

अपमान लगा यह शासन को—
थी पहुंची चोट खजाने को !
स्वर गाँव-गाँव में पहुंच गया—
सब तत्पर नमक बनाने को !!

असहयोग का क्रम द्रुततर—
सरकारी हुक्म अमान्य रहे !
था आशय प्रकटा जनता पर—
निज स्वत्वों का प्राधान्य रहे !!

स्वाधीन बनें हम भारत में–
जीवन में सुख के सुमन खिलें !
जन–गण–मन उज्ज्वल भाव सजें–
सुविधाओं के अब चमन लिलें !!

उद्दीप्त भावना फैल गई, सत्याग्रह ज्वार प्रबलतम था !
शासन ने फिर से गिरफ्तार करने का बाँधा नव क्रम था !!
था उग्र बना वह दमन चक्र–जिसका हर क्षण आतंक भरा !
लख जिसे विश्व जन–मानस में था दर्द नया उभरा, उभरा !!

पर सत्याग्रहियों के दल किंचित नहीं कहीं भी डरते थे !
हर रोज नया उत्साह लिये, जेलों को जाकर भरते थे !!

जिंदगी चल पड़ी .

चल पड़ी थी जमीं, आस्माँ चल पड़ा !
राह पकड़ी नयी, कारवाँ चल पड़ा !!
चल पड़े हर दिशा से हजारो मनुज !
इस तरह से कि सारा जहाँ चल पड़ा !!

जिन्दगी चल पड़ी रौशनी के लिये !
साध लेकर नई, हर जवाँ चल पड़ा !!
थी नमक की ललक, हर किसी को लगी!
जो जहाँ से मिला, वह वहाँ चल पड़ा !!

सबसे आगे रहे साथ बापू निडर !
हर कोई था मगन पासबाँ चल पड़ा !
एक कम उम्र बच्चा मिला राह में !
हिन्द का साथ लेकर निशाँ चल पड़ा !!

कौन 'बेकल' वहाँ रह सका देखता !
जबकि उत्साह से बागबाँ चल पड़ा !!

देखा था जग ने चमत्कार :

वह क्षीणकाय अधनग्न वेश,
जिसके था पीछे पूर्ण देश,
उपजी थी अद्‌भुत आत्म शक्ति,
उन्नत स्वभाव अरु देश भक्ति,

दृढ़ता से करता था विचार !
देखा था जग ने चमत्कार !!

आँखों की जगमग सौम्य ज्योति,
प्रणमय रुचि से थी ओत-प्रोत,
इंगित पर उसके जन समस्त,
करते दुविधा को अस्त व्यस्त,

लाकर संकल्पों में निखार !
देखा था जग ने चमत्कार !!

पथ का था केवल लक्ष्य एक,
जिस पर आकर्षित नर प्रत्येक,
रखता था मन में आन-बान,
रक्षित हो अपना स्वाभिमान !

करता था हर कोई प्रचार !
देखा था जग ने चमत्कार !!

चल पड़े :

चल पड़े देश के दीवाने !

कुछ इस थाने, कुछ उस थाने,
सहयोग दिया कुल जनता ने,
निज आत्म शक्ति गुण दिखलाने;

चल पड़े देश के दीवाने !

हथकड़ी, बेड़ियों का डर क्या,
था देश धर्म से ऊपर क्या ?
सह चुके बहुत बदनामी को,
भारत में घोर गुलामी को !

दिशि–दिशि में था उत्साह नया,
भर दिये प्राण रुचि सविता ने !

चल पड़े देश के दीवाने !

क्या चिंता अरि के डंडे की,
जय बोल तिरंगे झंडे की,
थी एक यही धुन कदम–कदम,
जो तोड़ रही थी उनका भ्रम !

जो किये जा रहे थे प्रतिपल,
नित नये जुल्म तब मन माने !

चल पड़े देश के दीवाने !

उठ चले कृपक, मजदूर चले,
स्वाधीन भावना चूर चले,
जन क्रान्ति नया डग भरती थी,
हर ओर उजाला करती थी !
जय घोप लिये, उदघोष यही,
भर चुके सब्र के पैमाने !

चल पड़े देश के दीवाने !
जय गाँधी वीर जवाहर की,
हर एक केहरी, नाहर की,
हर ओर नया नित ज्वार बढ़ा,
निज संकल्पों से प्यार बढ़ा !
बिन त्याग नहीं कुछ संभव है,
था सोच लिया हर नेता ने !
चल पड़े देश के दीवाने !!

हिल गई चूल थी शासन की :

सविनय आन्दोलन सफल हुआ,
शासन का डण्डा विफल हुआ,
जो निश्चय था तब बापू का;
हर ओर उसी पर अमल हुआ !

हर नीति स्वयं निर्धारित की,
अरु कॉंग्रेस में पारित की,
संगठन तरीका नेहरू का;
नव क्रान्ति लहर लाभान्वित थी !

नित जोश भर दिया निष्ठा से,
सर्वोच्च स्वर दिया निष्ठा से,
जीवन के रुख को स्वयं सिद्ध;
उदात्त कर दिया निष्ठा से !

ऐतिहासिक था यह खास वर्ष,
क्रम बढ़ा त्याग का था सहर्ष,
सहमा था खुद भी वायसराय;
देखा था जब चर्मोत्कर्ष !

जब रहा नहीं था कुछ वश का,
तब किया पुनः दुःसाहस था,
हर नेता में उत्साह बढ़ा;
नव सूत्र बन्ध गया आपस का !

थे नेता पकड़े बड़े-बड़े,
कुछ घर बैठे, कुछ खड़े-खड़े,
थे नेहरू मोतीलाल सहित;
नर वीर जवाहर भी जकड़े !

भड़की चिंगारी आग हुई,
नव ज्योति-चेतना-राग हुई,
हर लहर यहाँ सत्याग्रह की;
जन-जीवन का अनुराग हुई !

हिल गई चूल थी शासन की,
अरु अंग्रेजी सिंहासन की.
जिसमें नेहरू ने कहा—"बढ़ो";
प्रतिक्रिया हुई उस भाषण की !

दल महिलाओं का निकल पड़ा—१ जनवरी १९३१ :

तब नवोल्लास सा छाया था,
विश्वास उभर कर आया था,
जब चले गये नर कारा थे;
नारी ने कदम बढ़ाया था !

इस ओर बढ़ा, उस ओर खड़ा,
शासन को दे–देकर रगड़ा,
दंभी को हर पग दहलाता;
दल महिलाओं का निकल पड़ा !

घर–घर से रोज निकलती थी,
ध्वज लिये हाथ में चलती थीं,
हर गली मुहल्ले, आन्दोलन की–
नई प्रेरणा पलती थी !

बढ़ती थी जाती हर प्रकार,
मन–मगन–लगन थी बार–बार,
थी स्वरूप रानी, कमला भी;
महिलाओं के संग गिरफ्तार !

जमकर था भाषण दिया वहाँ,
बढ़ती जाती थी भीड़ जहाँ,
थी धरने की रफ्तार तीव्र;
उत्तर भारत में जहाँ–तहाँ !

समरांगण में तब चाहों के,
थे भाग्य जगे चौराहों के,
खलबली मची महिला दल से;
नव सूर्य उगे उत्साहों के !

कवियों की कविता निखर गई,
गजलों की लय थी सँवर गई,
जब बढ़े कदम थे दृढ़ता से;
नव ज्योति–उमंगें उभर गईं !

था प्रभायुक्त विश्वास नया,
तन–मन में था उल्लास नया,
हर एक विदेशी वस्तु त्याज्य;
बन गया यही विश्वास नया !

डरती न कहीं हथियारों से,
बढ़ खेल गई अंगारों से,
करती थी नभ गुंजायमान;
नित देश–भक्ति के नारों से !

था जिसको खुद पर मान बड़ा,
वह शत्रु देखता खड़ा-खड़ा,
उस ओर तहलका मचा जिधर;
दल महिलाओं का निकल पड़ा !

आन्दोलन का रुख मोड़ दिया,
अरि दंभ समय पर तोड़ दिया,
नव ज्योति जगा कर त्यागों की;
मर्दों को पीछे छोड़ दिया !

जब गीत सरोजनी गाती थी,
पल–पल में धूम मचाती थी,
कर प्रेरित मन में नया बोध;
सातों को स्वयं जगाती थी !

करता था शक्ति-संचार

ले बेटा सुन रे ! लगा ध्यान !
तब महिलाओं का योगदान,
करता था शक्ति-संचार नित्य;
बढ़ता था आन्दोलन रुझान !

निर्धन-निर्बल में भी विवेक,
जागा था रखकर नेक टेक,
लड़ना है अपने देश हेतु;
सहने हैं बढ़कर कष्ट अनेक !

नगरों अरु गाँवों में नितान्त,
जीवन था जिनका रहा क्लान्त,
मिलते थे हर पग त्याग-भाव;
अरु प्रेरक-गौरवमय वृतान्त !

ऐसे हो सुख की छाँव छोड़,
राहें दी बढ़ कर स्वयं मोड़,
जिस ओर बढ़ा संघर्ष तीव्र;
था दिया नव्य अध्याय जोड़ !

'राजो' वृद्धा बीमार क्लान्त,
रहती थी पल-पल नित अशान्त,
वीरोचित भर कर भाव-प्राण,
प्रणमय होने थे नित-नितान्त !

उसका था सुन्दर सुत जवान,
जिसका आन्दोलन में रुझान,
गाता था तन्मय नित्य राग-
"जागा है अब हिन्दोस्तान !"

जलते थे जब सायं अलाव,
लख कर के उसका रुचि स्वभाव,
करते थे आग्रह ग्राम्य-बाल,
गाओ रे ! बन्धु गीत गाओ !

उसकी इस धुन से बढ़ा जोर,
उलसित था सुनकर ओर-छोर,
छल कर शासन ने लिया दाब,
कह कर के उसको भैंस चोर !

पकड़ा अरु जकड़ा हर प्रकार,
पीछे था छल के जमींदार,
आई थी लेकर पुलिस बाँध,
देखा था घर का खुला द्वार !

वृद्धा थी सोई आँख मीच,
जो कुछ था घर में लिया खींच,
बंधन में जकड़ा वीर प्राण,
आँसू से पलकें रहा सींच !

देखा निर्धन छवि लुटी तीव्र,
अनमन हूकें सी उठी तीव्र,
खटपट से उसकी खुली आँख,
वृद्धा थी जागी, उठी तीव्र !

यह कैसा जुल्मी क्रूर राज,
हर दम रहता है बना बाज,
पूछा—"क्यों बांधा पुत्र हाय,
आई है कैसे पुलिम आज !"

तन कर था बोला पुलिस दूत,
"चोरी कर आया है सपूत !
खोली है इसने भैस एक,
इसका है हम पर अब सबूत !"

वृद्धा की आँखें हुईं लाल,
ओढ़ी जो कथरी वहीं डाल,
उठकर थी झपटी त्वरित हाय !
थप्पड़ से फेरा पुत्र–गाल !

क्यों गया न मर तू अरे, क्रूर !
सीखा है अब तक यह शऊर,
चोरी का ले इल्जाम आज,
हो गया देश की लय से दूर !"

सिसका वह बोला दाँव झेल,
"अम्माँ यह ओछी चाल खेल,
इन पुलिस जनों का बढ़ा स्वाँग,
भेजेंगे मुझको पकड़ जेल !"

"मैं किंचित भी ना गुनहगार,
कर अम्माँ मेरा ऐतबार,
मैं गाता हूं बस देश–गीत,
गाँवों की जनता को पुकार !"

वृद्धा समझी हर एक चाल,
बोली—"रे सुन रे, कोतवाल !
यह बेटा मेरा नहीं चोर,
क्यों झूठा तूने रचा जाल ?"

हत्प्रभ था सुनकर क्रूर किन्तु,
छल बल की शैं मजबूर किन्तु,
अपनापन सारा भूल दुष्ट,
रहता जन रुचि से दूर किन्तु !

सहसा ही उमड़ा नया ज्वार,
ग्रामीणों में था वह उभार,
जिसके बल सारे हुये तेज;
उतरा दारोगा का खुमार !

भर गया ग्लानि से हृदय क्लान्त,
क्षण भर को तन मन था अशान्त,
गाँवों में बढ़ते जुल्म हाय,
कलुषों का जमघट है नितांत !

छोड़ा था उसने वह जवान,
वृद्धा को सचमुच मातु मान,
जागी थी मन में देश–भक्ति,
उपजा था ज्योतित सद्य ज्ञान !

लख देश भक्ति की रेल पेल,
तज चला नौकरी गया जेल,
दिखला कर उसने नया त्याग,
डाली थी शासन के नकेल !

वृद्धा का लड़का रहा साथ,
बनकर के दाँया श्रेष्ठ हाथ,
अरु मां वह श्रद्धा केन्द्र नित्य,
चमा थी करती उच्च माथ !

"जाओ रे देखो देश—काज,
उखड़े भारत से क्रूर राज,
भारत माँ तुझको रही टेर,
आवश्यकता उसको पड़ी आज !

सुन करके ऐसा लगन दौर,
वीरों के दल थे मगन और,
रग–रग में भर कर नया त्याग,
महका था अपना चमन और !

मदिरालय होते बन्द गये—

बड़ा कष्ट होता है लख कर, विकृत रूप समाज का !
मदिरा का है डगर–डगर में पनपा आज रिवाज सा !!
बढ़ी भीड़ रहती है हर दम मदिरालय के द्वार पर !
हित चिंतक भारत–जनता के बैठ गये हैं हार कर !!

बिन शराब के मने न खुशियाँ, ऐसे बने खयाल हैं !
कौन सुने ! अनगिन निर्धन जन होते नित पामाल हैं !!
अब तो युवा वर्ग भी बढ़कर है दारू के फेर में !
कौन कहेगा किसको दोषी प्रतिदिन के अंधरे में !!

किस की लाज रिवाज बन गया, पीना डिस्को, डाँस है !
पढ़ा लिखा तब का बढ़ चढ़कर लेता इसमें चाँस है !!
यह विनाश की धारा, क्या कुछ कर जाये अब कौन कहे !
चिंतनशील हृदय अब बोलो कैसे रे ! चुप चाप रहे !!

गाँधी जी का स्वप्न तोड़ने वाले हावी देश पर !!
लखो ध्यान से अनगिन हैं अब दाग वतन के वेश पर !
बहिष्कार का प्रण साधा था, जब अपने इस देश ने !
दिया आत्मिक बल सब को था गाँधी के संदेश ने !!

तोड़े जुल्मों के अंधकूप,
निखरा था प्रणमय रौद्र रूप,
जिसने दहलाया अर्थ तंत्र;
था आन्दोलन का वह स्वरूप !

बिकती थी नगरों में शराब,
जन–जीवन होता था खराब,
होती थी पीकर बुद्धि मंद;
टूटा करते थे सौख्य–ख्वाब !

जागा जन–मन में नव्य बोध,
प्रकटा था जुट करके विरोध,
मदिरालय होते गये बन्द;
जब किया स्वजन ने आत्मशोध !

मदिरा से देखा नित्य ह्रास,
जीवन की गरिमा थी उदास,
लुटते थे निर्धन औ मजूर;
दंगे थे होते आस–पास !

उन्नति की राहें रखी दाब,
संततियाँ होती हैं खराब,
मन में तब उभरा दृढ़ विचार,
ऐसी शै गन्दी है शराब !

होता है इसका नशा तीव्र,
बन जाती क्षण में बला तीव्र,
उपजाती है यह हरेक ऐब,
आँखों पर पर्दा गिरा तीव्र !

हो जाता जीवन स्वयं व्यंग,
बन जाता रोगी अंग–अंग,
करती है पैदा कलह नित्य,
छिड़ जाती है बिन बात जंग !

व्यभिचारों के नित खुलें अंक,
राजा तक बनते रहे रंक,
नागिन सी डसती यह शराब,
मारे जब मस्ती भरा डंक !

जिनकी थी ऊँची आन-बान,
बिगड़े हैं ऐसे खानदान,
सोते हैं जिल्लत ओढ़ नित्य;
बेचा है अपना स्वाभिमान !

बिगड़ा यों भारत का समाज,
पनपे फिर क्यों ना भय-रिवाज,
ऐसी है डायन यह शराब,
खा गई क्षणों में राज काज !

दुर्गुण की है यह अजब खान,
मानवता इससे नित्य म्मान,
विध्वंसक इसकी रीति-नीति,
भरती है नित मिथ्या उड़ान !

अनाचार की रखे टेक,
ठगती मानव के बुद्धि-विवेक,
इसका जब पड़ जाता प्रभाव,
छुट जाते पीछे कार्य नेक !

निर्धनता जिसको रही दाब,
कंगाली जिसकी हरे आब,
करती हो प्रकृति अट्टहास,
वह भारत पीता हो शराब !

कहते हैं—इससे आदिकाल,
रहता था बन करके विशाल,
उद्घोषक लेकिन गये भूल,
संपन्नों की नित रही चाल !

जिनसे दुर्दिन का रहा योग,
वे रहे निरन्तर नर्क भोग,
कैसी यह आदत हाय राम;
कैसा यह विघटन का संयोग !

बिगड़ा नित पीकर के स्वभाव,
मिटते हैं सुख—संपर्क—चाव,
परिजन को सहना पड़े नित्य,
चिन्ता का भीषणतम अलाव !

पुरुषों के दल नित पियें मस्त,
महिलायें घर में रहें पस्त,
सामाजिक विकृति का स्वरूप,
थे बढ़े निरन्तर मय परस्त !

मदिरा है जिसकी रही मित्र,
वह कैसे रह सकता पवित्र,
करने को जन–मन और भ्रष्ट,
चलते हैं चालें सब विचित्र !

निर्धन की क्या कुछ है बिसात,
गाँधी ने समझी सही बात,
बिकनी यदि बन्द होगी शराब;
तब पा सकती जनता नजात !

जिन–जिन गलियों में थी दुकान,
उन सबके सहमे थे मकान,
झगड़े थे होते हरेक शाम,
जन–जीवन था नित परेशान !

सद्‌बुद्धि चाव का हो प्रचार,
मिट जाये दुर्गुण गुनहगार,
जागृति का आये युग तुरन्त,
मदिरालय का हो बहिष्कार !

स्वत्वों की यह थी नयी खोज,
उभरा था मन में नया ओज,
नर से थी नारी रही तेज,
आन्दोलन बढ़ता गया रोज !

जिनके थे ठेके वे सशंक,
गरमाकर शासन–सूत्र–अंक,
करवाते रहते थे अनर्थ,
साँपों की नाई मार डंक !

उनकी थी होती ठप दुकान,
बिगड़ी थी सारी आन–बान,
थैली थी होती नित्य रिक्त,
सरकारी घर की, लख उड़ान !

लालच की मन में नित्य आग,
जागा था किंचित नहीं त्याग,
चूसा था बढ़ चढ़ रक्त खूब,
कर्त्तव्यों से नित भाग–भाग !

महिला दल का था यह कमाल,
मदिरालय वाले थे निढाल,
होती थी बढ़ कर गिरफ्तार,
जन–मुक्ति, समय का था सवाल !

डन्डे अरु लाठी बार—बार,
करते थे तन पर असह्य वार,
डरती थी कब वे लेश मात्र,
जिनको था श्रेयस्कर सुधार !

था प्रणमय वह संघर्ष वर्ष,
जेलों में जाती थीं सहर्ष,
घर—दर का सारा मोह छोड़,
था महात्याग—चर्मोत्कर्ष !

गोरों के जो थे क्रीत दूत,
डरते थे लख कर वे कपूत,
रचनात्मक महिला–कार्य देख;
शासन का बल था पराभूत !

"तुम डाल–डाल, हम पात, पात,"
महिला दल कहता खरी बात,
कर दी हैं संततियाँ खराब;
बेचा है मय को दिनों रात !"

पत्थर भी हिलता था पसीज,
पर जो थे पक्के बद्तमीज,
अमृत सी समझे थे शराब;
जैसे कि हो अनमोल चीज !

ऐतिहासिक था वह प्रबल दौर,
जन—बल को करना पड़ा गौर,
जिनका था पीना ध्येय नित्य;
तज दिये उन्होंने तल्ख दौर !

अक्सर थे खाली तख्त पोश,
आया था जब—तब जहाँ होश,
छोड़ी थी जितनों ने शराब;
उन सब में उभरा अमिट जोश !

शायर कुछ माहिर बद नसीब,
रहते थे यद्यपि नित गरीब,
पीते थे बर्तन—बेच—बेच;
घर—दर की हालत थी अजीब !

जागी थी जिनमें देश भक्ति,
प्रकटी थी उनमें छुपी शक्ति,
गाते थे नज्में दिनों रात;
करवट ले करके उठी शक्ति !

करती यह मय सब कुछ विनाश,
रुक जाता उन्नति का विकास,
सद्गुण होते हैं सदा लुप्त;
करते हैं दुर्गुण अट्टहास !

बच पाये इससे अगर देश,
गाँधी का फैले हर संदेश,
जीवन—सुख पाये नित समाज;
उन्नति हो जन-जन की विशेष !

संतति के जीवन में सुधार,
हो जाये फिर तो साधिकार,
बन जायेंगे वे धाम स्वर्ग;
जिनमें अब मय का है प्रचार !

रुक जाये ह्रासों का प्रसार,
मिट जाये हर दिशि दुराचार,
जागे वह जीवन—ज्योति श्रेष्ठ;
क्षय होगा जिससे अंधकार !

अजीब इसके शौक की पकड़ है,
बुद्धि हुई जाती जड़ है,
काश ! इंसान को कभी तो आती अक्ल,
शराब, बर्बादियों की जड़ है !

देश पुकार रहा है !

जन बल में उत्साह निरन्तर, ज्वार उवार रहा है !
चल रे, मन अब तुझको तेरा देश पुकार रहा है !!

मचल रही गंगा की लहरें,
संगम में नव लय है,
अब उमंग की भव्य भावना,
लिखने चली विजय है,

दिशा–दिशा ने परिवर्तन का,
नूतन सपना देखा,
खिंची हुई है आज मार्ग में,
संकल्पों की रेखा,

उठे कदम में नवयुग का नव स्वर संचार रहा है !
चल रे, मन अब तुझको तेरा देश पुकार रहा है !!

खड़ी द्वार कर्तव्य भावना,
हलचल हुई पवन में,
देश भक्ति का राग गुँजरित,
होता हर आँगन में,

वह छोटा सा देश आज,
हावी है हम पर लख रे !
बुला रही है मंजिल सब को,
कदम मिलाकर रख रे !

अमरीका अरु रूस तुम्हारी ओर निहार रहा है !
चल रे, मन अब तुझको तेरा देश पुकार रहा है !!

गाँव पुकार रहे हैं तुझको,
नगर पुकार रहे हैं,
अग्र गण्य बन बढ़ आगे रे !
डगर पुकार रहे हैं,

लोहा लेने को जुल्मों से,
विधा पुकार रही है,
टेर रही जन—जन की पीड़ा,
व्यथा पुकार रही है !

"झण्डा ऊँचा रहे हमारा," देश उचार रहा है !
चल रे, मन अब तुझको तेरा देश पुकार रहा है !!

—जवाहर लाल नेहरू की गिरफ्तारी

सत्याग्रह का जोर बढ़ गया, पड़ा राय पुर जाना,
बना खड़ा हर देश भक्त था स्वागत को मर्दाना,
घबराई थी गोरी सत्ता, सुनकर वहाँ आगमन;
गिरफ्तारियों के मन्त्रों का शासन था दीवाना !

गिरफ्तार कर लिये जवाहर गाड़ी चढ़ते—चढ़ते,
सहसा रोके गये कदम थे आगे बढ़ते—बढ़ते,
हुई उग्रतम प्रतिक्रिया थी—जन समाज में प्रतिपल;
दौड़, दौड़ कर उत्साही जन—समाचार थे पढ़ते !

सारे शासन—सूत्र सहेजे !
नैनी जेल जवाहर भेजे !
गंदा वातावरण वहाँ का !
खोल रहा अध्याय व्यथा का ! !

किन्तु न नेहरू घबराये थे !
स्वयं सिद्धि के क्षण आये थे !
तन्मयता से किया अध्ययन,
द्रुत गति से था चालित लेखन ! !

पंडित मोती लाल की गिरफ्तारी

जब से आये निकट किसान,
निखर उठा व्यक्तित्व महान,
लिया हाथ में सूत्र संभाल;
लगे जूझने—मोती लाल !

आन्दोलन का खिला स्वरूप,
गति थी होती गई अनूप,
निज सुविधा का करके त्याग;
बढ़ा समर्पण का अनुराग !

भारत—भू उन्नति का भाव,
उनका बनता गया स्वभाव,
उसको मिलती रही मान्यता;
सत्याग्रह का जो प्रस्ताव !

नाखुश था सरकारी तंत्र,
दमन चक्र का पढ़ कर मंत्र,
गिरफ्तार कर लिये उन्हें भी;
जिन—जिन के थे भाव स्वतंत्र !

चल कर नई शिकारी चाल,
पकड़ लिये थे मोती लाल,
उनको भी नैनी ने जाकर;
दिया जेल के भीतर डाल !

टूटी—फूटी बैरक क्षीण,
दशा जहाँ की घोर मलीन,
बनी वास थो उस नेहरू का;
जिसके यश–बल था आधीन !

सीलन, बदबू अरु बरसात,
पहुंचाती थी नित आधात,
देख—-जवाहर लाल अधीर;
कुढ़ते रहते थे दिन रात !

हुये रुग्ण थे मोतीलाल,
लगे बिखरने लक्ष्य विशाल
विचलित होने दिये न प्राण;
सहम उठी अंग्रेजी चाल !

यद्यपि आजादी के सपने :

व्यापारी थे अपनी धुन में, गुणते थे बस लाभ को !
भूल गये शिव, रामकृष्ण को, भूले थे अमिताभ को !!
ऊँचे-ऊँचे ठेकों की विधि उनके हित तैयार थी !
जो कि उतारा करते थे, नित गोरों की मिल आरती !!

बाबू तबका बेकाबू था, उस खुशामदी दौर में !
सजा रहा रंगीन स्वप्न था सुविधाओं के बौर में !!
एक ओर थी देश भक्ति की लहर शहर अरु गाँव में !
और दूसरी ओर दासता की बेड़ी थी पाँव में !!

ठाठ सताते बेशर्मी के शर्मसार इन्सान को !
जो कि देखना मुक्त चाहते जल्दी हिन्दुस्तान को !!
उनका जीवन नहीं बीतता रहा यहाँ आघात बिन !
जेल यातना, लाठी, गोली जो कि सहे थे रात दिन !!

उनका केवल एक लक्ष्य था भारत की स्वाधीनता !
छू न सकी थी उच्च विचारों को किंचित भी हीनता !!
एक वर्ग जो समझौते का लिये धरातल चल रहा !
उसे हमेशा ही शासन का मिलता पूरा बल रहा !!

तेज बहादुर सप्रू, जय कर, श्री निवास नवरंग में !!
शान्ति भावना लिये चले थे वायसराय की, संग में !!
धरना सत्याग्रह, आन्दोलन किसी तरह भी रुक सके !
जैसे भी हो, कांग्रेस की भव्य भावना झुक सके !!

नेहरू मोतीलाल जवाहर थे नैनी की जेल में !
समझ गये कि उदारवादी लिप्त, निराले खेल में !!
गाँधी जी यरवदा कैद में, शान्त भाव में, मग्न थे !
अक्सर आजादी के पहले दीख रहे कुछ भग्न थे !!

'शान्ति दूत' थे इस कोशिश में—मानें मोतीलाल जी !
और जवाहर की सहमति भी आवश्यक तत्काल थी !!
चली वार्ता घण्टों-घण्टों कारा के आवास में !
पृष्ठ नया जुड़ रहा सुलह का भारत के इतिहास में !!

स्वाभिमान विपरीत एक भी शर्त नहीं मन्जूर थी !
पिता पुत्र की नीति लिबरलों से बिल्कुल ही दूर थी !!
हुआ यही निर्णय कि पहले गाँधी जी से भेंट हो !
जो कहते थे—" अंग्रेजों, अब बिस्तर शीघ्र समेट लो !!

कर चुके सर्वस्व अर्पित :

रात दिन की व्यस्तता अरु अनवरत संघर्ष ने !
यातनाओं से भरे जीवन के अन्तिम वर्ष ने !!
था किया साग्रह निवेदन वृद्ध मोती लाल से !
दूर रहना ठीक है नित बढ़ रही इस ज्वाल से !!

यह दमा, खाँसी कि जिसमे मन सदा बेचैन है !
जेल के अति कष्टकारी अनुभवों की देन है !!
मित्र कुछ लेकर चले तस्वीर हैं अन्जाम की !
"आपको अब है जरूरत कुछ दिनों आराम की !!"

किन्तु यह सम्भव कहाँ था, उन दिनो उस हाल में !!
जब कि सत्ता कम रही हर एक को थी जाल में !!
कर चुके सर्वस्व थे अर्पित स्वयं ही देश को !!
टाल सकते थे कहाँ वे वक्त के संदेश को !!

रात दिन चिन्ता सताती थी जवाहर लाल की !!
क्रान्ति पथ के दमन की हालत बड़ी विकराल थी !!
थे भगत सिंह जेल में तब मौत के दिन गिन रहे !
बोलने तक के भी थे अधिकार अक्सर छिन रहे !!

अरु अनेकों क्रान्तिकारी थे उदासी से घिरे !
रात दिन थे सोचते कब देश की किस्मत घिरे !!
गम निरन्तर था रहा दिन रात मोती लाल को !
हर कदम पर थे समझते, वायसरायी चाल को !!

पंडित जवाहर लाल नेहरू और श्री सुभाष चन्द्र बोस का संयुक्त आह्वान :

जब तक पूर्ण स्वराज्य न होगा प्राप्त हमारे देश में !
जन–जीवन हर ओर निरंतर रहे यहाँ पर क्लेश में !!
स्वतः लक्ष्य निर्धारित अपना, गाँधी के संदेश में !
मिले व्यक्ति को शक्ति निरन्तर, स्वतन्त्रता-परिवेश में !!

बढ़े लक्ष्य की ओर कारवाँ, उलझन शीघ्र समाप्त हो !
अब मौलिक अधिकार हमारा, बिन विलंब के प्राप्त हो !!
लाठी, गोली जेल–खेल सब देख लिये आतंक के !
अब न अधिक दिन जल पायेंगे यहाँ दिये आतंक के !!

युग परिवर्तन–साथ प्रगति भी अब भारत को करनी है !
अर्थ व्यवस्था की कड़ियाँ भी फिर से यहाँ सवँरनी हैं !!
उठें, निरन्तर तूफाँ लेकिन–हम मंजिल को पायेंगे !
लहर–लहर का कहर सहन कर हम मंजिल तक जायेंगे !!

जो भी कीमत होगी वह हम आजादी की देलेंगे !!
रख समक्ष सामर्थ बढ़ेगे, अधिकारों को लेलेंगे !!
अब न दमन की नीति हटा पायेगी हमको मंजिल से !
हमें वास्ता सोते–जगते आजादी के साहिल से !!

मान्यता हर एक पथ पर–

लिप्त जो थे नित्य प्रति ही–कुर्सियों की चाह में !
बन रहे व्यवधान थे वे, लक्ष्य की तब राह में !!
नीति थी अंग्रेज की रुचि तंत्र हाथों में रहे !
यदि हवा तक भी बहे तो पूछ कर उनसे बहे !!

आ भी जायें यदि बहारें गंध उनके घर की हो !
मान्यता हर एक पथ पर सिर्फ उनके स्वर की हो !!
लिबरलों का दल सुफल कर प्राप्त अपनी चाह का !
कर रहा था नित प्रदर्शन एक नव उत्साह का !!

किन्तु जो थे गर्म दल के नेहरू के साथ थे !
कर रहे मजबूत उन्नत भावना के हाथ थे !!
कुर्सियों का लोभ भी तब हो रहा कुछ दिन को था !
स्वार्थ रसना स्वाद का रंग, चढ़ रहा जिन–जिन को था !!

जो तहलका था मचाया देहली बम कांड ने !
चौंक कर उसका असर भाँपा तभी ब्रह्मांड ने !!

तत्परता से था हरेक घर :

बिन्दु–बिन्दु से सिन्धु बन गया कदम–कदम पर नव उत्साह !
जन विचार, नव ज्वार सहित था, एक अपरिमित कीर्ति प्रवाह !!
ज्यों–ज्यों बढ़ता दमन-चक्र था त्यों-त्यों भरता लगन प्रवीण !
और पूर्णतः शासन से थी, समझौते की आशा क्षीण !!

जगह–जगह पर फैल रहा था, गाँधी जी का मंत्र प्रभाव !
कतिपय सरकारी नौकर भी त्याग पत्र के रख प्रस्ताव !!
कूद रहे थे आन्दोलन में, तन–मन-धन से हुये शरीक !
ऊँचे–ऊँचे पद तक त्यागे, समझा युग–संदेशा ठीक !!

द्वारे-द्वारे लटक रहे थे युगाकांक्षा बन्दनवार !
तत्परता से था हरेक घर, नित कुर्बानी को तैयार !!
सदियों से दबते–पिसते कृषि-पुत्रों का था बढ़ा रुझान !
गाँधी जी के साथ निरन्तर सबसे आगे रहे किसान !!

गाँधी इरविन समझौते की सीमाओं से रह कर दूर !
करते थे सामन्तवाद का हर विरोध जम कर भरपूर !!
नगरों की ही तरह गाँवों में महिलाओं में रुचि–सम्मान;
बहिष्कार कर रहा-न देंगे, अब किंचित भी और लगान !!

घर–घर में चर्खे की धुन थी–चला कताई का वह दौर !
रहे चरखुवा चालू, स्वर यह रहा गूँजता चारों ओर !!
यद्यपि खबरों के घेरे थे, अधिक न विस्तृत कुछ हर बार !
और गाँवों में पहुंच न पाते थे, सारे ही तो अखबार !!

इससे, उससे सुनकर गुणकर लगा लिया करते अन्दाज
गिरफ्तारियों के बल पर ही प्राप्त करेंगे शीघ्र स्वराज !
असफल होने लगा देश में अंग्रेजों के भय का भूत
लाठी, गोली दबा न पाई जन–जीवन, उत्साह अकूत !

अग्र पंक्ति के नेता जेता ज्यों–ज्यों होते थे तैयार
उनके पीछे कफन बाँध सिर–युवकों की चल पड़ी कतार !
लेखक, कवि साहस भरते थे, देश भक्ति के गाकर गीत
स्वयं सेविकाओं का गूँजा नील गगन तक स्वर संगीत

क्रियाशील बन गया अटेरन :

चर्खे से आया नव जीवन,
बन कर घूमा चक्र सुदर्शन,
जो बरसों से पड़ा शान्त था;
क्रियाशील बन गया अटेरन,

मोहन ने कर दिया मोह भंग,
आजादी की छेड़ प्रबल जंग !

कृषक रुई से स्वर चुनता था,
धुनक-धुनक. धुनिया धुनता था,
बूढ़ी दादी सूत कातती;
बैठ कबीरा गति बुनता था,

बनता श्रम—क्रम स्वाभिमान का,
नाम न था किंचित थकान का,
खादी की परिभाषा से था,
सिर ऊँचा हिन्दुस्तान का,

मानचेस्टर में था क्रन्दन,
घबराया था प्रतिपल लन्दन,
जो बरसों से पड़ा शान्त था,
क्रियाशील बन गया अटेरन ! !

ऐसा चढ़ा स्वदेशी का रंग,
मोहन ने कर दिया मोह भंग,
आजादी की छेड़ प्रबल जंग !

खादी में संकल्प—शक्ति थी,
धवल भावना—देश—भक्ति थी,
तन पर खादी सादी से थी;
शोभा बढ़ती रही व्यक्ति की,

गली—गली में यह था नारा,
जागा—"हिन्दुस्तान हमारा";
"भाई—बहनों, खद्दर पहनो",
हर मन को छू गया इशारा,

और जवाहर कट की बन ठन,
गौरवमय जीवन—रुचि-शोभन !
जो बरसों से शान्त पड़ा था,
क्रियाशील बन गया अटेरन !!

वर्ण व्यवस्था ने मारा था······

भारत की धरती करती है सृजन सदा शुचि बल का !
मूल्य आँकता रहा समय–व्रत हर क्षण का, हर पल का !!
भेद–भाव की फसल उगा कर मानव ने निज घर में !
नित्य प्रकंपन और उदासी भरी उभरते स्वर में !!

अपनेपन से रची व्यवस्था, भौतिकता–अभिषाप बन गई !
जीवन विधि हर एक डगर पर–बढ़ते युग का श्राप बन गई !!
तब से बिगड़ी दशा देश को–भेद–भाव जब रीति बन गये !
स्वार्थ–चोचले संसृतियों के अद्भुत गौरव–गीत बन गये !!

एक वर्ग को किया उपेक्षित भेद–भाव की नीति डाल कर !
रोते धरती गगन आज तक मानव की इस घृणित चाल पर !!
वर्ग भेद अरु जाति प्रथा सब मिल कर एक रिवाज बन गये !
मानवता के इस समाज में–छोटे–बड़े समाज बन गये !!

विद्वत्ता सत्ता पा करके अपने आप शिकार हो गई !
और विनाशों की खाई भी साथ–साथ तैयार हो गई !!
इस कारण ही लुटा देश यह, अनगिन बार विदेशी आये !
लूट पाट कर चले गये कुछ, जब भी जैसा मौका पाये !!

जिनको भायी इस धरती की हवा, यहाँ वो सवा सेर बन !
रहे जमाते पाँव, दाँव से–रहे सजाते अपना जीवन !!

गाँधी ने समझी कमजोरी !
वर्ग–भेद की जोरा–जोरी !!
इसीलिये बढ़ आगे आये !
दलितोद्धार के दीप जलाये !!

युगों-युगों से जो कि उपेक्षा वृति के–
यहाँ शिकार रहे !
जिनको इज्जत से जीने के–
प्राप्त नहीं अधिकार रहे !!

उन्हें हमेशा तिरस्कार से–
रहा सामना जीवन में !
जिन्हें धकेला गया आदि से–
सिर्फ नर्क के आँगन में !!

सबल सदा निर्बल पर हावी–
आदि काल से रही प्रथा !
आसमान तक रो उठता–
सुन करके इनकी व्याथ—कथा !!

सदियों से अभिषाप झेलते–
आये जो इन्सान रहे !
इनकी खातिर छूत–पात के–
बनते नये विधान रहे !!

क्या विडंबना रही कि इनको–
छूने से ईमान गया !
हाय ! रूढ़ियों के बंधन में–
बंधता हिन्दुस्तान गया !!

मिट्टी–-पत्थर तक को पूजा–
पर इन्सान शिकार, प्रथा का !
चढ़ा दुराग्रह मानवता पर–
कैसा वर्ण व्यवस्था का !!

कुँआ, बावड़ी. ताल, घाट पर–
इन्हें न चढ़ने दिया गया !
जीने का अधिकार छीन कर–
प्रति दिन शोषण किया गया !!

कहा–शूद्र ! कुविचार भावना–
परम्परा में पली—ढली !
चित्र उभरते रहे पतन के–
नगर, गाँव अरु गली—गली !!

घोर यंत्रणायुक्त अशिक्षा–
बाधा इनके जीवन में !
अभिषापों का रूप भयंकर–
रहता इनके आँगन में !!

ये भी आखिर हैं समाज के–
अंग, सदैव अभिन्न रहे !
विकृत रचना से समाज की–
लेकिन होते खिन्न रहे !!

इन्हें साथ लेकर चलना है–
गाँधी जी को ज्ञान हुआ !
जन–समाज के जीवन में तव–
निश्चित नया विहान हुआ !!

इन्हें चाहिये प्यार–प्यार के साथ–
मिले सम्मान इन्हें !
और शेष भारत की जनता–
समझे अब इंसान इन्हें !!

वर्ना अंग्रेजों की चालें–
युग–भरपाई कर देंगी !
यहाँ देश के हर कोने में–
नये इसाई भर देंगी !!

ये अपने हैं—इनको अपना—
कहकर गले लगाना है !
अंधकार से इन्हें उठाकर—
नव प्रकाश में लाना है !!

शक्ति—अंग हैं ये भारत के—
आन्दोलन के साथ चलें !
हर विडंवना का अव आगे—
नित्य झुकाने माथ चलें !!

लेख लिखे—हित--चिंतन में नित—
'हरिजन' कहकर साथ लिया !
आत्मीय, सद्भाव, स्वत्व गुण—
देकर ऊँचा माथ किया !!

समाचार पत्रों के द्वारा—
जन—जीवन को मोड़ दिया !
घोर घृणा का युग गांधी ने—
झटका—पीछे छोड़ दिया !!

जीवन में सद्भावनाओं की—
सुविचारों की रक्षा की !
करके अक्सर अनशन—
इनके अधिकारों की रक्षा की !!

अस्पर्शता के इस बन्धन को—
आगे बढ़कर तोड़ दिया !
अपनेपन की राह दिखाकर—
जन-प्रवाह को मोड़ दिया !.

किरण उगी थी नव प्रभात की,
यह गाँधी की करामात थी,
अपने में कुल देश समाए;
इस कारण बापू कहलाए !

किन्तु हाय रे ! आज अभी भी जब कि स्वतंत्र यह भारत है !
पुनः दिखाई देती उगती जगह—जगह पर नफरत है !!
फिर से आज जरूरत हमको है गाँधी—आह्वान की !
भटक चुकी है, बुरी तरह से जनता हिन्दुस्तान की !!

स्वार्थोन्मेष १९३०–१९३१ :

अटके भटके स्वारथवादी थे निर्भर सरकार पर !
जो भी जिसको जहाँ मिला पद, लिया उसे स्वीकार कर !!
सुविधा भोगी देख रहे थे अपने सुख, आराम को !
अक्सर मिलते वायसराय से प्रति दिन जाकर शाम को !!

चाह रहे थे उपनिदेश की रहे संहिता शान से !
जा न सके अंग्रेजी शासन, यों हीं हिन्दुस्तान से !!
जमीदार, राजे, महाराजे निजी स्वार्थ के वास्ते !
चल न सके जनता से मिलकर, गाँधी जी के रास्ते !!

उनके महल–दुमहलों में थी धूम दावतों की मची !
कैसे सकते जान वतन पर मिटने की दीवानगी !
उनके हित बस रहें सुरक्षित इसका केवल ध्यान था !
उनके आँगन में सुविधा का दीपक हिन्दुस्तान था !!

उनको कब थी चिन्ता पिसता नित मजदूर, किसान है !
फिर भी खाना नहीं मयस्सर, दुख पाती संतान है !!
मिटे संस्कृति या कि सभ्यता, उनको अन्तर क्या पड़े !
वह जाने या उसकी क्षमता, जिसके सिर पर आ पड़े !!

उन्हें न चिन्ता थीं कि देश का गौरव मटियामेट हो !
उनका केवल एक लक्ष्य था,-गोरों संग आखेट हो !!
कहीं खड़े चौगान खेलते-बिलियर्ड, पोलो चाव से !
उन्हें काम क्या रहा देश के प्रति किंचित मद्‌भाव से !!

चलती थी उद्यान पार्टियां विस्मयुक्त जनून से !
सिंचित होती रही भव्यता मजदूरों के खून से !!
'यस सर' केवल प्रत्युत्तर में कहना थे वे जानते !
जो कि विदेशी शासन को निज प्रभु अपना थे मानते !!

उन्हें 'वहादुर' का सम्बोधन देते थे, इस शान से !
जैसे कि मिट गई वीरता बिल्कुल हिन्दुस्तान से !!

२६ जनवरी सन् १९३१ को स्वतन्त्रता दिवस की प्रथम वर्ष गाँठ :

लक्ष्य को रख सामने जब चल पड़े थे वीर वर !
उच्च नभ को छू रहा था-पूर्णतः उदात्त स्वर !!

नगर-नगर अरु ग्राम ग्राम में-
भरा नया उल्लास था !
करवट लेकर उठा देश भारत का-
नव इतिहास था !!

प्रथम वर्ष की आन-बान थी-
वर्ष गाँठ थी शान से !
ऐसा लगा विदेशी शासन-
भागा हिन्दुस्तान से !!

जल्से और जूलूस निरन्तर-
देश भक्ति से थे भरे !
स्वत्व प्राप्ति के हेतु बढ़े तो-
कौन, कहाँ किस ओर डरे !!

गाँधी और जवाहर के स्वर-
मंत्र बने कल्याण के !
अरु सुभाष की वाणी में थे-
शब्द पूर्णतः त्राण के !!

जगमग ज्योति जगी हर मन में-
स्वतन्त्रता के वास्ते !
चले सहस्त्रों वीर सजा कर-
बलिदानों के रास्ते !!

सत्ता चौंकी देख-देख कर-
सिन्धु यहाँ उत्साह का !
चित्र समूचा दमक उठा था-
वीरवरों की चाह का !!

इन्किलाब के नारों से था–
गगन गुँजाया चाव से !
प्रगति–बद्धता जुड़ी हुई थी–
ऐतिहासिक प्रस्ताव से !!

जनवरी १९३१ श्वास रोग से पीड़ित मोती लाल :

श्वासरोग से पीड़ित मोती लाल, अधिक संतप्त रहे !
चाव–भाव इस महाकष्ट के कारण थे अभिषप्त रहे !!
दुष्प्रभाव था यह जीवन पर उस कारा की सीलन का !
जिसमें एक मजाक उड़ाया जाता मानव–जीवन का !!

जिस जीवन के ठाठ निरन्तर शाही और निराले थे !!
उस जीवन ने रोग भयंकर–काराओं में पाले थे !
उदर खराब रहा करता था, रक्त चाप अनियंत्रित था !
सूजन आई थी शरीर पर पूरा घर भर चिंतित था !!

जब–जब कारा गये स्वास्थ्य पर, था विपरीत प्रभाव पड़ा !
वृद्धावस्था के कारण भी और अधिक था कष्ट बड़ा !!
जिस जीवन ने सुविधा भोगी, वह दुविधा में जीता था !
स्वावलम्ब अरु धैर्य कोष भी होता अक्सर रीता था !!

उस पर चिन्ता बेटे के प्रति जो अक्सर था जेल रहा !
देश हेतु हर कष्ट निरन्तर जो बढ़कर था झेल रहा !!
रुग्ण अवस्था से परिजन भी थे बेचैन, अशान्त रहे !
मिली सूचना ज्यों ही तो उद्विग्न सभी थे प्रान्त रहे !!

इलहाबाद में रहा नित्य ही उपचारों का क्रम जारी !
किन्तु खड़ा दुर्भाग्य द्वार पर बढ़ी निरन्तर बीमारी !!
मित्र, हितैषी सब व्याकुल थे, किंचित भी आराम न था !
जब-जब श्वास उड़ख जाती थी मिल पाता विश्राम न था !!

परिजन-पुरजन सभी देखकर शोकग्रस्त से रहते थे !
किसी-किसी की आँखों से तो अविरल आँसू बहते थे !!
कहाँ अरे, वह रौबीला मुख, कहाँ म्लान तस्वीर लखें !
साथ-साथ ही दुखी देश की बिगड़ रही तकदीर लखें !!

नहीं कारगर जब कोई उपचार लगा तो सोच हुआ !
थी स्थिति गम्भीर देश की लगा मुकद्दर पोच हुआ !!

किन्तु आयु के साथ नहीं तादात्म :

हुआ न कुछ आराम दवा से जब कि इलाहाबाद में !
घातक कुछ संकेत मिले थे क्षण प्रतिक्षण संवाद में !!
किया यही निर्णय कि चिकित्सा अब लखनऊ में प्राप्त हो !
कटे रोग अरु दुविधाओं की स्थिति शीघ्र समाप्त हो !!

मूल्यवान जीवन था उनका सर्वोत्तम उपचार मिले !
साथ-साथ ही यह भी संभव, हित कर और विचार मिले !!
पहुंच गोमती तट पर परिजन-पुरजन सब आश्वस्त थ !
योग्य चिकित्सक परामर्श को खड़े वहाँ पर व्यस्त थे !!

अनुभवशाली योगदान की जुड़ी वहाँ पर नई कड़ी !
उत्सुकता से देख रही थी खड़ी द्वार पर भीड़ खड़ी !!
किन्तु आयु के साथ नहीं तादात्म रहा था जीवन का !
दृढ़ मन मोतीलाल स्वयं थे ओज दिखाते निज मन का !!

जितना साहस था संभव तब-बीमारी थे झेल रहे !
सहन शक्ति के चिन्ह भाल पर रेखा बनकर फैल रहे !!

अन्तिम क्षण थे ये जीवन के–
सुत की देख रहे थे राह !
बीमारी से टूट चुके थे–
बिखर चुका था सब उत्साह !!

किन्तु पुत्र से मिलन–कामना–
रही बलवती तीव्र प्रवीण !
हर प्रकार से कुन्दन काया–
होती जाती थी नित क्षीण !!

निर्णय लेने में शासन था–
पहले से ही रहा स्वच्छन्द !
नैनी से आ गये जवाहर–
टूट गये कारा के बन्द !!

देख दशा को पूज्य पिता की–
उठी तीव्रतम मन में हूक !
उठ कर मोती लाल बढ़े कुछ–
बातें करने को दो टूक !!

रुग्ण देह थी–किन्तु मुखाकृति–
खिली कमल सी थी तत्काल !
विह्वल होकर रहे देखते–
गिरता हाल जवाहर लाल !!

कैसा दृष्य मार्मिक था वह–
अरु था वातावरण दुखान्त !
पिता–पुत्र के मिलन–दृष्य को–
देख रहे थे दृष्टा क्लान्त !!

शब्द न निकले खड़े जवाहर–
रहे देखते विधि का खेल !
पत्नी कमला गई हुयी थी–
आन्दोलन के कारण जेल !!

गाँधी जी पूना कारा से–
प्राप्त रिहाई कर इस बार !
चले मित्र को त्वरित देखने–
मन में उठते रहे विचार !!

आये मिले स्नेह से भेंटे–
चिंता का पर पूर्ण प्रकोप !
प्रिय नेहरू के बच पाने की–
आशायें थी पूरी लोप !!

कमला भी तत्काल जेल से–
छूटी लिये वेदना–दीन !
देखा इन्दिरा रोते–रोते–
हुई जा रही थी अति क्षीण !!

गाँधी ने सस्नेह मित्र को–
दिया एक आश्वासन आज !
"आप स्वस्थ हो जायेंगे प्रिय–
प्राप्त करेंगे शीघ्र स्वराज" !!

थे अशक्त पर बोले–रुक–रुक–
कुछ उठ कर तब मोतीलाल !
"देख सकूँ शायद मै तो ना–
गाँधी जी यह श्रेष्ठ कमाल" !!

'मुझको है विश्वास आपने–
प्राप्त कर लिये अपने लक्ष्य !
आयेगा स्वराज्य शीघ्र ही–
आप सभी के यहाँ समक्ष" !!

६ फरवरी १९३१,

त्याग देह चल दिये पूज्य पिता मोती लाल—

किंचित भी रास आया, न था कोई उपचार–
मृत्यु का बुलावा आखिर आया मोती लाल को !
चाहते थे लोग कुछ मिलें नव्य निर्देश–
मुक्ति हेतु जूझ रही जनता विशाल को !!
पुरजन, प्रियजन मित्र औ हितैषी सारे–
चिन्ता युक्त देख रहे नेहरू के भाल को !
उत्तमोत्तम उपचार रात भर जारी रहा–
किन्तु तोड़ पाया न वह दुविधा के जाल को !!

हाय ! भाग्य साथ नहीं देने को था तत्पर–
रुचिकर ऋतु भी न आई कुछ रास थी !
क्लान्त मुख दीख रही हाय रे ! स्वरूप रानी–
म्लान कान्ति कमला भी ठहरीं वहीं पास थी ! !

जानता था कौन, रात आई है बिसात रख–
आँक रही वेदना का नव इतिहास थी !
रात भर प्रिय पुत्र साथ श्री जवाहर भी–
लाल–लाल आँख झुक झेल रही त्रास थी ! !

टूटती उमंग गई, प्रात के हो संग–सग–
सिसकियों ने बेध दिया वायु के प्रवाह को !
आँक रहे बार—बार दर्द हमदर्द सब–
वेदना से पूर्ण तब जिगरों की आह को ! !

त्याग देह चल दिये पूज्य पिता मोती लाल–
सहते जवाहर थे चुप–चाप दाह को !
देख रहे चेतना से शून्य से सभीत सभी–
लाडले वकील और नेता नर नाह को ! !

गाँधी इरविन समझौता—१७ फरवरी १९३१—५ मार्च १९३१ :

समय चक्र जो रचता निश्चित जग में वो ही होता !
कूटनीति का प्रबल जाल था गाँधी इरविन समझौता !!
आये थे अंग्रेज तंग जब आन्दोलन की तेजी !
रही प्रभावित था लिबरल दल से छाप लगी अंग्रेजी !!

थे अवाक् :

थे प्रयास तब किये जिन्होने वे मस्तिष्क निराले थे !
काँग्रेस को समझाने के नूतन ढंग निकाले थे !!
कॉंग्रेस के साथ देश की जनता का उत्साह बढ़ा !
थे अवाक् रह गये सभी जब समझौता था गया पढ़ा !!

तब उदारवादी दल की थी चालें खुलकर खेल गई !
काँप उठे थे बड़े-बड़े जब महिलायें तक जेल गई !!
समझ गये थे सुविधा भोगी-सुविधायें छिन सकती हैं !
आने वाली संतति उनके दाँतों को गिन सकती हैं !!

सविनय आन्दोलन की लहरें—फैल चुकी थीं भारत में !
सुदृढ़, अवज्ञा आन्दोलन ने डाले गोरे आफत में !!
लन्दन से लौटे जो लख कर गोलमेज का नाटक थे !
वे केवल गोरा शाही के संदेशा—संवाहक थे !!

तेज बहादुर—श्री निवास अरु जयकर मिले जवाहर से !
बहुत सफाई देनी चाही कान्फ्रेंस की बाहर से !!
किन्तु जवाहर को किंचित भी इरविन का विश्वास न था !
रहे अन्धेरे में वे सब जिनने पढ़ा सही इतिहास न था !!

गाँधी ने था पक्ष देश का रखा सामने इरविन के !
लेकिन वह अंग्रेज बोलता था शब्दों को गिन गिनके !!
सत्ता का हित रख समक्ष वह चालाकी था खेल रहा !
अन्दर—अन्दर कूट नीति थी—ऊपर करता मेल रहा !!

दमन चक्र के प्रति विरोध था प्रकट किया जब गाँधी ने !
उड़ा दिया बातों में उसको द्रुत शब्दों की आँधी ने !!
क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित हर संदर्भ नकारा था !
तनिक रियायत का पहलू भी उसको नहीं गवारा था !!

लड़े देश की खातिर जो थे वे जेलों में सड़ते थे !
हाय ! स्वार्थ को इन्किलाब के प्रण न सुनाई पड़ते थे !!
लेने को तो श्रेय बहुत थे—अवसर ताका करते थे !
हर प्रयास इतिहास समक्ष कर निज स्वर टाँका करते थे !!

गाँधी बनते गये उदार—

बीत गये थे हफ्ते तीन,
दौर वार्ता का संगीन,
चला—ढला लंदन शाही में—
इरविन बनता गया प्रवीण !

गाँधी बनते गये उदार,
यह थी उनकी अपनी हार,
सविनय आन्दोलन वापस हो;
यह समझौते का था सार !

दमन नीति छोड़े सरकार,
करे न जुल्मों की भरमार,
वैध संगठन काँग्रेस को—
किया गया था तब स्वीकार !

सत्याग्रह की रुचि को त्याग,
करे न शासन से कुछ लाग,
अगली लंदन गोलमेज की;
कान्फ्रेंस में लेंगे भाग !

इस से बढ़ा त्वरित अवसाद,
गाँधी जी थे खुद अपवाद,
बात खरी—रज्जन बाबू की—
खड़ा हो गया नया विवाद !

मिला न कुछ रुक गया प्रवाह,
बना हार का वक्त—गवाह,
हुये जवाहर बहुत निराश;
आपस में कर रहे सलाह !

नई मुसीबत थी आसन्न,
चौंक उठे थे क्रान्ति प्रपन्न,
आन्दोलन के रुक जाने से—
कोई भी था नहीं प्रसन्न !

गाँधी मन में था संघर्ष,
चूँकि अहिंसक था आदर्श,
सोच रहे थे शान्ति मार्ग से;
ले आजादी भारतवर्ष !

इसी हेतु यह सद्य प्रयास,
रचने को तत्पर इतिहास,
किन्तु साथ ही शंका भी थी;
हो न कहीं में अब उपहास !

२७ फरवरी १६३१,
वीर शिरोमणि चन्द्रशेखर 'आजाद' का बलिदान—

इलाहाबाद की धरती करती सही वीर का अभिनंदन !
वीर भोग्या वसुन्धरा ने मला सुयश का नित चंदन !!
क्रान्ति लहर जब हुई प्रताड़ित मुखबिर के षडयंत्रों से !
कालज्जयी उन्मुक्त भावना वंचित थी शुचि मंत्रों से !!

अपनों ने मिल–मिल कर धोखा दिया क्रान्ति के सपनों को !
एक बोझ सा लिये हृदय पर सहती रुचि थी अपनों को !
अपनों के कारण ही तो आजाद जाल में अरि के था !
किन्तु सिंह सा वीर दहाड़ा–यद्यपि बेबस घिर के था !!

घेरा जब अल्फ्रेड पार्क में नर बाबर की टोली ने !
उत्तर दिया नीचता का था नर पुंगव की गोली ने !!
भाग गया मुखबिर पीछे से किन्तु विश्वेश्वर रहा खड़ा !
नर नाहर की गोली से द्रुत फूट गया उसका जबड़ा !!

एक ओर था वीर अकेला–ओर दूसरी अन गिन दल !
घेर रहे थे–क्रान्ति मन्यु को, इधर-उधर से निकल, संभल !!
तिरछी- आड़ी - झाड़ी - झाड़ी - पंक्ति-पंक्ति थी घेर रही !
स्वयं पुलिसिया धुन मन ही मन जगन्नियंता टेर रही !!

तड़-तड़-तड़-तड़ थीं चली गोलियाँ धाँय-धाँय से नभ गूंजा !
वीर शिरोमणि तत्परता से करता रहा शौर्य–पूजा !!
सत्ता औंधी, बिजली कौंधी, चौंक उठा नर बाबर था !
ज्यों ही देखा था दबाव नर–वीर–बढ़ा उत्तरोत्तर था !!

जीवित चाहा लाख पकड़ना–पर निष्फलता हाथ लगी !
क्षण–क्षण देखी नर नाहर की द्रुत चंचलता साथ लगी !!
हुआ अंततः वचन पूर्ण था–नभ को शीर्ष प्रणाम किया !
अन्तिम गोली दाग स्वयं पर नर ने काम तमाम किया !!

यही जंचा था श्रेयस्कर तब अपना वचन निभाने को !
जीवित कोई पकड़ न पाया–भारत के मर्दाने को !!
जिया देश के लिये अंततः आज़ादी हित प्राण दिये !
धनी बात के ने प्रणवत नर–व्रत के सफल प्रमाण दिये !!

द्रवित हो उठी धरती सारी,
दिशा–दिशा का भीगा स्वर !
अंकित आज़ादी की लय में,
क्रान्तिमन्यु–बलिदान अमर !!

२३ मार्च सन् १९३१–सरदार भगत सिंह,
सुखदेव, राजगुरु को फाँसी—

तरह–तरह के चला मुकदमे क्रान्ति पुजारी पकड़े थे !
नागपाश में कानूनों की जान बूझ कर जकड़े थे !!
उनका था बस दोष यही वे आजादी हित लड़ते थे !
और विदेशी सत्ता को हर पग पर महँगे पड़ते थे !!

राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह बलिदानी अलबेले थे !
भारत को आजाद कराने हेतु जान पर खेले थे !!
भारत माँ के लौह लाडले–बेमिसाल नर नाहर थे !
रहे तहलका सदा मचाते जब कारा से बाहर थे !!

बम, गोली–बोली थी उनकी अहंकार को ग्रसने को !
ऐसा कौन अन्य था जो खुद तत्पर था द्रुत तब फंसने को !!
कर मिसाल पैदा दी जग में शासन को दहलाया था !
बम फेंका जब असेंबली में खुद आशय बतलाया था !!

भगत सिंह आतंक बन गया सारा शासन काँपा था !
और भयंकर रूप क्रान्ति का दु:शासन ने भाँपा था !!
बन्द किया लाहौर जेल में–चला मुकदमा नाटक सा !
दृश्य बड़ा ही कौतुकयुत था सेंट्रलकारा–फाटक का !!

जगत जुड़ा आजाद वीर ने इन्हें छुड़ाना चाहा था !
पूर्णतः सन्नद्ध खड़ा रह कर कर्त्तव्य निबाहा था !!
किन्तु भगत सिंह जानें क्यों तब कर पाये न इशारा थे !
और पुलिस ने सटा दिया था लाकर मोटर कारा से !!

हुआ अतंत: जो होना था—नाटक चला अदालत का !
और क्रान्ति की बढ़ी लहर पर पर्वत टूटा आफत का !!
दंड मिला फाँसी तीनों को—हक छीना हकदारों से !
क्रान्ति सुतों ने गुँजा दिया नभ इन्किलाब के नारों से !!

फाँसी भी चुपचाप रात में दी थी गोरे—शासन ने !
महा क्रूरता दिखलाई थी लन्दन के सिंहासन ने !!
वीरों ने दे शीश देश पर—एक नया अहसान किया !
गौरव मंडित सारे जग में प्यारा हिन्दुस्तान किया !!

जीवित रहते भय न कभी भी,
माना था संगीनों का !
जब तक चाँद सितारे जग
में नाम रहेगा तीनों का !!

मजदूर आन्दोलन और प्रतिक्रियायें :

अधिकारों की वेला आई,
मजदूरों में जागृति छाई,
ट्रेड यूनियन बना-बना कर;
नेता करते थे अगुवाई !

सूझ गई थी तब शासन को-
चालें नित प्रतिशोध की !
धधक उठी थी प्रति दिन ज्वाला-
तीव्र प्रभाव विरोध की !!

गिरफ्तार कर लिये गये थे-
नेता गण कुछ बड़े-बड़े !
कहीं घरों पर बैठे-बैठे,
कहीं सड़क पर खड़े-खड़े !!

ट्रेड यूनियन नेताओं से-
डरी हुई सरकार यहाँ !
करने को आतुर थी हर दम-
नित्य नये ही वार यहाँ !!

किये मुकदमे कायम उन पर–
मेरठ बनी अदालत थी !
झूँठे सच्चे गढ़े मुकदमे–
सबसे बड़ी हिमाकत की !!

यद्यपि कम्युनिस्टों के मन में–
काँग्रेस—अलगाव रहा !
गाँधी, नेहरू अरु सुभाष के–
प्रति विपरीत स्वभाव रहा !!

किन्तु जवाहरलाल जानते–
पृष्ठ भूमि के कारण थे !!
देख चुके थे खुद सर्वहारा की–
विपदाओं के विवरण थे !!

क्षम्य अनर्गल बातों को वे–
ममझ बढ़े उन राहों पर !
जिनका द्रुततर नव प्रभाव था
कम्युनिस्टी उत्साहों पर !!

सभी चाहते रहे मुक्ति थे–
यहाँ विदेशी शासन से !
शक्ति श्रमिक दल में आती थी–
नेहरू जी के भाषण से !!

जुटे जवाहर थे बचाव में—

नई समिति कर गठित त्वरित ही–
धन के हेतु प्रयास किये !
कम्युनिस्टों के दल के दिल में–
जमा नये विश्वास लिये !!

यद्यपि तंत्र सभी सरकारी–
था खिलाफ कम्युनिस्टों के !!
किये न जा सकते थे झगड़े–
कभी माफ कम्युनिस्टों के !!

किन्तु काँग्रेस के नेताओं को–
अपनों से थी प्रीति रही !
यद्यपि था विचार में अन्तर–
कर्म डगर विपरीत रही !!

दमन नीति का लिये सहारा–
अंग्रेजों की फौज खड़ी !
और मुकदमे की खातिर–
दी गई दलीलें बड़ी-बड़ी !!

जुटे जवाहर थे बचाव में–
प्रतिदिन यत्न अनेक किये !
तर्क–वितर्को की उलझन में–
दिवस रात थे एक किये !!

नहीं चाहती काँग्रेस थी–
दमन प्रवृति का दौर बढ़े !
अंग्रेजों की हठधर्मी का–
रुख पग–पग पर और बढ़े !!

इसीलिये हर यत्न किया था–
सबको यहाँ बचाने का !
ओर मुकदमे की खींचा था–
बढ़ कर ध्यान जमाने का !!

तर्क–वितर्कों की भाषा में–
दौर बढ़ा था गर्मी का !
पता चल गया था शासन की–
पग–पग पर हठधर्मी का !!

अपने दिन साम्राज्यवाद को–
देने लगे दिखाई थे !
और श्रमिक दल करने को आतुर–
पल–पल भरपाई थे !!

समाजवाद की ओर उन्मुख :

रीढ़ सदा मजदूर–कृषक है–
राष्ट्र प्रगति के ढाँचे की !
बिन इसकी मेहनत के कोई–
शान नहीं श्रम—साँचे की !!

ट्रेड यूनियन आवश्यकता–
जब कि यहाँ महसूस हुई !
सफल लालची वृति सेठों की–
और अधिक कंजूस हुई !!

ले–लेना सब कुछ हित कर था–
पर देने की चाह न थी !
इस कारण ही यह बिरादरी–
दिखा सकी उत्साह न थी !!

रूस–क्राँन्ति का भय था मन में–
श्रमिकवाद से डरते थे !
जो भी स्वर थे उपनिवेश के–
अपने हेतु उभरते थे !!

कम्युनिस्टों के संगठनों पर–
दृष्टि गड़ाई जाती थी !
अरु उन से सम्बन्धित रुचि–
एकत्र कराई जाती थी !!

शासन का आक्रोश निरन्तर–
दिशि–दिशि बढ़ता जाता था !
वायसराय का पारा प्रति पल–
द्रुत तर चढ़ता जाता था !!

साथ–साथ ही यह भी भय था–
कही न रुचि सुस्तम्भ हिले !
हो न कही ऐसा आपस मे–
काँग्रेस–कम्युनिस्ट मिले !!

अपनी–अपनी रुचिवत्ता से–
रचे गये थे आन्दोलन !
पूर्ण रूप से आँदोलित था–
दिशा–दिशा में जन–जीवन !!

सरदार बारदोली—

उठे कृषक गुजरात प्रान्त के प्रण साधे आन्दोलन के !
बल्लभ भाई बने प्राण थे उनके कर्मठ जीवन के !!
दमन–नीति के नित विरोध में बड़ी सभायें करते थे !
आत्माभिमानी भाव शान से मन में सदा उभरते थे !!

निर्धन–निर्बल कृषक जनों की दशा सवँरने हेतु बढ़े !
क्षीण काय हर एक मनुज में साहस भरने हेतु बढ़े !!
तजी वकालत, सत्याग्रह के साथ उठे पग दृढ़ मन से !
अपने को संबद्ध किया था कृषक जनों के जीवन से !!

नई क्रान्ति थी यह उस युग की जो अधिकार प्रसार रहा !
बोझ गुलामी का जो उठ कर मन से स्वयं उतार रहा !!
शक्ति बारदोली की सारी आई बल्लभ भाई में !
सब को था विश्वास वहाँ पर नर–पटेल–अगुवाई में !!

उच्च माथ, गाँभीर्य, ओजमय प्रबल चेष्टा दमक उठी !
जन–कल्याणी वाणी भर कर मन में नूतन चमक उठी !!
राज समझते थे हरदम जो–अंग्रेजों के खेलों का !
काँग्रेस के सुस्तंभों में आया नाम पटेलों का !!

प्रणवत शक्ति रही चुँबक सी–
यश बिखरा रांगोली सा !
नाम अमर हो गया त्वरित ही–
भारत में बारदौली का !!

मई सन् १६३१—

काँग्रेस का जीवन धन,
हुआ कराची अधिवेशन,
बल्लभ भाई पटेल सभापति,
रहे पीठिका व्रत–शोभन !

१ मई १६३१ इन्दिरा का प्युपिल्स ऑन स्कूल में प्रवेश—

किया सभी कुछ जब अर्पित था–
बढ़–चढ़ कर आन्दोलन में !
हर पग पर अवरोध लखे थे–
नये उभरते जीवन में !!

पिता जवाहर चिंतित रहते बेटी की शिक्षा के हेतु !
बुद्धि समन्वय व्यग्र भाव का–बँधा हुआ था अनुपम सेतु !!
जब तक मोती लाल रहे तो पोती का रखते थे ध्यान !
इस अभाव का कब संभव था उनके जीवन मध्य निदान !!

रही देखती इन्दिरा थी तब–
कुदरत के परिवर्तन को !
दादा जी के स्वर्गवास को–
अरु पापू की उलझन को !!

परिजन, कारावास निरन्तर–
आन्दोलन में भोग रहे !
कदम–कदम पर दुरूहता के–
जुड़ते नव संयोग रहे !!

प्युपिल ऑन स्कूल पुणे में–
दिला दिया था त्वरित प्रवेश !
चली इन्दिरा लेकर मन में–
प्रिय पापू का शुभ संदेश !!

शिक्षालय में पहुंच चाव से–
लगा लिया पुस्तक से ध्यान !
हर सहपाठिन हुई प्रभावित–
देख इन्दिरा का रुचि ज्ञान !!

हरेक शिक्षिका देख प्रसन्न चित्त–
इन्दिरा जी का सद्‌व्यवहार !
नेहरू की बिटिया आई है, हुआ–
सभी में त्वरित प्रचार !!

गुरू रवींद्र नाथ टैगोर के शान्ति निकेतन में इन्दिरा का प्रवेश—

बचपन बीता आयु किशोरावस्था की थी ओर प्रवीण !
प्युपिल ऑन स्कूल पुणे में वर्ष बिताये पूरे तीन !!
तीव्र बुद्धि अरु लगन शीलता की सब पर थी छोड़ी छाप !
जब पहुंची आनन्द भवन में सफल इन्दिरा अपने आप !!

उसे खुशी थी मात–पिता के संग बीतेंगे दिवस अनेक !
किन्तु गये नेहरू कारा को, दुखी हुआ जन लख प्रत्येक !!

यद्यपि मोह प्रबल वैदेशिक–
भाषा का था युग की माँग !
व्यापक इंगलिश चाल बाजियाँ–
की परखी थी नई छलाँग !!

यह आवश्यक था इन्दिरा भी–
समझे इंगलिश–संस्कृति ज्ञान !
किन्तु साथ ही भारत संस्कृति–
का भी था सर्वोपरि मान !!

अधिकाधिक इंगलिश में निकला–
करते थे कतिपय अखबार !
उनसे रहें विरत इन्दिरा–
कब नेहरू को था स्वीकार !!

गर्व देश की संस्कृति का था–
और सभ्यता का सत्कार !
इस कारण ही शान्ति निकेतन–
पहुंचाने का किया विचार !!

शान्ति निकेतन कला केन्द्र अरु–
शिक्षा–सुस्थल रम्य महान !
आम्र कुँज की छाया में नित–
मिलता जीवन का सद्ज्ञान !!

कण–कण में गुरूदेव–प्रेरणा–
सौम्य चेतना केंद्र प्रवीण !
रूचि कर संभव श्रेष्ठ वहाँ पर–
था विकास नित सर्वांगीण !!

परम्परा अपने भारत की–
जहाँ निखरती दिन अरु रात !
क्यों न करे उन्नति वह प्रति पल–
विश्व कवे का जिस पर हाथ !!

विस्मय से देखा था सबने–
लिया सभी ने बाँह् पसार !
पहुंची दृढ़ मन से जब इन्दिरा–
शान्ति निकेतन के थी द्वार !!

घुली मिली सब में अपनों सी–
सीधी सादी अरु मासूम !
शान्ति निकेतन बालिकायें तब–
उठी देखकर सारी झूम !!

तनिक न था कुछ मान स्वयं पर–
और न फैशन की थी बात !
और सौम्यता. में तो उसने–
किया त्वरित सब को था मात !!

प्रकृति अंक में निखरा जीवन–
स्वावलंब की पायी सीख !
गुरु रवींद्र को इन्दिरा जी में–
पड़ी मूर्ति भारत की दीख !!

संस्कृति–कला–नृत्य सब सीखा–
शिक्षा की थी जुट कर प्राप्त !
गुरु चरणों में बैठ सभी तो–
चिंतायें थीं हुईं समाप्त !!

यद्यपि आते याद सभी थे—

परिजन—पुरजन—प्यारे मित्र !

किन्तु अध्ययन की धारा भी—

बहती मन में रही विचित्र !!

शान्ति निकेतन की छाया में—

निर्मित जीवन—ज्योति अनूप !

जिसने सँवरा नव भविष्य का—

एक अपरिमित भव्य स्वरूप !!

कोमल तन, उज्ज्वल आभायुत—

भाव भंगिम कमला कान्त !

मुख मंडल से रहे झलकते—

प्रतिभा गुण सोल्लास प्रशान्त !!

जिसने देखा, रेखा दृढ़—

संकल्पों की थी सहित विवेक !

चंचल अरु गांभीर्य चेतना—

नेहरू कुल की अपनी टेक !!

आम्र कुंज की शीतल छाया,
निखराती थी कंचन काया,
स्नेहिल वातावरण समूचा,
इन्दिरा के था मन को भाया !

गुरु रवींद्र ने गुण पहचाना,
नव भविष्य इन्दिरा का जाना,
अल्प समय में निडर भाव से;
सीख लिया लक्ष्यों को पाना !

भारत क्या है, क्या था भारत,
आज हुई क्यों ऐसी हालत,
यह विश्लेषण किया निरंतर;
कर्मठ पन की डाली आदत !

शिक्षा का वह सुस्थल पावन,
जिसके हर कण–कण में जीवन,
इन्दिरा को आदर्श बन गया;
गौरव मंडित, शान्ति निकेतन !

खान अब्दुल गफ्फार खान थे—

गांधी इरविन समझौते का कुछ प्रभाव ना खास पड़ा !
चूँकि सदा अंग्रेजी शासन अपनी जिद पर रहा अड़ा !!
इस कारण सर्वत्र जंग थी छिड़ी हुई अधिकारों की !
इधर–उधर भर मार लगी थी नित्य नये प्रतिकारों की !!

पेशावर–चटगाँव, निरंतर धधक रहे थे शोलों से !
शोलापुर में भारी लपटें भड़की रुचि के गोलों से !!
मोमंद अरु अफरीदी सारे शस्त्र लिये विद्रोही थे !
रहे निरंतर शासन के ही–जो दल जितने टोही थे !!

पेशावर विद्रोह, पठानी आन–बान इतिहास लिये !
बढ़ता जाता रहा निरंतर–पूर्ण आत्म विश्वास लिये !!
खान अब्दुल गफ्फार खान थे अग्रदूत नित गौरव के !
पूर्ण रूप से मुक्ति चाहते रहे गुलामी–गौरव से !!

बागडोर सीमान्त प्रान्त की दृढ़ थी उनके हाथों में !
था असीम वह ओज नहीं था जो कि उल्कापातों में !!

क्रान्ति की ज्वाला लिये—

लालकुरती थे अहिंसक, किंतु स्वाभिमान था !
मुक्ति के आन्दोलनों का प्राण हर पठान था !!
बात के पक्के सभी थे—शस्त्र रखते साथ थे !
अरु दमन के रास्ते पर झुक न पाये माथ थे !!
प्रेरणा सरहदी गाँधी दे रहे हर ओर थे !
क्रान्ति की ज्वाला लिये दहके हुये सब छोर थे !!

क्या मजाल—

सहम रहा था ब्रिटिश शासन, नित्य नये आन्दोलन से !
जोड़ लिया गफ्फार खान ने खुद को भारत जीवन से !!
चहुंदिशि ही झंडा बुलंद था उस पठान नर नाहर का !
क्या मजाल सीमा में–पक्षी तक घुस पाता बाहर का !!

देश भक्ति वह बेमिसाल थी–जिसका लोहा माना था !
अंग्रेजों की हर कमान ने–भारत को पहचाना था !!
स्वत्व सुरक्षा हेतु जंग थी छेड़ी उन रणधीरों ने !
जिन्हें किया अनुप्राणित तब था क्रान्ति युक्त–तदबीरों ने !!

द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस,
सितंबर १६३१-दिसंबर १६३१—

प्रथम गोलमेज कान्फ्रेंस की असफलता थी जगत प्रसिद्ध !
अंग्रेजों की चालाकी का नया दौर था पूर्ण निषिद्ध !!
हुये सम्मिलित स्वयंभू नेता किन्तु सफलता मिल न सकी !
जब लौटे तो तीव्र चेष्टा लगी सभी को थकी-थकी !!

गाँधी-इरविन समझौते के अंतर्गत था किया प्रयाण !
सद प्रयास के काँग्रेस को मिलने को थे नये प्रमाण !!
द्रुत सम्मेलन हेतु चल दिये गाँधी बाबा लंदन को !
साथ-साथ ही लिये चले थे प्यारे भारत--दर्शन को !!

एक मात्र प्रतिनिधि के नाते-सारी जिम्मेदारी थी !
देश वासियों की आजादी उनको सबसे प्यारी थी !!
बिदा किया जब नेताओं ने भारत से उत्साह सहित !
गाँधी खुद अपने ऊपर थे होते द्रुत आश्चर्य चकित !!

चूँकि उन्हें आशायें कम थीं, अंग्रेजों के हर दल से !
जब पहुंचे लंदन तो देखे स्वागत में जुड़ते जलसे !!
"इतने बड़े देश का प्रतिनिधि-धोती नुमा लंगोटी में" !
और साथ ही जादू सा कुछ लाया अपनी सोटी में !!

बच्चे, बूढ़े अरु महिलायें–
और सभी थे चकित जवान !
कितना भूखा—नंगा—दुखिया–
हाय ! देश है हिन्दुस्तान !!

विश्व दृष्टि तो भाँप चुकी थी–
लंदनवासी का सुर तेज !
जान लिया था साथ–साथ ही–
कैसे चंचल हैं अंग्रेज !!

जो स्वतन्त्रता भारत भू को–
नहीं देखनी चाही है !
और स्वत्व की हरेक बात को–
स्वयं मेटनी चाही है !!

गाँधी ने बाँधी थी धोती ऊपर चादर पूर्ण धवल !
देख–देख कर हर दर्शक की जिज्ञासा का खिला कमल !!
पतला, दुबला जर्जर तन यह–आजादी की ध्वजा लिये !
जला रहा है आज विश्व में मानवता के शुभ्र दिये !!

सत्य–अहिंसा सत्याग्रह के बल पर दृढ़ता पाई है !
लंदन ही क्या आज विश्व में गाँधी–गरिमा छाई है !!
राष्ट्र मुक्ति आन्दोलन का था–धार रखा वह दिव्य स्वरूप !
जिसने गाँधी बाबा जी को बना दिया था व्यक्ति अनूप !!

अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि हिन्दू अरु मुस्लिम भी साथ !
गोलमेज सम्मेलन में थे चले दिखाने अपने हाथ !!
कुछ भी हो पर तब लंदन में स्वागत हुआ त्वरित असामान्य !
गाँधी जी की मान प्रतिष्ठा शाही तबके को थी मान्य !!

है स्वतन्त्रता निज अधिकार—

चला वार्ता का जब दौर,
अंग्रेजों का रुख था और !
हिन्दू—मुस्लिम का विद्वेष;
बढ़ा रहा था प्रति पल क्लेश !

भेद—भाव दोनों में डाल,
चल दी अंग्रेजों ने चाल !
गाँधी जी का भाव प्रशान्त;
चाह रहा था मुक्ति नितांत !

आजादी का हो संयोग,
तब कट सकता है हर रोग !
है स्वतन्त्रता निज अधिकार;
जिसको दे पहले सरकार !

अड़ी रही थी मुस्लिम लीग,
अन्य दलों ने हाँकी डींग !
असफल था सम्मेलन दौर;
नहीं रास्ता था कुछ और !

सांप्रदायिकता का विष तेज,
भरते जाते थे अंग्रेज !
जनता के हक को नित दाब,
उठा रहे थे प्रतिदिन लाभ !

थे निराश गाँधी निज मन में,
सत्य तड़पता था जीवन में !
अन्य लोग जो चाटुकार थे,
रखते सत्ता सरोकार थे !

गाँधी—मन में थे आदर्श,
और बढ़ेगा अब संघर्ष !
जब लौटे तो किया विचार,
दमन नीति का हो प्रतिकार !

पुनः चले आन्दोलन तेज,
ऐसे कब मानें अंग्रेज !
सांप्रदायिकता का फिर जोर,
फैलाया था चारों ओर !

डॉ० भीमराव अम्बेडकर १४ अप्रैल १८९१—६ दिसम्बर १९५६—

राष्ट्र भावनाओं का चिंतन जब करती है धरती !
खड़ी फसल में प्रेरक गुण का अद्‌भुत रूप सवँरती !!
जब—जब घिरा अंधेरा—भूतल काँपा सहसा भय से !
तब—तब गुंजित हुये स्वत्व गुण जन हितकारी लय से !!

स्वार्थ सनी जन भावनाओं ने भेद—भाव कर पैदा !
ऊँच नीच की हर कोने में कर दी खड़ी समस्या !!
जो कि उपेक्षित और विभुक्षित जन थे रोते सारे !
दलित वर्ग में गिने गये वे हा ! किस्मत के मारे !!

उनके प्रति अन्याय बढ़ा अरु—हर पग बाँधे बन्धन !
बना दिया नित नाटकीय था उन सबका ही जीवन !!
महाराष्ट्र—रत्नागिरि जनपद भाग्यवान था सुस्थल !
जहाँ मसीहा ने दलितों के जन्म लिया शुभ मंगल !!

वर्गवाद अरु जातिवाद का देखा घोर बवंडर !
मनुज जाति का जीना तक था गाँव नगर में दूभर !!
पानी तक से वंचित रहते कष्ट भरा था जीवन !
क्या मजाक था कुँए—बावड़ी उनक छुये, अपावन ??

भीमराव के कटु अनुभव थे जीवन–साध–डगर के !
पढ़े लिखे तक भी नफरत करते थे बड़े नगर के !!
डट कर पायी शिक्षा–प्रतिभा अग–जग को दिखलाई !
छुआ छूत से हट समाज की रचना ज्योति जगाई !!

विधिवेत्ता–चातुर्य गुणी व्रत–सबको जब दिखलाया !
राष्ट्र चिंतकों ने पहचाना–भीमराव मन भाया !!
दलितोद्धारक योजनाओं को लिया स्वयं जब कर में !
नाम हुआ था भीमराव का सहसा दुनिया भर में !!

"अब न कभी अन्याय सहन होगा" वह तन कर बोले !
भारत के इतिहास वृंत ने नये पृष्ठ हैं खोले !!
अंग्रेजों ने गोलमेज सम्मेलन में कर शामिल !
सोचा होगी हल हर पग पर उभर रहीं जो मुश्किल !!

किन्तु देश का ध्यान प्रथम था उनको तब हर क्षण ही !
अंग्रेजों को चाल न चल पायी थी इस कारण ही !!

इतिहास बदलता दीख रहा,
मानव था जीना सीख रहा,
भारत को अधिकार चाहिये;
नहीं माँग था भीख रहा !

दलितों का कल्याण—

छुआछूत का बढ़ा जोर था,
भेद–भाव का तीव्र दौर था,
गाँधी का मन हुआ द्रवित था,
कांग्रेस मंडल चिंतित था !

गाँधी जी के सद् प्रयास से,
वे संभले जो कि उदास थे !
जो सवर्ण थे उन्हें जगाया,
'हरिजन' अपने हैं बतलाया !

इनको लेकर साथ चलो रे !
उठो पुरातन रुख, बदलो रे !
भीम राव से किया मशवरा,
दृष्टि कोण सबका था सवरा !

निर्वाचन में जगह सुनिश्चित,
दलित वर्ग कल्याण नियोजित !
पूना पैक्ट यही कहलाया;
होता अग्रिम ह्रास बचाया !

अग्र पंक्ति के नेता बनकर भीम राव थे चमके !
थे प्रभाव नित पड़े सभी पर उनके अपने श्रम के !!
हुये प्रभावित लाल जवाहर, नर पटेल अरु राजन !
कर न सके अंग्रेज अंततः भारत—वर्ग—विभाजन !!

भीव राव की योग्यताओं का था प्रभाव जो देखा !
साथ कार्य करने की धुन थी संकल्पों की रेखा !!
दलितों का कल्याण सुनिश्चित करना ध्येय बनाया !
पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा निज मंतव्य बताया !!

प्राप्त हुई जब थी स्वतन्त्रता, संविधान रच करके !
पुष्प खिलाये उल्लासों के–रुचिमय भारत भरके !!
किन्तु हाय ! हिन्दू समाज की यह अपनी कमजोरी !
करनी आई जातिवाद के हित में नित बर जोरी !!

खिन्न हुये जब इस स्थिति से बौद्ध धर्म अपनाया !
कितना है दुर्भाग्य आज भी, भेद–भाव की छाया !!
काश ! यहाँ पर भीमराव के इंगित पर सब चलते !
विकृत होते इस समाज के द्रुत व्रत रूप—बदलते !!

मार्च १९३२,

ऐतिहासिक ज्ञान—

दमन—नीति थी जारी शासन दुराग्रहों का आदी !
सोच रहा था भारत को क्या भली लगे आजादी !!
उठी रियासतें अधिकारों के हेतु मगर भर • लय को !
जोड़ दिया था कदम-कदम पर शासन से संशय को !!

सब न हो सकी एक-तड़प कर रहे राष्ट्र हित-चिंतक !
विद्रोहों पर चक्र दमन-प्रति पल था तब भी व्यापक !!
काँग्रेस ले चुकी अवज्ञा आन्दोलन को वापस !
सब ही थे बेचैन, कौन किसको दे पाता ढ़ाढस !!

इससे पूर्व गाँधी-पटेल भी भेज दिये थे कारा !
बिखर गया था आन्दोलन भी होकर पारा-पारा !!
चला मुकदमा और जवाहर जेल गये थे फिर से !
बांध चुके थे सारे नेता कफन निरन्तर सिर से !!

विजय लक्ष्मी अरु कृष्णा भी कारा के थी अन्दर !
आन्दोलन में गिरफ्तार था नेहरू जी का घर भर !!
इधर इन्दिरा बड़ी हो रही—घेर न पाये उदासी !
इस कारण ऐतिहासिक तथ्यों की दिखलाई झांकी !!

नवोन्मेष के साथ समन्वित—

ज्योति जवाहर लिये हृदय में ज्ञान वान रुचि लय की !
लगे तोड़ने दीवारों को संदेहों की, संशय की !!
ऐतिहासिक तथ्यों को समझा, किया स्वयं विश्लेषण !
वैज्ञानिक आधार खोज कर, जानी सृष्टि सकारण !!

जितना जो भी समय मिला—कर सद्उपयोग लिया था !
नवोन्मेष के साथ समन्वित कर संयोग दिया था !!
गहराई में उतर विषय की गरिमा—गुण जुट देखा !
दीर्घ अध्ययन ने खींची थी संकल्पों की रेखा !!

कैसे धरती बनी—

प्राप्त ज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने का रच माध्यम !
कारा में या फिर विदेश में–लिखते रहने का रख क्रम !!
प्रिय बेटी, रुचिवान इन्दिरा पात्र बनी शिक्षा की !
जिसको दी थी निखिल भुवन की समय–समय पर झांकी !!

किया स्वस्थ निर्माण–प्राण भर दिये उभरते प्रण में !
और बढ़ा दी रुचि जीवन के गुण की थी जन–गण में !!
कैसे धरती बनी और कैसे है वाणी खनकी !
युगारंभ के साथ बढ़ी थी कैसे छवि जीवन की !!

अग्नि पिण्ड के चहुंदिशि अनगिन परत धरा की कैसे !
वर्तमान आकृति है जन्मी वसुन्धरा की कैसे !!
जड़–चेतन का क्या अन्तर है, जल–थल निर्मित कैसे !
पर्वत–पर्वत प्रकृति छटा है देखो शोभित कैसे !!

कोटि-कोटि वर्षों से होते आये क्यों परिवर्तन !
वर्तमान सुस्तर तक पहुंचा कैसे मानव—जीवन !!
पहला मानव जब जन्मा था उसे लगा था कैसा !
क्या धरती पर होगा कोई अन्य यहाँ उस जैसा !!

कैसा लगा शुभारम्भ था इस जग के दर्शन का !
अंकन उस पर कैसे छितरा जीवन-भाव-सुमन का !!
भीमकाय पर्वत श्रेणी पर फूल पात थे कैसे !
आदिकाल में इस धरती पर दिनो रात थे कैसे !!

सब बतलाया योग्य पिता ने पत्र स्वयं लिख-लिख कर !
यह शिक्षा थी नव प्रकाश शुचि सूर्य किरण सी दिखकर !!
किस प्रकार फैली धरती पर नव विकास की छाया !
कैसे विकसित थी जीवन की शोभा शाली छाया !!

कीट, पंतगों के रंगों का कैसे सृजन हुआ था !
पक्षी गण ने किस प्रकार उड़ नीला गगन छुआ था !!
तरह-तरह के जीवों से यह धरती शोभा शाली !
कैसे ज्योतिर्मय आभा से बनती गई निराली !!

कैसे शक्ति सृजन की वेला आई थी उस द्वारे !
बारी-बारी जन्मे प्राणी जिस पर सुन्दर सारे !!
ज्यों-ज्यों बढ़ती गई चेष्टा त्यों-त्यों जग हरियाया !
सृष्टि जागरण का नव युग था इस धरती पर आया !!

किस प्रकार अवरोधों को सह बढ़ते रहे चरण थे !
किस प्रकार जीवन रचना में रहते प्राण मगन थे !!
किस प्रकार नव परम्परायें जीवन में अपनायी !
कैसे-कैसे थी मुसीबतें हर पल यहाँ उठायीं !!

नग्न दशा में फंसा हुआ युग कैसा था वह अद्‌भुत !
नियति अंक से निकल रहा था कैसा जीवन शोभित !!
क्या खाते थे क्या पीते थे उस नव युग के प्राणी !
कैसे-कैसे बदल रही थी परिवर्तन की वाणी !!

ज्योति-जवाहर नई सुशिक्षा बनकर चमक रही थी !
और बालिका इन्दु ग्रहण कर निज में दमक रही थी !!
यह अद्‌भुत विश्वास जनित थी नेहरू जी की व्याख्या !
एक नया अध्याय सुशिक्षा का जिस ने थी खोला !!

नई झलक की ललक लिये मन कैसे थे उत्साहित !
कैसे विकसित हुई सभ्यता जीवन-ज्योति अपरिमित !!
जंगली जीवन की व्याख्या में कैसा था संचारण !
शंकाओं का होता था तब कैसे, कहाँ निवारण !!

जंगल-जंगल मंगल सा कैसे थे लोग मनाते !
कैसे क्षुधा मिटा सकने को जीव मार कर खाते !!
हुआ शुरु पाषाण काल था इस धरती पर कैसे !
अभर रहे थे नव जीवन के कोमल मन-स्वर कैसे !!

कैसे निज रक्षार्थ मनुज थे पत्थर शस्त्र बनाते !
हिंसक पशु से कैसे थे वे अपने वर्ग बचाते !!
कैसे बुद्धि विकास बढ़ा था नर-नारी के मन में !
लज्जा, यौन सुरक्षा कैसे सीखी थी जीवन में !!

निर्भयता के क्या थे संबल–सबका भेद बताया !
वीर जवाहर ने बेटी को निर्भय खूब बनाया !!
प्रिय गाथा पाषाण काल की युग की अमर निशानी !
धरा पटल पर स्वर्ण अक्षर में अंकित नई कहानी !!

तन पर कैसे वस्त्र वनस्पति के थे शोभा पाते !
सर्दी गर्मी से कैसे थे खुद को मनुज बचाते !!
छोटी बड़ी गुफायें गढ़ कर रहते थे वे कैसे !
घोर बवंडर, तूफानों को सहते थे वे कैसे !!

कैसे हुई अग्नि की रचना इस धरती के तल पर !
कैसे उठी प्रथम नई लौ पाषाणों से जल कर !!
इसी नई लौ ने तो मन में चमत्कार को रोपा !
स्वयं सिद्धि के हाय समन्वय द्रुत भावों का सौंपा !!

काष्ठ, छाल अरु ताल पत्र थे कैसे रुचि उपयोगी !
क्या इलाज करते बीमारी का उस युग के रोगी !!
मिट्टी, पानी के गुण क्या थे कैसे घाव सुखाते !
वनस्पतियों की व्याख्या से कैसे सुख थे पाते !!

कैसे युग की परिधि लांघ कर अग्रिम पग थे बढ़ते !
अनपढ़ जन थे कैसे छवि की भाषाओं को पढ़ते !!
धातु–काल आरम्भ हुआ था इस धरती पर कैसे !
फूंस, बांस लकड़ी पत्तों के बनते थे घर कैसे !!

कैसे विकसित हुई सभ्यता आदिकाल के जन में !
कैसे पहचानी थी खुशबू खिलते हुये सुमन में !!
बढ़ते–बढ़ते, युग को पढ़ते रुचि कैसे थी फैली !
कैसे हुई सहायक दौलत मानव हेतु बनैली !!

कैसे पशु का चर्म अंग पर—

मांस भक्ष कर जीते थे वे प्राणी कैसे-कैसे !
मानव बनते रहे यहाँ पर ज्ञानी कैसे-कैसे !!
कैसे पशु का चर्म अंग पर मानव के था सजता !
कैसे था विकसित जीवन का राग हृदय में बजता !!

बर्तन कैसे बने मृत्ति के और धातु के प्यारे !
कैसे मानव जीवन के थे ढँग यहाँ पर न्यारे !!
मानव से मानव का रुचि कर-कैसे स्नेह बढ़ा था !
एक दूसरे ने कैसे तब जागृत हृदय पढ़ा था !!

कैसे उपजा अन्न धरा पर, कैसे विकसी खेती !
कैसे, कैसे पहचानी थी नदी ताल की रेती !!
कैसे रहना सीखा मिल कर, परम्परा थी कैसी !
भाषा-भाव, प्रभाव परक-नव ज्योति कथा थी कैसी !!

जौ, गेहूं अरु धान्य देखकर-सर्व प्रथम स्वर क्या थे !
नव प्रभाव उस बदले युग के मानव-मन पर क्या थे !!
नेहरू ने पत्रों के द्वारा दिखा दिये वे उद्गम !
नव विकास का इस दुनिया में बना जहाँ से नव क्रम !!

लाखों वर्षों के संघर्षों को था लिखा जतन से !!
अंगीकार कर लिया सीख को था इन्दिरा ने मन से !!
धरती हिस्सा थी सूरज का फिर आये परिवर्तन !
धीरे-धीरे ठंडक पाकर था विकसित नव जीवन !!

और चाँद भी पृथक भूमि से होकर नभ में चमका !
कोटि-कोटि वर्षों में जाकर गुण-गौरव था दम का !!
सागर में क्या-क्या हलचल थी कौन जीव थे पनपे !
नव परिवर्तन का प्रभाव था पड़ता तब किन-किन पे !!

जलचर, वनचर, नभचर सारे-समायवृत से जागे !
किन्तु अक्ल में मानव ही था निकला सबसे आगे !!
वानर जैसे निज स्वरूप में नव परिवर्तन लाकर !
किया बुद्धि को था मानव ने अपने आप उजागर !!

खेत बने, खलिहान सजे फिर-खाद्य पदार्थ जुटे थे !
वर्गवाद के हाथ किन्तु श्रम-कृषकों—जन्य लुटे थे !!
श्रम चिंतन की भावनाओं का उसमें रंग जुड़ा था !
बेटी का उत्साह सभी कुछ पढ़ने को उमड़ा था !!

ललक नव अधिकारों की जागी—

जब समाज बन गया ललक नव अधिकारों की जागी !
लगी पनपने स्वार्थ भावना, चाह बनी अनुरागी !!
क्रीट, मिस्र की प्रथम सभ्यता–जग प्रसिद्ध है सारी !
जिसने युग के बढ़े चरण में प्रति दिन साख सवाँरी !!

कैसे, कब अरु कहाँ–कहाँ से आये–आर्य यहाँ पर !
और यहाँ दक्षिणी भाग में रहते द्रविड़ कहाँ पर !!
समय बीतते युग पलटे यह आर्यवर्त कहलाया !
नई सभ्यता का प्रभाव था युग–वृत ने दिखलाया !!

युग आया फिर ऋषि—मुनियों का लेकर नव परिवर्तन !
बुद्धि विकास, प्रयास निरन्तर रचता था संवर्धन !!
संस्कृत भाषा आशा बनकर भारत भू की जागी !
जगह–जगह पर लगे जागने ज्ञानी स्वर अनुरागी !!

इसमें ही वेदों की रचना हुई आदि के व्रत से !
जन कल्याणी भावनायें थी जुड़ी हुई अभिमत से !!
नई विधा जीवन की विकसी नये नियम थे निर्मित !
जन समाज तब हित वर्गों में होने लगा विभाजित !!

जो जितना सामर्थवान बन गया मिला यश बल था !
बना दास वह जो समाज में पाया गया अबल था !!
बाल्मीकि की रामायण है ग्रन्थ महान हमारा !
राम चरित अरु रावण का है इसमें वर्णन सारा !!

और महाभारत अद्भुत है ग्रन्थ वीर वर गाथा !
श्रीमद् भगवद् गीता से है उच्च देश का माथा !!
ऐसे ही अद्भुत प्रसंग थे नित्य अनेक बताए !
जिससे प्यारी इन्दु विश्व का ज्ञान प्राप्त कर पाए !!

यही ज्ञान, आधार बने जीवन के अग्रिम पग का !
वीर भावना के नव क्रम में ध्यान रहे इस जग का !!
इस शिक्षा ने बाल्यकाल से नव जिज्ञासा रोपी !
वाह रे ! नेहरू खूब धरोहर निज बेटी को सौंपी !!

जिसने ज्योतिर्मय जीवन की—

कथा–सूत्र को जोड़े–जोड़े–
वृद्ध तनिक मुस्काए !
"देखो, बेटा, उस अतीत के–
दर्शन तुमने पाए !!

नींव पड़ी यह उस जीवन की–
सूर्य सरिस जो चमका !
उत्तरोत्तर गौरव रक्खा था–
जिसने उन्नति—क्रम का !!

इतना उन्नत ज्ञान प्राप्त कर मन था खिला कमल सा !
बाल–बुद्धि थी लेकिन मन में उभरा नूतन बल सा !!
कितना अन्तर उस समाज में और आज जन–जन में !
नई प्रेरणा मिली पिता से इन्दिरा को जीवन में !!

भ्रम–संशय अरु संदेहों को–
किंचित जगह न दी थी !
योग्य पिता से योग्य सुता ने–
ऐसी शिक्षा ली थी !!

भाव चिरंतन प्राप्त किये थे–
मन, वच—कर्म सधे थे !
निर्माणों की नई डगर से–
उच्च विचार बन्धे थे !!

शुभारंभ था कीर्ति—शिखा का–
जीवन के उपवन में !!
संस्कार की गंगा उतरी–
मन के रम्य सदन में !!

निज बेटी में बेटे से गुण–
व्रती जवाहर डाले !
सार्वभौम रचना जिज्ञासा–
के गुण प्रति पल पाले ! !

ज्ञान–विधा की ऐसी क्यारी–
रोपी नेहरू ने थी !
जिसने ज्योतिर्मय जीवन की–
अद्‌भुत उपमा दे दी ! !

किन्तु ज्ञान के साथ मान रख—

मिले प्रेरणा स्रोत, ज्योति कण–जगते रहे समय से !
रखा प्रबल तादात्म्य इन्दिरा ने था भारत—जय से ! !
उत्कट इच्छा, अभिलाषा थी जाग रही नित मन में !
रखी निरन्तर प्रबल आस्था, सत–जीवन–व्रत प्रण में ! !

चूँकि पितामह ने खुद सुत का अपने ज्ञान बढ़ाया !
जितना सम्भव रहा ज्ञान से उसको खूब पढ़ाया ! !
उसके ही अनुरूप सुलेखन–रुचि भण्डार खिले थे !
बाल्यकाल से ही इन्दिरा को उन्नति स्रोत मिले थे ! !

मन में सद्गुण, भाव अभय का जय की थी जिज्ञासा !
कौन जानता था तब लड़की होगी भारत-आशा !!
किन्तु ज्ञान के साथ मान रख-जो सद् व्रत का बढ़ता !
कर्त्तव्यों के प्रति आती है उसमें प्रति पल दृढ़ता !!

जो कि समर्पित भाव संजोकर कर्म-मार्ग पर चलता !
निश्चय ही वह निज कौशल से युग का मार्ग बदलता !!
किस प्रकार उपयोग समय का करें यहाँ जीवन में !
इसकी थी संपूर्ण प्रेरणा जागी उसके मन में !!

अनुपम बनने की जिज्ञासा-जगती रही हृदय में !
स्वतन्त्रता की भावनायें थीं भर दी अग्रिम जय में !!
मंत्र समझ कर अंगीकार कर लिये सभी उद्बोधन !
स्वाध्याय की ओर लगन से ढाल लिया था जीवन !!

आदर्श महिला कमला नेहरू—

सौम्य, सरल मन कोमल तन की मूर्ति निराली कमला !
रही जवाहर-हित-चिन्तन की थी रखवाली कमला !!
किया समन्वय भावनाओं के संग आनन्द भवन में !
आदर का सिक्का 'बिठलाया हर परिजन के मन में !!

योग्य गृहणी सफल सेविका, सास श्वसुर की प्यारी !
रही जवाहर मन–मयूर की शोभा जग से न्यारी !!
सच्ची साथी थी जीवन में–हर पग रही सजाती !
दुख भी झेले किन्तु पीर थी नहीं अधर पर लाती !!

रहे राजसी ठाठ–किन्तु था मान नहीं किंचित भी !
सरल भाव की मूर्ति सदा ही निज धर में शोभित थी !!
रहा आत्मविश्वास, धैर्य अरु अपनेपन का गौरव !
जन सेवा भी की थी जुट कर जितना जब था संभव !!

यद्यपि शिक्षित नहीं अधिक थी गुणी मगर थी पूरी !
समझ चुकी थी पति की अपने जीवन की मजबूरी !!
जब बेटी–हो गई इन्दिरा अतुलित स्नेह बढ़ा था !
प्यार जवाहर के प्रति भी तब पूरा बढ़ा–चढ़ा था !!

सत्याग्रह–आन्दोलन में जुट बदला था निज जीवन !
पूर्ण स्वदेशी भावनाओं से सजा हुआ था तन–मन !!
महिलाओं के दल को बढ़ सहयोग प्रदान किया था !
गाँधी जी के आदर्शों का जुट सम्मान किया था !!

कैसी धूप कहाँ की गर्मी–सब कुछ सहा बदन पर !
निकल पड़ी थी जब जलूस में सत्य आग्रही बन कर !!
कष्ट झेल कर थी मुस्काई पीछे नहीं हटी थी !
जहाँ मोर्चा आवश्यक था जाकर स्वयं डटी थी !!

अमर हुई जनवरी इकत्तिस जब वे जेल गई थी !
दमन चक्र के आगे डट प्राणों पर खेल गई थी !!
सुना जवाहर ने तो निज पर उनको गर्व बड़ा था !
और अधिक शुचि स्नेह हृदय से उनके तब उमड़ा था !!

महिला दल आदर्श बन गई–
कमला थी भारत में !
रही सदा ही साथ–साथ थी–
पति के जीवन पथ में !!

चली त्याग की लहर—

चली त्याग की लहर–कहर ढाती अंग्रेजी राज पर !
नित कलंक लग जाया करता था लन्दन के ताज पर !!
तज विद्यालय निकल पड़े थे सारे ही विद्यार्थी !
त्याग पदों को शिक्षक गण भी बने त्वरित परमार्थी !!

असहयोग की लहर तीव्र थी तज सरकारी नौकरी !
आंदोलन में हुए सम्मिलित–नगर गाँव के आदमी !!
गाँधी का आह्वान ध्यान से सुना–गुणा अरु चल दिये !
और साथियों तक को पद तजने को अक्सर बल दिये !!

ऊँचे–ऊँचे तक पद छोड़े विश्वासी इन्सानों ने !
जेलें भर दीं इधर उधर से बढ़कर वीर जवानों ने !!

शान्ति निकेतन मध्य इन्दिरा—

बड़े बाप की बेटी थी पर लेश मात्र अभिमान न था !
सुख, सुविधा की ओर रहा अब, किंचित भी तो ध्यान न था !!
अपना कार्य स्वयं करती थी–स्वावलम्ब की ओर बढ़ी !
गुरू रवींद्र की कवितायें भी हृदय लगा कर खूब पढ़ी !!

जो भी कार्य दिया जाता था चाव सहित जुट करती थी !
स्वयं सिद्धि की नई डगर पर नूतन इंदु उभरती थी !!
स्वाध्याय पर्याय बन गया था कर्मठ रुचि जीवन का !
करती थी उपयोग सदा उपलब्ध वहाँ पर साधन का !!

पढ़ती थी अखबार प्यार करती थी जन–आँदोलन से !
बाँध रखी थी तारतम्यता भारत–जीवन–दर्शन से !!
गुरू रवीन्द्र की कृपा पात्र बन गई स्वयं के करतब से !
मिल जुल कर रहने की उसने आदत डाली थी सबसे !!

गुरू रवीन्द्र अरु अन्य सभी शिक्षक भी खूब प्रभावित थे !
देख रहे गुण श्रेष्ठ प्रगति के उसमें सब सम्भावित थे !!

सन् १९३३—३४,

किन्तु जवाहर तनिक न झिझके—

न्यायालय नाटक के घर थे !
न्याय विधा लन्दन के स्वर थे !!

देश–प्रेम, विद्रोह बताया,
नया मुकदमा गया चलाया,
किन्तु जवाहर तनिक न झिझके,
किया वही जो मन को भाया,

झुके न थे सत्ता के डर से !
न्याय विधा लन्दन के स्वर थे !!

संपति को नीलाम करा कर,
अरु स्वराज्य भवन घिरवा कर,
बहक रही थी गोरा शाही,
नेताओं को बंद करवा कर,

छुटे न वे जुर्माना भर के !
न्याय–विधा लन्दन के स्वर थे !!

नहीं किसी से भी डरते थे,
अपनी बहसें खुद करते थे,
शासन करता लाख कोशिशें,
कभी न जुर्माना भरते थे,

रंग रूप बदले थे घर के !
न्याय विधा लन्दन के स्वर थे !!

नीरवता आनन्द भवन की—

क्यारी-क्यारी जहाँ महकती रही सदा से श्रेष्ठ चमन की !
चहल-पहल भी जग प्रसिद्ध थी, जिस घर के चौड़े आँगन की !!
वह घर सत्याग्रह का पोषक बन कर एक मिसाल बन गया !
नीरवता खलने लगती थी कमला को आनन्द भवन की !!

गोविन्द बल्लभ थे मिसाल—

आन्दोलन संयुक्त प्रान्त में और अवध में तीव्र रहा !
जहाँ स्वेद टपका नेहरू का दिया वहाँ निज रक्त बहा !!
कर्मठ, तेज वकील सिद्धि के साधक गोविंद बल्लभ थे !
संग-संग नेता प्रदेश के बढ़ते पथ पर मिल सब थे !!

कुछेक रियासतें स्वार्थवाद में लालच पाकर ढलती थीं !
किन्तु पंत के आगे उनकी नहीं एक भी चलती थी !!
दाँए हाथ थे वे नेहरू के काँग्रेस सुस्तम्भ रहे !
सत्ता से लोहा लेने में सदा गाड़ते खम्भ रहे !!

भारी भरकम देह, स्नेह नित जन मानस का पाती थी !
दूर दृष्टि से नई समस्या क्षण में हल हो जाती थी !!
वीर कुमाऊँ के अलबेले-नित्य जवाहर संग रहे !
जब भी मौका मिलता शासन पर करते दृढ़ व्यंग रहे !!

आन–बान रख कर प्रदेश की आन्दोलन में प्राण भरे !
सिद्ध वही नेता–जेता जो जुट कर जन कल्याण करे !!
लाल बहादुर, टंडन संग थे—शक्ति बढ़ी आन्दोलन में !
गोविंद वल्लभ थे मिसाल संगठन–शक्ति की जीवन में !!

लाठी खाई, सहे वार अंग्रेजों के जम कर तन पर !
सहा अंत तक पीड़ाओं को हिलते—डुलते जीवन भर !!
झुके न लेकिन यातनाओं से समय जुझारू बने रहे !
क्रान्ति दहकती रही रगों में–कर्मठ बन कर तने रहे !!

रहा आत्म विश्वास, डगर पर चले सदा जयकार बने !
भावी युग के निर्माणों का लौह पुरुष आधार बने !!
खुशी हुई जनता थी लख कर जब कि प्रदेश प्रधान बने !
डगर–डगर पर अवध प्रान्त की स्वाभिमान के गान बने !!

सन् १९३५ मेरी कहानी—

यद्यपि घातक कारा–जीवन, किन्तु लिया था लाभ उठा !
किया अध्ययन जुट नेहरू ने अक्सर श्रेष्ठ किताब उठा !!
लिखी जीवनी अल्मोड़े में अपनी रह कर शान्त हृदय !
पूर्ण रूप एकाकी पन पर पायी लिख लिख नित्य विजय !!

शब्द भाव सुन्दर लहजा था रखा कहानी कहने का !
श्रेष्ठ माध्यम बना लिया था, क्रम व्रत, नियमित रहने का !!
प्राप्त ज्ञान सत् जीवन का हो—आन्दोलन रुचि जान सके !
पढ़े कहानी हृदय लगा कर तथ्यों को पहचान सके !!

विषय वस्तु, आकर्षक—विवरण तारतम्यता पूर्ण सधा !
इस अमूल्य पुस्तक से रहता पाठक का मन सदा बंधा !!
पूर्ण रूप जीवन वृत आँके अनुभव देश विदेशों के !
दिये उद्धरण बड़े चाव से कवि, लेखक—संदेशों के !!

विद्वत्ता से पूर्ण व्याख्या—
प्रस्तुत इसमें जीवन की !
बनी बात हर एक हृदय की—
जब कि कही अपने मन की !!

जर्जर कमला का था शरीर—

नीरवता छायी थी नितान्त,
कमला थी रहती ज्वराक्रान्त,
घर के सब कारा मध्य लीन;
फिर कैसे रहता हृदय शान्त !

सूनापन अपने आप रोग,
जीवन से छूटे सौख्य-भोग,
कैसा था अद्‌भुत त्याग-राग;
कैसा था पल-पल वह संयोग !

घुलता नित जाता था शरीर,
अपनों के प्रति था मन अधीर,
दिन-प्रतिदिन क्षय से क्षति अपार,
जर्जर कमला का था शरीर !

कठिन समय था यह जीवन में—

बिगड़ गई जब दशा-हँसा युग, चलदी अपनी चाल थी !
आतुर लेने बढ़ा परीक्षा त्वरित जवाहर लाल की !!
कमला को लख-लख करके संयम आँका वक्त प्रवाह का !
सोच रहे थे-आखिर जीवन पथ में कौन गुनाह था !!

जिसका है परिणाम कि कमला भोग रही नित कष्ट है !
क्षय का पूर्ण प्रभाव निरन्तर दीख रहा सुस्पष्ट है !!

निश्चय था कर लिया हृदय में,
अब न रहें किंचित संशय में,
कमला की गंभीर दशा है;
इसे बदलनी शीघ्र हवा है !

स्वयं बन्धे कारा बन्धन में,
कठिन समय था यह जीवन में,
त्वरित इन्दिरा को बुलवाया,
आने का कारण बतलाया !

२० अप्रैल सन् १९३५,

इन्दिरा की शान्ति निकेतन से वापसी—

जब पहुंचा संदेश—दुखी मन गुरु रवींद्र थे देख रहे !
साथ-साथ ही पढ़ते युग क्रम के भी अनमिट लेख रहे !!
शान्त भाव इन्दिरा ने सुन कर—संयत मन को साध लिया !
त्वरित वापसी हेतु सभी सामान स्वयं था बांध लिया !!

द्रवित हुये गुरुदेव स्वयं में–इन्दिरा को समझाया था !
आत्म भाव का स्नेह छलक कर द्रुत पलकों पर आया था !!
चाहा इन्दिरा साथ किसी को ले–ले शान्ति निकेतन से !
पर वह तो थी आत्मजयी नाता था कर्मठ जीवन से !!

चली अकेली निडर सफर में–तज उस शान्ति निकेतन को !
ललित कला की ओर अग्रसर रखे हुये जो जीवन को !!
यद्यपि विद्या पीठ छोड़ने का दुख उसको गहरा था !
किन्तु नया दायित्व स्वयं के पलक द्वार पर ठहरा था !!

तज कर विद्या पीठ चली जब,
देख रही सहपाठिन थी सब !
देखो ! अब कब वापस आए;
पुनः सभी का मन बहलाए !

जब पहुंची थी घर तो देखा रुग्ण दशा है मात की !
सूना था आनन्द भवन अरु दुखी किरण थी प्रात की !!

किन्तु दिखाया साहस मन का,
भरा ओज था अपनेपन का,
शिक्षा थी गुरुदेव प्रवर की;
सूत्र मिला कर्त्तव्य लगन का !

जुट कर सेवा कार्य जननि का—

लिये साथ झट रुग्ण मातु अरु पापू के संदेश को !
स्वयं सिद्ध बन चली इन्दिरा निर्भय प्राण विदेश को !!
जुट कर सेवा कार्य जननि का करना है हर एक घड़ी !
पूर्ण रूप निष्पादित करना है कर्त्तव्य विशेष को !!

लम्बा सफर सिन्धु मार्ग का—अनुभव लेकिन पूर्व था !
यद्यपि इन्दिरा रही बालिका, पर उत्साह अपूर्व था !!
कुछ तो ली थी सीख पिता से कुछ सीखा गुरु देव से !
संयम साधन, धैर्य धारणा, दृढ़तर किये स्वमेव थे !!

रूग्ण जननि की सेवा में रत, रहती खुद दिन रात थी !
उतना सब कुछ किया सफर में जितनी वश की बात थी !!

आशाओं से–नव अनुबन्ध,
जैसा समुचित किया प्रबन्ध,
जर्मन का वह स्याह फारेस्ट,
भरे प्रेरणा भाव स्वच्छन्द !

जगा रहा विश्वास नया,
हो परिवर्तन खास नया !
सुरुचि पूर्ण रक्खा उपचार,
जगी रात में कई–कई बार !

किन्तु न माँ को था आराम,
क्षय का हमला था उद्दाम !
हुआ देख कर मन को क्लेश,
पापू को दे दिया संदेश !

मरणासन्न पत्नी के कारण दुखे जवाहर लाल थे !
त्याग जेल को, चिंतायुत जर्मन पहुंचे तत्काल थे !!
बदला था उपचार केन्द्र–हर औषधि थी बेकार रही;
ऐसा लगता था कमला को आतुर मृत्यु पुकार रही !!

जब कमला ने देखा पति को भाव भरे कातर मन से !
मौन वेदना—स्वर संपर्कित हुये निरन्तर जीवन से !!
लाये स्विटजर लैंड, बिगड़ने लगी दशा जब कमला की !
रम्यक अरु अनुकूल जगह पर आशा की झलकी झाँकी !!

जुटे जवाहर खुद सेवा में–
उमड़ रहा था स्नेह अपार !
किन्तु सामने खड़ी दीखती–
हर पल आफत की दीवार !!

जुटी इन्दु–दिन रात न समझे–
सेवा में रहती तल्लीन !
जैसे भी हो माँ बच जाये–
यही सोचती रही प्रवीण !!

जुटे जवाहर थे लेखन में–
आत्म कथा के नव अध्याय !
साथ–साथ पत्नी की खातिर–
जुट कर सब थे किये उपाय !!

काम न आया था किंचित भी–
उच्च स्तर तक का उपचार !
उधर देश से त्वरित बुलावा–
जाता उनको बारम्बार !!

सेवारत फीरोज निरंतर–
रहते थे कमला के साथ !
तभी इन्दिरा ने पहचाना,
स्नेह युक्त सहयोगी हाथ !!

२८ फरवरी १९३६,

श्रीमती कमला नेहरू का स्वर्गवास—

हृदय—द्वार संघर्ष बड़ा था,
सहसा आकर काल खड़ा था,
अस्थि मात्र कमला का तन था;
अतुल झेलना कष्ट पड़ा था !

क्षय के थे जो कतिपय कारण,
क्या सम्भव है उनका विवरण,
रही देखनी स्वतः इन्दिरा,
संयम मन में करके धारण !

संबल था फीरोज मित्र का.
बना सहायक रहा सर्वदा,
सहा हृदय पर पत्थर रख कर;
महा तीव्र झोंका विपदा का !

नहीं मचा सकती थी शोर—

मन का हाव भाव था बदला,
अंतिम पल थीं गिनती कमला,
घातक थी अट्ठाइस फरवरी,
किया मृत्यु ने था जब हमला !

टूटी सहसा जीवन डोर,
इन्दिरा ने देखा हर ओर,
हस्पताल की मर्यादा में,
नहीं मचा सकती थी शोर !

कष्टों का हो सका न त्राण,
चीत्कार करते थे प्राण,
मौन वेदना देख इंदु की;
सिसक उठे थे स्विस–पाषाण !

हुआ आन्तरिक बल था प्राप्त,
गम सहने की रुचि पर्याप्त,
पर जीवन में इन्दिरा जी के;
माँ का युग था हुआ समाप्त !

दुखी जवाहर लाल, इन्दिरा, डोली धरती–सिसका व्योम !
कमला करके देश भक्ति पर चल दी, निज जीवन को होम !!

वक्त का नित भार झेली इन्दिरा,
रह गई थी जब अकेली इन्दिरा !
प्रश्न था अग्रिम कदम का,
शैक्षणिक विस्तार—क्रम का !

भूल जाये निज व्यथा को,
अरु अभावों की कथा को !
रुख बदल दे जिन्दगी का,
सिलसिला हो रौशनी का !

निर्णय किया कि लन्दन जा कर–वातावरण बनावें !
आक्सफोर्ड में इन्दिरा को जा कर दाखिल करवावें !!
यहीं उचित था सूनापन भी लाजिम होना कम था !
और उधर नेहरू को खुद भी बेहद करना श्रम था !!

मिले कई सहपाठी लन्दन में भारत॰ के वासी !
बहसें होती थी भारत के हित में अच्छी खासी !!
लिया विषय इतिहास इन्दिरा पढ़ती थी जुट मन से !
चूंकि पिता को कब फुर्सत थी जेलों के जीवन से !!

राजनीति में रुचि घर से थी–विघटन भी था देखा !
खिचीं हुई थी मन के ऊपर अनुभव की दृढ़ रेखा !!
थे विचार बिल्कुल स्वतन्त्र अरु रही कामना जय की !
किन्तु कभी गुँजायश मन में रखी न थी संशय की !!

प्रगति पथ पर अग्रसर ,थी,
हर समय रहती निडर थी,
नव भविष्यत् हेतु क्रमवत;
जोड़ती अध्ययन—स्वर थी !

कांग्रेस में समाजवादी रुख सन् १९३४-३५—

सबसे श्रेष्ठ बड़ी संस्था कांग्रेस थी भारत में !
इसे देख कर आशंका होती थी कुछ की नीयत में !!
मुस्लिम लीगी पहिले ही से इस संस्था से चिढ़ते थे !
गोरा शाही के इंगित पर ताव चढ़ा कर भिड़ते थे !!

सत्य अहिंसा के बल पाना आजादी था नियम रहा !
ग्राम सुधारों का क्रम भी था बिना किसी भी वहम रहा !!
बड़े कृषक आन्दोलन जितने द्रुत संचालित होते थे !
उन सबको थी मिली प्रेरणा जो पड़-पड़ कर सोते थे !!

गाँधी जी के भी खिलाफ़ कुछ लोग बड़े ही माहिर थे !
कुछ तो रहते थे परोक्ष में कुछ–कुछ होते जाहिर थे !!
कुछ उदारवादी चिढ़ते थे-गाँधी-गुण अरु गौरव से !
बीज फूट के रहें पनपते ये लक्षण भी संभव थे !!

कुछ का रुख समभाव वाद में जनता के हित चिंतन में !
जो परिवर्तन चाह रहे थे-श्रमिक, कृषक के जीवन में !!
जय प्रकाश, मेहता अशोक अरु देव नरेन्द्र ने गठन किया !
काँग्रेस में वाम पंथ का-द्रुत चालित संगठन किया !!

ध्येय सभी का रहा एक था, आजादी था लक्ष्य रहा !
शक्तिमान पर सबसे बढ़ कर काँग्रेस का पक्ष रहा !!

सन् १९३७–एक नया शासन विधान—

देख चुके अंग्रेज लहर थे हर दिन नव आन्दोलन की !
सीमित शासन प्रथा विचारी–राय परख कर साईमन की !!
गोलमेज परिषद का भी था कुछ प्रभाव तब जन–जन पर !
निज प्रभाव भी रखना था गोरों को भारत–जीवन पर !!

मुस्लिम लीगी अलग देश की माँग निरन्तर करते थे !
सारे मुस्लिम वर्ग–हितैषी होने का दम भरते थे !!
उन्हें न चिन्ता जुआ कृषक के कंधों पर तब भारी था !
लाभ उठाते रहे श्रमिक की वे जुट कर लाचारी का !!

फूट डाल दी अंग्रेजों ने राज्य सुदृढ़ निज करने को !!
उकसाया हिन्दू–मुस्लिम को आपस में लड़ मरने को !
बना दिया निर्वाचक मंडल–प्रान्तीय सरकार बने !
और स्वशासन की पद्धति का एक नया आधार बने !!

सन् १९३७-३८ मिली स्वायत्तता—

मिली स्वायत्तता-कुछ प्रान्तों में बाग डोर थी शासन की !
अनुभवशीला हुई कांग्रेस तब शासन के आसन की !!
सफल हुये थे मुस्लिम लीगी कुछ प्रान्तों में जम करके !
द्रुत अनुभव थे कांग्रेस को अक्सर उनके कटु स्वर के !!

भूमि सुधारों पर बल देकर कांग्रेस ने चिन्तन से !
दूर अभावों को चाहा था मरना तब जन-जीवन से !!
पंत-प्रधान बने यू० पी० के नवल प्रेरणा संग लिये !
कर्त्तव्यों के हर इंगित में गाँधी जी का रंग लिये !!

किन्तु साथ ही कम्युनिस्टों के आन्दोलन भी तीव्र हुए !
कहीं-कहीं सहयोग भाव के आयोजन भी तीव्र हुए !!
पूर्ण सफलता मिली न लेकिन राष्ट्रीय सरकारों को !
हक जाते सब दीख रहे थे तथाकथित हकदारों को !!

किया अन्ततः निश्चय त्यागे कांग्रेस अब शासन को !
द्रुत महत्व दे दिया गया था नेहरू जी के भाषण को !!

जनवरी १६३८,
स्वरूप रानी का देहान्त—

व्यग्रता बढ़ती निरंतर जा रही थी आन की !
नित्य रहती थी हृदय में बात हिन्दुस्तान की !!
कष्टमय जीवन निरंतर वृद्ध वय था सह रहा !
और सुत भी नित्य कारा मध्य तब था रह रहा !!
अंतत. मस्तिष्क नस थी फट गई प्राणान्त था !
आ गया क्षण जिन्दगी मे देश की दुर्दान्त था !!

मत भेदों का दौर चल गया—

काँग्रेस के अन्दर द्रुत स्वर नई विधा का और पल गया,
राजनीति की नई शक्ति में स्वार्थवाद का बौर पल गया,
एक ओर सामन्तवाद था, और दूसरी ओर किसान;
संघर्षों की कर्म भूमि पर मतभेदों का दौर चल गया !

क्रियाशील सब ही थे लेकिन दृष्टिकोण में अन्तर आया,
उधर रियासतो में आन्दोलन की बढ़ती जाती थी नित छाया,
पूँजीवादी लिये हाथ में संघर्षों की बागडोर थे;
गांधी का सिद्धान्त नहीं था पूर्ण रूप से तब अपनाया !

यह विडंबना थी सुभाष का भी विरोध था अधिवेशन में,
दक्षिणवासी नई चेतना अनुभव करते थे जीवन में,
कार्य समिति के मतभेदों का खुला रूप जनता ने देखा,
परिलक्षित था ह्रास देश का आपस की ही इस अनबन में !

मार्च १६३८ त्रिपुरा काँग्रेस अधिवेशन—

लक्ष्य सभी का एक कि भारत, पूर्ण रूप स्वाधीन बने !
छवि दुनिया में उज्जवल इसकी हर पल सर्वांगीण बने !!
वाम–पंथ, दक्षिण पंथी अरु मध्य मार्ग थे चेत गये !
अपने–अपने मंतव्यों के बोते सारे खेत गये !!

प्रकट हुए गाँधी, सुभाष के मतभेदों के सूत्र नये !
आत्म शक्ति अरु संतोषों के सारे घट थे रीत गये !!
इसके पीछे कौन खड़ा था वक्त समझता चाल रहा !
मतभेदों के इस युग में था दुखी जवाहर लाल रहा !!

कार्य समिति भी अलग हो चुकी बढ़ा नया संघर्ष वहाँ !
लगे सोचने हित चिंतक थे ठहरा है भारत वर्ष कहाँ ??
थे सुभाष खुद भी तनाव में अरु ज्वर से आक्रान्त रहे !
पूर्ण नियंत्रण रखकर निज पर–अधिवेशन में शान्त रहे !!

किन्तु रहा उल्लास पूर्ण था प्रजा समर्थित अधिवेशन !
ऐतिहासिक अध्यक्ष यात्रा शोभा का था द्रुत नियमन !!
ऐसा शोभा शाली जलसा नहीं पूर्व में देखा था !
एक नया युग पाया जिसमें संकल्पों की रेखा का !!

पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति का निर्णय था सुभाष के भाषण में !
पूर्ण प्रमायुत ओजस्वी स्वर निखर उठा आन्दोलन में !!
सूर्य सरिस दमका था आनन तेजस्वी था भाल सजा !
मध्य सहस्रों श्रोताओं के उनका लक्ष्य विशाल सजा !!

अप्रैल १९३९ श्री सुभाष चन्द्र बोस द्वारा त्याग पत्र—

मतभेदों का था परिणाम,
मुक्त सुभाष हुये अविराम !
जन जीवन पर थी पर धाक,
किया सुनिर्मित फारवर्ड ब्लाक !

काँग्रेस अध्यक्ष बने थे तब श्रीयुत श्री राजेन्द्र प्रसाद !
उनका भी था लक्ष्य एक ही भारत जल्दी हो आजाद ! !

लिन लिथगो ने चाल खेल कर सन्–१९३९–४१—

घबराया जब युद्ध लहर से,
अरु विनाश के बढ़ते स्वर से,
लिनलिथगो ने चाल खेल कर;
हुक्म चलाया था ऊपर से !

भारत भी है पक्ष युद्ध में !
तत्परता का कक्ष युद्ध में,
जर्मन से क्या मतलब हिंद का;
जो पहले से दक्ष युद्ध में !

निर्णय था यह बिना विचारे,
अंधकार में नेता सारे,
लन्दन की थी चालें ओछी;
भारत भू तक युद्ध प्रसारे !

काँग्रेस संगठन बड़ा था,
अधिकारों के लिये लड़ा था,
अब विरोध दायित्व उसी पर;
पूर्ण रूप से आन पड़ा था !

बहिष्कार का युग फिर आया,
आन्दोलन को गया जगाया,
कर विरोध तब युद्ध नीति का;
नेताओं ने ध्वज लहराया !

शुरू दमन कर ओछे क्रम से,
भारत रक्षा अधिनियम से,
जगह-जगह थी करी ज्यादती;
मंडित शासन था तब भ्रम से !

जगह-जगह पर थी हड़तालें,
ब्रिटिश रुख थे देखे-भाले,
कुछ ही दिनों में थे सत्ता को;
पड़े कई साधन के लाले !

आश्वासन था दिया निरन्तर,
मिले स्वायत्तता का शुभ अवसर,
किन्तु युद्ध के वाद सुनिश्चित;
किया जायेगा निर्णय जमकर !

द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका सन् १९३९—

दहक उठी यूरोप की धरती बम–गोलों–अंगारों से !
था ब्रिटेन का तख्त हिला हिटलर की मारा–मारों से !!
युद्धोन्मादी जर्मन का रुख होता गया भयंकर था !
चहुंदिशि मचता गया तहलका छिड़ा युद्ध वह जमकर था !!

लपटों से घिर गया फ्रान्स था इटली की हट खेल गई !
साम्राज्यवाद विस्तार नीति की थी हिटलर की चाल नई !!
लंदन की घबराई जनता, बनता काम बिगड़ता था !
वही वहाँ था मुँह की खाता जो आगे को बढ़ता था !!

भवन गिरे, सड़कें टूटी थी बम गोलों की मारों से !
युद्धोन्माद बढ़ा जाता था जर्मन–जन्य विचारों से !!
अस्त व्यस्त हो गये नगर थे डगर–डगर स्वर कंपित था !
सब कालेज, स्कूल बन्द थे और, हरेक घर कंपित था !!

इन्दिरा जी थी लन्दन में तब,
दहशत थी हर मन में जब !
यही उचित था लौटे घर,
सिन्धु लहर पर किया सफर !

कई महीने तक जलपोत,
सन्देहों के रख कर स्रोत !
पहुंचा आखिर भारत तट,
उतर पड़ी थी इन्दिरा झट !

यात्रा में कुछ भेद खुले,
और नये कुछ मित्र मिले !
जो कि क्रान्ति के पोषक थे,
नव युग के उद्घोषक थे !

शान्त रही थी वह मन में,
नहीं रहा मन उलझन में !
परिजन से मिल खुशी हुई,
नई लगन थी लगी हुई !

आन्दोलन की बढ़ी तीव्रता,

३० अक्तूबर–१९४० श्री नेहरू की पुनः गिरफ्तारी—

सरोकार था नहीं युद्ध से–भारत भू की जनता से !
आन्दोलन की बढ़ी तीव्रता तब कवियों की कविता से !!
इंगलिश शासन–क्षुब्ध हुआ लख जलसों और जलूसों को !
देख रहा था गहराई तक करके गौर जुलूसों को !!

आग उगलता था हर नेता अपने तीखे भाषण में !
भारत को मतलब है क्या कूद पड़े क्यों वह रण में !!
गिरफ्तार कर लिये जवाहर गोरखपुर थे भेज दिये !
तरह-तरह की योजनायें तब फिरते थे अंग्रेज लिये !!

युरोप का तब बुरा हाल था फ्रान्स बेलजियम त्रस्त हुए !
बड़े-बड़े नेता लन्दन के दीख रहे थे पस्त हुए !!
गाँधी और सुभाष सभी तो झेल रहे थे कारा को !
गोरे चाहते रहे निरन्तर-ऊँचा पक्ष हमारा हो !!

कुछेक रियासतें-जमीदार कुछ संग लगे अंग्रेजों के !
रंग लगे थे नये दीखने कुछ-कुछ कुर्सी मेजों के !!
कुछ को ठेके मिले युद्ध के कारण थे सप्लाई के !
कुछ भर्ती के बन दलाल थे दुश्मन बनते भाई के !!

मुस्लिम लीगी राग प्रथक अपना थे नित्य अलाप रहे !
विघटनवादी इनके तब थे सारे कार्य कलाप रहे !!

जवाहर लाल की दिनचर्या—

यंत्रणा के हर दिवस-क्षण कर दिये आसान थे !
क्या असंभव विश्व में-कर्मठ-गुणी इंसान से !!
था किया उपयोग समुचित हर दिवस अरु रात का !
क्यारियों को खोदने में वक्त बीता प्रात का !!
दिन पढ़ाई या लिखाई या कि चर्खे से चला !
अध्ययन संशोधनों का था चला नव सिलसिला !!

सन् १९४१-नेता जी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा

छद्म वेश में भारत से बाहर जाना—

युग था वह आन्दोलन का,
विस्मित भारत जीवन का,
था कठोर हर एक नियन्त्रण;
तव जनता पर शासन का !

मचा तहलका दुनिया भर में-

नजर बन्द थे अपने घर में
मचा तहलका दुनिया भर में !

था सुभाष पर कड़ा नियंत्रण,
ओजस्वी भाषण के कारण,
मुक्ति मार्ग पर चल कर निर्भय,
किया दूर हर मन का संशय,

कड़का करती बिजली स्वर में !
मचा तहलका दुनिया भर में !!

अंग्रेजों को घता बताई,
मुक्ति हेतु तरकीब बनाई,
बने काबुली खान निराले,
दर्शक सब अचरज में डाले,

जान न पाया कोई डगर में !
मचा तहलका दुनिया भर में !!

काबुल पहुंचे कर चतुराई,
कष्टों से थी शिकन न आई,
फिर पहुंचे बर्लिन की नगरी,
रही देखती दुनिया सगरी,

गुण थे परख लिये हिटलर में !
मचा तहलका दुनिया भर में !!

शत्रु विलायत का था वो भी,
किन्तु रहा शासन का लोभी,
दिखलाई थी बान चतुर की,
राह पकड़ कर सिंगापुर की,

हिन्दी सैनिक लिये असर में !
मचा तहलका दुनिया भर में !!

जून १९४१–जर्मनी द्वारा रूस पर आक्रमण–

जर्मन का विस्तारवादी जग पर था मंतव्य खुला !
किया रूस पर था जब उसने खुले आम बढ़ कर हमला !!
कम्युनिस्ट जो देश, वेश थे बदल उठे लख जर्मन को !
व्यापकता से थर्राया था जिसने युरोप जीवन को !!

दिवस बदलते क्षति अपार थी नगर गाँव थे ढेर हुये !
भेंट अग्नि के शोलों के थे कतिपय देर सवेर हुए !
एक नया आतंक विश्व में युद्ध देखकर छाया था !
विश्व युद्ध बन गया त्वरित गह अमरीका भी आया था !!

मित्र देश संगठन बन गया युद्धोन्माद घटाने को !
बड़े देश एकत्रित थे, हिटलर को मजा चखाने को !!
पूर्व एशिया में जापानी सेना से कोहराम मचा !
इंगलिश सेना हुई हताहत ऐसा था संग्राम मचा !!

मुक्ति पथ पर अग्रसर थे–

युद्धरत थे देश कतिपय,
थी अनिश्चित जय–पराजय,
विश्व कंपित था लहर से,
था तहलका नित्य डर से,

हिन्द के चिन्तित नगर थे !
मुक्ति पथ पर अग्रसर थे !!

औपनिवेशिक धुन अजब थी,
ढा रही हर दिन गजब थी,
फूट डाली हिन्दियों में,
लड़ रही थी नित्य कौमें,

और नारे बाम पर थे !
मुक्ति पथ पर अग्रसर थे !!

कांग्रेस की मुक्ति धारा,
व्यक्त करती थी इशारा,
देश को अंग्रेज बाँटे,
अंग से अब अंग काटे,

गूँजते हर ओर स्वर थे !
मुक्ति पथ पर अग्रसर थे !!

७ दिसम्बर १९४१,

जापानी जहाजों ने अमरीकी नौसैनिक पोतों को नष्ट किया—

दहक उठा था पर्ल हार्बर–भीमकाय अंगारों से !
नष्ट पोत अमरीकी थे हो गये जापानी मीरों मे !!
सिन्धु लहर पर क़हर ढा दिया था जापानी गोलों ने !
दूर–दूर तक नष्ट किये तट अग्नि वाण से शोलों ने !!

हुआ युद्ध विस्तार पूर्व तक आतंकित हर छोर हुआ !
युद्धोन्मादी घृणित प्रवृति का दिशा–दिशा में जोर हुआ !!
भारत में भी छावनियों का क्रम था सहसा तेज हुआ !
लखकर के जापानी हमला हत् प्रभ था अंग्रेज हुआ !!

ऐसे में गाँधी ने निश्चित बना धारणा संयम की !
राजनीति में उभरी अक्सर गलत फहमियाँ थीं, कम की !!
जिन्ना पाकिस्तान चाहता रंग भर दिया नारों में !
अपना स्वर था किया प्रवाहित वैमनस्य की धारों में !!

खुले हृदय से किन्तु जवाहर—

रिहा हुये आनन्द भवन को आकर पुनः जगाया था !
किन्तु साथ ही असमंजस में भी तब खुद को पाया था !!
सबसे बड़े जवाहर घर में था मगर दायित्व खड़ा !
जग प्रसिद्ध हो चुका पूर्ण था तब उनका व्यक्तित्व बड़ा !!

जात पाँत से ऊपर उठकर दृष्टिकोण अपनाया था !
मानवता का पंथी बनकर अपना मार्ग बनाया था !!
विवाह योग्य हो गई इन्दिरा यह विचार भी मन में था !
नवोल्लास का कुछ प्रवाह भी बढ़ा हुआ जीवन में था !!

निज बिरादरी यह चाहती थी ब्राह्मण कुल सुत वरण करे !
अरु कुलीन जन समधी बन आनन्द भवन में चरण धरें !!
खुले हृदय से किन्तु जवाहर स्वस्फूर्ति समर्थक थे !
रूढ़िवादिता के बन्धन सब दीखे उन्हें निरर्थक थे !!

सुता इन्दिरा पर निर्भर था जीवन साथी चुनने का !
निज जीवन के भले बुरे का तौर-तरीका गुणने का !!
व्यापकता थी दृष्टि कोण में निर्णय हेतु समर्थ रहीं !
जन समाज की चर्चायें थी मन के आगे व्यर्थ रहीं !!

नित दमकता शुभ्र नग था–

पारखी मन नित सजग था !

माँ पड़ी बीमार थी जब मित्र अरु बनकर सहायक,
व्यक्ति जो था साथ आया दृष्टि उसकी तीव्र व्यापक,
युवक सुन्दर अरु धुरन्धर, देश सेवा की लगन का,
स्वाध्यायी' और कर्मठ व्यक्ति था जो साफ मन का,
जिन्दगी में जिन्दगी का नित दमकता शुभ्रनग था !!

पारखी मन नित सजग था !!

साथ सहपाठी रहा जो खूब परखा खूब जाना,
था खरा व्यक्तित्व उसका जब भी चाहा आजमाना,
वह खरा उतरा समय पर, क्या हुआ यदि पारसी था,
इन्दिरा के था हृदय में रुचि नगीना आरसी का,
छू गया गहराई को मंतव्य जो सबसे अलग था !

पारखी मन नित सजग था !!

था विरोधी भावनाओं का उठा प्रतिपल बवंडर,
हो गये विचलित जवाहर लाल थे जन भाष्य सुनकर,
किन्तु दृढ़ करके हृदय को फिर जरा सोचा, विचारा,
प्रश्न यह है इन्दिरा के स्वत: निर्णय का दुलारा,
अन्य सब का सोचना इस तथ्य से बिल्कुल विलग था !

पारखी मन नित सगज था !!

पूर्ण सहमत हो गये थे इन्दिरा से जब जवाहर,
था दिया संदेश बापू ने उन्हें विधिवत बताकर,
सादगी से हो विवाह यह—इन्दिरा का मन मुखर हो,
कार्य मंगल पूर्ण हों सब, अब न किंचित कोई डर हो,
भूल जाओ, कब—कहाँ क्या सोचता, क्या तौर जग का !

पारखी मन नित सजग था !!

२६ मार्च सन् १९४२,
परिणय बन्धन सफल सुहाना—

शुभ सायत छब्बीस मार्च थी, क्रान्ति वर्ष था यह जीवन का,
कोना—कोना सजा हुआ था—उस दिन प्रिय आंनद भवन का,
सरल सुहावन पूर्ण स्वदेशी—था घर का माहौल निराला,
चंद्र उजाले से भी बढ़कर दमक उठा मन—प्राण—उजाला,
'बा' ने भेजा था इन्दिरा को स्वयं बुनी साड़ी नजराना !

परिणय बन्धन सफल सुहाना !!

परम प्रफुल्लित फिरें जवाहर, हर प्रबन्ध पर तीव्र नजर थी,
मंगलमय महिला गायन से बढ़ी हुई थी रौनक घर की,
स्वागतार्थ सब खड़े द्वार पर—जब आई बारात नगर से,
परिजन—पुरजन मुकुल बधाई दिये जा रहे उन्नत स्वर से,
भला लगा नेहरू को अपने घर लोगों का आना—जाना !
परिणय बन्धन सफल सुहाना !!

शान्त चित्त उन्मुक्त भाव के उभर रहे थे क्षण जीवन में,
वैदिक मंत्रों का उच्चारण भला लगा परिणय बन्धन में,
चन्द्र सरिस फीरोज लग रहे—धवल चंद्रिका थी इन्दिरा जी,
ज्योतिर्मय नव श्रेष्ठ प्रभा की दीख रही थी अद्‌भुत झांकी,
ऋतु वसंत का था मन भाया—सबको धीरे से मुस्काना !
परिणय बन्धन सफल सुहाना !!

वेला आई जबकि विदा की !

यद्यपि उतरा भार हृदय से जिम्मेदारी का था उस क्षण,
किन्तु लगा कि द्रवित हो उठा ! उन घड़ियों में धरती-कण-कण,
विदा हो रही प्यारी बेटी पूर्ण हुआ था जीवन का प्रण,
खड़े विह्वल से आंक रहे थे स्वयं जवाहर थे यह विवरण,
रह—रह करके उस सायत में याद आ रही थी कमला की !
वेला आई जब कि विदा की !!

जिस बेटी को लाड़–प्यार से पाली–पोसी और पढ़ाई ?
आज स्वयं अपने हाथों उस को ही कर रहे पराई,
चहल—पहल आंनद भवन की सिमट चली हो जैसे उस पल,
संसृतियों से बंधे हृदय को भीग रहा सुधियों का आंचल,
अब अपना संसार बसाने, चली लाडली दादा की !

वेला आई जबकि विदा की !!

किन्तु सुदृढ़, विश्वास उन्हें था, स्वयं सिद्धि की प्रतिमा है यह,
दृढ़, निश्चय अरु कर्मठता की लिये अनोखी प्रतिभा है यह,
शुभाकाँक्षा, आशीषों से भरी कामना की थी झोली,
जिस क्षण थी आनंद भवन से उठी इन्दिरा जी की डोली,
लगी महकने परम्परा थी, कवि की चहक उठी कविता भी !

वेला आई जबकि विदा की !!

अन्तर्जातीय विवाह यही,
परिचायक दृढ़ निश्चय का,
तोड़ दिया था जिसने घेरा,
रूढ़िवादिताओं के भय का,
भारत जैसा देश–अगर अपनाना,
पूर्ण रूप से रुचि को;
हो समाप्त जाता समाज से,
युग शंकाओं अरु संशय का !

मार्च १९४२ जापानी फौजों द्वारा रंगून पर कब्जा—

युद्ध की बढ़ती लहर ने किया क्षेत्र विस्तार,
सिंगापुर ले लिया पूर्व में अपने पंख पसार,
अपने पंख पसार घोर तम रण की ठानी !
अंग्रेजों को रौंद–रौंद कर बढ़ते थे जापानी !!

दिखी उन्हें बर्मा की धरती विजय गर्व की साथी
लालायित थे देख–देख कर वे बर्मा के हाथी,
वे बर्मा के हाथी जिनका जग में मूल्य बड़ा था !
इस प्रकार जापान हिन्द के द्वारे आन खड़ा था !!

सैन्यवाद जापानी बढ़ता चला गया सुरसा सा,
पलट दिया था अंग्रेजों के रण का जिसने पासा,
रण था जिसने पासा, आशा नहीं रही थी जय की !
ध्वनि भारत में भी गूँजी थी संदेहों–संशय की !!

जर्मन अरु इटली की शै पर उसने भारत घेरा,
बर्मा के जंगल में उसका पड़ा हुआ था डेरा,
पड़ा हुआ था डेरा–फेरा लगता था दुश्मन सा,
खतर नाक दो राहे पर तब भारत का जीवन था !

फासिस्टवाद साम्राज्यवाद का तगड़ा था गठ बंधन,
साथ मिला जब सैन्यवाद तो हुआ विश्व में कंपन,
हुआ विश्व में कंपन–चौंके राष्ट्रवाद के सपने !
व्यथित हृदय था साम्यवाद भी जीवन वृत में अपने !!

गाँधी जी ने सैन्यवाद को बढ़कर था ललकार,
कभी न जपानी–रुख माने हिंदुस्तान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा–सारा ध्वस्त एशिया होगा !
बढ़े न किंचित सैन्यवाद यह, यही देखना होगा !!

मार्च अप्रैल १९४२ सर स्टैफोर्ड क्रिप्स का भारत आगमन—

युद्ध की विभीषिका से टूटता इंग्लैंड गया,
भारतीय नेताओं से बड़ी अनबन थी !
जोर था हर एक ओर श्रमिक आन्दोलनों का–
चाव में समाजिवादी रीति संगठन की !!

देख–देख मुश्किल चौंक उठे चर्चिल,
काश ! कोई विधि मिले सही आकलन की !
भारतीय दृष्टिकोण तीव्र लगा होने जब,
हुई थी नियुक्ति तब क्रिप्स के मिशन की !!

क्रिप्स जब आये लाये योजनायें मंत्रणा कीं–
भारतीय नेताओं से बोले 'अरमान से !
युद्ध की समाप्ति पर नव्य भारतीय संघ–
किया जाये निर्मित खूब यहाँ शान से !!

औपनिवेशिक राज्य होगा जुड़ा ब्रिटिश ताज से,
निष्ठा के साथ रहे मिला इंगलिश्तान से !
चौंक गये सुनते ही अब्दुल कलाम आजाद,
बोले थे-निराश क्रिप्स जाये हिन्दुस्तान से !!

गूढ़ता जवाहर ने समझी थी घोषणा की–
जानते रहस्य को थे निंदनीय चाव के !
साथ–साथ सोच लिये दूरगामी परिणाम–
चर्चिली चाल–ढाल, क्रिप्स–प्रस्ताव के !!

काँग्रेस–कार्य कारिणी मध्य हुई बातचीत,
भेद लिये भाँप थे प्रस्तावित चुनाव के !
पूर्णत: नकार कहा घोषणा है विपरीत–
भारतीय चेतना व गाँधी के स्वभाव के !!

क्रिप्स रहे असफल लन्दन को लोटे त्वरित निराश !
लगा बदलने तब क्षण–क्षण में भारत का इतिहास !!

मई १९४२ सेवा ग्राम में गाँधी–नेहरू भेंट—

हुई सुदृढ़ बलिदान भावना–देश स्वतन्त्र कराने को,
कांग्रेस थी यत्न शील नित त्वरित लक्ष्य के पाने को,
साम्प्रदायिक दुर्भावनाओं को रखा बढ़ाए शासन ने,
समझौते के थे प्रयास कुछ किये सिर्फ दिखलाने को!

क्रिप्स गये असफल भारत मे–सत्ता और कठोर हुई,
निन्द्य भर्त्सना उसके रुख की भारत में चहुंओर हुई,
नेहरू, गाँधी मुलाकात थी तब थी सेवा ग्राम हुई;
बातें करते राष्ट्र–हितों की वहाँ सुबह से शाम हुई!

नेहरू समझ चुके चालाकी थे लन्दन के लालों की!
सदा सामने रहती थी फेहरिस्त विगत के सालों की!!
गाँधी को विश्वास यही था–समझौता हो जायेगा!!
रही मान्यता नेहरू की भारत फिर धोखा खायेगा!

लिये हृदय में जोश जवाहर बहुत खुलासा बोले थे!
भड़क रहे तब उनके मन में प्रबल क्रान्ति के शोले थे!!
बिना खास धक्के के शासन दे न रियायत भारत की!
देश चाहता रहा गुलामी की त्यागे झट लानत को!!

६ जुलाई १९४२ वर्धा-निर्णय—

हुये अंततः सफल जवाहर–गाँधी जी थे मान गये !
कार्यकारिणी की बैठक में दृष्टि कोण पहचान गये !!
यह निर्णय कर लिया–समेटें गोरे अपने बिस्तर को !
ब्रिटिश शासन त्वरित खत्म हो, जाये अब अपने घर को !!

यदि न माँग स्वीकार हुई यह, सविनय आन्दोलन होगा !
अरु स्वतन्त्रता हेतु नया संघर्ष यहाँ हर क्षण होगा !!
महाराष्ट्र बम्बई नगर में महासभा अधिवेशन हो !
अरु निर्णय का उसके द्वारा पूर्ण रूप अनुमोदन हो !!

साथ–साथ भारत रक्षा में सैन्य सुबल अनुमोदित था !
गाँधी का मन रूस–चीन की रक्षा हित भी चिंतित था !!
नेता जी की गतिविधियों से भी अवगत तब गाँधी थे !
देख रहे फलितार्थ यहाँ आजाद हिन्द, की आँधी के !!

७ अगस्त १९४२—क्रान्ति आह्वान

भर चुका था सब्र का प्याला—लबालब था हुआ !
काँग्रेस के संगठन का जबकि था जलसा हुआ !!
सिंधु तट बम्बई पहुंचे देश के नेता सभी !
रूप देखा उग्रतम था देश ने सबका तभी !!

मान्य नेताओं में इन्दिरा और थे फीरोज भी !
देश हित के चिंतनों में व्यस्त रहते रोज ही !!
थे जवाहर भी वहाँ पर साथ कृष्णा बहन के !
थे चमत्कृत भाव उस दिन उनके घर के सहन के !!

भीड़ थी आगन्तुकों की प्रिय जवाहर के लिये !
सोचते थे फलित होंगे जो अभी तक प्रण किये !!
काँग्रेस की महासमिति–बैठक चली तूफान सी !
थी परीक्षा पूर्ण होनी देश हिन्दुस्तान की !!

थे सभी सहमत विदेशी राज्य का अब अंत हो !
और हर कोशिश यहाँ संघर्ष की बेअंत हो !!
ओज की लहरें बहस में रंग नव दिखला रहीं !
देश में उस रोज संध्या नव्य बल सरसा रही !!

८ अगस्त १९४२ अंग्रेजों भारत छोड़ो—

पूर्ण रूप सन्नद्ध खड़ा था—भारत का मजदूर किसान !
गाँधी, नेहरू अरु पटेल सब समझ चुके यह श्रेष्ठ रुझान !!
महासभा के निर्णय पर था आधारित कल का संदेश !
देख रहा था आठ अगस्त को गाँधी जी की ओर स्वदेश !!

जुड़े सहस्त्रों वीर जुझारू—देख रहे उस क्षण की बाट !
जिस क्षण घोषित हुआ—'करो या मरो' निदेशन पूर्ण सपाट !!
'ओ, अंग्रेजों भारत छोड़ो गूँज उठी थी यह ललकार !
एक साथ ही कण्ठ—कण्ठ से ध्वनित हुई गांधी जयकार !!

हुआ पास प्रस्ताव निरन्तर बजी तालियाँ बहुमत से !
उस क्षण सारे ही नेता गण खुले मंच पर शोभित थे !!
युग की सबसे बड़ी माँग को गाँधी ने स्वीकार किया !
औपनिवेशिक शासन के मुँह कस कर थप्पड़ मार दिया !!

सत्ता में सनसनी बढ़ गई, जनता में उल्लास रहा,
लखा वक्त ने क्षण प्रतिक्षण था बदला यहाँ इतिहास रहा !
आत्मजयी हर नेता था तब बलिदानों की होड़ लगी;
स्वयं सिद्धि की खुली डगर पर अपने पर विश्वास रहा !

९ अगस्त १९४२,

क्रान्ति-क्रान्ति वह अमर क्रान्ति थी—

शासन सहमा, वायमराय की कौंसिल में हड़कंप मचा,
चुपके-चुपके रात-रात में एक नया षडयंत्र रचा,
नगर-नगर औ गाँव-गांव में गुप्त संदेशे भेज दिये;
प्रातः होते गिरफ्तार कर लिये, न नेता कोई बचा !

नव स्वरूप आतंकवाद का देख रहा बम्बई नगर,
सूर्य किरण उगने मे पहले प्रतिबन्धित हर एक डगर,
गाँधी-नेहरू गिरफ्तार कर भेज दिये, अज्ञात को;
पुलिस राज छा गया सुबह से हुआ प्रकंपित था घर-घर !

दिग्गज और बड़े नेता सब इस प्रकार थे धरे गये,
अल्प समय में ही जेलों के आँगन कम कर भरे गये,
नगर-नगर की डगर-डगर पर किया नया तूफान खड़ा,
लुप्त हुये कुछ चालाकी से और पकड़ से परे गये !!

छिड़ गया संघर्ष नव,
देश में उस वर्ष नव,
सोचता हर एक था तब;
जीत का उत्कर्ष नव !

देश का आदर्श नव,
साथ लेकर हर्ष नव,
सूर्य सा दमका चतुर्दिक,
झेलता संघर्ष नव,

कूद पड़े रख भाव-

क्रान्ति वेग की लहर-लहर,
फैल गई थी नगर-नगर,
युवा, वृद्ध अरु बाल सभी थे-
कूद पड़े रख भाव निडर !

यहाँ वहाँ अरु जहाँ-तहाँ,
बंधा क्रान्ति का एक समाँ,
जले डाक घर, अरु स्टेशन,
इधर-उधर था उठा धुआँ !

कैसा शासन, किसका डर;
बढ़े वीर दल सवँर-सवँर,
ध्वस्त अदालत और खजाने,
घेर लिये थाने बढ़ कर !

लाठी-गोली मारा-मार,
पुलिस रही थी क्रोध उतार,
झंडे लेकर बढ़े वीर थे,
स्वयं आत्मिक जोश उभार !

अवध प्रान्त अरु पूर्व प्रदेश,
धधक उठा पाकर संदेश,
कई नगर कब्जा कर जनता,
दिखलाती थी गर्व विशेष !

तज विद्यालय युवक अनेक,
रख कर संघर्षों की टेक,
राज्य विदेश पलट रहे थे,
भारत माँ की रख कर टेक !

स्वाभिमान का गाते गान,
होने जाते थे बलिदान,
गोरे शासन की वहशत से,
काँप उठा था हिन्दुस्तान !

जिसको पकड़ा–जकड़ा खूब,
सत्ता मद में पूरा डूब,
कुछ तो करते थे मुखबरी,
जो शासन के थे महबूब !

दमन चक्र था चलता रोज,
नेताओं की जारी खोज,
इलाहाबाद में आखिर इक दिन–
पकड़े इन्दिरा अरु फीरोज !

हुये भूमिगत कुछ चल चाल,
उनमें रहे बहादुर लाल,
रुके न आन्दोलन का कार्य;
यत्न किया करते तत्काल !

थे प्रभाव पढ़ते तत्काल,
नगर–नगर में थी हड़ताल,
हुये बन्द बाजार अनेक,
पाने को तब लक्ष्य विशाल !

गिरफ्तारियों का था दौर,
हुआ क्रूरतम शासन और,
दिया साथ उन्हीं सैनिक ने,
बने भ्रान्ति के जो सिरमौर !

साठ हजार के लगभग लोग,
कारा में नित शोषण भोग,
लगे सोचने कब आएगा;
हिन्दोस्ताँ का मुक्ति-संयोग !

चर्चिल वह चालाक अंग्रेज,
और कुमक लंदन से भेज,
हुकम दे रहा था शासन को;
दमन करो अब बढ़ कर तेज !

कहीं-कहीं गोलों की मार,
हवाई जहाजों से बौछार,
रौंद रही थी उस जनता को;
माँग रही थी जो अधिकार !

बर्बरता का नंगा नाच,
खूब लिया था जग ने बाँच,
भारत के उत्सर्ग भाव को,
किंतु न आई किंचित आँच !

नहीं जुल्म का था पर्याय,
नंगे नर्तन का अध्याय,
दानव बन शासन के दूत;
महिला दल पर टूटे हाय !

असफल रहा क्रान्ति का दौर,
डंडे—बम गोलों के जोर,
किन्तु देश प्रेमी जनता ने;
जोड़ लिये थे साधन और !

अरुणा, लोहिया, जय प्रकाश,
मन में रख कर दृढ़ विश्वास,
भूमिगत रह–रह कर सारे;
सृजित कर रहे नव इतिहास !

सन् १९४३ बंगाल और निकटवर्ती प्रदेशों में भयंकर अकाल—

गलत नीति का बड़ा प्रभाव,
भारत धरती बनी अलाव !
पड़ा भयंकर यहाँ अकाल,
लगा धधकने था बंगाल !

थे बिहार, आसाम ग्रसित,
खाद्यानों से थे वंचित,
उतरा था अंग्रेजी क्रोध;
नयी नीति क्या न्यायोचित ?

जो प्रारंभिक शासन साज,
दाने दाने को मुहताज !
अगस्त क्रान्ति का बदला था यह–
था अंग्रेजी मत का राज !

बच्चे—बूढ़े महिला वृंद,
हुई भूख से साँसें बंद,
सूखी धरती तपते खेत;
उस पर शासन के छल छंद !

चढ़े भेंट थे लाखों लोग,
कुछ को हुआ पीलिया रोग,
और निकट की धरती पर था;
जापानी हमलों का योग !

उबल पड़ा नेहरू का क्रोध,
हा ! जनता से यह प्रतिशोध ?
क्या होगा इसका परिणाम !
हुआ न लंदन को यह बोध !

किन्तु जेल में थे मजबूर,
अपने लोगों से थे दूर,
नई पुस्तिका के लेखन में–
शक्ति लगाई थी भरपूर !

वचन बद्ध आजाद हिंद फौज सन् १९४३-४४

लगन लगी थी पूर्ण मुक्ति की,
है मिसाल जो देश भक्ति की !
वचनवद्ध आजाद हिंद फौज;
रही अग्रसर जो थी रोज !

तज जर्मन नेताजी बोस,
सिंगापुर पहुंचे जिस रोज !
देखा था उत्साह अपूर्व;
मर मिटने की चाह अपूर्व !

सैन्य संगठन करके तेज,
हर सीमा में टुकड़ी भेज,
इंगलिश सेना को नित दाब,
दिखलाने थे प्रण की आब !

चीफ कमांडर वीर सुभाष,
भर हर सैनिक में उल्लास,
प्रेरित करते, लालकिले को—
चलो, वदल दो रे, इतिहास !

सहगल—ढिल्लों शाहनवाज,
देश भक्ति का लेकर साज,
चले—बढ़े 'जय हिंद' गुँजाते,
करते रहे बुलन्द आवाज !

कतिपय भारतवासी लोग,
तन—मन—धन से दे सहयोग,
जुड़ा रहे थे आजादी का–
भारत माता की संयोग !

वीरों के संग वीरा धन्य,
लक्ष्मीबाई अरु कुछ अन्य,
शक्ति बढ़ाती सैनिक दल की;
करती थी जुट यत्न अनन्य !

टक्कर पर टक्कर हर बार,
अंग्रेजों के दल को मार,
दिखा रही आजाद हिंद फौज;
चमत्कार के सूत्र हजार !

भारत के कण–कण में जोश,
और स्वतंत्रता का उद्घोष,
बढ़ कर नेता जी ने ठिकाने–
लगा दिये थे अरि के होश !

ऐसी माँ कस्तूरबा–

गाँधी जी की प्रेरक शक्ति–भक्ति भाव से लीन रही जो !
गाँधी के सिद्धान्त वाद के थी सदैव आधीन रही जो !!

ऐसी माँ कस्तूरबाई को क्यो न करे जग-
स्वतः प्रणाम !
स्वयं सिद्धि के निष्ठा व्रत से–
जन सेवा में रत हरयाम !!

सत्य सखा थी वह बापू की–महिला धर्म प्रवीण रही जो !!

अफ्रीका में गाँधी जी के साथ–
निरन्तर कार्य किया था !
कार्य क्षेत्र में अन् ारा में–
सत् निष्ठा से साथ दिया था !!

पनि को पूर्ण भक्ति को धारे जीवन भर लवलीन रही जो !

शब्द ज्ञान था अल्प किन्तु गीता–
अरु रामायण पढ़ती,
सेवा कर्म भावना के प्रति–
प्रतिपल जिज्ञासा बढ़ती,

कष्ट सहे, उपवास किये पर कभी न थी ग़मगीन रही जो !!

वर्धा सेवा ग्राम—काम कर–
स्नेह दिया था सब को माँ का,
सरल, मधुर वात्सल्य पूर्ण था–
सबसे ही बरतावा बा का,

आत्म शक्ति थी प्रचुर प्राण में पर शरीर से क्षीण रही जो !
राष्ट्र मातु बनकर सुयोग अरु कर्मठ सर्वांगीण रही जो !!

फरवरी १९४४—आगा खाँ महल, पूना में देहान्त—

गाँधी जी के साथ महल में–आगा खाँ के कैद रही !
त्याग मूर्ति बन कर निष्ठा से कर्त्तव्यों की राह गही !!
गाँधी जी के अनुशासन का किया सदा झुक पालन था !
नियम पूर्वक गाँधी व्रत का किया स्वयं संचालन था !!

कारा का दुख, सारा जीवन रहा–शक्ति थी क्षीण हुई !
रोग ग्रस्त रहते–रहते थी रोग ग्रस्त,–आधीन हुई !!
आया समय विदा बापू से लेकर स्वर्ग सिधार गई !
द्रवित हुये बापू जब तज कर 'बा'–थीं परली पार गई !!

रोया भारत माँ को खोकर–व्यथित हुआ जग जीवन था !
कारा में 'बा' के मरने से हिला तख्त था लन्दन का !!
परम पूज्य पद पाया 'बा' ने बापू किन्तु अधीर रहे !
'बा' की करुणा मूर्ति प्रभा की सदा लिये तस्वीर रहे !!

अप्रैल १९४४—रिहा कर दिया था गाँधी को

अनुपम ज्योति संगिनि 'बा' के जीवन त्यागन से !
आगा खान महल में बापू रहते थे नित अनमन से !!
यद्यपि अन्त समय तक सेवा की थी जुट कर निष्ठा से !
और प्रभावित रहे सदा थे 'बा' की प्रीति प्रतिष्ठा से !!

किन्तु अभावों के हर क्षण की की पूर्ति नहीं थी संभव रे !
वंचित हो गये सदा सदा को पत्नी सुख के गौरव से !!
अनशन पर बैठे गाँधी जी इक्किस दिन उपवास किया !
तानाशाही बदले सत्ता यह मन में विश्वास लिया !!

यही अस्त्र था दमन नीति के जो विरोध में उठता था !
उधर युद्ध की विभीषिका से भारत–वैभव लुटता था !!
बढ़ी हुई बर्बरता को सुन–प्राण प्रभावित होते थे !
गाँधी, जन–कष्टों को लख कर नहीं चैन से सोते थे !!

गिरा स्वास्थ, थक गई शिरायें !
और कहाँ तक कष्ट उठायें !!
रक्त–स्रोत सूखे शरीर के !
सुन कर सब नेता अधीर थे !!

असह्य वेदना के वे क्षण थे !
शासक दे न सके विवरण थे !!
निकट मृत्यु के पहुंच गये जब !
घबराये थे अधिकारी सब !!

वायसराय वावेल घबराये !
जो कुछ दिन पहले ही आये !!
गाँधी का जीवन अमूल्य था !
वायसराय ने समझा, सोचा !!

यद्यपि कर एकत्रित चंदन !
जेल अधिकारी कर मन मंथन !!
मृत्यु निकट समझे गाँधी की !
थी शंका जन–बल–आँधी की !!

वायसराय ने खूब विचारा !
अपने अमले को धिक्कारा !!
रोका द्रुत भय की आँधी को !
रिहा कर दिया था गाँधी को !!

राजीव गाँधी का जन्म २० अगस्त १६४४

कीर्तियुक्त भावी व्रत-मंगल—

उज्ज्वल ज्योतिर्मय आँगन सुधियों का बना हुआ रुचि नंदन !
सजा रहा था परम प्रफुल्लित जीवन भव्य सुशोभन ! !
घड़ी बड़ी शुभ बीस अगस्त की, दमका कोना—कोना !
जब जन्मा था इन्दिरा जी ने—सरसिज पुत्र सलोना ! !

भाग्यवान गुण सायत लेकर द्वार बुआ के आई !
प्रसव काल में जहाँ इन्दिरा ने की थी पहुनाई ! !
पूर्व क्रान्ति के बाद दमन था चलता नित शासन का !
नहीं सुरक्षित रहा वास था तब आंनद भवन का ! !

जुड़े हुये पति पत्नी दोनों रहते आन्दोलन से !
कर्मठ मन फीरोज कार्य रत रहते थे नित मन से ! !
और जवाहर लाल निरन्तर अतिथि रहे कारा के !
इसीलिये इन्दिरा थी ठहरीं घर पर थी कृष्णा के ! !

शिशु प्यारा— प्यारा मन भावन,
लख कर खिला कमल सा आनन,
कल तक बेटी—बहन सखा थी,
आज जननि बन गई सुशोभन !

अद्‌भुत लययुत गीतम अभिनव,
दिखा रहा सत् जीवन उद्‌भव,
भाग्यवान हर पल हर क्षण था;
उतर चाँद सा आया शैशव !

प्रबल भाग्य रेखा युत मस्तक,
देख रही थी इन्दिरा अपलक,
मंद—मंद मुस्कानें विधु सा,
नव प्रकाश छितराती व्यापक !

धन्य सुसायत, धन्य प्रसव पल,
बिखराया खुशियों का परिमल,
उज्ज्वल मुख—अरु उज्ज्वल आनन,
कीर्ति युत भावी व्रत मंगल !

सन् १९४४-४५,

साम्प्रदायिक वैमनस्य प्रवर था—

मुक्ति हेतु आन्दोलन रत थे—कांग्रेस के बढ़े चरण !
किन्तु दुखी मन हर नेता था—मुस्लिम लीगी रुख—कारण !!
प्रथक देश की माँग निरन्तर वे करते थे, डट—डट कर !
जिन्हें धार्मिक उन्मादों ने कहा—रहे भारत बंट कर !!

पाकिस्तानी चाव—भाव के नारों की भरमार रही !
और ब्रिटिश सरकार बाँटने को भारत तैयारी !!
मुक्त हुआ यदि भारत यों ही—बड़ा देश बन जायेगा !
अल्प समय में इसका झण्डा दुनिया में तन जायेगा !!

चर्चिल युग का जादूगर था,
दमन नीति को नित तत्पर था,
अपनी सी कर रहा यहाँ अब;
साम्प्रदायिक वैमनस्य प्रवर था !

अभिनव श्रेष्ठ वसंत आ गया–१९४५—

बढ़ प्रभाव था गया रूस का–
जो कि दिग दिगन्त छा गया !
जर्मन गढ़ थे ध्वस्त हो गये–
हिटलर का था अन्त गया !!

विश्व युद्ध का पलटा पासा–
मुखरित हुई शान्ति की आशा !
दमक लाल सेना की लख कर–
अभिनव श्रेष्ठ वसंत आ गया !!

हुआ क्रीमिया कान्फ्रेंस में—

असफल था जापानी सैनिक गौरव युत सरौता !
हुआ क्रीमिया कांफ्रेंस में मित्र राष्ट्र का समझौता !!
पूर्व दिशा में सैन्यवाद पर तीव्र प्रहार चरण थे !
समझ रहे हर बदले रुख को भारत के जन गण थे !!

युद्ध विनाशक–व्यापक जिसका–
नित्य प्रभाव पड़ा था !
और परिस्थिति से भारत का–
अपना भाग्य जुड़ा था !!

गंगा का आदर्श लक्ष्य कर–

रहे निरन्तर इन्दिरा को थे लिखते पत्र जवाहर !
वास्तविकता से जीवन की अवगत खूब कराकर !!
कहीं विश्व इतिहास झलक तो कहीं आन संस्कृति की !
प्रकट कहीं पर जिज्ञासायें थीं रचना शोभित की !!

उनका था विश्वास इन्दिरा पढ़ करके है गुणती !
स्वयं सिद्धि के श्रेष्ठ मार्ग पर वह है पक्की धुन की !!
लगन शीलता कूट–कूट कर उसमें खूब समाई !
दृढ़ता व्रत की आदत उसने माँ–दादी से पाई !!

उत्कट अभिलाषा के प्रति भी श्रेष्ठ रुझान बड़ा है !
कदम–कदम पर नव अनुभव को हिन्दुस्तान पड़ा है !!

उसे भरोसा अपने ऊपर,
प्रगति मार्ग पर चलती बढ़कर,
इसीलिये लिखा था उसको,
गंगा का आदर्श लक्ष्य कर !

क्षीण काय होती जब निकले,
गिर कर, उठ कर, बढ़ कर संभले,
चीर हृदय को पाषाणों के,
सह कतिपय तूफानी झोंके !

अपना पथ निर्धारित करती,
भरती वेग, कुलाचे भरती,
उज्ज्वल, शीतल दमक संजो कर,
पथ पर अपना गौरव बोकर !

तीर्थ सजा मन करती चंगा,
बन जाती है पावन गंगा,
छल-छल, करती मृदु स्वर वाणी,
लहर-लहर है जन-कल्याणी !

उपादेयता अमर, अमिय जल,
रखता भारत भावी उज्ज्वल,
गंगा सा आदर्श, हृदय में,
रखें, नहीं संदेह विजय में !

युद्ध भयंकर लपटों में था ग्रस्त, व्यस्त थे पक्ष सभी !
चिन्ह विजय का 'वी' छपवाया अंग्रेजों ने यहाँ तभी !!
पस्त हुआ जापान युद्ध में–सिंधु लहर पर जंग चली !
हिरोशिमा पर बम की वर्षा करनी सब पर व्यग चली !!

मचा एक वीभत्स अचानक मानवता का ह्रास हुआ !
पूर्वोत्तर था युगों–युगों तक अमरिका का दास हुआ !!

१५ जून १९४५ कांग्रेस नेता रिहा –

जब दबाव था पड़ा चतुर्दिक करवट ली इतिहास ने !
समझौते की सोच नई विधि लन्दन के विश्वास ने !!
पूर्व चुनावी हलचल भी थी -- तीव्र वहाँ हर धाम में !
भारतीय आन्दोलन में नित पड़ा खलल इस काम में !!

इसीलिये कर परामर्श तब वायसराय से नीति गढ़ी !
झुकी ब्रिटिश सरकार, स्वजन ने अखबारों में खबर पढ़ी !!
अगस्त क्रान्ति के सारे नेता–जो पकड़े थे छोड़ दिये !
दमन चक्र की राहों के कुछ रुख थे खुद ही मोड़ दिये !!

पुलक उठी भारत की जनता–प्राप्त किया नव जीवन था !
गाँधी, नेहरू अरु पटेल सबका पग–पग अभिनन्दन था !!

जुलाई १९४५ आजाद हिन्द फौज और पराभव—

महा शक्तियाँ जुटी युद्ध में–क्रुद्ध लहर थी रण थल में !
आई. एन. ए. के सारे सैनिक थे हताश हर जंगल में !!
सीमित साधन थे समाप्त अरु खाद्यान्न तक बन्द हुये !
संग–संग औ जापानी थे–वे भागे, स्वच्छन्द हुये !!
जल सेना की आक्रामक थी कार्यवाहियाँ बढ़ी चढ़ी !
अरु अफवाहें खुफियाओं की बढ़ चढ़ कर थी खूब गढ़ी !!

आजाद हिन्द फौजी पकड़े थे !
पकड़—पकड़ कर जकडे थे !!

यह विडंबना रही सिंह थे–घिरे हुये उन सियारों से !
पूर्ण रूप से लैस बढ़े थे जो आग्नेय हथियारों से !!
वीर सहस्रों बन्दी गण थे नित्य भाग्य को कोस रहे !
सहगल–ढिल्लों शाहनवाज से दूर कहीं पर बोस रहे !!

अगस्त १९४५—

लिये कामना श्रेष्ठ हृदय में,
अरु पूरा विश्वास विजय में !
नेता जी क्रमवत तत्पर थे,
गुँजित नित ओजस्वी स्वर थे !

किन्तु हाय ! दुर्भाग्य हठीले,
चक्षु सभी के करके गीले !
खेल निराला खेल गये तुम !
नई मुसीबत ठेल गये तुम !

ध्वस्त अनेक विमान हो गये,
सुख-क्षण अर्न्तध्यान हो गये,
वायुयान में लगी आग से,
नर सुभाष बलिदान हो गये !

जो न झुका अरु ना घबराया,
ऐसा क्षण जीवन में आया,
दे न सका अन्तिम निर्देशन,
यद्यपि गौरव गीत गुंजाया !

हत् प्रभ से इस समाचार से,
और समय की कड़ी मार से,
गाँधी जी मर्माहत बोले,
सिखा गया बलिदान प्यार से !

भूल गये मत भेद जवाहर,
कहा—"सिद्ध होकर नर नाहर,
अमर ज्योति दे गया देश को,
याद करे जग नर विशेष को !

घटना क्रम लन्दन का चालित–१५ अगस्त १९४५—

वही हुआ परिणाम, लगा जो–जन–जीवन को था संभावित !
परिवर्तनयुत था चुनाव से–घटना क्रम लन्दन का चालित ! !
कंजरवेटिव हार गये थे–लेबर दल की हुई विजय थी !
सारी दुनिया परिवर्तन पर आंक रही अद्‌भुत विस्मय थी ! !

महायुद्ध में अर्थ व्यवस्था लंदन की थी ध्वस्त हो चुकी !
और नीतियां भी चर्चिल की–सारी ही थीं पस्त हो चुकीं ! !
क्लीमेंट एटली सफल प्रणेता अपने युग के अब प्रधान थे !
सब ने सोचा दिन बहुरेंगे अब शायद हिन्दोस्तान के ! !

नई नीति अनुरूप स्वशासन भारत को था तब विचार में !
पूर्व घोषणा लेबर दल की पहले से ही थी प्रचार में ! !

नवम्बर १९४५—

देश भक्ति का यह परिणाम,
आई. एन. ए. पर इल्जाम,
गद्दारी का !

ब्रिटिश राज से, ब्रिटिश ताज से,
भारत के शासन विराट से,
सीधी टक्कर रही लाट से !!

सैनिक अरु अधिकारी सारे,
जेलों में किस्मत के मारे,
गढ़ा गया संगीन मुकदमा,
था युग की तौहीन मुकदमा !

मुल्जिम सारे देश भक्त थे,
मन-विचार से जो सशक्त थे,
तत्पर थे बलिदान हेतु वे,
बढ़े विजय का लिये केतु वे !

काँग्रेस का था यह निर्णय,
लड़ें मुकदमा वह बिन संशय,
आई. एन. ए. सैनिक अफसर के,
तब बचाव के उभरे स्वर थे !

मिला आत्मबल इससे उनको,
चुका चुके जो माँ के ऋण को,
जन-जीवन में उठा ज्वार सा,
संशय किंचित न था हार का !

गाऊन धारे चले जवाहर,
भीड़ खड़ी बंगले के बाहर,
सब में था उत्साह अतुलतम,
विधि वेत्ताओं का था संगम !

सप्रू, पंत, अनेक लड़े थे,
बन वकील सब हुये खड़े थे,
प्रमुख वकालत-स्वर थे नेहरू,
उत्साहित जमकर थे नेहरू !

न्यायालय था भरा ठसाठस,
वक्ता-अधिवक्ता थे दस-दस,
था बचाव का पक्ष सजीला,
किन्तु न था कानून लचीला !

नेहरू के तर्कों की भाषा,
दिला रही थी सब को आशा,
जनता की भी सहानुभूति थी,
यह ही उनकी शक्ति अकूत थी !

जो भी उचित रहा या अनुचित,
देश भक्ति के कारण शोभित,
इनके सब आचरण सही थे,
लिये स्वप्न थे आजादी के !

इन सबने कर्त्तव्य निभाया,
देश भक्ति का रुख अपनाया,
जग प्रसिद्ध थी हर दलील वो,
देते थे बढ़कर वकील जो !

मृत्यु दण्ड का भय समाप्त था,
नेहरू को यश हुआ प्राप्त था,
छुटे अंतत: सैनिक, अफसर,
खुशी मनी थी सुन कर घर-घर !

क्रम न रुका पर हड़तालों का,
बढ़ा जोश भारत—लालों का,
गूँज उठे जयहिंद के नारे,
लज्जित शासन शर्म के मारे !

तब जनता का सबल पक्ष था,
और सामने एक लक्ष्य था,
बस आजादी शीघ्र प्राप्त हो,
लंदन का शासन समाप्त हो !

१८ फरवरी १६४६,

नौ–सैनिक विद्रोह—

विजय पुर्व का हर आश्वासन,
भूल चुका था जैसे लन्दन,
रॉयल इंडियन नेवी का दल,
सहता था बेचैनी हर पल !

चूंकि हरेक इंगलिश अधिकारी,
पाले रहा अहं–बीमारी,
"हिन्दुस्तानी सैनिक सारे,
परम्परागत दास हमारे" !

दंभ युक्त व्यवहार कड़ा था,
जो सहना हर वक्त पड़ा था,
समय–समय पर हुये प्रताड़ित,
शब्द—वाण भी सुने अशोभित !

निज गौरव को क्रान्ति-स्वर दिया,
सबने मिल विद्रोह कर दिया,
ब्रिटिश ध्वज थे त्वरित उतारे,
किये सभी थे चिथड़े सारे !

कहीं फहरने लगा तिरंगा,
कहीं लाल ध्वज भाया चंगा,
मुस्लिम लीगी भी ध्वज ताना,
जिसने जैसा चाहा, माना !

अनियंत्रित थी सारी सेना,
सोचा निश्चित बदला लेना,
लंदन शाही सुन थर्राई,
वायसराय को आई रुलाई !

झट-पैथिक लारेंस बुलाये,
समझौते के यत्न जुटाये,
काँग्रेस तत्पर थी हर क्षण,
विद्रोहों के सुन कर कारण !

थे पटेल बम्बई पठाये,
जो स्थिति पर दृष्टि गड़ाये,
सफल हुये नौ-सेना से मिल,
समझौते का पाया साहिल !

विद्रोहों का हुआ अन्त था,
ज्वार खुशी का तब अंनत था,
सैनिक को सम्मान मिला था,
अग्र प्रगति का पुष्प खिला था !

आजादी के खुले द्वार थे,
जिससे करते अतुल प्यार थे,
हिला मगर शासन लंदन का,
वायसराय का माथा ठनका !

उसका वश चलता न उभरने देतो—

जबकि काँग्रेस की गति विधियाँ तेजी से थीं चल रहीं,
लीगी नेताओं की इच्छा रख कर साध मचल रहीं,
वाह्य शक्तियाँ नहीं चाहती थीं कि भारत एक रहे;
गिरगिट जैसा रंग ब्रिटिश सत्ता थी जम कर बदल रही !

द्वै राष्ट्र सिद्धान्त इन्दिरा के मन को था सालता,
समझ रही थी नया सिलसिला वह सत्ता के जाल का,
जब भी कभी समय था पाया, कर विचार फीरोज से;
खींचा रुचि की ओर ध्यान था त्वरित जवाहर लाल का !

नहीं चाहते थे नेहरू भी देश बँटे दो टूक हो,
परिलक्षित करते विचार में थे संभावित हूक को,
उभयनिष्ठ जो नेतागण थे उनसे कहते थे सदा;
"देख रहे हो अब जिन्ना के मौका परस्त सलूक को !"

जन-जीवन रुचि चेष्टाओं को इन्दिरा थी पहचानती,
आन्दोलन के तौर-तरीकों के रुख भी थी जानती,
साम्प्रदायिकता का उभरा विष भी उसको मालूम था;
काँग्रेस नीतिज्ञ जनों को रही सदा से मानती !

भावनायें थी लगी बिखरने, जब देखा था देश में,
जन-संपर्कों से जुड़ कर वह आई न थी आवेश में,
धर्मवाद अरु जातिवाद पर जलसे घातक थे लगे;
देख रही थी भारत माँ है, आज निरन्तर क्लेश में !

दुर्भिसंधियाँ, खतरनाक थीं पनप रही हर प्रान्त में,
जन्म रही थीं शंकायें नित पूरे देश अशान्त में,
कौन-कहाँ कितना दोषी था, उस संभावित ह्रास का;
उसने समझा जुड़ा हुआ स्वर घटना क्रमिक वृतांत में !

जहाँ कहीं भी संभव था समझाया हर समुदाय को,
बल देने को कहा निरन्तर राष्ट्र हितार्थ उपाय को,
मात्र सदस्या थी वह दल की, नेताओं की धूम थी;
उसका वश चलता न उभरने देती कटु अध्याय को !

नवम्बर १९४५ से जून १९४६ तक,

प्रान्तीय असेंबलियों के चुनाव——

गाँधी, नेहरू अरु पटेल प्रिय टंडन अरु राजेन्द्र जी,
दर्शाते थे निज भाषण में—नैतिकता काँग्रेस की,
राजा जी, अब्दुल कलाम अरु पंत सरीखे लोग सब;
पूर्ण शक्ति से थे प्रचार में, लेकर बात स्वदेश की !

जिक्र निरन्तर ब्रिटिश सत्ता के आश्वासन के किये,
थे चुनाव हो रहे देश में प्रान्त स्वशासन के लिये,
काँग्रेस के नेता गण थे—राष्ट्र—एकता—पक्ष में,
जबकि लीग लालायित थी • तब देश विभाजन के लिये !

काँग्रेस की रीति नीति के जिन्ना रहे खिलाफ थे,
साम्प्रदायिक विष करामात को लिये हुये वे आप थे,
काँग्रेस को मिली सफलता, बहुमत हासिल था हुआ;
इस चुनाव में लीगी स्वर के उभरे कार्य कलाप थे !

गाँधी नेहरू अति प्रसन्न थे इस चुनाव परिणाम से,
विश्व हुआ परिचित था पूरा काँग्रेस के नाम से,
कहीं–कहीं अकसरियत करके हासिल लीग बिफर उठी;
नहीं बैठने देना वह चाहती थी तब आराम से !

हुआ खूब लारेंस मिशन भी ज्योतित देख चुनाव को,
द्रुत महत्व देना चाहता था काँग्रेस—प्रस्ताव को,
बात सुनी अब्दुल कलाम की ध्यान लगा कर खूब थी;
नेहरू, गाँधी, राजा जी के जाना खूब स्वभाव को !

५ मई १९४६ शिमला कान्फ्रेन्स—

वायसराय, लारेंस मिशन अरु–काँग्रेस के नेतागण !
आँक रहे थे बातचीत का कान्फ्रेंस में जब विवरण !!
लीगी नेता अपनी धुन में लय भर पाकिस्तान की !
तत्पर बैठे थे बिगाड़ने छवि को हिन्दुस्तान की !!

साम्प्रदायिकता की मचान पर, रखकर रुचि विस्तार को !
किंचित भी पहचान न पाये खान अब्दुल गफ्फार को !!
कई दिनों तक रही हलचलें चले वार्ता दौर थे !
किन्तु मिशन के सब सदस्य तब सोच रहे कुछ और थे !!

बँटे देश यह दो टुकड़ों में क्षय हो हिन्दुस्तान का !
जिन्ना चाहते दो प्रान्तों में ध्वज हो पाकिस्तान का !!
काँग्रेस के नेतागण को शर्त न यह मंजूर थी !
इसीलिये समझौते की घड़ियाँ भी कोसों दूर थीं !!

सफल चुनावों की गुणता से अवगत दुनिया सारी थी !
अन्तरिम सरकार बनाने की काँग्रेस अधिकारी थी !!
लीगी नेताओं को किंचित, यह दावा स्वीकार न था !
और यहाँ जिन्ना का अमला साझे को तैयार न था !!

बदल रही थी गतियाँ प्रति पल,
मची हुई थी हर दिन हल चल,
अंग्रेजों के दृष्टिकोण का–
दीख रहा था प्रतिक्षण, प्रतिफल !

१० जुलाई १९४६ पं० जवाहर लाल पुनः
राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष चुने गये—

तर्क जवाहर के आगे थे फीके पड़ते औरों के !
रहस प्रकट होते थे अक्सर अंग्रेजों के दौरो के !!
नेहरू समझे रहे क्षुद्रता प्रति दिन लन्दन वालों की !
चूँकि अहमियत से अवगत थे उभरे हुये सवालों की !!

पुनः बने अध्यक्ष जवाहर, इंगलिश्तानी हत् प्रभ थे !
और इधर जिन्ना के चेले करते रहते अब–तब थे !!
"बाँटों–काटो दुर्भिचाल से दूषित यहाँ समाज करो !
फूट डाल अंग्रेज चाहते थे सदैव ही राज करो !!

इसका दुष्परिणाम शीघ्र था पड़ा भुगतान भारत को !
कैसे वर्णन करे लेखनी–कलकत्ते की हालत को !!

जहाँ बहाया रक्त मनुज का !
बढ़ा दबदबा रहा दनुज का !!

१६ अगस्त १६४६,
साम्प्रदायिक दंगों की जद में—

इधर आग की लपटें उभरी, हर घर आँगन उधर घिरा,
अन्तरिम सरकार विरोधी नारों से था शहर घिरा,
पलक झपकते छुरे बाजियाँ सड़कों पर आरम्भ हुई;
साम्प्रदायिक दंगों की जद में कलकत्ते का नगर घिरा !

निष्क्रिय सुहरावर्दी, निष्क्रिय रहे पुलिस अरु थाने थे,
मरे वही लड़–लड़ कर जो कि कहीं नहीं बेगाने थे,
सुबह–सुबह ही रक्तिम होली खेली थी कलकत्ते में;
हिन्दू, मुस्लिम दंगाइयों ने ढूंढे कई बहाने थे !

जिनका रक्त बहाया जि़द ने—

चार दिवस तक मारा-मार,
बही लहू की अविरल धार,
खेल रही शैतानी चाल;
मरे हाय रे ! कई हज़ार !

संपति का था हुआ विनाश,
गलियों में लाशों पर लाश,
गाँधी सुन कर थे बेचैन,
हुआ कलंकित था इतिहास !

नोआखली थे गये तुरन्त,
मर्माहत थे वे अत्यन्त,
बढ़ निज को खतरे में डाल;
करवाया दंगे का अन्त !

लुटे पिटे जन चारों ओर,
भूखे, प्यासे करते शोर,
जिन्हें देख गाँधी मर्माहत;
झेल रहे थे दुख अति घोर !

गाँधी जी का पड़ा प्रभाव,
काम कर गया था प्रस्ताव,
किन्तु आपसी वैमनस्यों का;
रहा दहकता तीव्र अलाव !

लरज उठा था हिन्दुस्तान,
बंगला धरती लहू लुहान,
जिनका रक्त बहाया जिद ने;
वे सब ही तो थे इंसान !

नेहरू जी की अन्तरात्मा—

प्रबल चेष्टा हत् प्रभ पुनि-पुनि हुई अचानक सिर धुन कर,
त्वरित विचारा अंग्रेजों की रुचि के गुण अरु अवगुण पर,
सिहर उठा था रोम-रोम अरु ताक व्योम को व्यथित हृदय,
मर्माहत, आहत नेहरू थे इस दंगे को सुन-सुन कर !

वायसराय को लिखा पत्र था दंगों का उल्लेख किया !
"देख लिया है खूब आपने रक्तपात यह देख लिया !!
हिन्दु-मुस्लिम या कि सिक्ख जो-जो भी वहाँ शिकार हुआ !
भारतीय यह रक्त-वक्त के साथ यहाँ इस बार बहा !!

इस प्रकार की बदतमीजियाँ और न होंगी सहन यहाँ !
रक्तपात अब और नहीं यूँ देख सकेगा वतन यहाँ !!
पुनरावृतियाँ न हों यहाँ पर इस प्रकार की और कभी !
समाधान हैं यहाँ खोजने इसके हमको आज अभी !!

विजय मिली थी काँग्रेस को—

त्वरित विश्व में प्रतिक्रिया की जानिब बढ़ा रुझान था,
लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर ज्यों-ज्यों हिंदुस्तान था,
गाँधी, नेहरू अरु पटेल को मंत्रणायें थीं चल रहीं;
दृढ़तर थी विश्वास-भावना, होना नव निर्माण था !

थी स्वतन्त्रता द्वार पर,
बलिदानी आधार पर,
विजय मिली थी कांग्रेस को;
विगत खाइयाँ पार कर !

२५ अगस्त १९४६ काँग्रेस द्वारा अन्तरिम सरकार का गठन—

वायसराय का मिला निमंत्रण अपने सद्य प्रचार का,
भारतीय दायित्व संभालें, अब शासन के भार का,
काँग्रेस की कार्यकारिणो के निर्णय अनुरूप ही,
यह आमंत्रण नेहरू जी को हुआ त्वरित स्वीकार था !

अन्तरिम सरकार का निर्माण था शुभ प्रात में !
मन्त्रियों की बन गई सूची समूची रात में !!

वायसराय थे स्वयं प्रधान,
उप प्रधान नेहरू गुणवान,
बल्लभ भाई प्रिय सरदार,
रज्जन बाबू, शरत उदार,

राजा जी, जगजीवन राम,
आसफ अली कर्मठ अविराम,
जान मथाई अरु बलदेव,
सी० एच भाभा, सिद्ध स्वमेव,

शफकत अहमद, अली, जहीर,
मन्त्री परिषद के थे वीर,
सब पर जनता का विश्वास,
बदल रहा करवट इतिहास !!

याद सितम्बर दो अभिराम !
किया शुरू था जिस दिन काम !!

७ सितम्बर १९४६—

सात सितम्बर को नेहरू ने किया देश का था आह्वान !
"नये चरण में आजादी के हुआ अग्रसर हिन्दुस्तान !!
किन्तु अभी मंजिल है आगे बढ़कर चलना है नित साथ !
ऊँचा करना हमें विश्व में भारत भू का उज्जवल माथ !!

स्वयं नीति अपनी निर्धारित करे हमारा हिन्दुस्तान !
मित्र भाव का अपने सबसे बना रहेगा नित्य रुझान !!

७ सितम्बर १९४६ विदेश नीति का खुलासा—

"स्वतन्त्रता का कर सम्मान,
जारी रक्खें निज अभियान,"
किया स्वयं था नेहरू जी ने;
प्रगति शीलता का आह्वान !

करें स्वयं अपना निर्माण,
रख समक्ष नित जन-कल्याण,
बढ़ें शान्ति के पथ पर दृढ़ स्वर;
सफल स्वतः हम करें प्रयाण !

युद्धों का हो दौर समाप्त,
मिट जाये जो शंका व्याप्त,
उपनिवेश का करके अन्त;
करे एशिया मंजिल प्राप्त !

कहा– "रूस है देश महान,
स्वाभिमान की जिसमें आन,
नित तटस्थ रहकर के आगे;
बढ़े हमारा हिन्दुस्तान !

सार्वभौम सत्ता के हेतु,
लिये हाथ में अपना केतु,
हर अभाव की खाई पाट,
स्वयं सिद्धि का बाँधे सेतु !"

सितम्बर १९४६ मुस्लिम लीग अन्तरिम सरकार में शामिल—

देखा जब शासन–संचालन, लीग हुई लालायित थी !
और नीति अलगाव वाद की उसकी पूर्व नियोजित थी !!
वायसराय के कहने पर सम्मिलित हुई वह शासन में !
किन्तु सदा ही अड़ियल रुख था–शासन के संचालन में !!

वित्त मन्त्री थे खान लियाकत, अवरोधों की बान पड़ी !
कठिनाई से गुजर रहा था तब यह हिन्दुस्तान बड़ी !!

मंत्री परिषद की बैठक में नहीं भाग वे लेते थे !
उत्तर-पश्चिम में दंगों को दिल्ली से शह देते थे !!
रक्तपात की घटनाओं के होते थे उल्लेख अनेक !
लिखे जा रहे समाचार पत्रों में हर दिन लेख अनेक !!

रट थी पाकिस्तान की,
शह थी इंगलिश्तान की,
उन्हें एकता नहीं मान्य थी;
प्यारे हिन्दुस्तान की !

१४ दिसम्बर सन् १९४६,
संजय गाँधी का जन्म—

था प्रबल विश्वास गाँधी के नियम आदर्श में,
रम गई थी ज्योति जीवन की कड़े संघर्ष में,
चाव से स्वतंत्रता के युद्ध मे नित [illegible] थीं;
इंदिरा को था सदा विश्वास द्रुत उत्कर्ष !

सांप्रदायिक दल घृणा थे जब यहाँ फैला रहे,
अरु निरंतर ईर्ष्या की आग थे भड़का रहे,
दौड़ कर जाती स्वयं थी वह भड़कती भीड़ में,
और कहती-"सोचिये क्या आप करने जा रहे" !

हिन्दु–मुस्लिम–सिक्ख–ईसाई सभी से प्यार था,
मानवीय दृष्टि कोणों का प्रबलतम ज्वार था,
ह्रास मानव वृंद का हो अरु बढ़े धर्मान्धता;
इंदिरा को एक पल को भी नहीं स्वीकार था !

जन्म पाया इंदिरा ने श्रेष्ठतम परिवार में,
त्याग, सुख–सुविधा जुटा जो देश के उद्धार में,
रात–दिन चिंतन, मनन में लीन रह कर चेष्टा;
आकलन करती स्वयं-'क्या हो रहा संसार में' !

हर दिशा में देखती थी प्रगति के बढ़ते चरण,
आन्तरिक सुख–भावना से सज रहे थे ज्योति-कण,
कर भला, होगा भला रुचिमय कहावत की प्रभा;
जिन्दगी में ला रही थी नव उजाले की किरण !

जन्म संजय का हुआ उद्घोषणा वरदान की,
हो गई समवेत स्वर में–ज्योति सी दिनमान की,
लिख दिया था वक्त ने कि यह मनोहर मूर्ति कल;
साथ लेकर के चले तस्वीर हिंदुस्तान की !

खुश बहुत फीरोज गाँधी, खुश जवाहर लाल थे,
रंग–बिरंगे चाव पुलकित हो उठे ननिहाल के,
मिल गया राजीव को साथी सलोना–फूल सा;
लाल थे दो श्रेष्ठतम ये इन्दिरा की माल के !

हुई कांग्रेस थी लाचार—

माउँट बेटन वायसराय बन आये हिन्दुस्तान के !
पूरा करने को आतुर थे सपने इंगलिश्तान के !!

नेहरू का मन पर प्रभाव था उनके कुछ आरम्भ से !
मन ही मन वे डरते भी थे—भारत के सुस्तम्भ से !!

सोचा हिन्दु-मुस्लिम रुचियों के स्वर उलझे हैं यहाँ !
श्री पटेल को अपने मन का साथी समझे थे यहाँ !!

रच कर भारत का बंटवारा,
समझा उनको दिया इशारा,
गाँधी, नेहरू सुनकर चिंतित;
बटे न हिन्दुस्तान हमारा ?

३१ मार्च १९४७—गाँधी-लार्ड माउँट बेटन वार्ता आरम्भ—

देश न हो जाये बर्बाद,
सोचा करते थे 'आजाद' *
हर दिन उठते थे तूफान,
लीगी रट थी—'पाकिस्तान' !

*अब्दुल कलाम 'आजाद'

चिंतित नित्य जवाहर लाल,
स्वार्थवादियों का लख जाल !
"अगर बँट गया हिन्दुस्तान,
धरती हो शोणित से लाल" !

जिनका प्रतिपल उग्र स्वभाव,
उन्हें चाहिये नित टकराव,
शक्ति देश की होवे क्षीण;
लक्ष रहा उनका 'बिखराव' !

करके मन, चिंतन अरु शोध,
गाँधी जी ने किया विरोध,
कतिपय नेता बँटवारे के;
प्रति रखते थे मन में क्रोध !

बढ़ा तीव्र दंगों का जोर,
थी बेचैनी चारों ओर,
माउंट बेटन जिद का पक्का;
लिये हुये था मन में चोर !

अपने हित को रखा समक्ष,
लेकर मुस्लिम लीगी पक्ष,
बँटवारे की गढ़ी योजना;
कूट नीति में रह कर दक्ष !

चली वार्ता दिवस अनेक,
अड़ा हुआ था पक्ष प्रत्येक,
उसे चाहिये पाकिस्तान;
मुस्लिम लीगी थी यह टेक !

गाँधी का इस ओर रुझान,
एक रहे बस हिन्दुस्तान,
हिंसा का रुक जाये प्रसार;
रहे शान्ति से हर इन्सान !

देखा हर नीयत में फर्क,
सफल न हो पाये थे तर्क,
आँक लिया बैठे हैं कुछ तो–
करने को अब बेड़ा गर्क !

किया अंततः वह स्वीकार,
बँटवारे का जो आधार,
ऐतिहासिक दुर्घटना थी यह;
हुई कांग्रेस थी लाचार !

माउँट बेटन के प्रस्ताव,
पैदा करने को अलगाव,
हुये ब्रिटिश संसद–अनुमोदित–
भेद–भाव के नये अलाव !

और रियासतों को अधिकार,
दिये गये सब सोच विचार,
मिल्ने किसी में–या कि स्वयं के;
रख अस्तित्व रचें आधार !

स्वीकारी थी गई योजना, जब न रहा था शेष विकल्प !
टूट चुका था गाँधी जी का राष्ट्र–एकता का संकल्प !!
नेहरू जी अत्यन्त दुखी थे–दुखी बहुत, रज्जन, आजाद !
सोच रहे थे निश्चय ही हो अब भारत की छवि बर्बाद !!

नीति, रीति अरु दृष्टिकोण बदलेंगे, बदले शान्ति रिवाज !
बन्धु–बन्धु में फर्क पड़ गया, बदलेगा यह वृहद समाज !!
मिली देश को आजादी पर–देश हो गया था दो फाड़ !
रचे गये नूतन मंसूबे–धर्म भावना की ले आड़ !!

लाल हुई थी धरा रक्त से—

बंटवारे के दुष्परिणाम,
पड़े भुगतने आठों याम,
हिंसा के ताँडव के आगे;
हुई अहिंसा थी नाकाम !

दो मुल्कों का नव निर्माण,
साल रहा जनता के प्राण,
युगो—युगों की इस बीमारी से,
था कब संभव कुछ त्राण !

धार्मिक उन्माद को-

जिन्दगी लेकर चली थी एक नव अहमाम को !
रुचि बदलने में बढ़ी थी देश के इतिहास को !!
ऐटली थे चाहते कुछ देर से आजाद हो !
जून अड़तालिस सजाये हिन्द के प्रासाद को !!

किन्तु थी संभावनायें और सत्यानाश की !
साक्षी थीं सूचनाएँ तब नये इतिहास की !!
इसलिये पन्द्रह अगस्त ही दिन मुकर्रर कर दिया !
मुक्ति की इस योजना को एक नूतन स्वर दिया !!

किन्तु दो टुकड़ों में बाँटा देश हिन्दुस्तान था !
वृहत्तर था क्षेत्र भारत—अल्प पाकिस्तान था !!
दीर्घ कालिक चाल के परिणाम—इंगित गुप्त थे !
शान्ति की सुस्थापना के भाव भी तब लुप्त थे !!

लीग वालों के खुले थे—चाक—चौबन्द रास्ते !
लड़—झगड़ कर ले लिया था मुल्क अपन वास्ते !!
धार्मिक उन्माद को बरतानिया की शह रही !
चुप—चुपाते योजनायें और थी कुछ तय रही !!

आंग्ल, अमरीकी सदा को चाहते घुस पैठ थे !
देश भारत में गणित उनके नहीं थे बैठते !!
कूटनीतिक रास्ते से चाहते सुस्थान थे !
हो गई वह चाह पूरी पूर्ण—पाकिस्तान से !!

था दुखी इस चाल से नेतृत्व भारतवर्ष का !
सोचता था टल सकेगा वक्त नव संघर्ष का !!
चूंकि कुछ थे सिर फिरे जो ले रहे तलवार थे !
रक्त की नदियाँ बहाने को यहाँ तैयार थे !!

फैसला जो भी हुआ वह कर लिया स्वीकार था !
हो चुका नेतृत्व भारत का बहुत लाचार था !!
घाव घातक था लगा यह उम्र भर के वास्ते !
खुल गये थे रात दिन की अनबनों के रास्ते !!

जो कल तक थे बन्धु—

अंग–भंग आजादी पाई,
दुखी हृदय था, मिली बधाई,
दो खेमों में बँटे हुये थे;
भारतवासी भाई, भाई !

बलिदानों की गुंजित लय थी,
सत्य अहिंसा की यह जय थी,
ध्वज अंग्रेजी उतर रहा था;
आने वाली किन्तु प्रलय थी !

जो कि रक्त के सौदागर थे.
बोझ बने उस जनता पर थे,
जिसने था सर्वस्व लुटाया;
झोंक दिये अपने घर-दर थे !

मन में भर कर उच्च उड़ानें,
लगे योजना घृणित बनाने,
जो कल तक थे बन्धु पडोसी;
अब वे सब ही थे बेगाने !

१५ अगस्त १९४७—

यद्यपि पस्त अगस्त हुई थी–सैतालिस के साल मे !
तो भी मस्ती भरी हुई थी–आजादी की चाल में !!
ऊँचाइयों के लक्ष देश के बलिदानों ने छुये यहाँ !
माउँट बेटन प्रथम गर्वनेर जनरल घोषित हुये यहाँ !!

अरु प्रधान मंत्री के पद पर शुभ्र जवाहर लाल थे !
मध्य रात चौदह अगस्त के–यत्न सभी तत्काल थे !!
थे पटेल–राजेन–जग जीवन–अरु उद्भट आजाद भी !
अन्य योग्यतम साथी संग थी मंत्री परिषद की कड़ी !!

सिंधु उमड़ता दीख रहा था उस क्षण पूरे हर्ष का !
संविधान अपना बनना था जब से भारत वर्ष का !!
सड़कें जगमग दीवाली सी मनी रात को शान से !
गया विदेशी राज्य सदा को प्यारे हिन्दुस्तान से !!

उल्लासों के मध्य उठ,
राजेंद्र सभा अध्यक्ष तब !
कहा–'भारती संघ राज्य का
उदय हुआ है आज अब' !

विनत भाव से उन सबके प्रति-
की अर्पित श्रद्धाँजली,
जिन बलिदानी नर श्रेष्ठो ने
अपनी–अपनी आहुति दी ?

सत्ता के हस्तातरण का दृष्य बड़ा गौरव शाली !
मुदितमना नेहरू के मुख पर छायी थी तब नव लाली !!
दीर्घ कक्ष के था समक्ष तब ऐतिहासिक यह परिवर्तन !
सदियो की जंजीर तोड़कर भारत पाया नव जीवन !!

"नीद में था विश्व सारा;
खुद को भारत ने सवाँरा !
हर्ष का आदर्श रखकर";
था यह नेहरू ने उचारा !

"नित्य सेवा भाव से जीवन समर्पित हो यहाँ !
सबल, सुस्थिर शान्तिमय अब देश ज्योतित हो यहाँ" !!

नई सुबह के साथ–साथ ही, रवि की झूमी किरण किरण !
भारत भू पर उतर चुके थे, स्वाभिमान के शोभित क्षण !!
नगर–नगर की डगर–डगर पर, गाँव–गाँव की धरती पर !
गूँज रहे थे भारत माँ कीं जय के नभ बेधी नव स्वर !!

सजी धरा, उर्वरा भारती विजयी पर्व मना रही !
'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' जनता मिलकर गा रही !!
बच्चे–बूढ़े अरु जवान सब महिलाओं के संग में !
उल्लासों का नया रंग थे घोल रहे इस रंग में !!

नेहरू नेता सबको भाया,
लाल किले पर ध्वज फहराया,
"झंडा ऊँचा रहे हमारा–"
सबने मिल–जुल कर जब गाया !

इकतिस तोपें—गरज उठी !
फुलझड़ियों की बाढ़ छुटीं !!
प्यारा भारत झूम उठा !
ध्वज तिरंग नभ चूम उठा !!

आदमी हो आदमी—

किन्तु आजादी मिली यह देश को बलिदान पर !
कर्ज जिसका है सदा को देश हिंदुस्तान पर !!
यह प्रगति का युग नया आया यहाँ था शान से !
साथ में लेकर अपेक्षा श्रेष्ठतर इन्सान से !!

एकता—एकाग्रता—समभाव—संचेतन प्रवर !
आदमी हो आदमी इस देश का नित श्रेष्ठतर !!
किन्तु द्रुत उन्माद ने इसको हटाया राह से !
स्वार्थ की पूजा यहाँ अब हो रही उत्साह से !!

मिटी दासता तो लेकिन—

मंत्र मुग्ध सुन रहा कहानी बालक था निज भारत की !
जैसे बचपन में इन्दिरा की जिज्ञासायुत आदत थी !!
आया नवयुग आजादी का, बालक बोला बाबा से—
"बाबा फिर तो देश समूचा दमका होगा आभा से" !!

"उल्लासों की जगमग ज्योतित होगी तब बारात नई !"
कदम, कदम पर सुख सुविधा की होगी तब तो बात नई" !!
बाबा सोचे ऊपर देखा–नभ की ओर निहारा था !
समझ गये उस क्षण बालक का–कैसा, कहाँ इशारा था !!

उनको लगा कि बाल जगत है सारा आज समक्ष खड़ा !
जो कि चाहता–जाने कैसे आजादी का वृक्ष खड़ा !!
कहा वृद्ध ने—"आजादी का तुमने जो वृतांत सुना !
इसके पीछे भी रहस्य है बलिदानों का कई गुना !!

क्रान्ति विधायें कितनी, कैसी रही यहाँ विश्वास नहीं !
यह विडंबना, गया पढ़ाया यहाँ सही इतिहास नहीं !!
नहीं समय से खिले यहाँ पर सत जीवन उद्गार नये !
ऐसा लगता है अनेक ही वर्ष यहाँ बेकार गये !!

मिटी दासता तो लेकिन दृढ़ बन्धन निर्धनता के हैं !
आर्तनाद सम उभरे अब भी स्वर पीड़ित जनता के हैं !!
भेद–भाव की दीवारें नित ऊँची उठती दीख रहीं !
नव संतति भी अब तक देखो माँग यहा पर भीख रही !!

जातिवाद की खाई चौड़ी यहाँ निरन्तर होती है !
मानव की संकीर्ण भावना काँटें ही नित बोती है !!
स्वार्थ सने व्यापारी सारी दौलत आज समेट रहे !
अरु जासूसी के धंधे में सारा देश लपेट रहे !!

इन सबके दोषी अपने हैं अपनो के सब धंधे हैं !
यह भी है दुर्भाग्य सभी कुछ देख यहाँ हम अंधे हैं !!
नेहरू, लाल बहादुर तक भी इस स्थिति से चिंतित थे !
सद प्रयास इन्दिरा गाँधी के सारे जग में चर्चित थे !

बेहतर हो संकल्प आज ले भारत जनता दृढ़ता से !
निबटें सब ही मिल-जुल करके बढ़ती हुई समस्या से !!
मत भूलें मानव का जीवन अब आदर्श बनाना है !
चमके जो दुनिया में ऐसा भारतवर्ष बनाना है !!

,'स्वतन्त्रता के बाद देश की हालत का वर्णन सुन रे !
कैसा क्या कुछ पड़ा देखना, सहना उसको ले गुण रे !!
रक्त रंजिता होकर धरती कैसी डग-मग डोली थी !
भारत माँ ने निज सीने पर झेली कैसे गोली थी !!"

कर्त्तव्यों के आँगन में—

नेहरू बने प्रधान देश के, रचने को इतिहास नया !
चमक उठा दिल्ली का गौरव, मिला उन्हें आवास नया !!
रही इन्दिरा साथ पिता के साथ रहे फीरोज वहाँ !
राजनीति अरु राज-काज के अनुभव होते रोज जहाँ !!

बढ़ा हुआ दायित्व–देश के प्रिय प्रधान का कार्य रहा !
तज कर निज जीवन के सुख को कार्य यही स्वीकार्य रहा !!
त्याग राग की नई कड़ी जुड़ गई इंदिरा–जीवन में !
पग–पग होती रही परीक्षा कर्त्तव्यों के आँगन में !!

कमला माँ की याद आ गई—

पथ प्रशस्त कर घड़ी आ गई,
नव विकास की लड़ी पा गई,
इंदिरा के नाज़ुक कन्धों पर,
जिम्मेदारी बड़ी आ गई !

पिता प्रधान बने भारत के !
कमला माँ की याद आ गई !!

बदल गया जीवन का क्रम था—

सदा, बंधा हर एक नियम था,
दिन भर करना पड़ता श्रम था,
क्रमवत् थी मेहमान नवाजी,
बदल गया जीवन का क्रम था !

तीन मूर्ति का सजा भवन था—

हर झोंका खुश रहा पवन का,
छोर-छोर छू कर आँगन का,
इंदिरा जी के कर्मठपन से,
तीन मूर्ति का सजा भवन था !

देश काज हित बढ़ी व्यस्तता—

नेहरु दृढ़ थे अपनेपन में,
नव परिवर्तन था जीवन में,
देश-काज हित बढ़ी व्यस्तता,
संयम धैर्य अतुल था मन में !

सुख सुविधा का ध्यान निरन्तर—

सधा दिये सब नौकर चाकर,
पूर्ण नियंत्रण अन्दर–बाहर,
उच्च पदस्थ पिता की रक्खा;
सुख सुविधा का ध्यान निरन्तर !

बेटी, साथी अरु सहयोगी—

सेवा व्रत को मन तत्पर था,
नेहरू—जीवन योग प्रवर था,
बेटी, साथी अरु सहयोगी;
श्रेष्ठ समन्वित जीवन स्वर था !

राजनीति की शिक्षा पाई—

बात समय ने थी सिखलाई,
जन–सेवा रुचि छवि बन आई.
जीवन में इस परिवर्तन से;
राजनीति की शिक्षा पाई !

दंगों से था विचलित भारत--

पहुंचाने को बढ़ती, राहत,
निर्भय रहने की थी आदत,
कदम बढ़ाती थी बढ़ कर जब,
दंगों से था विचलित भारत !

गाँधी जी का मंत्र हृदय में –

रही न किंचित थी संशय में,
रही चेष्टा भारत–जय में,
लिये साथ चलती थी हर दम;
गाँधी जी का मंत्र हृदय में !

अगस्त-सितम्बर सन् १९४७,

प्रत्यावर्तन आबादी का—

फूटी आँख न भायी थी आजादी जब इस देश की !
छुपे हुये दुश्मन ने खेली चाल गुप्त संदेश की !!
जगह–जगह दंगे करवाये नगर–नगर अरु गाँव में !
आग लगादी थी छुप कर के आजादी के चाव में !!

हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही कौमों का होता ह्रास था !
विचलित होते गाँधी, नेहरू रोता नित इतिहास था !!
सदियों से जो बसते आये, बने हाय ! शरणार्थी !
विचलित सेठ, मजूर, निराश्रित महिलायें, विद्यार्थी !!

बहीं खून की नदियाँ, सदियाँ रोईं थीं विश्वास की !
यद्यपि शासन था हाथों में दिल्ली किन्तु उदास थी !!
उजड़ गये लाखों ही घर थे विस्थापित जन रो रहे !
दृश्य निरन्तर बने भयंकर जुल्म जहाँ थे हो रहे !!

प्रत्यावर्तन आबादी का था दोनों ही देश से !
जुड़ा हुआ हर एक हृदय था युग के उभरे क्लेश से !!
त्वरित जवाहर ने जा देखी हालत थी पंजाब की !
हतप्रभ थे जब री देखी थी जन–जीवन सैलाब की !!

पाकिस्तानी कर मनमानी धकियाते थे शान से !
दुष्प्रभाव के कारण जुड़ती जिद थी हिन्दुस्तान से !!
लाखों का चढ़ गया लहू था हिंसा–ताँडव–चाव को !
शह मिलती थी कहीं और से दुर्भिसंधि के भाव को !!

लुटे–पिटे इज्जत पत खोकर—

नगर–नगर में शिविर बने थे विस्थापित जन के लिये !
जो करते संघर्ष रहे थे अपने जीवन के लिये !!
इनमें हिन्दू–सिक्ख, मुसलमाँ सारे ही इन्सान थे !
मूल कारणों से कष्टों के जो कि रहे अनजान थे !!

जो सक्षम थे वर्ग सहायक होते थे अपनत्व से !
बने नये संगठन देश में, परिचित थे भ्रातृत्व से !!
शासन और प्रशासन जुट कर करता सेवा कार्य था !
शिविर बनाये गये वहाँ पर जहाँ–जहाँ अनिवार्य था !!

लुटे पिटे इज्जत पत खोकर जो विस्थापित थे यहाँ !
उनकी आहों से निकला था साम्प्रदायिकता का धुआँ !!
एक दिवस इंदिरा गाँधी ने साधा हृदय कमाल कर !
मुस्लिम जन–परिवार स्वयं वह लाई त्वरित निकाल कर !!

और कहीं हिन्दू की जम कर जान बचाई शान से !
पूर्ण रूप थी सहानुभूतियाँ उसको हर इन्सान से !!

जुड़ा हुआ बलिदान है जिससे-अक्टूबर १९४७—

आज़ादी तो मिली देश को–किन्तु रियासतों की भाषा !
बनी हुई थी अंग्रेजों की कूटनीति की परिभाषा !!
चाहा था वर्चस्व स्वयं का, राजों अरु महाराजों पर !
हर नवाब–ताल्लुकदारों पर अरु सामंत–समाजों पर !!

इसीलिये निज निर्णय का था मंत्र दिया उल्लास भरा !
किन्तु विपद में भारत भू का उतरा था इतिहास खरा !!
गृह मंत्री थे बल्लभ भाई, त्वरित भाँप कर भाषा को !
धूल धूसरित किया वेग से–उपनिवेश–वृत–आशा को !!

नेहरू सहमत थे इंगित से, निर्णय लिया मिलाने का !
महासंघ में विलय देखकर–घूमा ध्यान जमाने का !!
अल्प समय में हर वैधानिक कार्य किया संपन्न यहाँ !
मिली रियासतें ज्यों भारत में जनता हुई प्रसन्न यहाँ !!

जूनागढ़ अरु चाव हैदराबाद के !
दीख रहे थे उस क्षण जो अपवाद से !

लौह पुरुष ने लेकिन तब समरांगण नीति से !
दिखलाया था अल्प समय मे इन दोनों को जीत के !!
यह विडंबना दूर हुई तो प्रश्न उठा कश्मीर का !
जो, कि देश भारत में मिलने खातिर पूर्ण अधीर था !!

शेख अब्दुल्ला–अरु महाराजा दोनों ही भय ग्रस्त थे !
कूटनीति लख कर अंग्रेजी हुये हौंसले पस्त थे !!
गोरे–छोरे जो जरनल थे पाकिस्तानी फौज में !
चाह रहे थे स्वयं पहुंचना श्रीनगर दो रोज में !!

कर एकत्रित कबायलियों को भेज दिया कश्मीर में !
आजादी के साथ जंग थी त्वरित लिखी तकदीर में !!
विलय रियासत का करवाया भारत में था शेख ने !
चोट करारी थी लंदन को दे दी इस उल्लेख ने !!

फौजें भेजीं पाकिस्तानी नई जंग के वास्ते !
रोक दिये थे सीमाओं पर संचारों के रास्ते !!
हिन्दू–मुस्लिम एक हो गये जुट करके कश्मीर के !
कहा उन्होंने–"करें फैसले हम, अपनी तकदीर के" !!

हुआ अततः युद्ध–हिंद की कुमक बढ़ी तदबीर से !
मार भगाए थे कबायली–चुन–चुन कर कश्मीर से !!
किन्तु रहे जो दुर्गम हिस्से––रौंदे पाकिस्तान ने !
भरसक यत्न किया था हर पल जुट कर हिन्दुस्तान ने !!

कई ताकतें जुटी त्वरित थी अपने हित रख सामने !
पहले से शह दे रक्खी थी उनको यहाँ निजाम ने !!
उसका तो हो चुका विलय था पूरा भारतवर्ष में !
इस कारण लन्दन की ताकत जुटी नये संघर्ष में !!

ज्यों–ज्यों बढ़ी हिन्द की सेना सीमाओं को रौंदती !
सहमे सारे आततायी थे–'बिजली आयी कौंधती' !!

सहसा युद्ध विराम हो गया,
आता–आता लक्ष्य खो गया !
जहाँ–जहाँ थे पाकिस्तानी,
उस धरती को अपनी मानी !

दो भागों में बँटी रियासत हाय रे, कश्मीर की !
जिसे देख कर धरा देश की होती रही अधीर थी !!

राष्ट्र संघ की बात अड़ गई !
कलुषाकृति की छाँव पड़ गई !!

साल रहा है मन अब तक भी प्रश्न खड़ा कश्मीर का !
जुड़ा हुआ बलिदान है जिससे भारत के नर वीर का !!
तनिक चूक के कारण अब तक झेल रहे हैं वेदना !
आगे क्या कुछ हो सकता है, यह भी है अब देखना !!

जान दे कर आन रखली—

सीख लेने कुछ अगर हम तब विगत इतिहास से !
हो न सकते थे प्रभावित कुछ अधिक विश्वास से !!
घाव अब नासूर बनकर नित सताये जा रहा !
और हमको गम यही दिन रात खाए जा रहा !!

काश ! थोड़ा सब्र करते देखते रफ्तार को !
क्यों जताता शत्रु उस कश्मीर पर अधिकार को !!
जो कि कहने के लिये आजाद की संज्ञा लिये !
बन्धनों में युक्त वासी यदि जिये तो क्या जिये !!

आज तो हर सिर फिरा उस भाग का हमदर्द है !
उम्र भर के वास्ते वह चूक अब सिर दर्द है !!
रक्त की बूंदे अमर–गिलगित पे बैरम खान की !
जान देकर आन रखली जिसने हिन्दुस्तान की !!

समय कसौटी पर जीवन-सुख—

फीरोज रहे लखनऊ व्यस्तता बढ़ी पत्र संचालन में !
नित्य नये अनुभव होते थे जीवन के परिवर्तन में !!
स्वाभिमान की आन-बान से पूरित उनका जीवन था !
स्वावलम्ब के दृष्टि कोण में निखर उठा अपनापन था !!

राजनीति की गहमा-गहमी प्रति दिन बढ़ती जाती थी !
दृढ़ता और उदात्त विचारों की गरिमा रंग लाती थी !!
इंदिरा जी को अक्सर आकर साथ निभाना पड़ता था !
पुनः पिता की देख भाल को दिल्ली जाना पड़ता था !!

क्या कुछ संभव, अन्तर्मन में कैसे झाँका जाता था !
संयम कसौटी पर जीवन सुख कस कर आँका जाता !!
निश्चय ही पड़ गया फर्क था जीवन ज्योति समन्वय में !
यदा-कदा व्यवधान उभरता रहता था निज आशय में !!

किन्तु देश का प्रश्न सामने रखकर हर पग उठता था !
जब थी जैसी जहाँ जरूरत वैसे ही मन जुटता था !!

दृष्टि में समभाव का ही—

डगमगाई थी धरा यह; यंत्रणा की धाक से !
काफिलों पर काफिले जब आ रहे थे पाक से !!
वे कि जो पंजाब के वासी थे सदियों से वहाँ !
हो गये बेघर लुटा था जिन्दगी का कारवाँ !!

था असर दिल्ली पे इसका हर कोई हैरान था !
और निज धर्मान्धता में व्यस्त पाकिस्तान था !!
जब कि भारतवर्ष का शासन धरम निरपेक्ष था !
दृष्टि में समभाव का ही भाव नित सापेक्ष था !!

आदमी था आदमी कब, हो चुका शैतान था !
रात दिन की इस कलह से दग्ध हिन्दुस्तान था !!

क्षमा किया गाँधी ने उसको–२० जनवरी १९४८—

पड़ा देश को करना था जब महा कष्ट का सामना !
गाँधी जी बिड़ला हाउस में करते थे नित प्रार्थना !!
दंगों की रफ्तार रुके मन रोके हर प्रतिकार को !
इस कारण था पुनः उठाया अनशन के हथियार को !!

चौंक गई सरकार–जवाहर और पटेल उदास थे !
तुड़वाने को अनशन उनका आते अकसर पास थे !!
सिर्फ एक ही कहना उनका–आग बुझे प्रतिशोध की !
हिन्दू, मुस्लिम दोनों त्यागें–भाषा को अब क्रोध की !!

काँग्रेस में हलचल प्रतिपल हर नेता संतप्त था !
प्रण गाँधी का किन्तु देश की रक्षा खातिर सख्त था !!
चला एक हफ्ते का अनशन चिंतित सारा देश था !
हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख ईसाई सबको भारी क्लेश था !!

दोनों वर्गों के नेतागण विचलित होकर थे मिले !
बिड़ला हाउस तक जाते थे नेताओं के काफिले !!
दिया पूर्ण आश्वासन गाँधी को सम्पूर्ण सौहार्द का !
कतिपय आँखें भीगी थीं अरु स्वर संवाहक आर्द्र था !!

अनशन तोड़ा गाँधी जी ने जन समूह था देखता !
आये शायद शीघ्र लौट कर हिन्दू–मुस्लिम एकता !!
एक किसी धर्मान्ध व्यक्ति ने बम फेंका था तान कर !
समझ रहा था–मेहरबान हैं गाँधी पाकिस्तान पर !!

हुई न कुछ क्षति, गाँधी संयत रहे, प्रार्थना लीन थे !
धैर्य धारणा रुचि सगम में गाँधी बहुत प्रवीण थे !!
क्षमा किया गाँधी ने उसको करुणा भाव स्वच्छंद था !
और सुरक्षा हेतु कराया किंचित नहीं प्रबन्ध था !!

२६ जनवरी १९४८,

परिचित थी धर्मान्ध—

साम्प्रदायिक दंगों से चिंतित नेहरू रहते थे सदा !
अरु गाँधी की सभा मध्य बम की थी ताजी आपदा !!
इंदिरा गाँधी भी अवगत थी घटना-क्रम के वेग से !
परिचित थी धर्मांध भावना रुचि की पैनी तेग से !!

दर्शनार्थ गाँधी के पहुंची थी जब वह झट शाम को !
देखा गाँधी तिलांजली सी दे बैठे आराम को !!
व्यथित हृदय में देश-दशा का चित्र झलकता दीन था !
हर परिवर्तन अनुशासन का सत्ता के आधीन था !!

सत्ता में कुछ लोग अवाँछित कर्त्तव्यों में लीन थे !!
जड़ता अरु संकीर्ण भावना के रहते आधीन थे !!
यद्यपि नेहरू जी पर उनका पूर्ण रूप विश्वास था !
वही व्यक्ति था, मार्ग बदल सकता था जो इतिहास का !!

गहरी चिन्ता गाँधी की लख इंदु हुई गम्भीर थी !
लगी सोचने भारत की वह आगामी तस्वीर थी !!
सत्ता का व्यामोह न किंचित छू पाया उस संत को !
जो कि समाये हुये हृदय में रहता दिशा-दिगंत को !!

इस कारण ही स्यात कहा था-दल को कर दो भंग रे !
बुद्धिमान संकल्प शील जन हों सेवा व्रत संग रे !

श्री नेहरू की प्रशासनिक क्षमता—

भाषा, भाव, विचार सुदृढ़ थे, रहा सुदृढ़ संयोजन !
नेहरू जी को बना चुनौती सत्ता का संचालन !!
एक ओर परिवर्तित भारत था आजाद लहर में !
ओर दूसरी दंगों का था वेग प्रत्येक नगर मे !!

उच्च स्तर पर अभी उपस्थित थे अंग्रेज निराले !
जिनके मन साम्राज्यवाद के साँचे में थे ढाले !!
उनके संग प्रशासन क्षमता–गुण गौरव दिखलाना !
रहा निरन्तर लोहे के ही गिन–गिन चने चबाना !!

बढ़ी बाढ़ लाखों विस्थापित आये थे भारत में !
अरु अनेक कर रहे पलायन दंगों की हालत में !!
पूर्ण सजगता, कर्मठता से प्रत्यावर्तन क्रमवत !
रखना था तब नेहरू जी को मिल जुल कर ही विधिवत् !!

भारत पर यह भार अन्यथा पड़ा जिसे था ढोना !
शान्ति व्यवस्था के कारण मिल सका न रुचि भर सोना !!
साथ–साथ दुख दर्द सभी का पूरी तरह समझना !
मंत्री परिषद तक में बहसों से भी खूब उलझना !!

त्वरित कार्य निबटाना, निर्णय विधि सम्मत थे लेने !
पग–पग पर निर्देश नये थे कार्यालय को देने !!
कर्मठता अरु लगन भाव से कार्य किये सब जुट कर !
नियमबद्ध क्रमवत हो जाते थे प्रातः ही उठकर !!

प्रगति देश की कैसे होगी इस पर दृष्टि कड़ी थी !
उससे, मिलना नित दर्शन को जो जनता उमड़ी थी !!
वाह्य राष्ट्रों अरु देशों से द्रुत संबन्ध बनाना !
मित्र भाव से मिल कर सबसे आगे कदम बढ़ाना !!

चतुर्मुखी प्रतिभा आभूषित–नेहरू हुये सफल थे !
भारत को उन्नति के पथ पर लाने हेतु अटल थे !!
दूर दृष्टि अनुशासन व्रत से सब पर रखा नियन्त्रण !
सदा देश के हित में ही थे नेहरू जी के भाषण !!

३० जनवरी १९४८—महात्मा गाँधी की हत्या—

अनशन के पश्चात् अबल थे शारीरिक गति विधि से !
सबल किन्तु थे आत्म कोष में राम नाम की निधि से !!
बापू, जो सर्वस्व समर्पित कर जन–सेवा–हित में !
लिये मानवीय दृष्टिकोण थे अपने निर्मल चित में !!

शान्ति हेतु कर रहे प्रार्थना प्रति दिन नित्य नियम से !
कतिपय मानव रहे ग्रस्त थे किन्तु विषैले भ्रम से !!
"वर्ग खास के लिये रहा है उनका स्नेह निरंतर" !
यह विशेष विद्वेष, कि परिणति जिसकी हुई भयंकर !!

नियमित रुचिमय सभा प्रार्थना नियत समय थी होनी !
बिड़ला हाउस जान न पाया—क्या रच दे अनहोनी !!
तीस जनवरी—पांच बजे पश्चात् चले जब गाँधी !
तन पर चादर धवल—अमल थी—नीचे धोती बाँधी !!

दो पोती थी साथ हाथ में—लकुटी रही सुहाती !
उचक—उचक कर भीड़ साँध्य पल में थी दर्शन पाती !!
पहले घटती गई भीड़ थी—कुछ दिन क्रम था टूटा !
कतिपय तत्वों ने जम कर आरोप लगाया झूठा !!

किन्तु इधर अनशन देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी थी !
पहले से भी अधिक भीड़ अब, फिर से द्वार खड़ी थी !!
उनके प्रति अति सहानुभूति थी जो कि लुटे हुये थे !
मानवता—सेवा—चिंतन में गांधी जी जुटे हुये थे !!

आत्माहुति के स्रोत—

गाँधी शाश्वत भाव लिये मन शान्ति सुलक्ष्य समाए !
देने को उपदेश नव्यतम उस दिन थे मुस्काए !!
तभी एक सिर फिरा युवक था द्रुत आ करके धमका ।
पलक झपकते दाँए हाथ में था रिवाल्वर चमका !!

धाँय-धाँय के साथ हाय ! कर गिरे मंच पर गाँधी !
'हरे राम' निकला था मुँह से-उठी कहर की आँधी !!
दो गोली सीने में कस कर दागी थी पागल ने !
पकड़ लिया था बढ़ी भीड़ ने-लगा त्वरित ज्यों चलने !!

मचा तभी कुहराम-दिशाएँ काँपी नभ था डोला !
"अरे, हाय ! यह क्या कर डाला," जन समूह था बोला-
तड़प उठी थी धरती, भरती आहें रुक-रुक हर पल !
बढ़ी भीड़ का हर प्राणी था हुआ जा रहा विह्वल !!

दूर भाष के साथ तरंगे-वेदनाओं की सिसकी !
नेहरू तड़पे, सुन कर धुन कर सिर गल्ती यह किसकी ??
लिया कक्ष के अन्दर शव था-लथ-पथ रक्त कणों से !
आत्माहुति के स्रोत ज्योति नव देते खुले व्रणों से !!

क्या जवाब दें उस जनता को—

हुये चेतनता शून्य जवाहर, ज्यों ही देखा आकरके शव !
बिड़ला हाउस के आगे था अनगिन लोगों का तब कलरव !!
होंट प्रकंपित, आँखें गीलीं, थरोंहट सासों की !
बार–बार बतलाती थीं हा ! जड़ें हिलीं विश्वासों की !!

धरा रह गया सब प्रबन्ध रे ! हर संचालन हुआ फेल था !
यह कैसा रे, षडयंत्रों की तह में सारा हुआ खेल था !!
क्या जवाब दें उस जनता को, जिसके आगे दोषी !
शाँति अहिंसा की लय खोई सबको है बेहोशी !!

थे प्रधान सामान्य बने कुछ–अग्रिम थे आदेश दिये !
कैसे हो अंत्येष्टि—सचिव को, थे विशेष निर्देश दिये !!
और रात के विह्वल क्षण में धैर्य सहित जनता से कहा !
"जो प्रकाश दिखलाता पथ था, अब प्रकाश वह नहीं रहा" !!

"हा ! हम सबके प्यारे बापू ! असमय सबको छोड़ चले !
सदा-सदा को हम सबसे ही अपना नाता तोड़ चले !!
किन्तु हमें दायित्व दे गये वह कर्त्तव्य निभाने का !
जिसमें है कल्याण निहित भारत का और जमाने का !!

उनके छोड़े हुये कार्य को-पूरा हमको करना है !
शाँति, अहिंसा की क्यारी को पूरी तरह सवँरना है !!
दुख का काँटा गड़ा हृदय मे मिल कर इसे निकालेंगे !
मेल जोल से रहने की अब पुनः प्रथा हम डालेंगे" !!

त्याग के इतिहास में बलिदान—

अगले दिन ऐतिहासिक था वह–
दृष्य देश की धरती पर !
'जय बापू', 'जय गाँधी' के थे–
उच्च गगन तक लाखों स्वर !!

अंतिम यात्रा गाँधी की–
इतिहास बन गई भारत का !
राजघाट तक सिर ही सिर थे–
विश्व खड़ा श्रद्धानत था !!

अग्नि शिखा जब देवदास ने—
दी तो जन बल सिसक पड़ा !
कोई रोया बैठा—बैठा—
कोई रोया खड़ा—खड़ा !!

सांप्रदायिक सद्भाव हेतु थे—
गाँधी जी बलिदान हुये !
जन सेवा हित देह त्याग कर—
फरत्रे हिन्दुस्तान हुये !!

त्याग के इतिहास में बलिदान गाँधी का बड़ा !
थम गई थी लहर दंगों की असर था वह पड़ा !!

इन्दिरा को था कष्ट अपार—

सोच—सोच कर इंदिरा जी के भाव न किंचित थे थकते !
वैमनस्य अरु, कलह—ईर्ष्या क्या कुछ जग में कर सकते ??
विश्व वंद्य बापू—जो सबकी सेवा—हित तैयार हुये !
हाय ! धार्मिक उन्मादों के वो ही आज शिकार हुये !!

अपने ही के द्वारा मारे गये कलंकित देश हुआ !
कल क्या हो सकता है देखो ! और सशंकित देश हुआ !!
हुआ प्राण घातक हमला था नेहरू पर भी एक दिवस !
और मिला तब अपनों को ही था इसका भी तो अपयश !!

क्या आजादी इसीलिये यह पाई है संघर्षों से !
इसीलिये क्या सही यातना जनता ने थी वर्षों से !!
नही काम यह एक व्यक्ति का, या दल का षडयंत्र, घना !
निश्चय ही इस घृणित कार्य का प्रोग्राम अन्यत्र बना !!

जो भारत को नहीं चाहते उन्नति पथ पर चालित हो !
किया करें अवरोध निरंतर पैदा द्रुत संभावित वो !!
निडर और निस्पृह जीवन की ऐसी और मिसाल कहाँ ?
अब सवाल है, धरती पाए—गाँधी जैसा लाल कहाँ ??

बेमिसाल बलिदान देश की—
धरती का ले नमस्कार !
पर प्रकाश की किरण गई जो—
इंदिरा को था कष्ट अपार !!

दंगों की रुक गई लहर थी—

"किरण–किरण ने विवरण आँका था बेटा ! कोलाहल का !
अगले दिन यह भी था देखा बन्द हुआ स्वर हल चल का" ! !
वृद्ध हुये गंभीर–धीर मन–चिन्तन की तह खोल रहा !
ऐसा लगता था उदात्त मन–दृष्य देखता बोल रहा !!

"दंगों की रुक गई लहर थी–हिन्दू–मुस्लिम शान्त हुये !
सहन शीलता देख हिंद की–विस्मित अरि दुर्दान्त हुये ! !
महा कार्य के हेतु समर्पण, भाव जगत पहचान गया !
कोटि–कोटि लोगों की आखें खोल यही बलिदान गया ! !

यह सच है जिस–जिसने धारा मोड़ी, नवल प्रवाह दिया !
उस–उस मानव ने ही बढ़कर जीवन अपना स्वाह किया ! !
ईसा, लिंकन, दयानंद–अरु श्रद्धानंद बलिदान हुये !
इसी मार्ग पर गाँधी जी के प्रण भी ज्योतिर्मान हुये ! !"

२६ नवम्बर १९४९—संविधान सभा का संकल्प—

हित कर तजना औपनिवेशिक समझा था अनुबन्धों को !
लोकतांत्रिक प्रभुता भूषित रखना था संबन्धों को !!
था स्वतंत्र भारत पर उसको, बनना था गणराज्य यहाँ !
और शक्ति संयोजन विधि थी, रखनी नित अविभाज्य यहाँ !!

लोकतंत्र, शुचि मंत्र धार कर स्वयं सिद्धि की तत्परता !
संविधान के द्वारा शोभित करनी क्षमता अरु समता !!
अधिवेशन संविधान सभा का खिला कमल की पाँखों सा !
दृष्य देखते ही बनता था हर सदस्य की आँखों का !!

सार्वभौम सत्ता, गरिमायुत नव संकल्प सुशोभित था !
नवोल्लास ने वायु पटों पर किया सत्यव्रत अंकित था !!

२६ जनवरी १९५०–प्रथम गणतंत्र दिवस—

बीस वर्ष की अवधि पूर्ण कर दिवस निराला आया था !
भारत भू के छोर–छोर पर नया उजाला छाया था !!
विजयोल्लासित जनता सारी–उत्साहित थी डगर–डगर !
नई दुल्हिन सा सजा हुआ था, गाँव–गाँव हर एक नगर !!

प्रातः से ही बच्चे, बूढ़े, अरु जवान उत्साहित थे !
जन–बल–छवि में बलिदानों की अद्भुत रंग समाहित थे !!
प्रथम राष्ट्रपति रज्जन बाबू, युग की जय–जय कार बने !
थे प्रधान नर वीर जवाहर–क्षमता के अनुसार बने !!

युगों–युगों से रही प्रतीक्षित जो घड़ियाँ वे आईं थीं !
चित्ताकर्षक शोभावलियाँ–दिल्ली भर में छाई थीं !!
आत्माहुतियाँ दीं जिन सबने उनका जय–जय कार हुआ !
निज गौरव, सम्मान पक्ष का–घड़ी घड़ी विस्तार हुआ !!

सफल हुआ गणतंत्र पर्व था–राष्ट्र बन गया भारत था !
राष्ट्र ध्वजा की छटा देखकर–विस्मित हर अभ्यागत था !!
शपथ देश ने ली रक्षा, सेवा, न्याय, धर्म, समभावों की !
पुलकित होती रही दिशायें मूर्ति देख–शुचि चावों की !!

याद सभी के आये गाँधी,
और सभी बलिदानी थे !
भारत का सौभाग्य जुड़ा था,
हर बलिदान–कहानी से !!

२५ अक्टूबर १९५१ से फरवरी १९५२–पहले आम चुनाव—

रहा नीतियों का टकराव,
शान्ति पूर्ण थे हुये चुनाव !

काँग्रेस थी सफल महान,
जनता का था पूर्ण रुझान !

निर्माणों की लिये मशाल,
बढ़ कर चले जवाहर लाल !

सन् १९५३ इन्दिरा जी की प्रथम रूस यात्रा—

राजनीति अरु विश्व–लहर के अनुभव थे आवश्यक !
जीवन के परिवर्तित युग में चेतनता–संवाहक !!
बच्चे दोनों शिक्षारत थे–दून–स्कूल भवन में !
जन–सेवा निश्चित भाव था इंदिरा जी के मन में !!

पिता जवाहर लाल विश्व के मान्य बन गये नेता !
अन्य राष्ट्र के दौरे पर थे जाते शान्ति–प्रणेता !!
इस क्रम में संयोग रूस जाने का त्वरित मिला था !
इंदिरा जी का हृदय कमल नव अनुभव हेतु खिला था !!

बड़े राष्ट्र के द्वारा स्वागत देखा पुलकित मन से !
प्रथम प्रभाव पड़ा वह जो नित जुड़ा रहा जीवन से !!
राज्य प्रणाली और व्यवस्था यद्यपि प्रथक वहाँ की !
कर्मठता अरु लगन शीलता रुचि भर कर थी आँकी !!

संघर्षों के बाद रूस ने प्राप्त किया नव जीवन !
नव निर्माणों का पल-पल था चला हुआ आन्दोलन !!
थी विनाश की लहर-कहरयुत-देखी युद्ध-क्षणों में !
बलिदानों की कथा छिपी थी-लाली युक्त व्रणों में !!

तीव्र वेग निर्माण निरंतर चलता था जब पल-पल !
रहे देश के लौह लाडले क्रियाशील अरु अविचल !!
भारत से द्रुत संबन्धों का लखा यहीं से उपक्रम !
भिन्न संस्कृति और विधा का था यह अद्‌भुत संगम !!

एशियाई हलचलें—

सदियों से जो दबते-पिसते आये थे वे देश रे !
उठे, जुटे निज निर्माणों में ले युग का संदेश रे !!

तुनक उठा साम्राज्यवाद था-लख परिवर्तन की हवा !
लगा सोचने क्यों पूरब में है संवर्धन की हवा !!

अमरीका की इसी चाल का था शिकार वह कोरिया !
जिसके ऊपर कई वर्ष से लदा हुआ था युद्ध नया !!

यही नहीं आइजन होवर था दंभी निजी गुमान पर !
दृष्टि लगी थी बहुत दिनों से उसकी हिन्दुस्तान पर !!

निज गुट में करने को शामिल भारत को ललचा रहा !
साथ–साथ ही नेहरू को था आँखें भी दिखला रहा !!

किन्तु जवाहर शान्ति और आजादी के थे पक्ष धर !
इसीलिये निर्गुट रहने का उच्च किया था अपना स्वर !!

चली चाल निक्सन ने गुट में लेकर पाकिस्तान को !
यही दुराग्रह दुखी कर रहा अब तक हिंदुस्तान को !!

किन्तु कोरिया विजय प्राप्त कर निज वर्चस्व बचा सका !
इसमें तब सहयोग बहुत कुछ नेहरू जी का था रहा !!

सन् १९५२ के आम चुनाव के उपरान्त—

जो चुनाव में मिली सफलता यद्यपि थी प्रत्याशित !
फलितार्थों से हुई बहुत सी धारणायें परिवर्तित !!
नेहरू चमके राजनीति में ज्योतिर्मय अग-जग था !
मित्र-भाव, समभाव, चाव का त्वरित उठाया पग था !!

लोक प्रिय हो गये जगत में विषय बने चर्चा के !
कुछ देशों के प्रतिनिधियों ने देखा था खुद आ के !!
सुदृढ़ नीति, विदेशों के संग, मित्र भाव अभिनंदन !
सर्वोपरि सम्मान सहित था भारत-भू-हित-चिंतन !!

१९५४ भारत और चीन के मध्य तिब्बत के बारे में समझौता—

शान्ति कामना हेतु-केतु नव संबन्धों का फहरा !
अरु तिब्बत है भाग चीन का, यह निश्चय था ठहरा !!
चाउ-एन-लाई अरु नेहरू ने मन की ज्योति जगाई !
उच्च गगन तक गूँजा नारा-'हिंदी चीनी भाई' !!

पंचशील—

विस्मृत करें विवाद विगत के, रचें भविष्य अनोखा !
जिससे कहीं पड़ौसी कोई खाए न किंचित धोखा !!
चीनी, मन के फन के माहिर अधिकारों की लय में !
अति महत्व के प्रश्न त्वरित थे छोड़ रहे संशय में !!

नेहरू चूँकि शान्ति दूत थे सब को समझे भाई !
राजनीति समझौते हित थे आए, चाउ-एन-लाई !!
रहे शान्ति सीमा पर जिससे-अरु मत भेद न उपजें !
सुदृढ़ मित्रता हित चिंतन को एक दूसरा समझें !!

इस नाते नव कदम उठाए !
पाँच नये सिद्धान्त बनाये !!

१. क्षेत्रीय अखंडता तथा सर्व सत्ता का परस्पर आदर।
२. अनाक्रमण-इस नाते हर सीमा पर हो शान्ति प्रयास बराबर।
३. एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप।
४. समानता तथा परस्पर लाभ-नीति निर्लेप।
५. शान्ति पूर्ण सह अस्तित्व।

पंचशील थे ये कहलाए !
कहीं न कोई भी टकराए !!

शान्ति समर्थक देशों ने था इनको बहुत सराहा !
किन्तु न था परिणाम मिला वह जो नेहरू ने चाहा !!

सन् १९५४ फ्रांस के भूतपूर्व औपनिवेशिक क्षेत्र—

पाँडेचेरी आदि का भारत में विलय—

भारत के भू भाग नवल अनुराग युत,
मिल गये थे देश में !
पाँडेचेरी आदि जो थे—फ्राँस—
उपनिवेश में !!

शान्ति सहित समझौता करके—
फ्राँस और भारत ने मिलकर !
नव सम्बन्धों हेतु जुटाये—
मित्र भाव थे उस क्षण सुखकर !!

गोवा मुक्ति—

पुर्तगाल को था विश्वास,
गोवा रहे उसी के पास !
नाटो की नव लहर प्रखर थी,
भारत भू की ओर नजर थी !

नेहरू ने परखी चालाकी,
प्रश्न रहा गोवा का बाकी !
त्वरित इसे हल करना होगा,
ह्रास बहुत कुछ वर्ना होगा !

संसद में सब हाल बताया,
स्थिति से अवगत करवाया !
पुर्तगाल तो तना खड़ा था,
बातचीत में नित उखड़ा था !

गोवा मुक्ति संघर्ष चला था,
क्षण-क्षण में नव रंग बदला था !
धन्य वीर सैनिक भारत के,
पलक झपकते ध्वज फहरा के !

आये बिना किसी संशय के,
मंत्र गुंजाते भारत जय के !
दक्षिण सीमा हुई सुरक्षित-
सिन्धु लहर थी प्रतिपल शोभित !

फरवरी १९५५,

कार्य समिति में काँग्रेस की—

लाल बहादुर और पंत जी इन्दिरा की प्रतिभा पहचान !
राजनीति में पूर्ण रूप से करते थे उसका आह्वान !!
स्वयं समझती थी स्थिति को दृढ़तर था मन का विश्वास !
लक्षण देने लगे दिखाई बदले भारत का इतिहास !!

कार्य समिति में काँग्रेस की शामिल होकर बढ़ा रुझान !
लगन शीलता, कर्मठता का देने जुटकर लगी प्रमाण !!
उठें न जब तक क्रान्ति युक्त पग नहीं शिथिलता होगी दूर !
काँग्रेस को सेवारत रह—कार्य यहाँ करना भरपूर !!

१९ सितम्बर १९५५,

केन्द्रीय चुनाव समिति में—

निजी योग्यता के बल पर थे प्रगति मार्ग पर रक्खे पाँव !
साथ—साथ ही समझ रही थी राजनीति के बिखरे दाँव !!
पिता जवाहर लाल व्यस्त थे शासन का था अतुलित भार !
उत्तरोत्तर जन संपर्कों को भी करते थे वे नित स्वीकार !!

इसी व्यस्तता ने इन्दिरा में बढ़ा था नव उत्साह !
काँग्रेस के कार्यक्रमों के प्रति बढ़ती थी रहती चाह !!
योग्य व्यक्ति चुन—चुन कर आयें जन सेवा का चमके मंच !
राजनीति में किंचित भी कुछ जगह न पायें कहीं प्रपंच !!

२२ सितम्बर १९५६,

कांग्रेस केन्द्रीय संसदीय बोर्ड की सदस्यता के रूप में–

रात दिवस नित नई चुनौती का रहता था सामना !
नव भारत निर्माण हेतु दृढ़ कांग्रेस संगठन बना !!
निजी स्वार्थ की लहर प्रबलतम हावी थी संयोग पर !
और यहाँ वर्चस्व चाहते कुछ थे हर उद्योग पर !!

नेहरू की उद्योग नीति को आशा थी सहयोग की !
सार्वजनिक क्षेत्रों की आवश्यकता, नव उद्योग की !!
पक्ष प्रबल रखने को क्रमवत इंदिरा पर नव भार था !
कांग्रेस संसदीय बोर्ड का कार्य उसे स्वीकार था !!

मिला प्रबल सहयोग रूस का कार्य भिलाई का चला !
उद्यम के प्रति सदभावों का बढ़ा निरन्तर काफिला !!
कष्ट दूर होंगे जनता के उद्योगों की राह से !
होंगे नव निर्माण देश में पूरे ही उत्साह से !!

बाँडुग सम्मेलन –

युद्ध और साम्राज्यवाद से त्रस्त विश्व था सारा !
तब नेहरू ने शान्त भाव से मन में बैठ विचारा !!
पंचशील के प्रति लोगों में रुचि हो, शांति विराजे !
प्रगतिशील देशों की उन्नति दिशा-दिशा में साजे !!

मिस्र देश के 'नासर' गहरे मित्र बने सत् पथ पर !
दो महान देशों के नैतिक यत्न चढ़े रुचि रथ पर !!
मिलें एशिया के प्रतिनिधि अरु सोचें और विचारें !
किस प्रकार बढ़ कर दुनिया को भय से त्वरित उबारें !!

'इंडोनेशिया' में बाँडुग' में आयोजित सम्मेलन !
करने को सारी स्थिति का तर्कों सहित विवेचन !
सफल हुआ उनतिस देशों के प्रतिनिधि उसमें आए !
और अंत तक नेहरू जी थे सम्मेलन पर छाये !!

बढ़ी लहर, साम्राज्यवाद की चाहती थी असफलता !
उसको ऐसा सम्मेलन था अखिल विश्व में खलता !!
किन्तु मानवीय अधिकारों के साथ शान्ति की लय थी !
साँस्कृतिक अरु सबल आर्थिक उन्नति भी निश्चय थी !!

शान्ति पूर्ण सम्बन्ध मित्रता सह अस्तित्व उजाला !
नये विश्व की दिखा रहा था, छवि का रूप निराला !!
व्यापक संहारक अस्त्रों के उत्पादन वे रोंके !
यदा कदा जो जग–मानव को युद्ध ज्वाल में झोंकें !!

मिले, एशिया अफ्रीका के नेता इसमें मन से !
अरु नेहरू ने छाप लगाई जग पर अपनेपन से !!
कालान्तर में यही नीति थी गुट निरपेक्ष कहाई !
भारत भू में जिसकी जड़ थी छूती अति गहराई !!

२ फरवरी सन् १९५९,

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष पद पर इन्दिरा जी–

पूर्व काल की शिक्षाओं का मन पर पढ़ता रहा प्रभाव !
गीता में वर्णित क्रम–व्रत का इंदिरा जी का बना स्वभाव !!
कौन कार्य कब कैसे होना–कैसे रुचि अरु केन्द्रित ध्यान !
रही समझती स्वयं इन्दिरा नव प्रभाव का कर अनुमान !!

कांग्रेस के हर सदस्य पर कर्म शीलता की थी छाप !
अपना पथ निर्मित करने की लगन लगा करती थी आप !!
हर सदस्य था हुआ प्रभावित सूझ-बूझ अरु दृढ़ता मे !
बहुत निकट संपर्क निरन्तर बने हुये थे जनता मे !!

समय योजना लिये चला था,
अपने लक्ष्य विशाल की !
इस कारण से नहीं कि बेटी–
इंदु, जवाहर लाल की !!

उसकी अपनी क्षमता के गुण–
सब पर जाहिर थे यहाँ !!
वर्ना तो कतिपय नेता तब–
रुचि के माहिर थे यहाँ !!

जबकि चुनौती कई तरह की–
दल के नित्य समक्ष थी !
इंदिरा जी तब काँग्रेस की–
चुनी गई अध्यक्ष थी !!

थी विशालता नेहरू मन की और हृदय गम्भीरता !
उभर रहा था एक नया रुख, इंदिरा में तस्वीर का !!
कुशल प्रणेता अपने युग के नेहरू दिग्गज व्यक्ति थे !
परख उन्होंने लिये सभी गुण इंदिरा में थे शक्ति के !!

वह बेटी, सहयोगी, साथी, अब अधिकारी थी बनी !
प्रगति जिसे थी नव भारत के चरण–चरण की देखनी !!
मुक्त किया नेहरू को दल के दायित्वों से था त्वरित !
ताकि कार्य निर्विघ्न भाव से शासन का हो नित चालित !!

दिखा योग्यता का आधार,
किया चुनौती को स्वीकार,
हित चिंतन में राष्ट्र प्रगति की;
तोड़ी केरल की सरकार !

इससे बढ़ता गया प्रभाव !
दृढ़तर बनता गया स्वभाव !!

८ सितम्बर १९६०,

गम का पर्वत टूट पड़ा था--

कार्य भार दल का अरु घर का बढ़ा दिनों दिन जीवन में !
जिसके कारण अक्सर खुद को अनुभव करती उलझन में !!
निजी गृहस्थ–सुख होम हो चुका था उद्‌भव के आँगन में !
राजनीति का सिंहासन था काँटों के नव उपवन में !!

अनबन का युग शुरू हुआ था, संसद में थी हवा गरम,
कभी–कभी तो नेहरू जी का विचलित होता था संयम,
क्रियाशील फीरोज सदन में अक्सर प्रश्न उठाते थे;
"बने हुये हैं व्यापारी कुछ भ्रष्टाचारों का संगम" !

व्यस्त प्रशासन अरु शासन नित राष्ट्र प्रगति की डोर पकड़,
नव निर्माणों की करवट में सहता जाता था गड़बड़,
और स्वार्थी तत्व धरातल पर उनके सम्बन्धों की;
जमा रहे थे नये कंक्टसी मौका पाकर अकड़–अकड !

बढ़ा कार्य फीरोज निरन्तर खोये गूढ़ विचारों में,
नीति नियोजन प्रश्न जमाते रहते थे अखबारों में,
तीव्र बुद्धि अरु भाव विलक्षण चमत्कार दिखलाते थे,
हो उठते उद्विग्न देख क्षय लक्ष्य पूर्ति कचनारों में !

हृत् तंत्री पर बढ़ा भार बीमार हुये बढ़ते–बढ़ते,
दुखी हुये सम्बन्धी प्रिय जन समाचार को ही पढ़ते,
पहुंच गई थी निकट इंदिरा नेहरू थे अत्यन्त दुखी;
हत्प्रभ देख रहे थे सब क्रम सांसों के गिरते चढ़ते !

वश न किसी का तनिक चला था,
क्रूर नियति ने क्रम बदला था !
सफल न था उपचारों का क्रम,
जो कि समय का सबसे उत्तम !

पंछी तज तन–कैद उड़ा था !
गम का पर्वत टूट पड़ा था !!

हत्प्रभ इंदिरा, शून्य प्रहर सी !
देख रहीं थी चोट कहर की !!
जब कि कर्म का क्षेत्र खिला था !
हाय, ! रे वैधव्य मिला था !!

सन् १९६२ चीन द्वारा भारतीय सीमाओं पर आक्रमण—

जबकि प्रगति की ओर अग्रसर भारत रहा अनूप !
मित्र द्रोह कटुता का देखा, विकृत एक स्वरूप !!
विकृत एक स्वरूप कूप था स्वार्थ सने यश-बल का !
सहसा उन्नीसौ बासठ में मचने लगा तहलका !!

शान्ति मन्त्र की उपादेयता का यह मिला मिला था !
जिसने देखा सुना उसी का जग में हृदय हिला था !!
भारत शान्ति निकेतन रण की सोच नहीं था सकता !
और मित्र अधिकार जताता कहीं नहीं था थकता !!

घायल हुआ हिमालय सहसा थोपी गई लड़ाई !
टूट गया सिद्धान्त क्लान्त मन हिन्दी-चीनी भाई !!
मित्र घिनौनी चाल चल गया आहत हुये जवाहर !
नर अनेक बलिदान हो गये अपना लहू बहा कर !!

युद्धोन्मादी नीति नहीं थी भारत की किंचित भी !
पुण्य भूमि यह तो भारत की गंगा से सिंचित थी !!
परम उपासक पंचशील का धोखा खाकर संभला !
त्वरित सुरक्षा हेतु उठाया उसने पग था अगला !!

जनता आगे बढ़ी–पढ़ी जब सीमाँ चल की खबरें !!
मर्माहत होती थी इंदिरा सुन–सुन पल की खबरें !
राष्ट्र सुरक्षा हेतु समिति थी गठित हुई द्रुत क्षण में !
किया कार्य राहत पहुंचाने का था जम कर रण में !!

सीमाओं के अग्रिम थल तक पहुंची वह निर्भय थी !
कर प्रोत्साहित हर जवान को देती मंत्र–विजय थी !!
क्षति अपार थी पड़ी उठानी जन–धन ह्रास हुआ था !
रोई थी धरती लख कर घायल, इतिहास हुआ था !!

सहसा तब ही सीमाओं पर युद्ध विराम हुआ था !
शक्ति समन्वित हुई देश की जय का लक्ष्य छुआ था !!

किया आकलन परिणामों का,
लम्बा चिट्ठा था नामों का !
जोकि हुये बलिदान देश पर,
आततायी के रण विशेष पर !

जो कि गया था लादा हम पर,
शान्ति व्यवस्था के शुचि क्रम पर !

धधक–धधक, धधका क्रोधानल,
उफन–उफन उफना गंगा जल,
बिखर गई अनुभव की क्रीड़ा,
लिया उठा प्रतिरोधी बीड़ा !

शान्ति–शान्ति से काम न होगा,
ऐसे युद्ध विराम न होगा !
जागें राम–लक्ष्मण जागें;
उभरे ओज और प्रण जागें !

पंचशील की लुटी द्रोपदी,
विश्वासों ने छुरी घोंप दी !
हिम खंडों से बहा रक्त है,
उठ रे ! पाँडव यही वक्त है !

अब अशोक सन्यास न लेगा,
वह करवट इतिहास न लेगा !
शत्रु भाव से जो आएगा,
सिर अपना देकर जाएगा !

क्षमा न अब चह्वाण करेगा,
रण को सफल प्रयाण करेगा !
अब न हमें आँखें फुड़वानी,
नहीं मर्दनी यूँ दिखलानी !

नाद समय का सुनना होगा,
जयचंदों को चुनना होगा !
चुनकर फाँसी पर लटकाना,
रक्षा साधन सुदृढ़ बनाना !

ताकि कहीं से कोई विदेशी,
करे न गलती पहले जैसी !
जाग उठो रे, गोरा बादल,
राणा और शिवा सब इस पल !

कवि वाणी ललकार बन गई,
पंक्ति-पंक्ति तलवार बन गई !
जाग उठा हिन्दोस्तान था,
वृद्ध व्यक्ति तक भी जवान था !

समझ गये थे शत्रु-मित्र दल,
शंकर ने पी लिया हलाहल !
यदि अब युद्ध विराम न होगा,
कुछ अच्छा परिणाम न होगा !

नई सुरक्षा नीति कड़ी की,
सुदृढ़ योजना और बड़ी की !
दृढ़ इच्छा से उभरी हलचल,
सेनाओं का बढ़ा मनोबल !

समय आ गया, शत्रु-मित्र का अंतर, नित्य परखना होगा !
राष्ट्र सुरक्षा हेतु निरन्तर शक्ति संतुलन रखना होगा !!

लख प्रभाव, क्षमता अरु दृढ़ता—

गम को करके आत्मसात, दिन रात लगी जन-सेवा में !
और अधिक दृढ़ता आई थी संकल्पों की रेखा में !!
राजनीति में रही अग्रसर, द्रुत तर कार्य संभाले थे !
प्रगति विधा की स्वस्थ डगर पर जीवन के क्षण ढाले थे !!

लख प्रभाव अरु क्षमता दृढ़ता परिचय बढ़ा विदेशों मे !
अवगत होती रहती थी नित-युग-क्रम के संदेशों से !!
जग प्रसिद्ध यूनेस्को ने था-तब समुचित सम्मान दिया !
लिया कार्य कारिणी में अपनी समुचित कार्य महान दिया !!

मई २७ सन् १९६४,
उठा पिता का साया सिर से—

अक्सर देखा, चक्र समय का अपनी सी ही करता !
खूब समझता है मानव की नियति-पक्ष निर्भरता !!
और साथ ही यह भी देखा-कष्ट परिधि में बस कर !
समय परखता है मानव को-प्रबल कसौटी कस कर !!

जिसमें बढ़ने की क्षमता के गुण परिलक्षित होते !
जीवन–क्रम–संघर्ष उसी के पथ में काँटे बोते !!
होती नित्य परीक्षा उसकी जिसमें लगन विजय की !
जिसने पग–पग पर कीमत है समझी सदा समय की !!

और निठल्ले क्या कर पाएँ !
भार अन्य को भी बन जाएँ !!

संघर्षों की लपट–झपट में इंदिरा को था तपना !
कुंदन–बनना था तप–तप कर उसका जीवन अपना !!
पति का साया पहले ही था उठा–यहाँ पर सिर से !
पुन: हुई बेचैन इंदिरा तूफानों में घिर के !!

ये थे वे तूफान भयंकर–जिनका था डर हर क्षण–क्षण !
खूब किया था गया इंदिरा–साहस–शौर्य–परीक्षण !!
पिता जवाहर लाल रुग्ण थे सहसा हुये भवन में !
मचा एक कोलाहल सा था, जिसको देख वतन में !!

घातक वह बीमारी–हारी जिससे यत्न प्रणाली !
गया अंतत: छोड़ बिलखता, नव भारत का माली !!

असह्य वेदना थी जन–जन को,
गया तड़पता छोड़ वतन को !
धरती रोई, रोया अम्बर,
रुक न सकी थी सिसकी पल भर !

झेल रहे थे अगम उदासी,
कोटि–कोटि भारत के वासी !
सारी दुनिया उमड़ पड़ी थी,
नेहरू जी के द्वार खड़ी थी !

प्राण इंदिरा के थे विगलित,
रोम, रोम था कंपित चिंतित !
आते थे आँसू घिर–घिरके,
उठा पिता का साया सिर से !

हाय नियति ! मानव परवशता,
धैर्य, और साहस, तन्मयता !
सभी हुई, परिलक्षित उसमें,
जिसने रक्खा खुद को वश में !

विधि–विधान ने सुख था छीना,
आँसू पीकर सीखा जीना !
पग–पग तत्परता दिखलाई,
संघर्षों से मात न खाई !!

९ जून १९६४,

श्री लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधान मंत्री—

जब कि भारत था खड़ा असहाय सा,
कौन नेहरू का यहाँ पर्याय था ?
हो रहे थे रात दिन चर्चे यहाँ;
कौन होगा आज मीरे कारवाँ !!

चाहिये था स्वच्छ कर्मठ आदमी,
जो सवाँरे इस वतन की जिंदगी !
राष्ट्र के उत्तरोत्तर बल में जिसे अनुराग हो,
मंत्र गाँधी के लिये हो, आदमी बेदाग हो !

विश्वस्थ साथी जो जवाहर लाल का—

साथ ही विश्वस्थ साथी जो जवाहर का रहा,
वह किया नित जिंदगी में जो कि मन से था कहा !
देश की जनता जिसे दे प्यार, जो स्वीकार्य हो,
और द्वारा जिस मनुज के प्रगति का नित कार्य हो !

धन्य भारत की धरा यह, उर्वरा यह भारती,
है जनमती रत्न ऐसा जग उतारे आरती !
श्रेष्ठ लघु तन, दीर्घ अनुभव युक्त जो वह लाल था,
संसदीय कार्य दल ने चुन लिया तत्काल था !

हो गया पद पर प्रतिष्ठित वह जवाहर लाल के,
साथ में अरमान लेकर हर, जवाँ, हर बाल के !
शक्ति शाली निर्णयों से तोड़ता हर जाल था,
देश का प्यारा दुलारा, वह बहादुर लाल था !

पाक का शासक, बिला शक तन–बदन से था बड़ा,
देख लघु तन शास्त्री का दौड़ भारत से लड़ा !
था न उसको ज्ञात लेकिन श्रेष्ठ नन्हा आदमी,
वज्र सा हो सिद्ध रण में–निज दिखा कर मर्दमी !

युद्ध जो थोपा गया था वह लड़ा था शान से,
लाहौर तक पहुंचा स्वयं था शेर हिन्दुस्तान से !
चाहता कश्मीर था वह पाक जो चालाक था,
शास्त्री गुर्राए ही थे चाटता तब खाक था !

विश्व नेता हड़बड़ी में देख लघु तन आ गये,
युद्ध का रुख देख कर मध्यस्थ वे बन आ गये !
संधि पथ पर चल दिये थे ताशकन्द के रास्ते,
था किया खुद को समर्पित बढ़ अमन के वास्ते !

ले गये आकाँक्षा, आशीष–जब अरमान से,
आखरी था वह सफर तब हाय ! हिन्दुस्तान से !
शान्ति का कर यज्ञ पूरा–ताशकंद में शान से,
उठ गये ऊँचे बहुत हर एक ही इन्सान से !!

२ जुलाई सन् १९६४,

श्रीमती इंदिरा गाँधी–शास्त्री सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री—

लाल बहादुर थे प्रधान जब–प्रश्न प्रवर था आगे !
सबल सूचना और प्रसारण विधि अब कैसे जागे !!
अति आवश्यक अंग प्रगति का अपना यह मंत्रालय !
जनता और प्रबुद्ध जनों को जो समझाए आशय !!

साथ–साथ ही सही दिशा व्रत क्रम का रहे प्रसारण !
स्वर प्रभाव छोड़े जनता पर जन–हितार्थ हर भाषण !!
भारत की संस्कृति, साहित्यिक गतिविधियाँ बढ़ आगे !
नव्य प्रगति का लेखा जोखा दें सबको बिन माँगे !!

सजग रहे शासन, अनुशासन आए विधि में स्वर की !
साख बढ़े सामान्य ज्ञान हित, बन कर रुचि घर–घर की !!
रहे दृष्टिगत ये मसले थे बढ़ते प्रगति चरण में !
देखा–होंगी योग्य इंदिरा सिद्ध प्रसारण–प्रण में !!

त्वरित दिया सम्मान, स्वयं परिषद में किया सुशोभित !
पद पाते ही रीति नीति से मार्ग किया परिवर्तित !!
जैसी जो विधि रहे अपेक्षित देश हितार्थ डगर में !
वैसा प्रकटे ओज, आत्म सम्मान भरे निज स्वर में !!

२० अगस्त १९६४,

राज्य सभा की निर्विरोध सदस्या --

गांधी और जवाहर के गुण भरे हुये जिस मन में !
उससे बड़ी अपेक्षा रहती आई यहाँ वतन में !!
रीति-नीति में जीत सुयश की जो नर भर कर चलता !
वह निश्चय ही अपने गुण से युग की राह बदलता !!

इंदिरा जी की लखी योग्यता जब संसद के दल ने !
उन्हें प्रतिष्ठित करने के भी स्वप्न लगे थे पलने !!
आई थी वह घड़ी, बड़ी उत्साह पूर्ण थी सायत !
निर्विरोध जब राज्य सभा की थी सदस्य निर्वाचित !!

देश-विदेश सभी की आँखें ठहरी अगले क्रम पर !
रही इन्दिरा देशोन्नति के अपने अटल नियम पर !!
गरिमा बढ़ने लगी सदन की जब-जब थी वह बोली !
आड़े वक्तों में थी जुट कर कतिपय गुत्थी खोली !!

पाकिस्तानी आक्रमण के समय--

जिस क्षण थोपा युद्ध हिंद पर पाक पड़ौसी ने था !
नित्य प्रसारण करता था वह बढ़-चढ़ करके झूठा !!
वीर लड़ रहे थे सीमा पर—तौल शत्रु के बल को !
जग भौचक्का था लख-लख कर पाकिस्तानी छल को !!

उसको उत्तर हेतु–केतु था स्वर–क्रम का फहराया !
'चिरंजीत' को इसी मोर्चे पर था स्वयं बढ़ाया !!
किया 'ढोल की पोल' प्रसारण था आरंभ त्वरित ही !
जिसको सुन कर अखिल विश्व की जनता हुई चकित थी !!

फूटा भाँडा शीघ्र झूठ का भारत की जय–जय थी !
विश्व स्तर पर जमी अनोखी 'चिरंजीत' की लय थी !!
सफल करिश्मा था 'इंदिरा' का सफल विभाग हुआ था !
श्रेष्ठ प्रसारण के प्रति पैदा जन–अनुराग हुआ था !!

९ अप्रैल सन् १९६५,

कच्छ रन—अनबन—शत्रु—दमन—

रुचि पसार की ओर अग्रसर, पाकिस्तानी स्वर की !
चला बाह्य क्षेत्रों को लेने–भूला सुधि निज घर की !!
निज जनता की सुख सुविधा को भूल–चूल में फंसकर !
सोचा उसने मिले स्यात कुछ··· कच्छ किनारे बस कर !!

और उसी 'कुछ' के सपनों में खो कर ली अंगड़ाई !
जुटा हरावल, चला धौंस से करने बड़ा चढ़ाई !!
पूर्व प्रथा हमलों की रख कर अपने खास जहन में !
सहसा करके धावा गरजा–'शान्त कच्छ के रन में' !!

अरु अपना अधिकार जताया, नई योजना गढ़ कर !
चौंक उठा भारत का जन-मन अखबारों में पढ़ कर !!
नहीं चाहते लाल बहादुर थे कि अमन-स्वर बिगड़े !
किन्तु साथ स्वीकार न था भू भाग देश का उजड़े !!

पहले चाहा-लाख-पाक तज हठ को, आए आगे !
और तनिक सद् बुद्धि-स्वार्थ को छोड़ हृदय में जागे !!
किन्तु न माना भूत लात का जब बातों से फिर तो !
कहा—"सैनिकों बढ़ो चलो रे" ! जो होना है सो हो !!

एक झड़प में अकड़ तोड़ दी शत्रु दलों की सारी !
चौंका विश्व, राष्ट्र संघ में थे बोले बहुत खिलारी !!
लुटे-पिटे जब पाकी—दल थे खाकी वर्दी चिथड़े !
उतने ही मायूस हुये थे जितने पहले अकड़े !!

आया फिर इंगलैंड साथ ले-समझौते की बातें !
कहा उसे-"बर्दाश्त न होंगी अब दुश्मन की घातें" !!

किया त्वरित उद्घोष,
नहीं हम झुकें शत्रु के बल से !
हमें न कोई भरमा सकता-
किंचित भी अब छल से !!

रखी देश की साख विश्व में-
तोड़ी शत्रु—कमर थो !
विश्व शान्ति तब ही अच्छी है-
शान्ति रहे यदि घर की !!

ओजोद्भव अगस्त १९६५—२३ सितम्बर १९६५—

चाल सफल साम्राज्यवाद की फूट डालने में थी !
इस कारण अय्यूब मियाँ को अन्दर–अन्दर शह दी !!
प्रश्न गया उलझाया, सिसकी गंध भरी प्रिय माटी !
अरु हमले का नित शिकार थी, काश्मीर की घाटी !!

जब देखो तब जुट कबायली धावा करते रहते !
रक्त हो गया सफेद शान्ति का जब–तब बहते–बहते !!
गिद्ध दृष्टि थी रही निरंतर काश्मीर पर उनकी !
नींद हराम हुआ करती थी, प्रगति देख कर जिनकी !!

कब तक सहता आखिर भारत, धावा दुष्ट जनों का !
कब तक देखा जाता प्रति दिन क्राम यहाँ अपनों का !!
कटु अनुभव था हुआ कच्छ का–वीर भाव फिर जागा !
उठे त्वरित नर, लाल बहादुर सहज भाव था त्यागा !!

ज्यों ही खट–पट हुई देश की सीमाओं पर अरि से !
नन्हा तन–मन साध दहाड़ा–"अब गोला नित बरसे !!
रोज–रोज की "काँ–काँ फिर–फिर एक बार ही सपड़े !
वहाँ लगाओ मार–शत्रु अब जहाँ कहीं भी अकड़े" !!

उठे जाग झठ सिंह देश के—खड़े हुये थे तन कर !
मर मिटने को चले सिपाही भारत–भू के प्रण पर !!
जग ने देखी ओज प्रखरता क्रोध भरी वे आँखें !
नित्य स्नेह से शान्ति वृक्ष की सींच रही जो शाखें !!

युद्धोन्मादी को था पीटा जम कर जगह–जगह पर !
तब तक, जब तक स्वयं न आया था वह नेक सुलह पर !!
लौह लाडलो ने भारत का ध्वज था तान दिखाया !
और विश्व को ओज भरा था हिन्दुस्तान दिखाया !!

विश्व शाँति का बने मसीहा हिम्मत थी यह किस मे !
ध्वज फहरा हिन्दोस्तान की ताकत का दिश–दिश मे !!
परम्परा नव–देश–काज हित–बलिदानो की डाली !
लाल बहादुर की चमकी थी जगह–जगह पर लाली !!

२३ नवम्बर १६६५,

श्रीमती इन्दिरा जी इसा बेला–द–एस्ते पुरस्कार से विभूषित इटली–

विश्व समस्याओ के प्रति थी मनत ध्यान की रेखा !
वैसा उसको कहा त्वरित था जैसा जिसको देखा !!
नेहरू युग में घूम–घूम कर शिक्षा जो थी पाई !
उसके ही अनुसार मजग दृढ दृष्टि स्वय अपनाई !!

कूट नीति की प्रवाहमयो जब देखी रुचि अरु वाणी !
इसा वेला ने कर सम्मानित इंदिरा को पहचानी !!

ताशकन्द में १० जनवरी १९६६ भारत के प्रधान मंत्री :

श्री लाल बहादुर शास्त्री का महा बलिदान—

सहा युद्ध का भार, विजय भी प्रत्याशित थी आई !
धन्य देश के वीर, जिन्होंने की इसकी अगुआई !!
नन्हा तन, बन गया हिमालय रचकर नई कहानी !
वीर भोग्या वसुन्धरा ने पूजे उठ बलिदानी !!

युद्धेतर परिणाम, ग्राम में शान्ति सदन के देखे !
और वलवले निज जनता के समझे, खूब परेखे !!
शत्रु-भूमि थी कब्जे मे जब खेला खेल समय ने !
हतप्रभ था कतिपय देशों को किया हिन्द की जय ने !!

शत्रु निरन्तर चिल्लाया अरु गाया राग सुलह का !
लगे सोचने सब, बदलेगा पन्ना ख्यात कलह का !!
अनुमति लेकर निज जनता की संधि हेतु द्रुत आतुर !
ताशकन्द चल दिये शान्ति के पथ पर लाल बहादुर !!

रूस बना मध्यस्थ, पस्त अय्यूब निरालेपन से !
लगा बड़ी आशायें लेकर आये दौड़ वतन से !!
शान्ति, शान्ति अरु विश्व शान्ति की बात चली हर पल थी !
ताशकन्द की डगर-डगर पर उस दिन चहल पहल थी !!

शान्ति चाहती त्याग, महाव्रत गेह कब है आती !
सुदृढ़ भावना संकल्पों की, जब हो मार्ग सजाती !!
शान्ति-शान्ति सब चिल्लाते है, समझा कितनो ने है !
यह बहुतों की समझ बूझ क रहती सदा परे है !!

समझे इसको लाल बहादुर, आतुर जो दृढ़ प्रण पर !
महाभाग मरहम बनना है विश्व शान्ति के व्रण पर !!
मानव आया खिलने, रमने पलने जगती तल पर !
बताना होगा जग को आगे बढ़कर, चलकर !!

एक इसी आशय से अपना, महा त्याग रुख आँका !
दिया श्रेष्ठ परिचय संवेदन शीशा भारत माँ का !!
आत्म ज्योति का नव प्रकाश था उस क्षण जब दिखलाया !
संधि पत्र पर पड़ी शान्ति अरु महा त्याग की छाया !!

किन्तु न कोई जान सका था वे अन्तिम हस्ताक्षर !
महाप्राण, निर्वाण पथिक की बलि के दृष्य उजागर !!
दर्प बड़े साम्राज्यवाद का देख जिसे था टूटा !
नहीं विश्व में महात्याग है इससे और अनूठा !!

१९ जनवरी १९६६ नेता-चुनाव

२४ जनवरी १९६६ को

भारत के प्रधान मन्त्री पद पर समर्थ इंदिरा—

एक नहीं दो-दो त्यागी नर आए और गये हैं !
देखा जग ने हिन्द-धरा पर उभरे प्रश्न नये हैं !!
विधा सुदृढ़ है लोकतंत्र की भारत की धरती पर !
लाख बलायें आयें उत्तम चयन यही करती पर !!

सत्ता-इच्छुक कौन नहीं है, करते सभी परीक्षण !
कोई छोटा और बड़ा हित रख कर रचते कारण !!
सत्ता दल में हल चल थी जब चुनना था निज नेता !
कांग्रेस में रही कश-म-कश ठहरे कौन विजेता !!

अल्प काल अस्थाई पद व्रत लिये हुए थे नन्दा !
किन्तु न सबको रुचि कर था वह सीधा सादा बन्दा !!
बड़ी शान अरु आन–बान–उन्नीस जनवरी आई !
नेता पद प्रत्याशी इंदिरा औ मुरारजी भाई !!

बहुमत के आगे नत मस्तक रही व्यवस्था दल की !
कांग्रेस की छवि जिसने निज निर्णय से उज्जवल की !!
सौंपा था नेतृत्व, स्वत्व स्वर भर कर के महिला को !
दकियानूसी स्वार्थ गढ़ों को जो कि सके हिला जो !!

कामराज, त्यागी अनुरागी–जो अनुशासन–स्वर था !
देख चुका तादात्म्य विगत में दिग्गज भाव भवँर का !!
लहर–कहर सामंतवाद की छाती रही वतन में !
अब परिवर्तन सुदृढ़ चाहियें भारत–जन–जीवन में !!

हुई जीत से प्रीति सभी की युग आया महिला का !
कोमल–कान्त प्रशान्त इन्दु में नव भारत था झाँका !!
बढे प्रबल सौजन्य भाव मे स्वयं मोरारजी भाई !
सफल इंदिरा गाँधी को दी द्रुत गाँभीर्य बधाई !!

नेहरू की छवि रवि किरणों सी फैल गई उस क्षण थी !
जन–सेवा सम भाव इंदिरा साध रही जब प्रण थी !!
जन–मन में उत्साह, गगन अरु धरा मगन मन बोले !
"निश्चय ही यह साहस–तनया पृष्ठ नये अब खोले" !!

किन्तु समझती खूब स्वयं थी हर स्वर अरु हर लय को !
तौल रही थी किसने कितना स्वीकारा इस जय को !!
"देखो, कैसे पूरे होंगे समाजवाद के सपने ?
काँटों का यह ताज आज है पहना सिर पर अपने" !!

किन्तु शपथ का क्षण था अद्भुत छवि जग को दिखलाता !
लगा–कि जैसे स्वयं आ गई उठ कर भारत माता !!
विश्व पटल पर दमके भारत चमक उठे जन–जीवन !
प्रगति पंथ को ओर अग्रसर हो अब जन साधारण !!

मन ही मन कर दिया, समर्पित था तब ही अपने को !
"जितना होगा संभव पूर्ण करूँ गांधी के सपने को" !!

८ फरवरी १९६७,

उड़ीसा–भुवनेश्वर में इन्दिरा जी पर चुनाव सभा में हमला –

सत्ता लोलुप मन, चंचल रुचि रख कर बढ़ता आगे !
अपनेपन का ताना–बाना बुनता कस कर धागे !!
नहीं इंदिरा को मन से स्वीकारा था जिन–जिन ने !
लगे विरोधों की घड़ियों को बढ़ चढ़ कर वे गिनने !!

भुवनेश्वर के मध्य सभा में–जहाँ इंदिरा––भाषण !
पहुंच गये थे पहले से ही कुछ नव युग के रावण !!
थी चुनाव की सभा, स्वरों की जनता होती कायल !
तभी आक्रमण से सहसा ही हुई इंदिरा घायल !!

कह सकता है कौन इंदिरा-शौर्य अदम्य नहीं था !
किन्तु आचरण हमलावर का बिल्कुल क्षम्य नहीं था !!
सुदृढ़ नीतियों की बुनियादें चली डालने जो थीं !
अखर रही वह राष्ट्र पटल पर हर क्षण कितनो को ही !!

नव समाज-निर्माण नीतियाँ नहीं जिन्हें स्वीकृत थीं !
हर प्रकार से नव विरोध की लय उनकी निश्चित थी !!
दिया नया अध्याय कुपथ का कर इतिहास कलंकित !
इस प्रकार के हमलों मे था देश हुआ तब चिंतित !!

फरवरी १६६७,
आम चुनावों की हलचल थी—

राष्ट्र प्रगति की उसको चिन्ता रहती नित हर पल थी !
आम चुनावों की भारत में हुई पुनः हलचल थी !!
थी समक्ष जनता के आई नीति-रीति हर दल की !
बातें सब करते थे बढ़ चढ़ करके दुग्ध औ जल की !!

दृढ़ चुनाव में विजय प्राप्ति का अपना-अपना गुर था !
देश प्रगति की ओर निरन्तर बढ़ने को आतुर था !!
कुछ विचार थे वही पुरातन परम्परा से जकड़े !
किन्तु इंदिरा ने बढ़ कर लक्ष्य नये कुछ पकड़े !!

इस कारण पूरे भारत में विजयश्री थी पाई !
राय बरेली कर्म-क्षेत्र से चुनकर खुद थी आई !!

१३ मार्च १९६७,

पुनः भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधी—

विजय नीतियों की थी, जिसने जोड़े यश के थे क्षण !
निज जीवन-उत्थान चाहते भारत-जन-साधारण !!
पुन: किया विश्वास व्यक्त था नव आशायें बाँधी !
चुनी देश शासन प्रधान फिर सफल इंदिरा गाँधी !!

चंचल मन जन गण को ठगता युग भी बदल रहा था !
अन्दर-अन्दर कुछ विरोध स्वर फिर से मचल रहा था !!
जन हितार्थ कुछ योजनाओं का संभावित था चालन !
ऐसी थी संभावनायें कुछ, होगा नव परिवर्तन !!

सिंडीकेट लहर थी—

दक्षिण पंथी भावनायें जब अपने यौवन पर थी !
कांग्रेस के अन्दर जम कर सिंडीकेट लहर थी !!

१९ जुलाई १९६९,

भारत के १४ बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण—

पेट न भरता कमा-कमा जब निर्धन जीवन थकता !
ठोस आर्थिक परिवर्तन की होती आवश्यकता !!
कृषि प्रधान भारत की धरती, कृषि पर निर्भर जीवन !
कृषकों के बल सफल हुआ था स्वतन्त्रता-आन्दोलन !!

वे कर्जों में बंधे रहें, यह बात न शोभा देती !
है कब्जे में साहूकार के अब भी घर–दर, खेती !!
हर सपना आधुनिक लहर का होगा पूर्ण तभी ही !
अर्थ–स्रोत सामर्थ सहित जब सवँरे दशा सभी की !!

लघु उद्योगों का प्रसार हो, समाजवाद हो पूरा !
है स्वतन्त्रता का सपना भी अब तक रहा अधूरा !!
राष्ट्रीयकरण बैंकों का हितकर समझा, सोचा, जाना !
त्वरित किया अरु रहा देखता, धनपति–ठौर–ठिकाना !!

अंतिम जुलाई १६६६,
मत भेदों का दौर चल गया—

नई आर्थिक रीति, नीति पर शक्ति परीक्षण और चल गया !
काँग्रेस दल के अन्दर था मत भेदों का दौर चल गया !!
वित मंत्रालय से मुरारजी भाई अलग हुये थे !
स्वर विरोध के कदम–कदम पर उभरे, सजग हुये थे !!

बड़ी परीक्षा की इंदिरा के थी समक्ष तब दर पर !
किन्तु न वह थी रुकी राह में कहीं किसी से डर कर !!

२३ जुलाई सन् १६६६ प्रीवी पर्स की समाप्ति—

किया आर्थिक परिवर्तन फिर–सुदृढ़ भावना भर मन !
बहुत बड़ा पग उठा, कराया संविधान संशोधन !!
प्रीवी पर्स समाप्त कराया–राजे सुविधा–वंचित !
कितनों के हित धरे रह गये दल था हुआ विभाजित !!

पग था सुदृढ़ चुनौती क्रम में—जो स्वीकारी बढ़ कर !
दीन—हीन भारत की भावी प्रगति विधा को पढ़ कर !!
था विरोध इस नई नीति का कतिपय स्वार्थ गढ़ों से !
और काँग्रेस हुई पस्त कुछ आपस के झगड़ों से !!

१६ अगस्त १६६६,

श्री वी० वी० गिरि-भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित—

कदम—कदम पर अवरोधक थे स्वर विरोध की लय के !
विश्व चकित था, थकित नहीं थे नव विश्वास विजय के !!
नव परिवर्तन नीति प्रचालन—सूत्र—स्वतंत्र सँवारे !
काँग्रेस प्रत्याशी रेड्डी—वह चुनाव थे हारे !!

जो कि बना नव प्रश्न प्रतिष्ठा का था अपने दल में !
जीत गये वेंकेट गिरि सहसा इसी नई हल चल में !!
अंतरात्मा—संकेतों को तब आधार बनाया !
राष्ट्रपति पद, गिरि जी से था बढ़ कर आप सजाया !!

पड़ी यहीं से थी दरार —दल फंसा नई दल—दल में !
एक नया ओजस्वी स्वर था तब इंदिरा के बल में !!
बौद्धिक सुस्तर भारत भू का लगा परखने रुचि लय !
जगा नया विश्वास—शक्ति इंदिरा में है अब निर्भय !!

महामहिम गिरि रीति नीति में श्रमिक वर्ग के प्यारे !
जन—प्रतिनिधियों ने भाँपे थे उनमें नव उजियारे !!
भारत ही क्या, विश्व समूचा—हत् प्रभ था यह लख कर !
बढ़ी इंदिरा दृढ़ कदमों से—लक्ष्य सामने रख कर !!

१६ नवम्बर १६६६,

काँग्रेस कार्य समिति द्वारा इंदिरा का निष्कासन—

अनुशासन का प्रश्न उठा तब काँग्रेस के दल में !
संभावित था कुछ का कुछ हो जाना तब हर हल में !!
प्रश्न प्रतिष्ठा का भी उभरा कुछ पीठों से दल की !
मचा नया हड़कम्प इन्दु ने पैदा वह हलचल की !!

उसका साहस, कूटनीति–तब नहीं जिन्हें थी भायी !
प्रथक काँग्रेस से करने में तत्परता दिखलाई !!
देश स्वतंत्र, मंत्र रुचि लय का–तब मशहूर हुआ था !
खेले–खाये लोगों का दल उससे दूर हुआ था !!

१ दिसम्बर १६६६,

श्रीमती इंदिरा द्वारा सत्तारूढ़ काँग्रेस दल का गठन –

तोड़ दिया इस परिवर्तन ने दो भागों में दल को !
लगी खिलाने त्वरित इंदिरा निज अनुमान–कमल को !!
जो कि पुराने साथी उनमें–कतिपय टूट गये थे !
जो मंजिल थी उसकी, उससे पीछे छूट गये थे !!

जिसको नव निर्माण संजोने होते साथ समय के !
वह केवल रखता है आगे अपने लक्ष्य विजय के !!
जगजीवन अध्यक्ष बन गये–सत्तायुत उस दल के !
जिसको रखने पग मंजिल की जानिब संभल–संभल के !!

१० जनवरी १९७०,

श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा तारापुर परमाणु बिजली घर राष्ट्र को समर्पित—

विश्व अग्रसर प्रगति मार्ग पर-स्रोत ऊर्जा के गिन !
इंदिरा जी ने सोचा, समझा है आवश्यक पल छिन !!
बड़ा देश, जनसंख्या भारी, व्यापक हित का आँगन !
नहीं चाहता नव भविष्य का प्रहरी कोरा भाषण !!

चलना होगा साथ समय के, राष्ट्रोन्नति की खातिर !
जो पिछड़ेगा प्रगति दौड़ में-गिरे गर्त में आखिर !!
इस कारण तकनीक दृष्टि से लेकर द्रुत व्रत निर्णय !
उच्च कोटि वैज्ञानिक रुचि से प्रकटा अपना आशय !!

मंत्रालय गतिशील बनाया-प्रोत्साहन नित देकर !
"नित्य नये अनुसंधानों में लेनी जग से टक्कर !!
शान्ति प्रयासों को बल देकर करना हर विश्लेषण !
रहे न हम पिछड़े दुनिया में मूल्यवान है हर क्षण" !!

विद्युत. जीवन-ज्योति अंग है इस नव युग में हर पल !
इस पर निर्भर राष्ट्रोन्नति अरु आशाओं के शत दल !!
तारापुर परमाणु केंद्र था इस कारण ही निर्मित !
लक्ष्य पूर्ति पर किया स्वयं था इसको राष्ट्र समर्पित !!

चौंका रुख साम्राज्यवाद का, विषय हुआ यह चर्चित !
'प्रगति मार्ग पर भारत, यह क्या ? कैसे हुआ व्यवस्थित !!'
किन्तु इंदिरा तनिक न सहमी—बढ़ विज्ञान प्रगति पर !
स्वावलंब अरु स्वयं सिद्धि के रही गुँजाती नव स्वर !!

राष्ट्रोन्नति का पथ प्रशस्त कर—

स्वयं आर्थिक रीति—नीति का करती थीं विश्लेषण !
रहे दृष्टि में उसकी हर दम—पिछड़े पन के कारण !!
वाणिज्यिक अवरोध, और कुछ वाह्य तत्व थे तत्पर !
मिले न किंचित दबे हुए तबकों को उन्नति—अवसर !!

चाव बढ़ा एकाधिकार का जब समाज में हर पल !
कैसे हो हर एक मनुज का फिर भविष्य तब उज्ज्वल !!
समयोचित करके उपाय नव—इंदिरा जी ने जुट कर !
वांछित उन्नति के भारत में जुटा दिये नव अवसर !!

युग बदला—

वृद्ध सुनाते रहे ध्यान से पौत्र रहा सब सुनता !
किस प्रकार आजाद मुल्क में मानव, यश पल चुनता !!
किस प्रकार संघर्षों से नित जूझ—जूझ कर बढ़ता !
किस प्रकार आती है मन में कर्त्तव्यों की दृढ़ता !!

युग बदला—महिला ने था दिखलाया राष्ट्र सचेतन !
बढ़ी चली निर्भीक मार्ग पर तोड़ राह के बंधन !!
किन्तु खलिश कितने ही मन थे अनुभव करते हर पल !
"अरे, देखिये, इस महिला का कूट नीति वृत चंचल !!

हिला दिये गढ़ अच्छे–अच्छे, गिरा दिये भूतल पर !
और देखिये, क्या कर डाले आगे बढ़कर, चलकर !!
दिग्गज, निपुण दिमाग थक गये लख प्रभाव थे व्यापक !
नव परिवर्तन कर देती है उठ निर्भीक अचानक" !!

उन्नति हेतु सुदृढ़ योजना थी भारत को हितकर !
पंच वार्षिक योजनाओं पर कार्य कराया जुट कर !!
राष्ट्र सुरक्षा अर्थ नीति, अरु नव तकनीक समन्वय !
कृषि उत्पादन, हरित क्रान्ति का जनगण समझें आशय !!

योग मिलें उद्योग राष्ट्र को दे उन्नति को नित बल !
श्रम का हो उपयोग निरंतर, रहे न मेहनत निष्फल !!
लौह और इस्पात प्रचुर हों, सजें सभी कल खानें !
हरे भरे होकर नित चमकें, जो अब तक वीराने !!

बहुत बड़ा अभिशाप गरीबी—

करते-करते श्रम, श्रमिकों का तप कर लहू बहा है !
किन्तु भूख का फिर भी तांडव उनके द्वार रहा है !!
रोटी, कपड़ा नहीं प्रचुर है, नहीं प्रचुर मजदूरी !
रहें मूल में पड़े निरंतर, हाय रे ! मजबूरी !!

निर्धनता हो दूर देश से, नव प्रयास से करने !
हो सामाजिक उन्नति जिससे ऐसे क्षेत्र सवँरने !!
एक नया उत्साह हृदय में लेकर चल दी पथ पर !
कुशल इंदिरा चढ़ी हुई थी उत्साहों के रथ पर !!

६ सितम्बर सन् १६७०,

संयुक्त राष्ट्र संघ की रजत जयंती पर—

शान्ति प्रयासों में भारत की रुचि है रही निरन्तर !
गाँधी के सपनों की दुनिया दिखलाये जग रच कर !!
विश्व मान्य नेता नेहरु का पूर्ण प्रभाव सभी पर !
जनोद्भव अरु विश्व शान्ति के गूंजा करते नित स्वर !!

इंदिरा के भी नित समक्ष थे, लक्ष्य अमन की लय के !
राष्ट्र संघ की रजत जयंती पर प्रकटे स्वर, सँशय के !!
बिना शान्ति के प्रगति न होगी, कभी कहीं भूतल पर !
बुरा हाल है युद्धोन्मादी ज्वालाओं में जल कर !!

मानव के रक्षार्थ यत्न अब मिल कर करने होंगे !
घाव विगत के सबको ही अब मिल कर भरने होंगे !!
संयुक्त राष्ट्र संगठन महत्ता अक्षुण्ण रखनी होगी !!
विश्व शान्ति के प्रति घातक हर हवा परखनी होगी !!

प्रगतिशील मुल्कों की जनता नव युग आँक रही है !
और समय की गति परिवर्तन–विवरण टाँक रही है !!
अब न भूख का ताँडव जग में खेल कहीं पर खेले !
हर जीवन में आयें निरंतर ही खुशियों के मेले !!

मार्च १९७१—

प्रखर भावना रही अग्रसर !

कुछ तो शिक्षा मिली पिता से कुछ अनुभव से सीखा, जाना,
कर्म-क्षेत्र में समझ लिया था कैसे नित्य प्रभाव जमाना,
राष्ट्र–प्रगति के भाव निरंतर पले हृदय के अंतस्तल में,
स्वयं सिद्धि का मंत्र रहा था नित हितकारक जग–हल चल में,
और चुनौती नित स्वीकारी कार्य क्षेत्र में बढ़ कर !

प्रखर भावना रही अग्रसर !!

तत्परता से लक्ष्य प्राप्ति के रंग खिलाये जुट कर मन से,
विश्व समस्याएँ भी समझीं, जुड़ा रहा मन नित्य वतन से,
शान्ति, प्रगति की नीति जवाहर डाल गये जो उसे बढ़ाया,
रही सफलता नित मुट्ठी में जहाँ–जहाँ भी पाँव जमाया,
राष्ट्रोन्नति के ही चिंतन में समय बीतता रहा अधिकतर !

प्रखर भावना रही अग्रसर !!

जब देखा—कुछ लोग अन्यथा, अर्थ लगाते नई लगन का,
क्या होगा परिणाम वतन को दिये हुये कर्त्तव्य—वचन का,
मिटे गरीबी-यहाँ अभी भी कई कोटि लोगों का जीवन,
नहीं प्राप्त कर पाता समुचित, रहन सहन सुविधा अरु भोजन,
मार्ग प्रशस्त कराना होगा, फिर से यहाँ चुनाव करा कर !

प्रखर भावना रही अग्रसर !!

१ मार्च १९७१,

सफल हुआ इन्दिरा का—

पुनः देश की जनता ने थे देखे जलसे हलके, भारी !
राजनीति का हर दल उतरा करके अपनी हर तैयारी !!
थे चुनाव के मुद्दे अनगिन, हवा बाँधते झूम रहे सब !
गाँव-गाँव अरु नगर नगर में-नित प्रत्याशी घूम रहे सब !!

सभी वायदे करते, भरते हामी थे जन-सेवा व्रत की !
किन्तु पारखी जनता भी थी भाषण कर्ता की आदत की !!
पुनः विश्व की नजरें घूमीं—लगी देखने इस हलचल को !
लोकतंत्र की नूतन छवि को—और चुनावों के दंगल को !!

आशान्वित भारत की जनता अन्तरात्मा की सुनती है !
निर्वाचन के समय ठाठ से निज प्रत्याशी को चुनती है !!
कभी-कभी तो इसके निर्णय होते हैं चौंकाने वाले !
कुछ लोगों को पड़ जाते हैं यहाँ जमानत के भी लाले !!

जिसे विजय का सेहरा बंधता उसकी होती है अगवानी !
खूब समझने लगा स्वयं के अधिकारों को हिन्दुस्तानी !!
यह चुनाव भी रहा चुनौती, निर्णय था चौंकाने वाला !
बुद्धि वादियों तक को इसने खुले आम अचरज में डाला !!

पुनः विजय कर प्राप्त कांग्रेस बढ़ी नया लाने उजियारा !
सफल हुआ इंदिरा गाँधी का—"निर्धनता हटवाओ नारा" !!
और विपक्षी, क्या कहिये बस मन की गाँठें खोल रहे थे !
लोक तंत्र की सुविधाओं पर जो मन में था बोल रहे थे !!

१८ मार्च १९७१

पुनः भारत के प्रधान मंत्री पद पर श्रीमती इंदिरा गाँधी—

निखरी भाषा नव आशा की—
अभिलाषा से सजी व्यवस्था !
भारत—शासन—सिंहासन पर—
पुनः प्रतिष्ठित हुई इंदिरा !!

यह अद्‌भुत संक्रमण काल था—
पूर्व दिशा में उठे बवंडर !
बेध रहे थे शान्ति धरा की,
दमन चक्र के नव बर्बर स्वर !!

पाक, धाक था रहा जमाता–
पर करवट ली अधिकारों ने !
बंग धरा को नव उनंग दी–
नर मुजीब के नव नारों ने !!

भारत में आन्तरिक विभेदों–
का भी था कुछ दौर नया सा !
सत्ता–इच्छुक सोच रहे थे–
गोरख धंधा और नया सा !

९ अगस्त १९७१,

सोवियत संघ के साथ शान्ति मित्रता और

सहयोग के लिये–२० वर्षीय संधि—

जब पड़ौस में भारी हलचल–विश्व शाँति हो प्रति क्षण घायल !
अभिषापों का बढ़ता दगल–सुख सुविधा की बजे न पायल !!
तब विचार को गतिमय करके, रूप नया देना पड़ता है !
ऐसे मे चुप बैठे रहना–उदासीनतायुत जड़ता है !!

द्रुत स्वभाव की धनी इंदिरा–दूर दर्शिता की पोषक थी !
राष्ट्र–सुरक्षा नीति सुदृढ़तम संकल्पों की ही द्योतक थी !!
व्यापक–हित–व्रत रखा सामने, तत्परता बढ़ कर दिखलाई !
रूस देश से बीस वर्ष के समझौते की बात चलाई !!

प्रबल मित्रता, भव्य भावना, दोनों देशों का हित चिंतन !
मौलिक थे उद्देश्य शान्ति की सुदृढ़ नीति का लिए प्रयोजन !!
अंग बने संबन्धों के दृढ़, उत्तरोत्तर उन्नति–परिचायक !
कालांतर में यही संधि थी–सिद्ध हुई जो अति फलदायक !!

पूर्वी पाक में संघर्ष की स्थिति—

सप्त कोटि मानव थे मतभेद भूल सब–
दौड़ आये एक ध्वज नीचे बड़ी शान से !
सुनते थे, गुनते थे भाषण मुजीब के वे–
इंगितों पे चलते थे साध पग ध्यान से !!

प्राण से अधिक मूल्यवान था स्वदेश मंत्र–
सामने थे सबके ही लक्ष्य भी समान से !
किन्तु, पाक-भक्त, वक्त से थे अनभिज्ञ सब-
दागते थे घात-स्वर, बात आसमान से !!

भाग्य था पलटने को बंग के निवासियों का-
वेगवान होती गई पद्मा की लहरें !
पूर्ण था आभास मिला टूट जाए दंभ-दुर्ग,
पाक के पिशाच अब किंचित न ठहरें !!

दीप्ति नव चाह की दमकती थी बार-बार,
शत्रु–भाव–भावना के बादल भी गहरे !
बार–बार गूँजता था नव जन घोष प्रिय,
"द्वार–द्वार बंग के महान ध्वज फहरें !!

जादू था मुजीब की प्रयाण-पंथ चेतना में,
लौ पर पतंगे झट दौड़ मंडरा गये !
ग्राम–ग्राम मुक्ति–सैन्य, संगठन देख–देख,
पाक सेना अधिकारी सकते में आ गये !!
लूट मार, शोषण को बंग से मिटाने हेतु–
भाषण, स्वशासन के सबको थे भा गये !
आ गये थे बंधनों को तोड़ गर्वीले, मृत–
कालेजों के छात्र हर एक दिश छा गये !!

भारतीय नीति नेह–प्रीति की अजस्र धार,
प्यार की महान गंगा देश में है बहती !
शान्ति-भव्य भावना की नित्य ही प्रसार देख-
दंभ की दीवार शत्रु सीमाओं में ढहती !!
शक्ति शाली रूस देश कर्मशील परिवेश,
साध है विशेष जहाँ मनुजों की रहती !
मित्र है महान, ज्ञान वान प्रिय भारत का–
जनता जहाँ की स्वाभिमान गुण लहती !!

३ दिसंबर सन् १९७१

डाल के अनेक बम याहिया के वायुयान—

हिंद की प्रधान न थी उस रोज दिल्ली मध्य,
दौरे पर इंदिरा थी पश्चिमी बंगाल के !
राम जग जीवन थे पटना बिहार मध्य,
चिन्ह जब उभरे थे युद्ध विकराल के !!
राव यशवन्त दूर पार महाराष्ट्र में थे,
पंख थे निशंक फैले. जब शत्रु–जाल के !
डाल के अनेक बम याहिया के वायु यान–
आर–पार छोड़ गये चिन्ह महाकाल के !!

क्रूर की बिसात पर, याहिया–औकात पर–
क्रोध था अपार झट इंदिरा को आ गया !
रद्द किये कार्य क्रम, तोड़ने को शत्रु–भ्रम–
हाय ! क्रूर, नागरिक क्षेत्र को जला गया !!
संयमी, सुधैर्यवान रूप था कलकत्ते मध्य,
चौकता सरोष चन्द्र भाल तमतमा गया !
ओज पूर्ण भावनायें, झनझना उठीं शिरायें,
रौद्र रूप धारता स्वरूप था देखा गया !!

देश का प्रत्येक क्षेत्र प्राणों से भी प्यारा था—

त्वरित प्रयाण किया—दिल्ली वायुयान से था—
पूर्ण प्रण साध कर मन को सवाँरा था !
मंत्रणा के हेतु बुलवाया सेनापतियों को—
वक्त की चुनौती के स्वरूप को विचारा था ! !
रास्ते में लिख लिया भाषण प्रसारण हेतु—
देश का प्रत्येक क्षेत्र प्राणों से भी प्यारा था !
त्वरित सुमंत्रणा से, नीति निर्धारित की—
आत्म शक्ति ज्योति में नवीन उजियारा था ! !

वीरों में थी वीरोचित भावनायें जाग उठीं—
पढ़–पढ़ देश–गान जाते थे समर में !
पाँत सिंह शावकों की सजती थीं सीमाओं पे—
पूर्ण निर्भीकता थी वीरता के स्वर में ! !
मोड़ते थे उठते गुबार अरि–सेनाओं के—
तोड़ते थे शत्रु–जाल वीर पल भर में !
झूम–झूम चूमते थे लक्ष्य को सुदक्ष वीर—
उच्च नभ चोटियों के चाव थे नजर में ! !

धार कर एक नव रूप श्रेष्ठ दुर्गा का—

पिंडी और स्याल कोट, देखते अजीब चोट—
होंठ लिये काट निज बार–बार दाँत से !
युद्ध का नवीन दौर, बांधते लाहौर बीच—
वायु पुत्र, नैट की विशेष करामात से ! !
तोड़ा सरगोधा का खुमार, दल बोदा किया—
औंधा इस्लामाबाद किया चक्रवात से !
भूत को अभूत पूर्व ढंग से उतारते थे—
मानता न बात से जो, सीधा किया लात से ! !

तिथि आई पंद्रह दिसंबर की भ्रांति मिटी—
पाक उच्च अधिकारी काँप उठे भय से !
मंत्री और राज्यपाल नोचने लगे थे बाल—
सब का बुरा था हाल रहा युद्ध की प्रलय से! !
कुछ ने शरण ली तटस्थ होटलों में दौड़—
युद्ध के प्रमाद को दबाया था विनय से
भाँप लिया प्राण नहीं बचने के बंग बीच—
काँप उठा पाक तंत्र हिंद की विजय से ! !

दृष्य यह अभूत पूर्व विश्व इतिहास में था–
चौंक- चौंक देखती थी दर्शकों की टोलियाँ !
एक ओर बंदियों की सैंकड़ों कतार खड़ीं–
एक ओर अस्त्र–शस्त्र, ढेर पड़ी गोलियाँ !!
नियाजी ने समर्पण हेतु ज्यों झुकाया सिर,
ढाका मध्य रच गई ज्योति की रंगोलियाँ !
झूमता स्वतंत्रनाद, याद बना युग की था–
ह्रिस अभिमान की थी खाली हुई झोलियाँ!!

इंदिरा व हिंद का समस्त जनतंत्र–सूत्र–
दृढ़ था विजय–प्रण और भी सवाँर कर !
राष्ट्रोचित भावना को ज्योति से निखार कर–
काटे व्यूह वंचकों के नीति को विचार कर !!
धार कर एक नव रूप श्रेष्ठ दुर्गा का–
चोट दी कुटिल मति–चाव–व्यवहार पर !
साथ ही मुजीब की रिहाई के प्रयास किये–
जोर दिया नव युग-बोध की पुकार पर !!

गढ़ दी विजय की मूर्ति—

कोई कहे दैवी शक्ति, भक्ति भावना से पूर्ण–
कोई कहे महिषासुर मर्दनी महान है !
कोई कहे आत्म बल साहस की मूर्ति दृढ़–
कोई कहे इंदिरा को प्राप्त वरदान है ! !
कोई कहे शौर्य सम, सूर्य की प्रचंड ज्वाल,
कोई कहे लक्ष्मी, या दुर्गा समान है !
कोई कहे ज्योत्स्ना है कर्म योग साधना की–
कोई कहे भव्य–भाव–भावना प्रधान है ! !

होते जो जवाहर तो झूमते स्वरूप देख–
लाडली ने लिख दिया नव इतिहास है !
दामिनी सी दमकी है भारत की आन बान–
सत्यमेव जयते की नीति का विकास है ! !
तम का किया है नाश, चमका है तेज पूर्ण–
स्वर्ण भूमि बंग का मिटाया हर त्रास है !
भारतीय भावना को गौरव दिलाया पूर्ण–
सूत्र जन शक्तियों का इंदिरा के पास है ! !

गाड़ दी विजय की मूर्ति जिस शक्ति साधना से-

उसकी विशाल ज्योति इंदिरा के प्रण में !

मानवीय सेवा भाव, ममता–स्वभाव शुद्ध–

संकट विमोचन की साध आचरण में !!

युक्ति-युक्त मंत्रणा की विधि की सृजेता नेता–

आत्म स्वाभिमान को जगाती कण–कण में !

ओज पूर्ण साहस, सदैव निर्भीक रुचि–

द्युति है कल्याणकारी बढ़ते चरण में !!

दृश्य था अभूत पूर्व, चहुदिशि जय–जयकार,

बंग बन्धु शेख जी ने प्रकटा आभार था !

मुक्ति खुद उनकी व बंग की स्वतन्त्रता की–

मित्र और बन्धु-भव्य-भावना का सार था !!

इंदिरा के प्रति थी कृतज्ञता अभूतपूर्व–

सत्य युक्त. स्नेह पूर्ण सद्य उद्‌गार था !

एक कोटि के गरीब बंग विस्थापितों को–

हिंद ने सहर्ष दिया जीवन आधार था !!

एक लाख सैनिक रक्खे थे पकड़ पाकिस्तान के !

तोड़ दिये सपने थे जिसने सारे हठी गुमान के !

१८ दिसम्बर १९७१,

भारत रत्न—

निश्चय ही वह कार्य किया था भर कर बल विश्वास में,
नहीं कहीं मिलती मिसाल है इसकी जग–इतिहास में,
अद्‌भुत साहस—शौर्य देख कर, चकित हुआ संसार था;
लगा सोचने शक्ति विलक्षण है इंदिरा के पास में !

है कृतज्ञ हर एक नागरिक—कण–कण भारत वर्ष का,
गौरव प्राप्त किया है जिसने एक नये आदर्श का,
महामहिम गिरि राष्ट्रपति ने भारत रत्न प्रदान कर;
परिचय करा दिया दुनिया को इंदिरा के उत्कर्ष का !

३ जुलाई १९७२–४ सितम्बर १९७२,

शिमला समझौता—

हिंद, पाक हैं बन्धु पड़ोसी, जनता–लक्ष्य विशाल हैं !
रहें अमन से तो हल हो जायें कतिपय यहाँ सवाल हैं !!
जुल्फिकार थे सर्वे–सर्वा तब उस पाकिस्तान के !
अंग–भंग हो चुके थे जिसके, रंग उड़े अभिमान के !!

भारत से समझौता हितकर समझा, बदली नीति थी !
इंदिरा जी को बहन बना कर दिखलाई नव प्रीति थी !!
पिछली बातें भूल, फूल अब खिलें पुन: विश्वास के !
रंगें न फिर से किसी युद्ध से पन्ने अब इतिहास के !!

समझा था सम्मान इसी में—शिमला आकर ज्ञान से !
युद्ध न होगा किंचित भी अब हित कर हिन्दुस्तान से !!
अमन रहे तो रहे खुला नित निर्माणों का रास्ता !
दोनों ही देशों को पड़ता इक—दूजे से वास्ता !!

युद्ध बंदियों को लौटाया !
सारे जग में नाम कमाया !!

२६ अप्रैल १९७५,

इस कारण सिक्किम को—

सीमावर्ती क्षेत्र. नेत्र थे जिस पर देश विशेष के,
वायु पटों पर उभर रहे कुछ परिवर्तन—संदेश थे !
कालांतर मे आहत अचानक हो सकता था देश का,
एक नया पन्ना संभव था जुड़ जाता द्रुत क्लेश का !

इस कारण सिक्किम को जोड़ा त्वरित राष्ट्र की धार से,
सहमत संसद थी इंदिरा के युग के श्रेष्ठ विचार से !
बाह्य और आंतरिक शक्तियाँ—कुछ थी खड़ी विरोध में,
बोध सहित तत्पर रहना था राजनीति के शोध में !

वर्ष १९७५,

इलाहाबाद हाई कोर्ट में चुनाव याचिका—

अपनी–अपनी धुन के गुण हैं अपनी–अपनी बात !
कुछ का कुछ हो जाया करता जग में रातों रात !!
कहीं स्वस्थ शालीन भावना दिखलाती निज रंग !
कहीं किसी की श्रेष्ठ सफलता बन जाती है व्यंग !!

राजनीति में होते पैदा अक्सर गति अवरोध !
कुशल खिलाड़ी कभी न खोते हार जीत में बोध !!
इंदिरा जीती थी चुनाव जब, राय बरेली वाले,
सोच रहे थे बढ़े क्षेत्र में सुविधा जन्य उजाले !!

राजनारायण प्रत्याशी ने दी थी इसे चुनौती !
ऐतिहासिक बन गई याचिका संज्ञा मिली जुझौती !!
स्वयं उपस्थित हुई इंदिरा सम्मुख न्यायालय के !
दिये स्वयं उत्तर प्रश्नों के बिना किसी संशय के !!

तन्मयता से देखा परखा, विधि सम्मत संचालन !
रखा स्वयं संयम अपने पर, साध लिया अनुशासन !!
निर्णय जो भी कुछ होना था, होना था विधि-लय से !
बिठा लिया तादात्म्य विचारों का था स्वयं समय से !!

किन्तु हादसा होते–होते तब तत्काल बचा था !
किसी तत्व ने एक घिनौना सा षडयंत्र रचा था !!
वह तो कहिये धातु–डिटैक्टर तत्परता से ताड़ा !
ज्यों ही कलुषित बढी भावना उसको वहीं पछाड़ा !!

था सचेत दिन रात प्रशासन, खुफिया पुलिस खड़ी थी !
कदम-कदम पर हर अधिकारी की भी दृष्टि गड़ी थी !!

बची इंदिरा वर्ना संभव था–
होती अनहोनी !
घृणित विचारों ने चाही थी–
यश की नाव डुबोनी !!

देश चलाना चाहा था तब बीस सूत्र के रास्ते—

एक ओर जन हित चिन्तन में बीस सूत्र का समावेश !
प्रगति पंथ की ओर अग्रसर रहने का देता संदेश !!
स्वस्थ कामना सहित भावना राष्ट्र प्रगति की थी बढ़ी !
बीस सूत्र के कार्यक्रमों की रही निरन्तर लिखा पढ़ी !!

कृषि चमके, दमके श्रम–आभा–मेहनत हो जी जान से !
मिटे गरीबी हर हालत में अब तो हिन्दुस्तान से !!
भूमि हीन को भूमि प्राप्त हो, अरु समुचित आवास हो !
कहीं न किंचित मनुज शक्ति का पल भर को भी ह्रास हो !!

अनुशासित हो देश समूचा–विघटन हो न समाज का !
बने आत्म निर्भर दुनिया में भारत–मानव आज का !!
शोषण हों तत्काल बंद अब बंधुआ, श्रमिक, किसान के !
यह कलंक अब सहन नहीं है माथे हिन्दुस्तान के !!

पनपे हर उद्योग, रोग हो दूर यहाँ हड़ताल का !
न हो श्रमिक दल पर प्रभाव अब धन पतियों के जाल का !!
हरित क्रान्ति हो–श्वेत क्रान्ति हो, खुले शैक्षणिक स्रोत हों !
अपनी इस आजादी की अब पाते सब ही ज्योति हों !!

जनसंख्या बढ़ती जाती है–बनती नित अभिशाप है !
वायु प्रदूषण और कुपोषण उभर रहा बन पाप है !!
इस प्रकार की सभी समस्या के निदान के वास्ते !
देश चलाना चाहा था तब बीस सूत्र के रास्ते !!

पराभव

१२ जून १९७५—

राजनीति की विस्तृत धरती, भरती बल–व्रत साध कर !
किन्तु समय भी मानव को रखता अपने से बाँध कर !!
उद्भव के क्षण, कण–कण रंगते नित नूतन उल्लास से !
किन्तु पराभव भी संपर्कित रहता है इतिहास से !!

जनता की आकांक्षायें थी–सुख साधन संपन्न हो !
अधिकारों के प्राप्तव्य की छवि संग में आसन्न हो !!
चुनाव याचिका पर सहमा ही हाईकोर्ट का फैसला !
अद्‌भुत जिज्ञासा का कारण जनता को था तब बना !!

राय बरेली के चुनाव के वह निर्णय विपरीत था !
पलट दिया था जिसने पाशा इंदिरा जी की जीत का !!
कर अवैध घोषित तब उसको–वंचित किया चुनाव से !
मात खा गई देश रत्न थो विधि विधान के दाँव से !!

हुआ यहीं आरम्भ पराभव—आई संकट की घड़ी !
धरी रह गई राष्ट्रोन्नति की योजनायें थी बड़ी–बड़ी !!
अब विरोध का पक्ष प्रबल श्री राजनारायण छा गये !
विश्व समाचारों की सुर्खी में फुर्ती से आ गये !!

उथल–पुथल मच गई देश में–युद्ध विचारों का छिड़ा !
अपनी—अपनी तिकड़मबाजी हर कोई था रहा भिड़ा !!
किन्तु समय अपने प्रभाव को रखता अपने साथ है !
हानि लाभ–जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ है !!

विधि वेत्ता रख कर बारीकी–मन में हर कानून की !
लगे देखने कला बाजियाँ संयम और जनून की !!

जलसे और जुलूसों का–
क्रम था दिल्ली में जारी !
रोज–रोज सड़को पर दीखा–
था हुजूम नित भारी !!

२४ जून १९७५,

विधि विवेचन—

विधि वेत्ता मस्तिष्क लग गये—द्रुत व्रत नये प्रयास में !
एक विलक्षण तथ्य जुड़ गया—भारत के इतिहास में !!
कुछ थे लोग प्रसिद्धि पा गये इस हल—चल में देश की !
दिशा—दिशा में उभरी भाषा थी कौतुक—परिवेश की !!

उच्चतम न्यायालय द्वारा सुन कर तर्क वितर्क को !
आँक लिया था गया ध्यान से तब विवेच्य के फर्क को !!

निर्णय था अवकाश पीठ का—
हाई कोर्ट के निर्णय पर !
दिये स्थगन आदेश त्वरित थे—,
उस निर्णय के आशय पर !!

मौलिक चिंतन उद्‌गारों का—
जुड़ा नियम कानून से !
अर्थ निकलने लगे अनेकों—
वैधानिक मजमून से !!

दिया साथ था यहाँ वक्त ने–
इंदिरा को विश्वास से !
अगले दिन, पर जुड़े हुये थे–
अनदीखे संत्रास से !!

वैचारिक भूकम्प बड़ा था—

चुनाव याचिका के निर्णय पर इंदिरा जी का मन था–
त्वरित त्याग कर पद वे अपना, देखें कार्य वतन का !
किन्तु सूत्र जुड़ गये, बहुत से लेकर मन अभिलाषा !
"राष्ट्रोन्नति अरु प्रगति पंथ की आप अकेली आशा !!

डटें मोर्चे पर, अब निर्भय–रह कर कार्य चलायें !
विधि सम्मत निर्णय ले–लेकर बाधा त्वरित हटायें !!"
गई उच्चतम न्यायालय में–विधि की देख व्यवस्था !
जिसने कर स्थगित दिया था हाई कोर्ट का दावा !!

प्रतिक्रियायें हुईं त्वरित थीं–था विपक्ष उद्वेलित !
हुई सभायें थीं विरोध में–इधर–उधर सांकेतिक !!

गहमा गहमी थी वैचारिक,
संघर्षों का युग अधिकाधिक !
नगर–नगर में थे आन्दोलन,
हुआ प्रभावित था जन जीवन !

पक्ष–विपक्ष सभी के नारे,
तोड़ रहे थे नभ के तारे !
कोई कहता हटे इंदिरा !
कोई कहता डटे इंदिरा !

वैचारिक भूकम्प बड़ा था,
प्रगति मार्ग पर डटा खड़ा था !
जैसे–तैसे उखड़े शासन,
इस आशय के थे नित भाषण !

सत्ता पथ पर गड़ी नजर थी,
होती चर्चा नित घर–घर थी !
अस्थिरता का युगारंभ था;
प्रकट कहीं पर हुआ दंभ था !

शासक दल ने कर विश्लेषण,
सुने विरोधी दल के भाषण !
लगा अराजकता के स्वर में;
आग भड़कने को है घर में !

अनुशासन का नाम नहीं है,
होता नियमित काम नहीं है !
विध्वंसो की बढ़ी प्रवृति है,
हड़तालो की होती अति है !

तोड़–फोड़ विद्रोह लहर है,
हुआ प्रभावित नगर–नगर है !
अधिक न क्षति स्वीकार यहाँ अब,
करना सुदृढ़ विचार यहाँ अब !

राष्ट्रीय आपात काल की घोषणा से पूर्व को स्थिति--

वाह्य शक्तियाँ जो कि हिंद के देख न सकती प्रगति चाव को !
नहीं प्रकट प्रत्यक्ष रूप मे कर सकती थी निज स्वभाव को !!
बाते कर दो टूक इंदिरा स्वाभिमान का ध्वज फहराती !
वही सदा निर्भीक बोलती जहाँ कहीं भी जा के जाती !!

देख चुका जग रौद्र रूप था जब कि बंगला देश बना था !
विश्व विदित हो गया पूर्णतः नर मुजीब का जो सपना था !!
जैसे आया वैसे लौटा था निराश अमरीकी बेड़ा !
विकट समस्या उठ सकती थी यदि भारत को जाता छेड़ा !!

जमी धाक थी तब इंदिरा की अग जग ने उसको पहचाना !
यद्यपि महिला थी पर जग में कार्य किया जम कर मर्दाना !!
उसकी इसी विजय के कारण निपट स्वार्थी मन जलते रहते !
गिरगिट जैसा रंग ढंग से अपने आप बदलते रहते !!

मिली उसे जो लोक प्रियता कितनो ही को साल रही थी !
उसकी हर उपलब्धि जगत को नित अचरज में डाल रही थी !!

१८ मई १९७४–परमाणु परीक्षण पोखरण राजस्थान—

ऐतिहासिक था दिवस कि जब थी उठी प्रतिष्ठा रूप सवँरती !
सहसा ही परमाणु परीक्षण से गूँजी थी सारी धरती !!
वैज्ञानिक उपलब्धि–गूँज ने चौंकाया साम्राज्यवाद को !
"अब से ही यह हालत है तो, क्या होगा यह हिंद बाद को" !!

विस्फोटक स्थिति तब आई—

थी बिहार में हार सुनिश्चित अतिवादी तत्वों की जब तब,
विध्वंसात्मक रुचि अपना कर हुये इकट्ठे आकर के सब !
नव प्रकाश के स्वर विरोध के खेमें में संचालन ज्वर भर !
आन्दोलन को रहे बढ़ाते डगर–डगर पर गरज–गरज कर !!

था अभीष्ट उनका सर्वोदय, सुख सुविधा उपलब्ध सभी को !
उसके थे विपरीत देश में, स्वार्थवाद की धार बही जो !!
टूटे त्वरित विधान सभायें संसद तक पर भी हो धरना !
लिये बढ़े मंतव्य साथ में किया वही जो तब था करना !!

नित्य दशा गंभीर बिहारी जन–जीवन में नित कंपन था !
ललित नारायण की हत्या से हुआ कलंकित द्युति आंगन था !!
जो भी जितना दोषी लेकिन चोट पड़ी थी मानवता पर !
नृप अशोक की शान्ति विधा पर, कवि दिनकर जी की कविता पर !!

उठी घटा विध्वंसों की गुजरात प्रान्त पर बढ़ कर छाई !
बन्द हुई शिक्षण संस्थायें विद्रोहों की थी बन आई !!
धरे रहे कानून, समय का ऐसा एक जनून चढ़ा था !
बढ़ी अराजकता चहुंदिशि थी विस्फोटक स्थिति तब आई !!

१६ अप्रैल १९७५,

भारत का अंतरिक्ष में प्रवेश—

उस दिन चौंके देश विदेश,
भारत की थी प्रगति विशेष,
जिस दिन था भारत ने बढ़कर,
अंतरिक्ष में किया प्रवेश !

सन् १९७५,
सुप्रीम कोर्ट के सर्वोच्च न्यायाधीश
श्री अजित नाथ राय पर बम से प्रहार—

शुरू हुआ आतंकवाद नव, क्षति महान जिसमे थी संभव !
अजितनाथ पर फेंका था बम, दिल्ली सहम उठी थी सुन रव !!
संग पुत्र था उनका प्यारा, मृदु प्रिय जीवन ज्योति सहारा !
क्या आशय था इस हमले का बुद्धि परख न सोचा समझा !!

वह तो कहिये फटा न बम था, पिता पुत्र के मन संयम था !
दिया साथ था भाग्य प्रबल ने, कार नहीं तो लगती जल ने !!
न्याय तुला पर हुआ आक्रमण, घबराये दिल्ली के जन गण !
हाव-भाव युत चाव लाग का, इसके पीछे जो दिमाग था !!

विद्रोहों की प्रबल चाह ने—२५ मई १९७५ महसाना—

सताच्युत करने को अवसर, दुष्प्रचार होता था घर-घर !
सदा जिन्होंने मुँहकी खाई, लेकर आगे बढे जम्हाँई !!
विद्रोहों की प्रबल चाह ने, संघर्षों के मंच रचे थे !
और विदेशी तत्वों ने मिल और नवीन प्रपंच रचे थे !!

कतिपय आला मस्तिष्कों में—

फौज, पुलिस तक को विद्रोहों की शह दे दी खुले आम थी,
कतिपय आला मस्तिष्कों में चाह जगी थी बड़े नाम की,
लखे दौर थे असफलता के चंचलता के झेले झटके,
लेकिन जिस पर चढ़े हुये थे वह घोड़ी थी बिन लगाम की !

२५ जून १९७५ घोष हुआ आपात काल का—

जबकि इंदिरा के समक्ष नव अस्थिरता का नित सवाल था,
बढ़ा जा रहा इधर-उधर से विध्वंसों का नया जाल था,
रहा टालता मन सदैव ही अनहोनी अरु कड़े कदम को,
ज्यों ही परखी दुर्भि संधियाँ घोष हुआ आपात काल का !

विद्रोहों अरु व्यवधानों से किंचित भी वह पस्त नहीं थीं !
कड़ुवा घूँट दवा का देने की वैसे अभ्यस्त नहीं थीं !!
किन्तु कहा है सत्य किसी ने—

होनी तू बलवान !
मंत्री परिषद रही देखती जब उसने पग सख्त उठाया,
क्या करना है, कैसे करना, कितनों की था समझ न आया,
दिया त्वरित संदेश, देश को बढ़े क्लेश अब हरने होंगे,
बचे देश की साख यत्न कुछ ऐसे ही अब करने होंगे,
होता वही जगत में कुदरत जैसा रचे विधान !
होनी तू बलवान !!

विद्रोहों की ठंडी ज्वाला—

लखा देश ने उठ कर तड़के,
शूल रह गये दिल में गड़के !
इमरजेंसी ने बंधन जकड़े;
थे विपक्ष के नेता पकड़े !

दिया डाल था काराओं में,
पड़ा देश था दुविधाओं में !
रहा चाहता चक्र विदेशी,
भारत में स्थिति हो ऐसी !

विस्फोटक हो जीवन के क्षण,
बने इंदिरा इनका कारण !
लगा जबानों पर था ताला,
विद्रोहों की ठंडी ज्वाला !

निष्क्रियता हो खत्म गई थी—

जन–जीवन-रुख सामान्य था, राजनीति की जो भी मान्यता !
दफ्तर रेलें अरु कल खाने, नियमित थे सब ठौर, ठिकाने !!
थे सतर्क पग–पग अधिकारी, जन–सेवारत थे व्यापारी !
क्रियाशील अनुभवी तंत्र थे, बोस सूत्र बन गये मंत्र थे !!

निष्क्रियता हो खत्म गई थी, उत्साहों की लहर नई थी !
यत्न बने युग की चांदी के, पाँच सूत्र संजय गांधी के !!
छेड़ दिया अभियान सफाई, कितनों ही की आफत आई !
रक्त दान अरु पेड़ उगाओ, युवा शक्ति को मार्ग दिखाओ !!

छिड़े नये अभियान लगन के, परिवर्तन थे अपने मन के !
जब संजय का दल चलता था, कितनों ही को वह खलता था !!

७ नवम्बर १९७५ सुप्रीम कोर्ट द्वारा

श्रीमती इन्दिरा गाँधी का चुनाव वैध घोषित—

विधि सम्मत निर्णय ने रोका असंतोष के था प्रभाव को !
जब घोषित कर दिया वैध था, इंदिरा गाँधी के चुनाव को !!

ख्याति प्राप्त थी अल्प समय में—

निष्ठा व्रत जन–सेवा रुचि का, उभरा सद्य समन्वय,
नगर–नगर मशहूर हो गया, इंदिरा सुत था संजय,
राजनीति की चला डगर पर देख विवशता गत की;
संघर्षों से जूझ प्रहारों से भिड़ना था आशय !

चाटुकारिता किन्तु प्रखर थी, जिसने गही निकटता,
युवा शक्ति में मिला वही आ जो पहले था कटता,
आगत, स्वागत शरणागत रुचि चली यंत्रवत प्रतिदिन;
दूरंदेशी पर छायी थी युग की तीव्र निपटता !

देशोत्थानी भावनाओ ने उसकी गगन छुआ था !
ख्याति प्राप्त थी अल्प समय में प्रति दिन नाम हुआ था !!
रुचि, खुशामदी दौर न समझी, समझ न पायी हल चल !
व्यापकता उसके लक्ष्यों की सुना रहे स्वर चंचल !!

राजनीति का पथ प्रशस्त था, निःसंदेह यहाँ पर !
किन्तु सके यह जान न किंचित अपना कौन कहाँ पर !!

नई प्रेरणा भर प्राणों में,
शक्ति लगे नित निर्माणों में,
देती इस पर जोर इंदिरा;
बढ़ कर चारों ओर इंदिरा !

नसबन्दी अभिषाप बन गई—

पुण्य प्रभा थी पाप बन गई,
अनुशासन का श्राप बन गई,
जोर जबरदस्ती के ढंग से;
नसबन्दी अभिषाप बन गई !

कहीं आड़ ले निजी धर्म की,
बनी कहानी दुखी मर्म की,
चपल चंचला रुचि अपना कर;
किसी–किसी ने जेब गर्म की !

लक्ष्यों ने कर भक्ष लिया सब,
सेंसर के भी देखे करतब,
असंतोष की उभरी लपटें;
सोचा सबने क्या होगा अब !

व्यस्त रहीं दिन रात इंदिरा,
समझ न पाई बात इंदिरा,
परिवर्तित युग–बोध न जाना,
यहीं खा गई मात इंदिरा !

गुण गाया आपात काल का—

जिनको कटु अनुभव था पिछला, ला परवाही देख चुके थे,
हर दफ्तर अरु कल-खानों में नित मन चाही देख चुके थे,
उन्हें बदलता चित्र देख कर-अचरज था मानव के मन पर,
नित निष्ठा से कार्य हो रहा था हर दिशि में सही, निरंतर,
निष्क्रियता, अरु गप्पबाजी का टूट चुका हर मोह जाल था !
गुण गाया आपात काल का !!

कड़ा परिश्रम, अनुशासन व्रत-राष्ट्रोन्नति के मंत्र बन गये,
भाव चंदोए नई लगन के यत्र, तत्र, सर्वत्र तन गये,
क्रमवत चालित उद्योगों में बढ़ता दीखा उत्पादन था,
गुण्डे होते गये भूमिगत, पूर्ण शान्तिमय जन जीवन था,
चोर-डकैतों तक के आगे-मानव-सेवा का सवाल था !
गुण गाया आपात काल का !!

दर सूची थी हर दुकान पर, उपभोक्ता का मन प्रसन्न था,
स्वच्छ मसाले, सुथरी दालें, बिना मिलावट मिला अन्न था,
ऐसा लगता था युग पलटा, जीवन शान्ति-निकेत बन रहे,
राम बनने लगे लाडले, नगर-नगर साकेत बन रहे,
भाग्य पलटता लगा दीखने, अपने इस भारत विशाल का !
गुण गाया आपात काल का !!

अति उत्साहित लगन खा गई—

भारत में परिवार नियोजन, माँग समय की आवश्यक स्वर,
देशोन्नति के क्रम में जम कर, हो प्रचार भी इसका घर-घर,
देश, काल अरु रीति-परख बिन, लक्ष्य किये जो थे निर्धारित,
उनके प्रति दायित्व विभागों तक का पूरा किया सुनिश्चित,
इससे व्यापा भय चहुंदिशि था, उत्पीड़न की लहर छा गई !

अति उत्साहित लगन खा गई !!

लगी होड़, पथ छोड़ न्याय का, शुरू दमन का चक्र हो गया,
जन कल्याणी भावनाओं के पथ मे जो नित शूल बो गया,
कही डराया, धमकाया, विद्यालय तक थे हुए प्रभावित,
अरु शासन बदनाम हो गया, वह दुष्चक्र हुआ संचालित,
जो दिमाग इसके पीछे था—उसे बहस की वजह पा गई !

अति उत्साहित लगन खा गई !!

समाचार पत्रों पर सेंसर--

प्रतिबन्धों ने अनुबन्धों को संबन्धों के जकड़ लिया था,
चालित स्वर को जन समाज के भरी दुपहरी पकड़ लिया था,
समाचार हो गये नियंत्रित--इंदिरा जी तक पहुंच न पाये,
कुप्रभाव पड़ रहा निरंतर, जो नसबंदी लक्ष्य बनाये,
घातक स्थिति बना रहा था, नगर-नगर की डगर-डगर पर !
समाचार पत्रों पर सेंसर ! !

स्वार्थोन्मुख लालच के पुतले, अन्दर काले ऊपर उजले,
करते थे नित दखलंदाजी, शासकीय कामों में रुचि ले,
युवा शक्ति का केंद्र घिरा था, षडयंत्रों के उन पुतलों से,
गाँधी टोपी पहन--पहन कर जो आँगन के मध्य घुमे थे,
यहीं हकीकत छुपी हुई थी, जो इंदिरा को हुई अहित कर !
समाचार पत्रों पर सेंसर ! !

गुप्त चरों ने अहंभाव में और अधिक थी नाव डुबोई,
समझ न पाये कुतर रहा है चुपके--चुपके पैदा कोई,
सब कुछ है अनुकूल भूल यह बनी धारणा, जन समाज में,
विषम परिस्थिति पैदा कर दी इन्हीं भ्रमों ने राज--काज में,
दुर्भिसंधियों से फिर कैसे ली जा सकती थी नित टक्कर !
समाचार पत्रों पर सेंसर ! !

थी विशेषता इंदिरा की यह--

आगे, पीछे, आँखें मींचे जो चलते थे सूत्र निराले !
हो चुनाव तत्काल उन्हीं सबने ही थे निष्कर्ष निकाले !!
दूर दर्शिता त्याग, राग था हाँ में हाँ का नित्य अलापा !
कह न सका कोई दृढ़ स्वर में नसबंदी से भारत काँपा !!

या तो वे सब घृणित विधा के हाथों में नित खेल रहे थे !
या फिर चुपके, देख दिये का चुकता हर क्षण तेल रहे थे !!
बहर हाल धोखे में रख कर इंदिरा को गुमराह किया था !
दलितों के उद्धारक क्रम को जान बूझ कर स्वाह किया था !!

थी विशेषता इंदिरा की यह--बढ़ चुनौतियों से भिड़ जाना !
हार जीत की तनिक न चिंता, चाहे कुछ भी कहे ज़माना !!
कुछ परिवर्तन थे दिमाग में, जो लाने को आतुर था मन !
त्वरित घोषणा कर चुनाव की आश्चर्य का खोला आँगन !!

कार्य शैलियों में नित डट कर--साहस स्रोत प्रयुक्त किया था !
जितने नेता थे विपक्ष के सब को कारा मुक्त किया था !!
एक वर्ष को और देश का शासन रखती स्वयं हाथ में !
किन्तु रखा तादात्म्य लगन का जनोद्भवो के सदा साथ में !!

जो देते थे दोष निरंतर तानाशाही का वे हत्प्रभ !
देख रहे थे उत्सुकता से इंदिरा गाँधी का यह करतब !!

मार्च १६७७,

पतनोन्मुख किन्तु दृढ़—

समीकरण हो गया दलों का, पंचामृत की नई लहर थी !
अब संभावित विजय कथा की नई व्यवस्था डगर-डगर थी !
लोक तंत्र के मंत्र प्रसारित कर विपक्ष की भाषण माला !
दिखलाती थी स्वप्न नये कुछ आश्वासन का भर उजियाला !!

जय प्रकाश इतिहास बन गये इन परिवर्ति नये क्षणों का !
श्रोताओं पर नव प्रभाव भी पड़ना था आपात-व्रणों का !!
नव परिवर्तन माँग समय की जनता ने भी लक्ष्य बनाया !
बदले युग की धारा का था 'हीरो' त्वरित विपक्ष बनाया !!

उत्तर तक था यही करिश्मा, उत्साहों की नई लहर थी !
कड़वी औषधि इंदिरा जी के शासन को बन गई जहर थी !!
खुले झूठ के नये पुलंदे जिन पर आधारित कुछ भाषण !
बने इंदिरा के जीवन में पहली बार पतन का कारण !!

रही न आँधी थी गाँधी की—

रही न आँधी थी गाँधी की जिसने बाँधी थी जनता को !
जनता भी थी चली परखने अब विपक्ष की भी क्षमता को !!
नये हुये कुछ ताल मेल थे—जलसे और जुलूस बड़े थे !
जय प्रकाश के आमंत्रण पर एक मंच पर पाँच खड़े थे !!

सभी पुराने नेता, जेता बनने खातिर एक हुये थे !
राजनीति के उलझे-सुलझे सारे माहिर एक हुये थे !!
इंदिरा के विपरीत हवा थी, असफलता थी खड़ी सामने !
सहसा ही चौंकाया जग को तब ही था जग जीवन राम ने!!

मिला महाबल था विपक्ष को, अभिलाषा का गढ़ निर्मित था!
पद प्रधान का उनकी खातिर लगा कि जैसे ही निश्चित था!!
दल बदलू कुछ और इधर से या कि उधर से साथ हो लिये !
इस प्रकार बहती गंगा में कितनों ने ही हाथ धो लिये !!

किन्तु न दृढ़ता क्षीण हुई थी—
किंचित भी इंदिरा के मन की !
सबसे बड़ी चुनौती थी यह—
उनके उस कर्मठ जीवन की !!

२१ मार्च सन् १९७७,

राय बरेली संसदीय क्षेत्र में चुनाव पराजय—

उत्तर भारत में संसद के इस चुनाव ने रँग दिखलाया !
राजनारायण—नेता जी ने विश्व पटल पर नाम कमाया !!

हुई पराजय थी इंदिरा की,
और रहा था क्या कुछ बाकी !
गोट न संजय की फिट बैठी,
रहा न था अनुकूल अमैठी !

धरा रहा हर विश्लेषण था,
गूढ़ पराजय का कारण था !
राज योग क्षण बीत गये थे,
अब प्रति पक्षी जीत गये थे !!

दुष्प्रभाव आपात काल का, पड़ा इंदिरा के था दल पर !
जय प्रकाश जी की धुन जीती जनता के अवचेतन बल पर !!

त्वरित भाव शालीन प्रसारा !
जनता का निर्णय स्वीकारा !!

२२ मार्च १९७७,

त्याग पत्र दे दिया त्वरित था—

दक्षिण भारत में जय धारा !
पर उत्तर ने किया किनारा !!
देख पराभव विश्व चकित था !
त्याग पत्र दे दिया त्वरित था !!

युग ने ली करवट बदले स्वर !
नई–नई चर्चायें घर–घर !!
किन्तु संतुलित रही इंदिरा !
नही भाव में बही इंदिरा !!

उच्च कोटि की देश भक्ति को—

क्रियाशील कुछ वाह्य शक्तियाँ–जिन्हें इंदिरा रास न आई !
लम्बे अर्से से तत्पर थीं कैसे जावे क्षति पहुंचाई !!
कहा उसे अधिनायक वादी, दिये गये कुछ नये विशेषण !
करते थे कुछ देश ईर्ष्या, भारत की उन्नति के कारण !!

जहाँ कहीं भी गई विश्व में, निज प्रभाव के झंडे गाड़े !
सहन नहीं था उसको किंचित, अमन-चमन को कोई उजाड़े !!
जहाँ कहीं मानवता बन्दी–पहुंचाये संदेश मुक्ति के !
विश्लेषण होते थे जग में उसकी अपनी श्रेष्ठ युक्ति के !!

उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर—भारत को पहुंचाने का हित !
उसके चिंतन में रहता था पूर्ण प्रभायुत और सुनिश्चित !!
जिमी कार्टर, विलसन, निक्सन और किसिंगर तक ने माना !
यद्यपि महिला है पर बढ़ कर, कार्य सदा करती मर्दाना !!

अमरीका जो लोकतन्त्र का बनता है आदर्श जगत में !
दे न सका सम्मान समूचा, महिला को अपने अभिमत में !!
लंका और ब्रिटेन बढ़े पथ, नारी हेतु प्रशस्त कर दिया !
मिली प्रेरणा इंदिरा से थी कार्य क्षेत्र में ओज भर दिया !!

लोक प्रियता बढ़ी देश के प्रान्त प्रान्त में छाई थी वह !
शक्ति, समन्वय और एकता व्रत की सुदृढ़ इकाई थी वह !!
निर्धन वर्गों की आशाओं का, अभिलाषा का केन्द्र बनी थी !
जनाकाँक्षा—आकर्षण की उसकी शैली भी अपनी थी !!

उच्च कोटि की देश भक्ति की अपने में खुद वह मिसाल थी !
यद्यपि हारी थी चुनाव में—ख्याति मगर नव लाजवाल थी !!
टूट न जाये देश कहीं से—इसका रखती नित खयाल थी !
नहीं संकुचित भावनायें थीं—दूर दृष्टि की रुचि विशाल थी!!

इस विशाल भारत में पग--पग

अति विश्वासी नजर, डगर पर अनुमानों की धोखा खातीं !
कुछ अपनों की कतिपय कमियाँ, रंग समय से हैं दिखलातीं!!
भेद कभी अपना ही कोई, मन में घुस कर यदि पा जाता !
कितना ही रहता सतर्क पर मानव चकमे* में आ जाता !!

परम्परा से बंधे हुये जो लोग--न चाहें कुछ परिवर्तन !
उनका यही अभीष्ट उंगलियों पर नाचे उनके जन जीवन !!
इस विशाल भारत में पग--पग अवरोधों की जड़ें जमी हैं !
उन पर डटे पुरातन पंथी--वर्ना क्या कुछ कहीं कमी है ??

नहीं चाहते वे परिवर्तन दकियानूसी जिनके स्वर हैं !
रूढ़िवादियों के प्रभाव के क्षेत्र बढ़े जाते घर--घर हैं !!
ऐसे ही कुछ और तथ्य थे, जो कि पराभव--सूत्र बन गये !
या कहिये कि युगान्तकारी व्यवहारों के स्रोत छन गये !!

शपथ ग्रहण करके समाधि पर—

जन तृष्णायें आश्वासन के देख चुकीं जब कई दौर थी,
बदल रही मौका आने पर वे भी अपने कई तौर थी,
धन पतियों ने अर्थ व्यवस्था को कस कर महँगाई थोपी,
परिवर्तन से जन-जीवन को आशायें कुछ लगीं और थीं !

महामान्य श्री जय प्रकाश जी लोकतंत्र के उद्‌भट पोषक,
नव शासन पद्धति की लय के बने हुये थे नीति नियोजक,
जनता दल को लेकर पहुंचे-गाँधी बापू की समाधि पर;
राजनारायण परम प्रफुल्लित कार्यक्रमों के थे उद्‌घोषक !

शपथ ग्रहण करके समाधि पर नेता चुनना था निज दल का,
जग जीवन की बात बनी तो झट से मचने लगा तहलका,
तभी उठे झट राजनारायण गये चौधरी के खेमे में;
जिनके उत्तर ने खुल कर था किया प्रदर्शन अपने बल का !

देखा जब था दल संकट में,
सद्य भावना थी करवट में !
बढ़े श्री कृपलानी आए,
समाधान के यत्न सुझाये !

बात चीत से जुगत जुड़ाई,
और कहा—मुरार जी भाई !
गाँधी वादी अनुभव जेता,
संसद दल के हों यह नेता !

गाँधी शान्ति प्रतिष्ठा भू—पर,
उल्लासों के स्वर थे ऊपर !
कार्यवाही कर, पूर्ण यथोचित,
जनता दल—सरकार सुशोभित !

जनोल्लास अब नया—नया था—

जन समाज गत भूल गया था,
आगत के प्रति झूल गया था,
नवोन्मेष में नये वलवले;
जनोल्लास जब नया—नया था !

जनता शासन के गुण गाये,
कदम—कदम पर नयन बिछाये,
लगा चौंकने लेकिन अक्सर;
जब अनेक आयोग बिठाये !

कई मुकदमे थे इंदिरा पर,
पर उसने संयम अपना कर,
किया सामना डट कर सबका;
सही यंत्रणा शीश उठा कर !

गहमा गहमी, बहसा-बहसी,
ऐसी—वैसी, जैसी—तैसी,
चर्चा का बन गई विषय थी;
बातें उड़ती कैसी ! कैसी !

इंदिरा का अपना स्वभाव था,
क्षीण न हो पाया प्रभाव था,
पड़ा अन्ततः ठंडा एक दिन;
आयोगों का वह अलाव था !

दल को एक सूत्र में बाँधे,
धैर्यवान स्वर—संयम साधे,
बनी केन्द्र थी आकर्षण का;
सहन शीलता का क्रम साधे !

किया अध्ययन रम कर, जमकर,
शक्ति संचयन के नव क्रम पर,
दृष्टि डालती रही हमेशा;
जनता में हर उभरे भ्रम पर !

परेशानियों का वह दौर–शक्ति दे रहा था कुछ और !
आगन्तुक जन की नित भीड़–रही सजाती जय का नीड़ !
सहानुभूतियाँ, जन विश्वास–बदल रहे थे फिर इतिहास !
जब देखा फिर कीर्ति प्रसार–निकट आ गये थे अखबार !

६ नवम्बर १९७८—चिक मंगलूर से

संसदीय चुनाव में विजय प्राप्त—

राष्ट्र हमारा अनुपम एक,
जिसके नित्य प्रमाण अनेक,
उत्तर से जब हारी इंदिरा;
दक्षिण तक पहुंचा था सदमा !

किन्तु नहीं थे दिन वे दूर,
जाग उठा जब चिकमंगलूर !
सिर आँखों पर त्वरित बिठाया,
सफल बना दिल्ली भिजवाया !

इससे पहले आजमगढ़ में,
कांग्रेस को मिली विजय थी !
जहाँ मोहसिना जी जीती थीं,
शक्ति साध कर खिली विजय थी!

पुनः गगन तक ध्वज फहरा था,
नई जीत का रंग गहरा था !
जनता से संपर्क बराबर,
रखती थी नित प्रति, आ-जाकर !

२१ नवम्बर १६७८,

लोक सभा सदस्यता से वंचित—

समय कसौटी ने फिर कसकर, इंदिरा को था देखा जमकर !
जनता—शासन ने सोचा यह—ले सकती है हर दम टक्कर !
लोक सभा में गुल खिलवाये—कुछ पिछले आरोप लगाये !
निर्णय के अनुसार, सदस्यता, से विहीन हो गई इंदिरा !
इतना ही पर्याप्त न देखा—अग्रिम क्रम की खींची रेखा !
राजनीति के नये खेल में, एक दिवस के लिये जेल में !
भिजवा कर सत्ता पत्रों ने— कीर्ति कामना के वृक्षों ने !

दूर दर्शिता से हट कर के !
केवल भाव लखे ऊपर के !!
अन्तराल को जान न पाये !
जनता—रुख पहचान न पाये !!

धैर्य धार कर सहा सभी कुछ, थी तिहाड़ में रात बिताई !
चिंता की किंचित भी कोई, शिकन न थी चेहरे पर आई !!
वीर भावना ज्योति बन गई—संकट के इस अंधियारे में !
जान पड़ गई थी इससे फिर—इंदिरा गाँधी के नारे में !!

जन समूह दौड़ा जेलों की ओर हुये उन्मुख थे युव दल !
इंदिरा के प्रति सहानुभूति का उमड़ रहा था सागर प्रतिपल !!
शक्ति मिली इस आंदोलन से इंदिरा जी के सुदृढ़ मन को !
जन—सेवा हित किया समर्पित था उसने अपने जीवन को !!

आश्चर्य की अद्भुत प्रतिमा—

मुक्त हुई, श्रम युक्त प्रभा नित, अवरोधों की तोड़ बढ़ रही !
दुर्भिसंधियाँ जबकि समय की—सूत्र नये कुछ और गढ़ रही !!
आँक रही थी तीव्र लगन से—आने वाले कठिन क्षणों को !
लेकिन न पास फटकने मन के नहीं दिया था भ्रान्ति-कणों को !!

थे विदेश के प्रतिनिधि आते, मिलने वालों का ताँता था !
वही प्रभान्वित हुआ, धैर्य से—जो कि भेंट करने आता था !!
सफल प्रणेता अपनेपन की—रखती शिष्टाचार प्रभा थी !
आत्म ज्योति अरु बल के आगे, मात खा गई हर दुविधा थी!!

खुशी-खुशी परिवार जनों में अपना समय बिताती थी नित !
भर विनोद की पुट बातों में बच्चों को बहलाती थी नित !!
राजनीति की कुशल खिलाड़ी-आत्मसात कर चुकी व्यथा थी !
आश्चर्य की अद्भुत प्रतिमा नेहरू की वह वीर सुता थी !!

२६ दिसंबर १६७८—

सहा समय का फिर प्रहार था !
राजनीति में पले प्राण थे राजनीति थी तन में, मन में,
संघर्षों को झेलीं, ठेला आगे बढ़ कर था जीवन में,
जब महिला ने हिला दिया था किला यहाँ साम्राज्यवाद का,
मचा तहलका दूर-दूर तक था संशय से निखिल भुवन में,
शक्ति स्वरूपा इंदिरा के जीवन का होता नित प्रचार था !
सहा समय का फिर प्रहार था !!

तथा कथित कुछ कुशल खिलाड़ी अपनी गोटें फेंक रहे थे,
और जला कर कुटिया यश की हाथ यहाँ कुछ सेंक रहे थे,
पुनः पराभव क्षण आए थे, विशेषाधिकार समिति-सलाह पर,
जकड़ लिया था फिर बन्धन में, इंदिरा जी को गिरफ्तार कर,
पुनः परीक्षा की घड़ियाँ थी, खुला जेल का पुनः द्वार था !
सहा समय का फिर प्रहार था !!

किन्तु समय संयोग, योग फिर विधि वेता-का हुआ सफल था,
साथ–साथ ही जन विरोध स्वर भावनाओं का ज्वार प्रबल था,
हार गई वे सभी युक्तियाँ जो कि नवीन प्रयुक्त हुई थीं,
कानूनों के दांव पेंच से इंदिरा गाँधी मुक्त हुई थीं,
तेजवान मुख मंडल पर तब आत्म शक्ति का द्रुत निखार था!
महा समय का फिर प्रहार था!!

वर्ना यह गाँधी का भारत—

जब देख थे बढ़े जा रहे दुराग्रहों के हाथ!
जनता की नित सहानुभूति थी इंदिरा जी के साथ!!
हुये धड़ा धड़ आन्दोलन थे, जेलें भरी अनेक!
समयोचित जन भावनाओं का लक्ष्य सिर्फ था एक!!

प्रतिकारों या प्रतिशोधों मे करो न देश मलीन!
ओ! शासन के कर्णधारो दो इतिहास नवीन!!
जिससे भारत चमके–दमके उन्नतिशील शिखर पर!
क्षति को करते हो आमंत्रित, क्यो आपस मे लड़ कर!!

व्यवधानो के जाल डाल कर खुश वे विश्व-खिलाड़ी!
विचर न पाई इंदिरा–युग में जिनके भ्रम की गाड़ी!!
रहो तनिक होशियार, न पा जावें वे फिर मौका!
वर्ना यह गाँधी का भारत खायेगा फिर धोखा!!

चला कलह् का दौर—

चला कलह् का दौर, और कुछ बढ़ी रार आपस में !
उतनी खेली चाल कि जितना जो था जिसके बस में !!
पंच मेल का खेल, ठेलता आया था जो दिन, गिन !
उसके हर टकराव बिन्दु पर उभर रहा स्वर-लेकिन !!

इस 'लेकिन' अरु 'किन्तु' भाव ने जन्तु गढ़ा विग्रह् का !
भारत की जनता ने देखा नव इतिहास कलह् का !!
वह् उत्साह् कि जिससे जनता दल को शासन सौंपा !
विश्वासों का कवच ओढ़ाकर सत्ता—आसन सौंपा !!

टूट गया वह्, बिखर गया जब देखी नित्य लड़ाई !
त्याग पत्र दे मुक्त हो गये तब मोरार जी भाई !!

थे दुखी तब लोक नायक,
पल कठिन थे कष्ट दायक !
और कृपलानी बेचारे,
दीखते थे हारे, हारे !

लाख समझाया, कहा पर,
उड़ गये थे वायु में स्वर !
ज्योति जो मिल कर जलाई,
आपसी जिद ने बुझाई !

जो भरा उन्माद जय ने,
था उड़ाया वह समय ने !
विश्व ने उपहास देखा,
बदलता विश्वास देखा !

२८ जुलाई १९७९,

श्री चरण सिंह प्रधान मंत्री पद पर आसीन—

राजनीति में कभी पराभव क्षण न उसे है खलता !
हार जीत को खेल भावना से लेकर जो चलता !!
रहे निरन्तर वह प्रयामरत पुनः सफलता पथ पर !
कठिन समय के उद्वेगों को जो चलता है मथ कर !!

कुशल इंदिरा राजनीति में, आँक रही थी हर क्षण !
जनता दल की उथल-पुथल के सारे ही तो विवरण !!
प्रबल प्रवाह श्री चरण सिंह के हक में था सत्ता का !
भारत के इतिहास पृष्ठ ने आँकी नई व्यवस्था !!

इंदिरा के सहयोग पक्ष से शासन सूत्र संभाला !
सबको ऐसे समीकरण ने था अचरज में डाला !!

एक और परिवर्तित रुख का—

राजनीति है शतरंज, मंज कर खेलें जिसे खिलाड़ी !
जो जितना चालाक, चतुर है बढ़ती उसकी गाड़ी !!
पुनः बनी सत्ता सहयोगिन, वह नेहरू की बेटी !
जो कि यहाँ कुछ दिन पहले तक रही भाग्य की हेठी !!

चरण सिंह उस अल्प काल में संसद तक न गये थे !
इस शतरंजी चाल ढाल के अनुभव हुये नये थे !!
युक्ति-युक्त निज नीति रीति से नव अत्सास किया था !
पलक झपकते पलट देश का फिर इतिहास दिया था !!

जनता के रग-रेशे से थी परिचित, अरु निज दल में !
नई शक्ति संचारित करती थी दृढ़ता से पल में !!
एक और परिवर्तित रुख का दिखलाया था साहस !
लिया समर्थन चरण सिंह से अपने दल का वापस !!

२० अगस्त १६७६,

श्री चरण सिंह का प्रधान मन्त्री पद से त्याग पत्र—

टूट चुका था इंदिरा जी अरु चरण सिंह का मेल !
जो सुविधा थी दुविधा बनकर खेल गई नव खेल !!
पूर्ण हुई आकाँक्षा पद की–रही न पर बैसाखी !
अधिक दिनों तक बंधी न रह पाई थी रुचि की राखी !!

दिया अन्ततः त्याग पत्र–
अरु प्रथक हुये शासन से !
जिस पर थे आरूढ़ हुये वे–
बढ़ कर अपनेपन से !!

२२ अगस्त सन् १६७६,

लोक सभा को भंग कर दिया—

जन मानस को दंग कर दिया,
फिर चुनाव का रंग भर दिया,
राष्ट्रपति ने आश्वस्त होकर;
लोक सभा को भंग कर दिया !

युग ने नई सफलता आँकी,
विजय बड़ी थी यह इंदिरा की,
पथ प्रशस्त था, हुई अग्रसर;
दिखलाने को नूतन झाँकी !

फिर चुनाव की हल चल—

फिर चुनाव की हलचल, हर दल पूर्ण जोश से रण में उतरा !
कहीं जोश था सिंधु ज्वार सा और कहीं था क्षण में उतरा !!
कौन कहाँ तक रहे सफल, संसद में किसका जोर बढ़ेगा !
आने वाला युग क्या करवट लेगा किसकी विजय गढ़ेगा !!

ये चर्चायें थी जनता में, क्रम बहसों का नित चलता था !
इंदिरा मुद्दा लिये बढ़ी थी जनता दल की असफलता का !!
यहाँ, वहाँ तूफानी दौरे, इस क्षण भाषण, उस क्षण भाषण !
राष्ट्र एकता और प्रगति की खातिर किया समर्पित जीवन !!

अब न रहा, आपात काल, मुद्दा प्रतिपक्षी सब हत्प्रभ थे !
क्रियाशील हर ओर निरन्तर विजय हेतु दल सारे तब थे !!

एक दिवस जब ठोकर खाई—

चन्द्र नगर लखनऊ सभा में, सिर ही सिर थे पड़े दिखाई,
संध्या का था समय लगन ने उत्साहों की ज्योति जगाई,
कांग्रेस के दिग्गज नेता, नव युग का आह्वान कर रहे,
तभी हुआ था शोर वहाँ पर, 'इंदिरा आई' ! 'इंदिरा आई' !

किन्तु राह में भीड़ अधिक थी अंधियारे की थी अधिकाई,
अफरा-तफरी जन समूह की, पड़ा न कुछ था और दिखाई,
जहाँ खड़े स्वागत में नेता पुष्प-माल से सभी सुसज्जित !
आगे बढ़ते-बढ़ते सहसा इसी मार्ग पर ठोकर खाई !!

सब घबड़ाये, समझ न पाये, क्या करना है त्वरित रंच भर !
इतने में थी चढ़ी इंदिरा लखते-लखते स्वयं मंच पर !!

मुक्त किया सबको चिन्ता से !
कहा—"वो ही है ठोकर खाते !!
जो आगे बढ कर चलते है !
नही कष्ट जिनको खलते है !!

ठोकर खाकर जीवन बनता !
इसको खूब समझ ले जनता" !!

मिला यही आभास नया था, जनता मे विश्वास नया था !
इंदिरा गाँधी के चेहरे पर, तब जलाल कुछ खास नया था !!

७ जनवरी १६८०,
रायबरेली और मेंढक से संसदीय क्षेत्रों से
श्रीमती इन्दिरा गाँधी विजयी—

शीत युद्ध था नहीं, नहीं यह नीति युद्ध था हर भाषण में !
जो आकर्षित जन समूह को करता था आंदोलित क्षण में !!
दृष्टि लगी थी दुनिया भर की इस चुनाव की ओर तीव्रतर !
और इंदिरा उत्तर-दक्षिण, दोनों को थी चली बाँध कर !!

हुई अंततः इंदिरा विजयी शोभित क्षण आए जीवन में !
भरा नया उत्साह चतुर्दिक देखा था जनता के मन में !!
चमक उठा कौशल्य, चमत्कृत हुआ देख कर था जग सारा !
सफल हुआ था राष्ट्र प्रगति हित इंदिरा गांधी का हर नारा !!

रायबरेली अरु मेंढक ने शीश चढ़ा कर था अपनाया !
परम प्रफुल्लित मन से जुट सम्मान विजय का था दिलवाया !!
भारी बहुमत से दल जीता, भूल गये सब हार पुरानी !
नव निर्माणों के पथ पर थी हुई पुनः आरम्भ कहानी !!

१४ जनवरी १९८०,
घड़ी आ गई पुनः सुशोभन—

कुसुमित आशा, पुलकित जीवन,
उत्साहों से सज्जित आँगन,
सत्तासीन हुई इंदिरा;
घड़ी आ गई पुनः सुशोभन !

दूर हुई जग की दुविधा थी,
भारत में नव ज्योति–प्रभा थी,
स्वस्थ कामना, भव्य भावना;
दृढ़ निश्चय की परम्परा थी !

प्राप्त किया विश्वास देश का,
पलटा फिर इतिहास देश का,
शपथ समारोह पर था केंद्रित;
सारा ही उल्लास देश का !

हुआ नया अध्याय शुरू—

ज्यों ही बैठी निज कमरे में आँख मूंद कर, चिन्तन को !
झुक प्रणाम कर लिया हृदय से प्यारे भारत–दर्शन को ! !
घूम गया था पूरा भारत ही आँखों में, शान्त घड़ी !
ऐसा लगा कि सारी जनता है द्वारे के पास खड़ी ! !

और कह रही"–किया प्रतिष्ठित तुमको फिर इस आशय से !
मुक्त करो हम सब का जीवन बढ़ती दुविधा, संशय से ! !
वर्ग वाद फिर उठा रहा सिर, जातिवाद से टक्कर है !
और धार्मिक उन्मादों का प्रति पल रूप भयंकर है ! !

प्रगति रुकी विज्ञान रो रहा, ज्ञान विधा को जंग लगा !
जनोद्भवों का अनुभव वेत्ता देख रहा है ठगा–ठगा ! !
अनुशासन के उड़े परखचे, दौर पुन. है हिंसा का !
हुआ नया अध्याय शुरू है आज देखिये लिप्सा का ! !

दिशाहीन हो गया मुल्क है आये दिन के रगड़ों से !
बड़ों–बड़ों को फुरसत कब है, यहाँ आपसी झगड़ों से ! !
और बाहरी तत्व यहाँ पर क्रियाशील हैं करवट में !
कई बेलछी काण्ड छिपे हैं दर्द भरी हर सिलवट में ! !

अर्थ व्यवस्था व्यथा सह रही सीमाओं पर खतरा है !
उन्मादी तत्वों के सिर से नशा न अब तक उतरा है ! !
पुन : देश को नई दिशा दे करके आगे बढ़ना है !
और समय के परिवर्तन की हर भाषा को पढ़ना है ! !

कूटनीति के माहिर मुल्कों—

ज्यों ही व्यस्त हुई इंदिरा फिर शासन संचालन में !
एक नई हल चल थी व्यापी कतिपय देशों के मन में !!
लगे सोचने फिर से भारत चला लीक पर अपनी है !
अब मंजिल के हर पड़ाव पर इसकी चाल परखनी है !!

हुई सफल फिर अगर इंदिरा मचा तहलका देगी नव !
सुदृढ़ प्रगति के हेतु करेगी जो भी कुछ होगा संभव !!
एक दिवस वह भी आयेगा, शौर्य–विभा जब टाँकेगी !
सारी दुनिया अंतश्चेतन झाँक–झाँक कर आँकेगी !!

नहीं लिया प्रतिकार किसी से–
और न मन प्रतिशोध भरा !
नहीं किसी के प्रति मन में है–
इस नारी के क्रोध भरा !!

कूटनीति माहिर मुल्कों में कुछ ढीठ सदा अपने मन के !
खेल रहे हैं वे अतीत से सारे जग के जीवन से !!

विश्व शान्ति को लगा पुनः है,
एक बड़ा भारी आघात !
हिन्द महासागर में अनगिन–
छुपे हुये हैं उल्कापात !!

बड़ी योजना अस्थिरता की–
लिये हुये हैं मुल्क प्रवीण !
जिसके कारण सुख सपनों की–
आशायें नित होती क्षीण !!

१४ अप्रैल १६८०,
श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का
संसद भवन में प्रयास—

कलुषित करने को आतुर कुछ लोग अमन के आँगन को !
प्रति दिन खतरा बढ़ा हुआ था, इंदिरा जी के जीवन को !!
देश अहिंसा का लेकिन हिंसा के बढ़े पुजारी हैं !
कदम–कदम पर मानवता को जो पड़ते नित भारी हैं !!

संसद की आँखों के नीचे दुष्ट दृष्टि थी छिपी खड़ी !
आश्चर्य ! कि नहीं किसी की उस पर तब तक नजर पड़ी !!
जब तक उसने घृणित कार्य कर दिया न अपने हाथों से !
खतरनाक जो हो सकता था सब पिछले आघातों से !!

चाकू फेंका था इंदिरा को लक्ष्य बना कर तेजी से !
सधा हुआ मंतव्य प्रकट था इस इंगित खूँरेजी से !!

गया निशाना चूक इंदिरा बची,
मची थी हड़बड़ी !
दृष्य भयानक था पल भर का–
जहाँ कि उसकी कार खड़ी !!

तत्परता से पकड़ा उसको, रक्षक थे तैयार बड़े !
आँका घटनाक्रम इंदिरा ने त्वरित वहाँ पर खड़े–खड़े !!
टली एक अनहोनी लेकिन गजर गया यह खतरे का !
एक नया संकेत दे गया–खा सकती हो फिर धोखा !!

गाँधीवादी देश जहाँ पर परम्परा निर्वाचन की !
लोकतंत्र की है मिसाल यह जगती में अपने पन की !!
इसे कलंकित करने वाले बर्बर, क्रूर अहिंसा से !
भूल रहे हैं उनको भी तो जाना आखिर दुनिया से !!

कहीं किसी का भी जीवन लें, यह मौलिक अधिकार नहीं !
विश्व शान्ति के जन्म स्थल को हिंसा वृति से प्यार नहीं !!
लक्ष्य प्राप्ति की विधि हिंसा से सफल नहीं हो सकती है !
सात जन्म तक की पूजा भी कलुष नहीं धो सकती है !!

२३ जून १९८०,

संजय गाँधी की विमान दुर्घटना में मृत्यु—

आपदाओं को मसल कर जो उठा था सूर्य सा !
लकलका अपना सभी को था दिया जिसने दिखा !!
शक्ति का संबल बना था जो युवाओं के लिये !
पाँच सूत्री कार्यक्रम थे देश को जिसने दिये !!

स्वच्छता, अरु वृक्षारोपण, खास ये मंतव्य थे !
देश की उन्नति विधा के लक्ष्य उसके भव्य थे !!
चित्र थी नव भारती का जिसकी अंतश्चेतना !
सह चुका था जो निरंतर नित नई आलोचना !!

साध कर तादात्म्य मन का पूर्ण हिन्दुस्तान से !
जो पथिक निर्माण पथ पर बढ़ रहा था शान से !!
थी जवानी की कहानी अधखिली जिसकी अभी !
दबदबा थे मानते जिसका यहाँ पर थे सभी !!

था पता उसको न किंचित आ रहा वह प्रात है !
साथ जिसके टूट कर गिरने को उल्कापात है !!
आदतन अपना वैमानिक चाव रखने के लिये !
उड़ चला आकाश में ऋतु को परखने के लिये !!

साथ सक्सेना चतुर था पाइलट पर उस घड़ी !
मित्र द्वै पर थी अचानक मृत्यु की छाया पड़ी !!
वायुपट से खेलता वह यान पलटा खा गया !
सूर्य की उगती किरण पर पेड़ से टकरा गया !!

अंग टूटे, भंग तन थे, यान के टुकड़े हुये !
रह गये उत्साह वृत थे मौत से सिकुड़े हुये !!
खत्म कर दी थी कहानी अरु रवानी जोश की !
जून तेईस की सुबह, ऋतु हो गई बेहोश थी !!

मर्माहत माँ की ममता थी—

पुन: कसौटी पर क्षमता, थी,
उसकी, जिसकी ना समता थी,
था विदीर्ण इंदिरा का मानस;
मर्माहत माँ की ममता थी !

किंतु धैर्य, साहस अवचेतन,
खोकर युवा पुत्र को उस क्षण,
आत्मसात कर गम के झोंके;
रहा साधता आँसू के धन !

हार गई थी स्वयं वेदना—

हार गई थी स्वयं वेदना, जब देखा दृढ़ रुख इंदिरा का !
सहन शीलता का नव रूपक बना हुआ था मुख इंदिरा का !!
युवा पुत्र का असमय जाना सदा–सदा को साल रहा था !
पलक द्वारा की दृढ़ ड्योढ़ी पर, रुकता अश्रु उबाल रहा था !!

अन्तराल की पीड़ाओं को सब्र–बाँध ने बाँध रखा था !
नि: श्वसों पर पूर्ण नियंत्रण कठिन समय ने स्वयं लखा था !!
जो भविष्य की आशाओं का एक सुदृढ़तम केंद्र बना था !
जिसकी अपनी योजनायें थी, रुचि–दर्शन जिसका अपना था !!

अभी–अभी जो विजय प्राप्त कर संसद भवन सजाता आया !
युवा शक्ति को कर्मठता का मार्ग नया दिखलाता आया !!
वह सहसा हा ! काल गाल में, देकर दर्द अनंत सो गया !
उगते प्रेरक युग प्रकाश का लखते –लखते अंत हो गया !!

शेष रह गईं यादें उसकी जीवित चिता समान मेनका !
पुत्र वरुण जिसने दुनिया में है अब तक देखा ही क्या !!
रखा हृदय पर पत्थर जम कर परिजन को था स्वयं संभाला !
असह्य वेदना निज आँचल में छुपा रहा था चश्मा काला !!

हृत् कंपन कह रहा कथा था—

करूणार्द्र भावना की पल–पल में, हृत्–कंपन कह रहा कथा था !
चकित स्वयं था जनमन लख कर इंदिरा का इतिहास व्यथा का !!
दृढ़ संयम की श्रेष्ठ तुला कर परिवर्तन क्षण तौल रही थी !
जितना जब, जैसा आवश्यक, केवल उतना बोल रही थी !!

युवा वर्ग इस दुर्घटना से आहत होकर द्वार खड़ा था !
स्वयं नियंत्रण रखा हाथ में, बेटे का शव निकट पड़ा था !!
धरती से अम्बर तक अविरल अश्रु प्रकंपन का दर्शन था !
कठिन क्षणों में भी इंदिरा का अद्‌भुत टकसाली चिंतन था !!

वह रोई तो युवा वर्ग के कोलाहल का अन्त न होगा !
गम खाने का और उदाहरण जग में कहीं ज्वलंत न होगा !!
मस्तक पर गाँभीर्य चेतना, जगत् दृष्टि तब आँक रही थी !
विषपायी जीवन की क्षमता–वायु पटों पर टाँक रही थी !!

शक्ति स्वरूपा उस माँ ने था—

अन्तर्मन से उभरा आँसू, यदि औरों की तरह ढलेगा !
किस प्रकार शासन संभलेगा, कैसे फिर यह देश चलेगा !!
रखी स्वयं की दशा संभाले, और सभी को धैर्य बंधाया !
शक्ति स्वरूपा उस माँ ने था, जिसका बेटा लौट न पाया !!

घाव हृदय में लगा हुआ था किन्तु सब्र का कवच कड़ा था !
यद्यपि कष्ट हिमालय सा था प्रश्न देश का और बड़ा था !!
दुश्चिंता की कठिन घड़ी भी हार गई थी तब इंदिरा से !
बड़ी भीड़ को स्वयं नियंत्रित करने को जब उठी वहाँ से !!

१७ अप्रैल १९८१,
एयर इण्डिया के विमान में विध्वंसात्मक कार्यवाही—

जिस विमान से पाँच मई को इंदिरा को जाना था बाहर !
विध्वंसात्मक कार्यवाही की दुष्टों ने उसमें जम कर !!
संयोजित तकनीकी खराबी, ला सकती थी नव घातक क्षण !
क्षति महान हो सकती थी तब इंदिरा जी को इसके कारण !!

किंतु समय बलवान, ज्ञान कुछ हुआ नियंत्रण परिपाटी को !
दिया काट था त्वरित अधर में व्याघातों की उस लाठी को !!
विध्वंसों के परिचालक स्वर, थे घातक संकेत दे रहे !
अनहोनी संभावनाओं के थे व्यापक संकेत दे रहे !!

इस प्रकार की कार्यवाही दर्द बढ़ाती रही देश का !
खोल दिया था कुटिलताओं ने एक नया अध्याय क्लेश का !!
दुष्ट जनों पर दुष्टताओं का एक नशा सा चढ़ा हुआ था !
इंदिरा गाँधी के जीवन को हर पल खतरा बढ़ा हुआ था !!

पले अराजक तत्व—

एक ओर आसाम समस्या, और बढ़ी पंजाब समस्या !
दोनों ही कर रहीं भंग नित, नव भारत-निर्माण तपस्या !!
निहित स्वार्थ कुछ और चाहते, जबकि तथ्य कह रहे और कुछ !
राष्ट्र भावना के चिंतक अब करें यहाँ पर आज गौर कुछ !!

पले अराजक तत्व, स्वतव पर करते हर दम चोट रहे हैं !
नित निरीह जनता के हित की करते लूट, खसोट रहे हैं !!
नहीं चाहते ये भारत में रहे अमन, इसकी छवि निखरे !
है अभीष्ट इनका कि भारत टुकड़ों में बंट कर नित बिखरे !!

एक वृक्ष जो आज दक्ष है—

फूट पडी जब–जब आपस में,
देश हुआ औरों के वश में,
व्यापक अंतर होता है, यदि–
मानव सोचे यश, अप यश में !

रावी सतलज, झेलम का दुख, अरु गगा की अगम वेदना !
पढ़ो विगत–इतिहास पृष्ठ पर अगर चाहते सत्य देखना !!
बैर न होता, कलह न होती लड़े न होते यदि आपस में !
किसका साहस था कर लेता इस भारत को अपने वश मे !!

एक वृक्ष जो आज दक्ष है, शाखं उसकी तोड़ रहे क्यो ?
नव भविष्य के प्रति दायित्वों से अपना मुँह मोड़ रहे क्यों ??

राजनीति ने शुरू किये कुछ–
गीत अजब से नये राग में !
फूट पड़ीं विग्रह की लपटं,
भारत के सर सब्ज बाग मे !!

भूल गई बेटे के गम को–
जब परखा अलगाववाद था !
लाख कोशिशें की इंदिरा ने–
स्वार्थ बढ़ाता नित विवाद था !!

१५ जुलाई १६८२,

श्री जैल सिंह भारत के राष्ट्रपति पद पर सुशोभित—

नई शक्ति–निर्माण–वीथिका के लग करके श्रेष्ठ सृजन में !
भव्य भावना, राष्ट्र एकता प्रबल कामना रख कर मन में !!
सर्वोच्चासन पर भारत के जैल सिंह जी हुये सुशोभित !
इंदिरा जी की नीति-रीति का परिचय यह पूर्ण नियोजित !!

मत सोचो वह रक्त बंटेगा—

और चाहिये क्या रे ! बोलो ! गरिमायुत सम्मान दे दिया !
दिया सौंपे सर्वस्व लगन से, पूरा हिन्दुस्तान दे दिया !!

पढ़ो न नित अलगाववाद को, गुरुओं की समझो वह वाणी,
जिसमें नित्य प्रवाहित गंगा, सदभावों की जनकल्याणी,
मत सोचो वह रक्त बंटेगा, जिससे हिंदू, सिक्ख जिये है,
दोनों ने ही तो मिल–जुल कर नीर–क्षीर के स्रोत पिये हैं,
साथ–साथ जीने मरने का भव्य भाव गुमान दे दिया !
पूरा हिंदुस्तान दे दिया !!

राजनीति पर धर्म न हावी, होने देना ही हितकर है,
दोनों अपनी अलग विधा है, प्रथक–प्रथक दोनों के स्वर हैं,
धर्म हुआ हावी अशोक पर पराक्रमी इतिहास खो गया,
घिरा हर्ष, आदर्श धर्म में सारा हिंदुस्तान सो गया,
दिया निमंत्रण पराभवों को मार्ग उन्हें आसान दे दिया !
पूरा हिंदुस्तान दे दिया !!

याद नहीं क्या औरंगजेबी–उन्मादी रुचि इतिहासों को,
भस्माभूत बनाया जिसने मानवता के विश्वासों को,
मुगल सलतनत की गहरी जड़, उखड़ गई थी धर्म–विधा से,
नित विरोध, विद्रोह लगे थे लेने करवट यहाँ–वहाँ से,
इस अवनति ने सोचो कितना जग को साफ प्रमाण दे दिया !
पूरा हिंदुस्तान दे दिया !!

बंटा धार्मिक लय पर भारत, गारत वह सद्भाव हो गया,
जो अकबर के स्वर्णिम युग में, बे मिसाल अपनत्व बो गया,
जलियाँवाला बाग, त्याग का यह जो सुस्मारक है भाई !
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख सभी के उत्सर्गो की प्रबल इकाई,
सम्यक बलिदानों की रुचि ने स्वाभिमान का गान दे दिया !!
पूरा हिंदुस्तान दे दिया !!

याद करो रणजीत सिंह की, शासन पद्धति पराक्रमों को,
अलग रखा था सदा धर्म से जिसने राजनयिक नियमों को,
उसके युग में सबको चाहत, राहत अरु सम्मान मिला था,
वह शेरे पंजाब देश को हित–चिंतक गुणवान मिला था,
जिसने सबको देश भक्ति का अद्‌भुत मंत्र महान दे दिया !
पूरा हिंदुस्तान दे दिया !!

सन् १९८२ (एशियाड)—

विश्व भ्रमण से प्राप्त किये थे जिसने अनुभव श्रेष्ठ विधा के,
ओलंपिक के प्रति आकर्षण भी देखे थे नित दुनिया के,
युवक, युवतियों में खेलों के प्रति रुझान को देख निकट से;
थे प्रबन्ध कर दिये प्रगति के, शिक्षा के अरु हर सुविधा के !

अल्प समय में बनी योजना, बूटा सिंह, राजीव लगाये,
लगे निरंतर, रहे रात दिन जो अनथक उत्साह जगाये,
'खेल गाँव' अद्भुत नव सुस्थल, दिल्ली में निर्माण कराया,
जगह–जगह पर आकर्षण के केन्द्र अनोखे गये बनाये !

इन्द्रप्रस्थ–क्रीडाँगन जिसका भव्य शिल्प अरु दृश्य निराला,
बहुकोणों की छवि को रच कर वास्तु कला में जिसको ढाला,
जहाँ सहस्रों की संख्या में दर्शक गण लाभान्वित होते;
पाकर उल्लासों का उद्भव और कीर्ति का नया उजाला !

एशियाड संपन्न हुये जब धाक जम गई विश्व पटल पर,
जो लगता था कठिन पूर्व में, दिखा दिया उस पथ पर चलकर,
रही मान्यता थी इंदिरा की जीवन की हर एक डगर में,
उसे सफलता मिली, कार्य को नहीं टालता है जो कल पर !

ख्याति मिल गई थी भारत को–
इंदिरा का था नाम हो गया !
सांस्कृतिक आकर्षण–छवि से–
भारत गौरव धाम हो गया !!

स्वर्ण पदक इंदिरा गाँधी को–
औलम्पिक, समराँच दे गये !
लगन शीलता का भारत को–
कीर्ति विधान–वृतान्त दे गये !!

१ नवम्बर १९८२,
पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया–उल–हक से
दिल्ली में सद्भावना भेंट—

आगत–स्वागत में नैतिकता, अरु प्रवीणता सदा दिखाई !
राजनयिक सम्बन्धों में नित विश्व शाँति की ज्योति जगाई !!
आत्मजयी बन गई इंदिरा, आत्म शक्ति का रूप खिला था !
वही प्रभावित हुआ त्वरित था, जो भी उससे जहाँ मिला था !!

रखा सदा ही भारत हित था, नित समक्ष हर मुलाकात में !
वजन दिखाई देता सबको था इंदिरा की खरी बात में !!
पाकिस्तानी राष्ट्राध्यक्ष से भेंट वार्ता की तत्परता !
दर्शाती थी विश्व शान्ति की दोनों देशों पर निर्भरता !!

अमन रहा तो चमन खिलेगा, सम्बन्धों के प्रस्तावों का !
नहीं कलह का युग हितकर है, युग हितकर है सद्भावों का !!
यद्यपि तानाशाह राह पर अपनी हो चलते आए हैं !
विश्व मान्य नेताओं ने पर मार्ग उन्हें भी दिखलाए हैं !!

इंदिरा गाँधी की तो अपनी क्षमता का इतिहास निराला !
उसने भारत अभिलाषा के था अनुरूप स्वयं को ढाला !!
हुये प्रभावित स्वयं जिया थे देख विलक्षणता इंदिरा की !
सुदृढ़ भाव संबंधों की थी मिली उन्हें हर पग पर झाँकी !!

जुड़ा नया अध्याय पुनः था सद्भावों की उन्नत लय का !
घटा भार सा लगा दीखने संदेहों का औ संशय का !!
रहें सुरक्षित दोनों के हित विश्वासों का दौर बढ़े नव !
विश्व शान्ति के लिये यत्न हों, जितने जो कुछ भी अब संभव !!

७ मार्च १९८३,

सातवाँ गुट निरपेक्ष–शिखर सम्मेलन –

ज्योति जो नेहरू जला कर थे गये विश्वास की !
बन गई उपलब्धि वह है विश्व के इतिहास की !!
युद्ध के परिणाम से था त्रस्त जब, जग देखता !
सामने आई विधा थी श्रेष्ठ गुट निरपेक्षता !!

चाल थी साम्राज्यवादी रात दिन जब सालती !
और गुट बाजी, गुटों की थी भ्रमों में डालती !!
थी विनाशक प्रवृति जग में, ठग रही विश्वास को !
कर रही थी नित कलंकित विश्व के इतिहास को !!

क्षुद्रता भर स्वार्थवादी लय, विचरती गा रही !
शान्ति के हर संतुलन के भाव थी बिखरा रही !!
ताकतें जग में बड़ीं जो, वे दिखातीं रंग थीं !
आणविक तकनीक से नित शांति करती भंग थीं !!

प्रगतिवादी देश या तो उनके पिछ लग्गू बनें !
या अभावों के निरंतर ढेर रखलें सामने !!
विश्व को यदि है बचाना इन व्यूहों के जाल से !
प्रेरणा लेनी सदा होगी जवाहर लाल से !!

थे जनक वे नीति के जो आज गुट निरपेक्ष है !
स्वाभिमानी जिंदगी का राज़ गुट निरपेक्ष है !!
मान्यता जिसको मिली है विश्व के हर छोर से !
अब दबा सकता न कोई है किसी को जोर से !!

आत्मजयी मुस्कान साध कर—

मार्च सात ऐतिहासिक तिथि आई थी हिंदुस्तान में !
स्वयं सिद्धि का रूप लखा था जब हर एक मेहमान में !!
गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन आयोजित था शान से !
जब दिल्ली की छवि के सपने दुगुने ज्योतिर्मान थे !!

द्वार सजा विज्ञान भवन का, स्वय द्वार पर इंदिरा !
देख रही थी तौर-तरीका स्वागत और प्रबन्ध का !!
नटवर सिंह की तत्परता ने-भर दी नई उमंग थी !
इंदिरा की स्फूर्ति देख कर, विश्व-चेतना दंग थी !!

हर प्रकार की सुविधा और व्यवस्था गुण का ध्यान था !
मगन–लहन अरु निष्ठा व्रत से दमका हिंदुस्तान था !!
बाह्य देश का जो भी अतिथि आया उसका ज्ञान था !
दिया द्वार पर ही से उसको यथा उचित सम्मान था !!

आत्मजयी मुस्कान साध कर रखती थी शालीनता !
कदम–कदम पर गौरवान्वित करती रही प्रवीणता !!
महामहिम फाइडेल कास्त्रो जो वर्तमान अध्यक्ष थे !
भाव विभोर हुये थे लख कर ज्यों ही आज समक्ष थे !!

हिंद सभ्यता और,
संस्कृति का उद्‌भव संदेश था !
थी उमंग, नव रंग लिये अरु,
गौरवान्वित देश था !!

तालियों की गड़गड़ाहट—

था सभा सुस्थल सजा, युग था नये विश्वास का !
लिख रहा नव पृष्ठ था जो विश्व के इतिहास का !!
राजनीतिक आर्थिक–सदभाव के प्रस्ताव थे !
अरु अमन के वास्ते हर ओर दुगने चाव थे !!

एशिया, यूरोप व अफ्रीका के कतिपय देश थे !
दक्षिणी अमरीकियों के खास कुछ परिवेश थे !!
आपसी रंजिश, कलह अरु युद्ध जो भी है जहाँ !
शान्ति अरु सद्‌भाव का हो दौर फिर से अब वहाँ !!

आपसी संबन्ध सबके हों, मधुर, उल्लास से !
सीख लेनी चाहिये सबको विगत इतिहास से !!
ख्याति भारत को मिली शाश्वत सफलता के लिये !
जगमगाए आत्म निर्भरता के अनगिन थे दिये !!

आँकने में दृष्य अद्‌भुत वे घड़ी शुभ दक्ष थीं !
इंदिरा जी जब सुशोभित हो रही अध्यक्ष थीं !!
फाइडेल कास्त्रों की स्नेहिल भव्यता का दृष्य था !
तालियों की गड़गड़ाहट का अनोखा दृष्य था !!

२७ सितम्बर १९८३,

राष्ट्र मण्डल देश के शासकों का सम्मेलन—

प्रति पल चिंता राष्ट्रोन्नति की, अरु मानव-कल्याण की !
थी विशेषता इंदिरा जी के शाश्वत गौरव-प्राण की !!
राष्ट्र मण्डलीय देश करें क्या वर्तमान परिवेश में !
किया इसी से सम्मेलन का आयोजन निज देश में !!

कहीं-कहीं अनुभव, जग बैठा विध्वंसों की धार पर !
और कहीं तो सर्वनाश के कारण, आज कगार पर !!
आज व्यवस्थित जो भी मुल्क हैं वे साधन संपन्न हैं !
किन्तु विश्व में कुछ ऐसे हैं जो कि आज विपन्न हैं !!

अर्थ व्यवस्था उनकी भी दृढ़ होने का अब प्रश्न है !
और उपेक्षाओं के कल्मष धोने का अब प्रश्न है !!
हो विकास हर एक किसी का बचे विश्व टकराव से !
मानव का कल्याण सुनिश्चित होगा, शान्ति–स्वभाव से !!

ख्याति भारतवर्ष की—

थी पुनः हल चल, अमल में कार्य विधि आने को है !
ख्याति भारतवर्ष की फिर विश्व में छाने को है !!
था लखा प्रत्यक्ष जग ने, प्रेरणा प्रत्यक्ष थी !
राष्ट्र मंडल की सभा की इंदिरा अध्यक्ष थी !!

मारग्रेट थ्रैचर प्रभावित थी प्रबल उल्लास से !
सज रहा था राष्ट्र–गौरव प्रगति के इतिहास से !!
राष्ट्र जितने भी उपस्थित थे सभी को हर्ष था !
जम गया हर एक मन पर चित्र भारतवर्ष का !!

६ अक्टूबर १९८३,

राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया पंजाब में—

जब कि दरारें पड़ीं अमन के खंभो अरु मेहराब में,
विध्वंसात्मक रुख न आ सका जब शासन की दाब में,
हत्याओं का मासूमों की देखा था जब सिलसिला;
राष्ट्रपति शासन लागू था किया त्वरित पंजाब में !

राजनीति की जीत हुई या हार समय ने था पढ़ा,
अपने–अपने दावे प्रस्तुत करते थे सब बढ़ा चढ़ा,
नगर–नगर की डगर–डगर पर भय के बढ़ते पाँव थे;
साम्प्रदायिक दुर्भाव निरन्तर जाता था हर ओर बढ़ा !

ज्योति अद्भुत स्वर्ण मंदिर-

मान्यता श्रद्धा सहित जग मध्य अमृतसर की है !
ग्रंथ वाणी और शुचि अरदास के हर स्वर की है !!
ज्योति अद्भुत स्वर्ण मंदिर की प्रखर है विश्व में !
प्रेम अरु सद्भाव का मंदिर अमर है विश्व में !!

पुण्य सुस्थल शान्ति दायक केन्द्र यह भगवान का !
है यहाँ भण्डार सत्पथ भावना, सद्ज्ञान का !!
कामना इसकी सदा से है मनुज—कल्याण में !
हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख सब का योग है निर्माण में !!

यह महाव्रत, कीर्तन अरु हरि–कथा का केन्द्र है !
धार्मिक सद्भाव प्रेरित व्यवस्था का केन्द्र है !!
गूँज इसमें आज तक है गुरुओं के संदेश की !
सौम्यता अरु शिष्टता है देन इस परिवेश की !!

उग्रवाद ने पकड़ी डोर—

राजनीति के नये उबाल,
जग को नित अचरज में डाल,
भूल गये कि धर्म प्राण है;
अपना भारतवर्ष विशाल !

रखें धर्म का वह परिवेश,
जिसमें उभरे कहीं न क्लेश,
राजनीति से रख कर दूर;
रखें मान्यता पूर्ण विशेष !

किन्तु यही तो है दुर्भाग्य,
सत्पथ से लेकर वैराग्य,
नित्य कलह के उद्वेगों से;
जोड़ दिया भारत का भाग्य !

उग्रवाद ने पकड़ी डोर,
मचा तहलका चारों ओर,
शासन और प्रशासन था ठप्प;
उग्रवादियों का नित जोर !

कहाँ धर्म अरु कहाँ विवेक,
भय का ग्रास मनुज प्रत्येक,
उग्रवाद की चढ़ते भेंट;
निरपराध, निर्दोष अनेक !

सड़कें जब थी लहू लुहान,
लरज उठा था हिन्दुस्तान,
असहयोग शासन से प्रतिक्षण;
बना समस्या–सूत्र प्रधान !

······सदमा हिन्दुस्तान का--

चाहे सिक्ख मरा या हिन्दू–रक्त बहा इंसान का !
इसमे अधिक और क्या होगा सदमा हिंदुस्तान का !!

रावी रोई, सतलज रोई,
रोई उज्ज्वल आब थी,
कैसी हालत हुई हाय रे !
इस प्यारे पंजाब की !

पूछ रही है उजड़ी माँगें,
माँ की आँखे लाल हैं,
बोलो रे ! आतंकवादियों,
कहाँ हमारे बाल हैं ?

और जुल्म कितने ढायेगा, नारा खालिस्तान का !
इससे अधिक और क्या होगा सदमा हिंदुस्तान का !!

यह कैसी रे ! रीति, नीति है ?
घृणित यहाँ प्रतिशोध की,
पग-पग पर मासूम निहत्थे;
जले आग में क्रोध की,

भाषा ने अलगाव वाद की-
सबका हृदय हिला दिया,
बन्धु-भावना के अमृत में;
किसने जहर मिला दिया ?

होगा दौर खत्म यह कब तक और यहाँ विष पान का !
इससे अधिक और क्या होगा, सदमा हिंदुस्तान का !!

गाँधी के इस शान्ति-सदन में-
फिर हिंसा का दौर रे !
कौन जानता क्या कर डाले,
बढ़े चरण में और रे !

पंगु प्रशासन, अनुशासन मृत,
शिक्षण क्षेत्र अजीब हैं,
उनका दोष कहाँ पर क्या जो-
मारे गये गरीब हैं ?

खत्म सिलसिला किया मनुज ने अपनी ही पहचान का !
इससे अधिक और क्या होगा सदमा हिंदुस्तान का !!

अंटार्कटिका विजय—

एक श्रेष्ठ उपलब्धि खास, जिसने इतिहास बनाया !
कठिन मार्ग पर बढ़ चलने का मन विश्वास जगाया !!
अंटार्कटिक, हिम–देश नितान्त जहाँ हिम–सागर !
नित्य नये खोजी दल भेजे, क्रमवत स्नेह दिखा कर !!

३ अप्रैल १९८४ अन्तरिक्ष अभियान—

पूर्व भास्कर उपग्रह से था नाम हुआ भारत का !
जुड़ा नया अध्याय सफलताओं की नव सायन का !!
अंतरिक्ष में प्रथम भारतीय–प्रिय 'राकेश' पठाए !
नव विकास, विज्ञान प्रगति के अग्रिम चरण बढ़ाए !!

यह महान उपलब्धि रूस के–सहयोगी श्रम–व्रत से !
हैं अटूट संबन्ध जुड़े जिसके नित भारत से !!
जब पूछा 'राकेश' सुनर से, 'भारत लगता कैसा' ?
अंतरिक्ष से कहा हर्ष से–'सारे जहाँ से अच्छा' !!

२३ मई १९८४ पर्वतारोहण में कीर्तिमान—

पर्वतारोहियों को प्रेरित कर–साहस नित्य बढ़ा कर,
किया देश को गौरवान्वित–सपने किये उजागर,
मिली प्रेरणा थी इंदिरा से–कुछ विशेष लक्ष्यों की;
चढ़ी बच्छेन्द्री पाल–हिमालय की चोटी पर जाकर !

यह उपलब्धि बड़ी है जग में !
शक्ति भरे हर उठते पग में !!

हाय रे ! दुर्भाग्य—

संस्कृति, साहित्य-रुचिमय जिस हृदय का प्रण रहा !
हाय ! उसने ही प्रथकता वाद का नित व्रण सहा !!
देखती हर धर्म को थी जो रही समभाव से !
मोर्चा लेना पड़ा उसको यहाँ अलगाव से !!

देश के उत्थान में जो व्यस्ततम थी हर घड़ी !
हाय रे ! दुर्भाग्य उसको यंत्रणा सहनी पड़ी !!
था बढ़ाया नित्य गौरव राष्ट्र हिंदुस्तान का !
हो गया दुश्मन हठी स्वर आज उसकी जान का !!

था दिया जिसने हिला हर दुर्ग को अरि-दंभ के !
हाय ! विघटन कार्य उसके देश में आरंभ थे !!
मंदिर-औ-मस्जिद व गुरुद्वारे को जो थी पूजती !
धार्मिक-उन्माद से वह रात दिन थी जूझती !!

स्वप्न थे देखे सदा जिसने अमन के वास्ते !
पड़ रहा चलना उसे था अब दमन के रास्ते !!
मानवीय चेतना से नित्य जिसको प्यार था !
देश का विघटन उसे किंचित नहीं स्वीकार था !!

३ जून सन् १९८५—

रख कर निज उर पर पाषाण,
संकट में डाले निज प्राण !
सेना को देकर आदेश,
कहा"-मिटे-जन-जवीन क्लेश"!

मर्माहत उस क्षण अत्यंत,
हृदय वेदना रही अनंत !

क्यों आई थी दुखद घड़ी वह ?

सोचें और विचारें युवजन, नर नारी अरु अनुभव जेता,
चाव प्रथकतावादी का यदि उग्रवाद को शह ना देता,
क्या संभव था रक्तपात वह जिसके कारण मचा तहलका,
था संभव आतंकवाद क्या जोर जमाता अपने बल का,
जिसका है सिंदूर पुँछ गया रोती है अब खड़ी खड़ी वह !
क्यों आई थी दुखद घड़ी वह !!

जिसने देखे यहां, वहाँ अरु जहाँ–तहाँ शोणित के धारे,
फटी रह गई उसकी आँखें असह्य दर्द अरु गम के मारे,
क्या होगा उन बन्धु गणों का जो चहुंदिशि हैं देश धरा पर,
कुछ तो सोचा होता नित आतंकवादियों को उकसाकर,
आशायें लेकर बैठे हैं नित्य प्रगति की बड़ी–बड़ी जो !
क्यों आई थी दुखद घड़ी वह !!

जन्म दिया आतंकवाद को !

संदेहो ने अरु संशय ने,
क्षुद्र स्वार्थ की उन्मत लय ने,
जीवन की अतिशय सुविधा ने,
माँगो की दुर्दान्त विधा ने,

निर्माणो के नये मार्ग पर–किया खड़ा है नित विवाद को !
जन्म दिया आतंकवाद को !!

कही और जिनके सचालक,
नही धर्म के है जो पालक,
जो यथार्थ से दूर बहुत है,
और नशे मे चूर बहुत है,

जन समाज के मध्य निरंतर–जो कि बढाते हैं फिसाद को !
जन्म दिया आतंकवाद को !!

प्रश्न हुये आतंकवाद के बारे मे जब दुनिया भर के !
उठा लिया था खतरनाक पग मन मे साहस सहसा भर के !!
थी चुनौतियों से खेली वह पूर्णतः अपने जीवन में !
लेश मात्र भी कलुष न रक्खा कभी किसी से लेकिन मन मे!!

किन्तु वाह्य षडयंत्रों ने—

रही सोचती, मन विषाद से भरा हुआ था उस क्षण !
निर्णय को जब कड़ा किया स्वर, उग्रवाद के कारण !!
अपनों के प्रति सपनो मे भी कभी न यह था सोचा !
किन्तु वाह्य षडयंत्रों ने था शान्ति-प्रपात दबोचा !!

महन शक्ति जब हो समाप्त थी गई, चेतना परखी !
उभर रही थी जो जन-जन में स्वयं वेदना परखी !!
जीवन के सबसे कठोरतम निर्णय की वह वेला !
बोली खुद से-" देख, समय ने खेल यहाँ क्या खेला" ??

जो होगा परिणाम एकता रखनी आज वतन की !
चाहे देनी पड़े यहाँ अब बलि अपने जीवन की !!
और अधिक अब कलुष नहीं स्वीकार, राष्ट्र-उपवन में !
पुन: जगे विश्वास बुद्धि-बल, वाणी और नयन में !!

३ नवम्बर १९८४,

अंतिम प्रयाण का दृष्य—

है खण्डित विश्वास, त्रास की यह दुख मंडित गाथा !
झुका दिया है इसने जग में मानवता का माथा !!
और भयंकर परिणति, जिसमें इंदिरा की कुर्बानी !
चिन्हित करती कई प्रश्न शोणित की नई रवानी !!

कदम-कदम पर इस स्थिति को जान चुका यह जग है !
क्या कुछ था उस पुण्य स्थल में वह इतिहास अलग है !!
लिखे नया इतिहास समय अब, कलुष कहाँ से जागे ?
क्यों शिकार आतंकवाद के होते मनुज अभागे ??

अपने ही जब सपने तोड़ें, कौन सवाँरे मनको !
कितना सहना पड़ा ह्रास है अब तक हाय ! वतन को !!
"आ, अब उठ अन्तिम प्रयाण का दृष्य तुझे दिखलाऊँ !
श्रद्धा का हर पक्ष, लक्ष्य कर आगे चल, समझाऊँ" !!

कहते हैं यह जग मिथ्या है, मिथ्या है हर ठाँव जमाना !
आता जो भी यहाँ धरा पर, पड़ता उसको जाना !!
अजब धारणा बुद्धिवाद ने धरती पर फैलाई !
कर्म स्थल है अति उत्तम, यह बात समझ ना आई !!

आना उसका जिसके आते, अग-जग खुशी मनाए !
जाना उसका, जिसके जाते, दुनिया अश्रु बहाए !!
रचना है इतिहास यहाँ पर जिसे रक्त से अपने !
पूरा करता वही यहाँ पर निर्माणों के सपने !!

वह देखो अब बन्द द्वार हैं तीन मूर्ति के इस पल !
आज नहीं है कल जैसी अब किंचित भी तो हलचल !!
अब प्रबन्ध में चला-चली के लगे व्यक्ति वे सारे !
तीन दिनों से खड़े रहे जो-अंदर गम के मारे" !!

सब्र करो रे ! सब्र करो हाँ !

"मौन दिशायें बतलाती हैं कौन कहाँ पर सिसका !
उतना होता मर्माहत वह, नाता जैसा-जिसका !!
बड़ा भवन यह आज बन्द है, जनता के दर्शन को !
देख रहे हो लम्बे चौड़े अरु सूने आँगन को !!

दर्शनार्थी पुनः जुड़ रहे दोनों ओर सड़क के !
पूर्ण प्राप्ति की ओर बड़े है-यत्न यहाँ अब तक के !!
यहाँ शान्ति में लीन इंदिरा-कहतीं लेटे-लेटे-
"सब्र करो रे ! सब्र करो हाँ ! मेरे प्यारे बेटे' !!

"लगा हुआ है साथ सभी के जग में जीना, मरना !
जिससे हो निर्माण देश का काम वही तुम करना !!
राजघाट के निकट शान्ति वन आज पुकार रहा है" !
चढ़ता सूरज बढ़ी भीड़ को पुनः निहार रहा है !!

देह पार्थिव आज विदा अब लेगी इसी भवन से !
जुड़ी हुई इसकी हर करवट इंदिरा के जीवन से !!
इंदिरा का बलिदानी-जीवन, उसकी सफल कमाई !
आकर्षण का केंद्र बन गई, सारी दुनिया आई !!

दिन का प्रहरी-श्लोक शान्ति के तन्मय बोल रहा है !
नया पृष्ठ जन-मन करुणा का फिर से खोल रहा है !!
कई मील तक पंक्ति बद्ध फिर आकर लोग खड़े हैं !
शव यात्रा की मार्ग-प्रशस्ति के सभी प्रबन्ध बड़े हैं !!

यहाँ खड़े हैं हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई भाई !
सभी साध कर, स्वर ठहरें हैं, शव कब पड़े दिखाई !!
अन्तिम झाँकी पा लेने का मन-उत्साह बड़ा है !
उठतीं-बढ़ती लहरें देखो, जन सागर उमड़ा है !!

मन में रहता था नित—

ज्ञानी, ध्यानी, जन साधारण सबने यत्न किये हैं !
अबल, सबल, अरु निर्धन, धनपति श्रद्धा-सुमन लिये हैं !!
संघर्षों का रूप हठीला झूका न उसको पाया !
मन में रहता था नित जिसके सबका दर्द समाया !!

उत्कर्षों की छवि अंकित है जिसकी कर्म-डगर पर,
रही अग्रसर जन-सेवा-हित जो कि यहाँ निरन्तर,
सहे कष्ट पर जो न तनिक भी जीवन में घबराई,
संघर्षों से जूझ-जूझ कर जिसने कीर्ति बढ़ाई,

तूफानों ने कदम-कदम पर लौह लाडली पाया !
चली सभी की पीर समेटे वही पार्थिव काया !!
जीवन की हर एक परीक्षा ने उसको अजमाया !!
मन में रहता था नित जिसके सबका दर्द समाया !

जिसने जन–कल्याण–भाव का उठा रखा था बीड़ा,
कौन समझ पाया है जग में, उसके मन की पीड़ा,
पीड़ा वह भी जिसे प्रदर्शित किया न किंचित जग में,
रहा सदा सद्भाव उमड़ता जिसके प्राण विहग में !

उसने देशोत्थान–भाव का गीत सदा ही गाया !
मन में रहता था नित जिसके सबका दर्द समाया !!

जिसकी दलितोद्धार–कामना, बीस सूत्री–लय है,
जिसके उन्नति–शीर्षकों से बंध कर चला समय है,
खोज रही हैं लाखों आँखें–जिसकी जीवन–लय को,
दिया फटकने पास न जिसने किंचित् भी था भय को,

उत्सर्गों का मार्ग नया उस इंदिरा ने दिखलाया !
मन में रहता था नित जिसके सबका दर्द समाया !!

वर्तमान भारत, यत्नों की जिसके अमर कहानी,
और प्रगति को दी है जिसने बढ़ कर नई रवानी,
बलिदानों की बनी साक्षी– कोटि–कोटि अब आँखें,
श्रद्धानत ये झुकी हुई हैं सब विटपों की शाखें,

विश्व शान्ति के प्रबल दौर ने उसका यश नित गाया !
मन में रहता था नित जिसके सबका दर्द समाया !!

लोक प्रयाण—रथ—

लो प्रयाण–रथ, तोप शोक–स्वर साध बढ़ रहा आगे !
अनुभव करते तीन मूर्ति के पट हैं आज अभागे !!
अब जाकर फिर लौट न पाये कभी इंदिरा माता !
रह–रह कर हर क्षण जीवन का इसे याद है आता !!

फूलों से था प्यार-प्यार भी अद्भुत सुमन–सुमन से !
पुष्प–गंध सो ख्याति जुड़ी थी, इंदिरा के जीवन से !!
मृदुल भाव कश्मीर कुंज की पुष्पावलियाँ गुम्फित !
लड़ी–लड़ी में गँथी हुई हैं भावनाओं सी ज्योतित !!

है गुलाब की पाँख–पाँख में साख स्नेह के स्वर की !
काश्मीर ने माना इसको बेटी अपने घर की !!
लाल, लाल बेहाल आँख हैं आज विदा के क्षण में !
ध्यान मग्न संवेदन शीला, अभिधा झुकी चरण में !!

तप्त दुपहरी, शव यात्रा को देख रहा अग-जग है !
धीरे-धीरे, ठहर-ठहर कर उठता अगला पग है !!
है सैनिक-सम्मान समूचा, आज यहाँ पर पल-पल !
कौन हृदय है ऐसा जो कि हो न रहा हो विह्वल :!

सैनिक तीनों सेनाओं के पाँते बाँध खड़े हैं !
श्रद्धायुत कर्तव्य साध कर जैसे चित्र जड़े हैं !!
उल्टे शस्त्र, वस्त्र विह्वल व्रत भरते करुण कराहें !
कदम-कदम उत्कंप, दिखाई देता भरता आहें !!

शव यात्रा के बढ़ते-बढ़ते व्यथा और थी बढ़ती !
और मौन की अंतहीन सी करुणा पथ पर चढ़ती !!
अपने को बलिदान कर दिया जिसने स्वयं वतन पर !
चली छोड़ कर छाप अमिट है वह सबके जीवन पर !!

नित बलिदानी परम्परा के आगे नत कर माथा !
गायगा नित झूम जमाना, जिसको जीवन-गाथा !!
उस भारत की लौह लाडली का लो शव यह आया !
जिसने देखा, उसके मन ने सहसा झटका खाया !!

जब तक सूरज चाँद रहेगा—

राजीव, सहित परिवार कार में शव वाहन के पीछे !
सोच रही है बहू सोनिया आँखें मीचे–मीचे !!
"कौन प्यार देगा मैया सा, हमको अब जीवन में !
सूना–सूना नित्य लगेगा, इतने बड़े भवन में" !!

धीर मना राजीव, बहुत गंभीर प्रधान वतन के !
उलट रहे हैं मन ही मन में पन्ने निज जीवन के !!
नाना, पापा–लघु भ्राता की हाये ! चिता जलाई !
और आज दुर्भाग्य, अधर में चली छोड़ कर माई !!

दुखी और संतप्त हृदय है पर मन बाँध रखा है !
और वक्त ने भी कस–कस कर पूरा अब परखा है !!
यह जीवन मे कठिन परीक्षा की अब आज घड़ी है !
पद प्रधान मंत्री का, कौशल की अब जुड़ी कड़ी है !!

अंतिम दर्शन—

दग्ध हृदय है धरती रोती, सिसक रहा है अंबर !
अगम वेदना लिये व्योम में विलख रहा है दिनकर !!
सभी वेदना ग्रस्त पस्त से दीखे दर्शक प्रति क्षण !
ध्वनि विस्तारक यंत्र मिसक कर देते सारा विवरण !!

और मातमी धुन सेना के वाद्य बजाते चलते !
बढ़ा शोर करुणार्द्र स्वरों का—चाव जहाँ थे गलते !!
"जब तक सूरज चाँद रहेगा, अमर इंदिरा गाँधी" !
इस व्यापक उद्घोष—जोश ने सारी दुनिया बाँधी !!

धीमे—धीमे, सैनिक दस्ते स्वर को साधे बढ़ते !
राम—नाम की धुन दर्शक—गण साथ—साथ है पढ़ते !!
जड़—चेतन—मन अश्रु प्रपूरित, सब कुछ ही निष्प्रभ है !
जिस तक गूंजी उसकी वाणी हत प्रभ रह ही नभ है !!

अन्तिम दर्शन हेतु बढ़ी जाती है मनुज-हिलोरें !
भीग रही हैं व्यक्ति, व्यक्ति की पलकों की अब कोरें !!
पूर्ण दमकता उज्ज्वल आनन जिस—जिसको भी दीखा !
तन्मयता से बलिदानी—व्रत उसने क्षण भर सीखा !!

नहीं भीड़ का ओर—छोर है ढकी हुई हैं राहें !
सबके मन की चाह बढ़ कर आत्मोत्सर्ग सराहें !!
लगी टूटती पंक्ति पुलिस दल बढ़ता आगे आकर !
पूर्ण व्यवस्थित करता पथ को त्वरित दिशा दिखला कर !!

आह ! मौत ने आज—

उजड़ी, उजड़ी सी लगती है अब दिल्ली हस्ती !
बिन्दु-बिन्दु से सिंधु बनाई इंदिरा ने जो बस्ती !!
जो मदूजर दूर से आया, रोजगार को ताका !
त्वरित प्रेरणा मिली प्रगति की नाम लिया इंदिरा का !!

आह ! मौत ने आज छीन ली, उनकी अपनी माई !
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण से आये जो भाई !!
हृदय मसोसे साथ-साथ यह कई लाख की जनता !
ज्यों-ज्यों बढ़ता है शव आगे, सागर चला उफनता !!

खड़ी छतों अरु छज्जों पर हैं ये ललनायें रोतीं !
महिला-गौरव की सुस्मृतियाँ, दम को साध पिरोतीं !!
सिसकी का स्वर जो भी सुनता वह ही चोख रहा है !
गम में डूबा विश्व समूचा हर पल दीख रहा है !!

जिसको सुनने काम छोड़ कर आते थे नर-नारी !
मंत्र मुग्ध जनता रहती थी जिसके आगे सारी !!
शान्त पड़ी वह शान्ति-चेतना, विश्व वेदना सहली !
अब न कहेगी किंचित भी कुछ, जो कहनी थी कहली !!

काम-काज हैं बन्द सभी अरु सबको है यह चिंता !
किस प्रकार बर्दाश्त करेगी, यह दुख धरती दुखिता !!
शीश झुकाए सोच रहे हैं वे भी जो अपराधी !
विश्व मान्य नेता थी सचमुच अमर इंदिरा गाँधी !!

इसीलिये तो सौ से ज्यादा शासनाध्यक्ष पधारे !
पहुंच रहे हैं राजघाट के निकट आज ये सारे !!
ढली दुपहरी, निकट चिता के ज्यों ही है शव आया !
यमुना-तट के आस-पास बढ़ गई शोक की छाया !!

सैनिक दस्ते सधे खड़े हैं हो न कहीं अनहोनी !
पड़े और कुछ अधिक न विपदा यहाँ सभी को ढोनी !!
लाल वर्ण का मंच लालिमा-ज्योति प्रसार रहा है !
और इंदिरा का प्रयाण-पथ, विश्व निहार रहा है !!

राजघाट के निकट सभी ने अपनी जगह बनाई !
और शान्ति वन से भी देखो शव है पड़ा दिखाई !!
सत्य-अहिंसा-शान्ति समन्वित इस सुस्थल की छवि रे !
पंक्ति-पंक्ति मे आँक, झाँक कर युग के प्यारे कवि रे !!

इस पर वह तन आज विर्मजित होगा जो नित ज्योतित !
रह कर करता रहा स्वयं को, देशोत्थान-सर्मपित !!
कही दार्शनिक भाव-चाव में अंत क्रिया के दीखे !
शत-शत वंदन निज नेता का जग भारत से सीखे !!

चंदन चिता सजाई—

चंदन चिता सजाई जिस पर कोमल पुष्प पड़े हैं!
पहले से ही संस्कार को पंडित यहाँ खड़े हैं!!
हिंदू पंडित और पारसी-धर्म पुजारी ठहरे!
दीख रहे हैं आज यहाँ पर सभी शोक में गहरे!!

नभवाणी के यंत्र प्रसारित करते कार्य-विधा हैं!
सब बतलाते, चंदन, घी अरु पुष्प कहाँ समिधा है??
खड़े स्वजन, परिजन, पुरजन हैं, पत्रकार दम साधे!
चली इंदिरा साथ सभी के स्वर को बाँधे-बाँधे!!

उठा लिया जब शव इंदिरा का खड़ी तोप से नीचे!
रोये प्रतिनिधि अखिल विश्व के आँखें मीचे मींचे!!
श्लोक धार्मिक गूँज रहे हैं आयत, मंत्र-गुरुवाणी!
पूर्ण आस्थावान रही थी जन-जीवन-कल्याणी!!

देख रहे अन्त्येष्टि प्रथा को-जग के प्रतिनिधि सारे!
सोच रहे सब-मानव-चेतन-भाव यहीं पर हारे!!
कौन, कहाँ कब किस सायत में जाता, किसने जाना!
इस कारण ही विधि-विधान को सारे जग ने माना!!

शोक मग्न है मदर टैरेसा पलकें भीगी–भीगी !
विजय लक्ष्मी–नयन सजल हैं चल दी हाय भतीजी !!
है बच्चन परिवार उपस्थित, अरु कपूर परिजन हैं !
लता और मेहता जुबीन के भीगे आज नयन हैं !!

दत्त सुनील, राजेन्द्र निकट से देख रहे हैं झाँकी !
हाय ! आज अंत्येष्टि–घड़ी है कोटि–जनों की माँ की !!
नेहरू अरुण, राजीव संग हैं, राहुल पौत्र खड़े हैं !
ज्यों ही आया निकट चिता शव, अश्रु स्वयं उमड़े हैं !!

कैसा है रे ! दृश्य, बिछुड़ने की यह अंतिम वेला !
देख रहा दम साध आज है जन–मानस का मेला !!
ऐसी मृत्यु मिले भाग्य से, होती प्राप्त उसे ही !
करके निज–सर्वस्व समर्पित जो रहता जन–सेवी !!

इन्दिरा गाँधी अमर रहे—

जग प्रसिद्ध होती थी अक्सर जिसकी जब–तब आँधी !
चिर निद्रा में आज लीन हैं वही इंदिरा गाँधी !!
यह अंतिम पड़ाव दैहिक गति, होगी यहाँ विसर्जित !
मंत्रोच्चारण की विधि से हैं श्रद्धाभाव समर्पित !!

अंतिम झाँकी, बाँकी छवि पाकर दर्शकगण विह्वल !
रोक न पाते हैं अपने को–सिसक रहे हैं पल–पल !!
'इंदिरा गाँधी अमर रहे' यह उच्च गगन तक नारा !
बता रहा है–शोकाकुल है जग का जग ही सारा !!

खड़े पुत्र राजीव, बहुत गंभीर, धैर्य रख मन में !
कैसे–कैसे दिवस देखने पड़ते हैं जीवन में !!
साथ प्रियंका, राहुल, विह्वल वरुण, सोनिया गाँधी !
खड़ी मेनका श्रद्धानत हैं, देख समय की आँधी !!

मंत्रोच्चारण की ध्वनि के संग–परिक्रमा की विधि यह !
संस्कृति अरु संस्कारों की है बड़ी पुरातन निधि है !!
विनत भाव से श्रद्धांजलि क्रम हम सबको बतलाता !
मानव का है संस्कार विधि से अटूट यह नाता !!

लगी चिता को आग–
राग ध्वनि शोक पूर्ण है गूँजी !
चुकी दीखती हर दर्शक के–
यहाँ धैर्य की पूंजी !!

महा महिम अतिथि गण सारे–
शीश झुकाए खड़े हैं !
किन्हीं–किन्हीं की आँखों से तो–
आँसू टपक पड़े हैं !!

धूम्र रेख बतलाती यश है, मानव के जीवन का !
लपट–लपट पर केन्द्रित है आकर्षण नयन–नयन का !!
कंचन काया जली चिता में ले चन्दन की लाली !
पंच तत्व की मिलन प्रथा यह भारत मध्य निराली !!

सत्य–ज्योति मिल गई सत्य से–

हुई पार्थिव देह लीन है–अग्नि–लपट में मिल कर !
धूम्र–कला में निखर रहा है जीवन का यश खिल कर !!
सूर्य चला है कर प्रणाम अब उस महानतम स्वर को !
जो कि प्रेरणा रहा विश्व में देता हर घर, दर को !!

सत्य–ज्योति मिल गई सत्य से, कृत्य विश्व में निखरा !
जय हो जयति जय आज इंदिरा, यश–अबीर है बिखरा !!
तोड़ चली हो बड़ों–बड़ों के गुरु–घमंड अरु भ्रम को !
कायम रख कर त्याग–राग अरु शुचि बलिदानी–क्रम को !!

मरती है यह देह पार्थिव, यश न कभी मरता है !
स्वयं–सिद्धि–आदर्श भाव को याद जगत करता है !!
यों तो जग में नित सहस्त्र जन आया ही करते है !
और आयु की अवधि पार कर जाया भी करते हैं !!

किन्तु उसी मानव का जीवन सूर्य समान चमकता !
जन–सेवा–कर्तव्य–भाव में रत न कभी जो थकता !!
जो निर्बल को देकर बल है जग के मध्य उठाता !
उसका यश मानव ही क्या नित समय–चक्र है गाता !!

जो रहता हिमगिरि सा दृढ़ है सत्य–भाव की लय में !
उसे न संशय हो सकता है अपनी कहीं विजय में !!
कभी–कभी यदि असफलता भी आकर डेरा डाले !
जग जाते उत्साह भाव के उसमें चाव निराले !!

जिसने गौरव दिया पिता को–
पति को और वतन को !
लिया सदा समभाव–चाव से–
हर उत्थान, पतन को !!

उस इंदिरा ने संतति का भी–
मार्ग प्रशस्त किया है !
राष्ट्र–एकता हेतु जहर का–
प्याला स्वयं पिया है !!

अग्नि शिखा यह दिखा रही है तन्मयता मंजिल पर !
है प्रभाव पड़ता प्रत्यक्ष है यहाँ सभी के दिल पर !!
यह अंतिम वह ठौर, जहाँ कर गौर विश्व का प्राणी !
सोचा करता मानव–काया, जग में आनी–जानी !!

स्वाभिमान से जो जीता है उसका यश बढ़ता है !
लिखता है इतिहास उसे ही, पाठक भी पढ़ता है !!
जब–जब जिसने अंतिम है संस्कार किसी का देखा !
तब–तब रखता अपने आगे निज कर्मों का लेखा !!

दुष्कर्मों की परिणति, अक्सर लाश सड़क पर सड़ती !
हट जाती है दृष्टि समय की उस पर पड़ती–पड़ती !!
अच्छे कर्मों का फल मिलता, अंत समय तक उसको !
जन समाज–सेवा–हित–व्रत की लगन रही है जिसको !!

है मिसाल ज़िंदा इंदिरा की लाखों लोग खड़े हैं !
इस अंतिम अभिवादन के दुनिया में अर्थ बड़े हैं !!
यह स्थिति भी मिले भाग्य से, सत्कर्मों के बल से !
मरणोपरान्त भी होने जिसकी सुस्मृतियों के जलसे !!

५ नवम्बर १९८४ भस्मावशेष-अस्थि-चयन—

भस्मावशेष इंदिरा गाँधी के, चुन-चुन पुष्प सुमन से !
सहेज रहे राजीव पुत्र हैं-ढुलके अश्रु नयन से !!
किन्तु धैर्य, संतुलन, सजीला-रखता प्रणवत मन है !
ऐतिहासिक गुणता-परिचायक, यह अवशेष-चयन है !!

कलश-कलश में, सुयश आत्म-गुण उस जीवन की आशा !
रही अंत तक जन सेवा की जिसकी द्रुत अभिलाषा !!
राज्यधार सरिता-जल से मिल भव्य भावना प्रसरे !
धरा उर्वरा के कण-कण की कीर्ति निरन्तर संवरे !!

पंच तत्व, शुचि सत्र-भाव गुण रचें गर्व जन-मन का !
गौरव शाली छोर-छोर हो अपने श्रेष्ठ वतन का !!
लहर-लहर से मिल कर कण-कण नव जीवन प्रण साधे !
रहे सदा ही एक सूत्र में जन्म भूमि को बाँधे !!

६ नवम्बर १६८४—आनंद भवन में अस्थि कलश—

पूर्व प्रबन्ध इलाहाबाद में–स्वागत को थे तन्मय !
शुभागमन के बारे में था नहीं किसी को संशय !!
चूँकि नवम्बर दो को होती चाव भरी अगवानी !
यहाँ एकत्रित होने को थे स्वतंत्रता सेनानी !!

लेकिन हाय ! क्रूर काल ने काटी डोर अधर में !
दुखद सूचना से व्यापा था भारी शोक नगर में !!
जन्मी, पली, बढ़ी जिसमें थी वह प्रयाग है रोता !
सोच रहा है क्या इस जग में ऐसा भी है होता ??

'अस्थि कलश' को देख–देख कर आती याद पुरानी !
हाय ! आज आनंद भवन में पलटी वही कहानी !!
जब नेहरू के फूल यहाँ पर दिल्ली से थे आये !
जड़ चेतन सब फफक पड़े थे–दिल में दर्द समाये !!

और आज वह स्नेह-लाडली, जो आँगन में खेली !
जिसने निज जीवन में अक्सर आपदायें ही झेली !!
पंच तत्व की परिणति की छवि बन कर है अब आई !
आगत-स्वागत भूल गये सब गहन उदासी छाई !!

पुत्र श्रेष्ठ, राजीव साथ हैं-मन संताप बड़े हैं !
दर्शनार्थ प्रिय लोग सहस्रों पांतें बाँध खड़े है !!
भौतिक जीवन-संबन्धों का अंत हुआ है मन रे !
शेष आत्मिक, भाव रह गया, गुण आनंद भवन रे !!

भजन—कीर्तन, मंत्रोचारण. लगातार है जारी !
किन्तु भवन यह पूछ रहा-"छवि अब वह कहाँ हमारी" !!
जिसकी वाणी जनकल्याणी, तेज सूर्य सा दमका !
कौन लेखनी लिख पायेगी-लेख आज के गम का !!

अब तो केवल याद रह गई-और रह गई बातें !
चित्र देखते रह जायेंगे, दर्शक आते—जाते !!
जाओ, लो अलविदा लाडली ! मिल कर गंग-लहर से !
जुड़ी रहेंगी सुस्मृतियाँ ही केवल अब इस घर से !!

११ नवम्बर १९८४,

प्रधान मंत्री और इंदिरा जी के प्रिय पुत्र

श्री राजीव द्वारा हिमालय की चोटियों पर अस्थि-विसर्जन—

मिली प्रेरणा हिमखंडों से जिसको नित जीवन में !
शैल-शैल की कीर्ति इंदिरा रही संजोये मन में !!
हिमगिरि से था प्यार-प्यार था गंगा की छल-छल से !
जम जाते थे प्रकृति गोद में उत्साहों के जलसे !!

शैल-सुता, गंगा यमुना सी रही इंदिरा दृढ़ स्वर !
मीलों-मीलों चली दूर तक उत्साहों से भर कर !!
जनकल्याणी-भव्य-भावना, सीखी गिरि-शृंगों से !
चित्र-विचित्र निहारे जम कर, पुलकित थी रंगों से !!

खास तौर से गंगोत्री का सुस्थल था मन भाया !
इसीलिये तो अस्थि कलश है गया यहाँ पर लाया !!
यहाँ विसर्जित होकर भू-तल सींचेगी जुट मन से !
राख रखेगी साख, प्यार कितना है रहा वतन से !!

भाग्यवान राजीव, अस्थियाँ पवन मार्ग से लाये !
रम्य रूप शोभा अनूप शुचि श्रद्धा-पुष्प चढ़ाये !!
धार-धार मनुहार प्यार भर, स्वागत करती छल-छल !
आओ इंदिरा ! कीर्ति-विभा अब होगी प्रति पल उज्ज्वल !!

मिले शीर्ष गौरव भारत को—

शुचि, प्रशान्त प्रेरक भावों को अब कण-कण में भर दो !
मिले शीर्ष गौरव भारत को, नव जीवन को वर दो !!
तीर्थ सजे, उपजे मृदु चाहें-खिले आस्था मन मे !
हर अभाव मिटता जाये अब अपने श्रेष्ठ वतन से !!

गिरि-शृंगो से सुयश पताका लहरे, फहरे प्रति पल !
सुधा-वृष्टि हो खेत-खेत मे—हो भविष्य नित उज्ज्वल !!
बढो भस्म तुम रस्म निभाती प्रिय नेहरू के मन की !
रोम-रोम मे बसी हुई थी जिसके साध वतन की !!

निश्चय ही तुम से बल पाये-जन-समाज यश गाये !
ज्यो-ज्यों बढ़ती रहे प्रगति सग नाम तुम्हारा आये !!
जन्मे फिर से यहाँ इंदिरा तुमसा कौशल व्रत ले !
कोई नेहरू लिख-लिख करके निज संतति को खत दे !!

सिंधु सजे, अरु बिन्दु-बिन्दु भी यश-सागर बन जाये !
अग-जग मे फिर से भारत की यश ध्वजा फहराये !!
रोम-रोम मे पुलक भरे नव, विश्व-शान्ति के प्रण की !
रचे कहानी, लिये रवानी बढ़ते प्रगति-चरण की !!

अंधकार दूर हो—

इंदिरा जी ने लखा स्वप्न था, समता, जन–उद्भव का !
उतना वह कर चली कि जितना जीवन में संभव था !!
उनकी इच्छा थी, निर्धनता मिट जाये भू तल से !
कहीं न वंचित रहें मनुज अब, स्वच्छ वायु अरु जल से !!

अर्थ संतुलन रहे देश में–कहीं न कोई तरसे !
सुख-औ-शान्ति की ध्वनि गूंजे नित गाँव-नगर, हर घर से !!
अंधकार हो दूर, अशिक्षा रहे न शेष वतन में !
आत्मजयी बनने के जागें भाव सभी जन–मन में !!

गृह–कलह, अलगाववाद की पढ़े न कोई भाषा !
वर्तमान जुट नव भविष्य की पूरी कर दे आशा !!
भूख सताये नहीं किसी को, सुख सम्पन्न धरा हो !
रहे प्रचुर धन धान्य, विश्व का हर भंडार भरा हो !!

शीघ्र ऐटमी युग समाप्त हो–शान्ति विराजे घर–घर !
मिटे युद्ध–उन्माद जगत से यत्न करें सब बढ़ कर !!
युवा शक्ति निर्माण कार्य में जुट कर्तव्य निभाये !
जीवन की उपलब्धि नई हो–क्षण न निरर्थक जाये !!

आँख दान करने की उनकी इच्छा हुई न पूरी !
दे न सकी गुर्दे वे अपने, हाय ! अरे, मजबूरी !!
असमय उनकी मृत्यु बनी है प्रगति–मार्ग में बाधा !
हो न सका वह लक्ष्य पूर्ण जो जीवन में था साधा !!

रहे शेष जो कार्य वतन की शक्ति करे अब पूरे !
असम और पजाब राज्य के मसले पड़े अधूरे !!
सजग रही कर्तव्यों के प्रति निज से रही उदासी !
आखिर कर संहार गई है अपनी भूल जरासी !!

जो होना था लिखा हुआ था, विधि के लेखन बल से !
किन्तु आत्म चिंतन अभिलाषा आगे रुचि निर्मल से !!
अटल प्रकृति का नियम, किन्तु भ्रम पैदा करता मानव !
दास बने यदि नहीं भ्रमों का ह्रास नहीं है संभव !!

पन्ने-पन्ने पर सुस्मृति के—

श्रद्धा-सुमन चढ़ाने आये लोग याद कर सिसके !
इंदिरा के उद्‌गार बन रहे श्रुति-संबल किस-किस के !!
तनिक सोच कर वृद्ध विचारे पृष्ठ पुरातन मनके !
जब-जब बोली थी विशेष वह झोंके सजे पवन के !!

"खास-खास उद्धरण यहाँ पर प्रकट करूँ ले सुन रे !
तुझको भी बनना भविष्य-व्रत, बेटा सुन कर गुणं रे" !!

१५ अगस्त १९७०-बीस सूत्री-कार्य क्रम—

बीस सूत्री यह कार्य विधा है राष्ट्र-चेतना-व्रत रे !
इसे इन्दिरा या दल का तुम कार्य समझना मत रे !!

१५ अगस्त १९८१ अहिंसा व्रत—

हिंसा से किंचित भी संभव उन्नति नहीं जगत की !
शक्ति नये निर्माणों को नित मिले अहिंसा व्रत की !!

१५ अगस्त १९७४ निर्धनता—

निर्धनता हम मिटा सकेंगे स्वाभिमान के बल से !
क्रमवत श्रम साधक बनने से सजें खुशी के जलसे !!

११ नवम्बर १९७५-अर्थ नहीं यह—

लोक तंत्र का अर्थ नही यह, हो बस एक ही नेता !
और रहें अनुयायी केवल-वह हो शक्ति-विजेता !!

१९ नवम्बर १९७५-अनुशासन—

अनुशासन अरु कठिन परिश्रम, देश-धर्म के गुण हैं !
लगन शीलता-उन्नति-व्रत ये सत्य-कर्म के गुण हैं !!

४ अप्रैल १९८३ धार्मिक उन्माद—

कभी गुलामी में जकड़ा, अब देश स्वतन्त्र खड़ा है !
किन्तु धार्मिक-उन्मादों का अभी बढ़ा झगड़ा है !!
ऐसे भी हैं तत्व इसे क्षति पहुंचाते हैं अक्सर !
यह कमजोरी मानवता की-कतिपय रूप भयंकर !!

१२ दिसंबर १९८३-हिंसक गतिविधियाँ—

जग में हिंसक गति-विधियों को सब मिल करें नियंत्रित !
मानव-मन, संकीर्ण-भावना करती रही विभाजित !!

१६ जनवरी १९८४-वैज्ञानिक प्रगति—

मुझे खुशी है सब वैज्ञानिक-ग्राम्य-समस्या समझे !
उन्हें मिले प्रोत्साहन पूरा-प्रश्न न कोई उलझे !!

१२ मार्च १९८४-बन्धु भावना—

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई अब दायित्व निभावें !
बन्धु-भाव से अखिल विश्व में निज पहचान करावें !!

५ सितम्बर १९८४-पंजाब का मसला—

सांप्रदायिकता का रंग देकर स्थिति को उलझाया !
वाह्य तत्व हैं क्रियाशील जो झगड़ा सुलझ न पाया !!

इक्कीसवें राष्ट्र मंडल सम्मेलन में—

रहे आत्मजित हम सकट में–डिगा न पायी गुलामी !
मानवता, आदर्श हमारा–आदि काल से नामी !!

भारत सोवियत संघ मित्रता—

जब सब ने कर लिया किनारा !
बना सहायक रूस हमारा !!

पड़ौसी देश में हथियारों की होड़—

निन नव खतरे देख रहे हम हिंद महा सागर में;
है तनाव, अरु पाक जखीरा बढ़ा शस्त्र निज घर में !!

६ सितंबर १९८४–लोक तंत्र—

लोक तंत्र है सर्व श्रेष्ठ विधि, दुनिया में शासन की !
जितनी है आसान दीखती–उतनी यहा कठिन भी !!

श्रद्धांजलियाँ—

देश–विदेश सभी के मन में श्रद्धा भाव अपरिमित,
मानव–सेवा हेतु इंदिरा रही सदैव समर्पित,
कथा बनी बलिदान प्रथा की घर–घर होंगे चर्चे;
विश्व समूचा भव्य भाव के कारण आज प्रभावित !

भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह—

बुद्धिमान, मृदु भाषी इंदिरा–राष्ट्र–एकता लौ थी !
अब अखण्डता को भारत की फिर से मिली चुनौती !!

समाचार पत्रों की वाणी—

बढ़ता रुख साम्राज्यवाद का करता जब मन–मानी,
तब इंदिरा ने स्वाभिमान स्वर को दी नई रवानी,
अब अनाथ हो गया देश है, वेश मलिन धरती का;
थर्रायी संवेदनायें हैं, काँप रही है वाणी !

अमरीका के राष्ट्रपति श्री रीगन—

"महा कष्टकारी घटना यह, भाव विह्वल हर मन का" !
कहते–कहते गला रुँध गया राष्ट्रपति रीगन का !!

तड़प उठा स्वर साध मास्को—

इंदिरा गाँधी की हत्या, साम्राज्यवाद-जिद नूतन !
त्रस्त हुआ है विश्व समूचा इस जिद के ही कारण !!

ब्रिटिश साम्राज्ञी-एलिज़बेथ—

एक आह, के साथ कहा साम्राज्ञी-स्वर विह्वल ने !
"गौरव शाली नेता खोया आज राष्ट्र मंडल ने" !!

बंगला देश के राष्ट्रपति जनरल इरशाद—

स्नेह युक्त मातृत्व भावना, छिटकी यहाँ, वहाँ थी !
वह महान महिला भारत की, 'बंगला' की भी माँ थी !!

श्रीमती मारग्रेट थेचर-प्रधान मंत्री इंगलैंड—

नहीं त्रासदी यह भारत की-यह है सारे जग की !
इंदिरा गाँधी साहस-द्युति में सबसे रही अलग थी !!

श्री व्यंकट रमण–उपराष्ट्रपति भारत—

आत्म ज्योति से इन्दिरा जी ने सारा जग चमकाया !
गाँधी जी के पद चिन्हों पर चल बलिदान चढ़ाया !!

सोवियत राष्ट्रपति श्री चेरनेनको—

अमर नाम इन्दिरा गाँधी का रहे रूस में प्रति दिन !
रखे सोवियत जनता उसकी सुस्मृतियों को गिन–गिन !!

पाकिस्तानी राष्ट्रपति श्री जिया–उल–हक—

बल देती सामान्यकरण पर, संबन्धों के हर क्षण !
अरु पड़ौस का रखा हृदय में था सदैव हित–चिंतन !!
दोनों दशों की मैत्री को रखा अमन के नग में !
मूल्यवान, निर्णायक उसका योगदान था जग में !!

श्री लंका के राष्ट्रपति श्री जयवर्धने—

निकट पड़ौसी देश क्लेश में जब–जब भी थे आए !
तब–तब इन्दिरा गाँधी ने थे समुचित कदम उठाए !!

वियतनाम के राष्ट्रपति—

विश्व शान्ति की अमर ज्योति थी जग में श्रीमती गाँधी !
जिसने सारी दुनिया को थी स्नेह–डोर से बाँधी !!

श्री मोरार जी देसाई भू० पू० प्रधान मंत्री–भारत—

निंदनीय यह कृत्य और है कायरता का द्योतक !
यह संहारक प्रवृति देश के लिये निरंतर घातक !!

संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री पेरेज–डी–कुमार—

खो दिया है विश्व ने वह साहसी–जन –प्राण–नेता !
जो समर्पित भावना से शान्ति पथ का थी विजेता !!

पोप जॉन पाल द्वितीय—

रक्त में पहले हां डूबा विश्व, यह गम की कड़ी है !
हा ! जघन्य अपराध की यह शृंखला कितनी बड़ी है ??

चौ० चरण सिंह भू० पू० प्रधान मंत्री–भारत—

भारतीय इतिहास का है कष्टकारी आज का दिन !
घोरतम अपराध है यह, और मानवता अभागिन !!

श्री जगजीवन राम–भू० पू० केंद्रीय मंत्री—

राष्ट्रीय आपदा यह, जितनी आँके उतनी कम है !
इन्दिरा गाँधी की हत्या हर किसी व्यक्ति का गम है !!

श्री अटल बिहारी वाजपेयी अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी—

यद्यपि थे मतभेद राजसी, उसने साहस बोया !
थी महान पुत्री भारत की, जिसको हमने खोया !!
इन्दिरा थी अद्वितीय जगत में, सबने उसको माना !
इसीलिये है आज खल रहा सबको उसका जाना !!

श्री फारूख अब्दुल्ला–भू० पू० मुख्य मंत्री कश्मीर—

राजनीति–मतभेद रहे पर आदर भाव अयाँ था !
मैंने उनको दिल ही दिल में माना अपनी माँ था !!

श्री एन० टी० रामाराव–मुख्य मंत्री आंध्र प्रदेश—

देश भक्ति और राष्ट्र एकता का वह रही समन्वय !
देशोन्नति हित रहा सदा ही था जीवन का आशय !!

फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष श्री यासर अराफात—

बल मिला अपनत्व को जिससे रही आशा बड़ी !
खो दिया है उस बहन को हाय ! मैंने इस घड़ी !!

न्यूजी लैंड के प्रधान मंत्री श्री डेविड लैंग—

आत्मज्योति थी वह अपने गुटनिरपेक्ष चलन की !
महाशक्ति थी, प्रबल प्रेरणा अपने आंदोलन की !!

अमरीका के डेमोक्रेटिक प्रत्याशी मॉंडेल और गेराल्डाइन फरारो —

यह प्रहार है लोकतंत्र पर सारी दुनिया भरके !
महात्याग कर गई इंदिरा देश धर्म पर मरके !!

न्यूयार्क के मेयर श्री डेविड कोच—

हिंसा के नित घृणित भाव हैं मन में उभरे जिनके !
भारत किंचित हो न विभाजित दुष्कृत्यों से उनके !!

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद—

ऊँचा करके गई विश्व में राष्ट्र संघ का माथा !
विश्व शान्ति के लिये इंदिरा की प्रेरक है गाथा !!

गुट निरपेक्ष देशों की समन्वित श्रद्धांजलि —

वह महान नीतिज्ञ गुणी थी—आत्म जयी स्वर-जेता !
शान्ति दूत अरु विश्व प्रगति की न्याय मसीहा, नेता !!

अमरीकी लेखक—एल्फ बुलबेंस—

बहुत बड़ा षडयंत्र—यह हत्या, अरु अपराध बड़ा है !
सबके मन में असह्य वेदना, ऐसा शूल गड़ा है !!

इंगलैंड के भू० पू० प्रधानमंत्री श्री जेम्स कैलहन—

शोक ! शोक ! हाँ महा शोक है, बोझ बड़ा है मन पर !
प्रिय मित्र की इस हत्या पर, असमय हाय ! निधन पर !!

अमरीका के भू० पू० विदेश सचिव डा० हेनरी किसिंजर—

दृष्टिकोण सुस्पष्ट रहा नित, राष्ट्र एकता का था !
किया इंदिरा ने भारत का सदा उच्च था माथा !!

श्री दत्त रामफल राष्ट्रकुल सचिव—

शोक ग्रस्त है आज राष्ट्रकुल—असमय हाय ! निधन से !
मिले प्रेरणा, स्नेहिल स्वर थे इंदिरा जी के मन से !!

राष्ट्रपति मारकोस—

हिंसा के इस घातक छल ने बलि ली है इंदिरा की !
यही सिलसिला रहा अगर तो कुछ न रहेगा बाकी !!

फिल्म निर्माता पीटर उस्तीनोव—

साम्यवाद अरु पूंजीवाद की, केवल थी न लड़ाई !
सही बात-मस्तिष्क खुला हो, जो इंदिरा ने पाई !!

श्री माओ भण्डार नायके भू० पू० प्रधान मन्त्री श्री लंका—

महिलाओं का शक्ति-स्रोत थी, बहन इंदिरा गाँधी !
मानवता की सही ज्योति थी, बहन इंदिरा गाँधी !!

चीनी प्रतिनिधि मंडल—

समस्याओं को हल करने की क्षमता थी अद्भुत ही !
इंदिरा गाँधी विश्व शान्ति की लेकर ज्योति बढ़ी थी !!

तमिल ईलम मुक्ति मोर्चा—

अविरल रुचि संघर्ष देख साम्राज्यवाद घबराया !
देकर अपने प्राण लगन का उसने मूल्य चुकाया !!

श्री जूलियस नियरेरे राष्ट्रपति तंजानिया—

गुट निरपेक्ष-देश-एकता की वह शक्ति बड़ी थी !
विकासशील देशों को लेकर आगे नित्य बढ़ी थी !!

फिनान्सियल टाइम्स लंदन—

भारत का अस्तित्व और कृतित्व सजा दृढ़ता से !
इंदिरा के बिन आज विश्व है त्रस्त बहुत दुविधा से !!

बेगम नुसरत भुट्टो—

क्षति भारत की नहीं सिर्फ यह, क्षति है उस दुनिया की !
लोकतंत्र की सफल प्रणाली की जिस-जिस में झाँकी !!

पाकिस्तान टाइम्स—

जहाँ कही भी होती हिंसा-होती वह दुखमय है !
इस घटना पर विश्व दुखी है, बड़ा कठिन समय है !!

टाइम्स आफ जाम्बिया—

कठिन समय है यह, भारत में लोकतंत्र थर्राया !
यही प्रार्थना-टले कष्ट जो शान्ति धरा पर आया !!

श्री एच० के० एल० भगत सूचना और प्रसारण मंत्री—

चली गई माँ, राष्ट्र समूचा-शोक ग्रस्त है अब रे !
रहे देश की अमर एकता करो प्रार्थना सब रे !!

स्टेटसमैन—

राजनीतिक संकटों की थी न परवाह राह में !
अंत तक आई न थी कोई कमी उत्साह में !!

इंडियन एक्सप्रेस—

महा शक्ति की गति लक्षित थी उनके उठते पग में !
अद्वितीय साहस की प्रतिमा इंदिरा जी थी जग में !!

आज विदा के क्षण—

आज विदा के क्षण, विवरण है कठिन बहुत हर क्षण का,
चित्र, प्रबल उत्सर्ग भाव का—इंदिरा जी के प्रण का,
बार-बार आँखों के आगे, लाता दृश्य समर्पण,
दहल रहा करुणार्द हृदय है धरती के जन-गण का !

बढ़ा सदा धरती का गौरव, तव-महिमा से जग में,
रहो दमक के साथ चमकती, सदा श्रेय के नग में,
शक्ति चुनौती से भिड़ने की, पाएँ स्मरण--प्रभा से,
गतिमय हों विद्युत सी लहरें, अब हर उठते पग में !

बना विश्व इतिहास गया है प्रीति—प्रभाव तुम्हारा,
खटकेगा अब प्रगति-मार्ग पर यहाँ प्रभाव तुम्हारा,
तुम जैसी यश-कीर्ति प्रभा को कौन पहुंच सकता है;
कौन जगत में पा सकता है श्रेष्ठ स्वभाव तुम्हारा !

स्वर्ग द्वार पर—

स्वर्ग द्वार पर स्वागत को ठहरे हैं वे सब नेता,
अपने युग के रहे विलक्षण जो नर वीर विजेता,
सद्य कल्पना आंक रही हैं, तोरण द्वार सजीले;
सुभाशीष के साथ-साथ हर व्यक्ति बधाई देता !

दादा मोतीलाल. त्याग-व्रत पथ पर कदम बढ़ा कर,
साम्प्रदायिक सदभाव-चाव में, गाँधी प्राण चढ़ाकर,
ज्योर्तिमय कर निज जीवन को, बने स्वर्ग के राही;
शान्ति और सद्‌भाव गुणों से सजते गए जवाहर !

आतुर जग के हाथ सौंप कर-कीर्ति अमन की लय की,
निज का दे बलिदान रोक दी-उठती लहर प्रलय की,
भारत भू के लाल बहादुर लिख इतिहास अनूठा;
बढ़ें स्वयं उत्सर्ग-मार्ग पर बजा दुंदुभि जय की !

ये सब ही आश्चर्य चकित हैं, लख बलिदान तुम्हारा:
साम्प्रदायिक सद्‌भाव चाव पर यह एहसान तुम्हारा,
रक्त बिंदु मे अंकित कर दी • नव उत्सर्ग कहानी;
ऋणी रहेगा युगों-युगो तक हिन्दुस्तान तुम्हारा !

जुड़ा स्वयं तादात्म्य आज बलिदान-भावना निखरी,
स्नेह भावना अधिक वेग से मन-आँगन में उभरी,
सबसे बढ़कर सिद्ध हो गया इंदिरा त्याग तुम्हारा;
भव्य ज्योत्स्ना द्वार स्वर्ग के नवोंल्लास से बिखरी !

तुम बढ़ो हम से भी आगे—

झेल करके जिंदगी के हर बड़े संघर्ष को,
आत्म निर्भर तुम बना आई हो भारत वर्ष को,
एक युग था, जब सुई तक भी न बनती थी जहाँ;
आज औद्योगिक लहर ने छू लिया उत्कर्ष को !

सिलसिला हर क्षेत्र में है अब नये निर्माण का,
मंत्र फूंका तुमने ऐसा श्रेष्ठ, जन—कल्याण का,
प्रगति के अध्याय नूतन आज जुड़ते जा रहे;
चाव उभरा हर किसी में संकटों से त्राण का !

एक जुट होकर हरें अब देश वासी क्लेश को,
और घर—घर दें अहिंसा के अमर संदेश को,
स्वाभिमानी चाव की भर कर सरस गुण—भावना;
सिद्धि साधन का पढ़ाया पाठ तुमने देश को !

राष्ट्रीय चेतना के जो रखे अस्तित्व को,
प्रेरणा भर कर सजाए हर समय व्यक्तित्व को,
जो प्रबल उत्साह से हर राह को चमकाए नित्य;
सौंप कर आई युवा कंधों पे उस दायित्व को !

चल न पाये अब अधिक दिन माँग खालिस्तान की,
आँख दी है खोल तुमने आज हर इंसान की,
वक्त पर अंकित किया है स्वर तुम्हारे रक्त ने;
साख ऊँची करके तुम आई हो हिंदुस्तान की !

आओ, स्वागत स्नेह सिंचित भावना से हर घड़ी,
है तुम्हारे पुत्र से भी देश को आशा बड़ी,
हर कहीं चर्चा रहेगी, नित्य इसकी विश्व में;
इंदिरा तुमने घड़ी बलिदान की ऐसी कड़ी !

है यह निश्चित, छोड़ कर आई अधूरे काम जो,
आने वाले युग के सबने लिख दिये हैं नाम वो,
है खुशी इस बात की राजीव ने डट कर कहा—
"देश वालों, बढ़ चलो कर्त्तव्य को अंजाम दो" !

तुम बढ़ी हम से भी आगे. इससे आगे लक्ष्य नव,
देखता राजीव का गांभीर्य चिंतन–पक्ष नव,
हैं हमें विश्वास फिर इतिहास ले करवट नई;
कीर्ति के जायेंगे रोपे, फिर यहाँ पर वृक्ष नव !

"लो समाप्त हो गई कथा यह, व्यथा करे कम हर मन की !
देश भक्ति की शक्ति प्रबलतम बने साध हर जीवन की !!
अमर इंदिरा, जो कि हृदय में, लिये क्रान्ति-इतिहास रही !
और संजोए कार्य क्रमों में जनता का विश्वास रही" !!

उठे वृद्ध यह कहते-कहते, ले नाती को संग चले !
आने वाले नव भविष्य की भरते नई उमंग चले !!
बालक जो कल का प्रण पालक, अरु निर्माता निज युग का !
कई बार था बीच-बीच में भीड़ देख करके चौंका !!

भारत का इतिहास श्रवण कर अरु पा इन्दिरा-दर्शन को !
चला सोचता इस प्रकार ही ढाले वह भी जीवन को !!
कुछ विशेष कर कार्य जगत में वह भी नाम कमाएगा !
और हिंद का श्रेष्ठ नागरिक एक दिवस कहलाएगा !!

चलते-चलते यमुना तट पर वृद्ध रुके अरु कहा-"सुनो !
लहर-लहर क्या कहती है यमुना की भाषा पढ़ो गुणो !!
बढ़ते रहना, चलते चलना, क्रमवत जीवन दर्शन है !
नित्य प्रगति की ओर अग्रसर रहना ही तो जीवन है !!

यह गाँधी का देश,
जवाहर की यह थाती है !
लाल बहादुर प्रणत इन्दिरा-
बलि की ज्योति जगाती है" !!

असली भारत ......अभी गाँवों में बसता है—

"आओ ! अपने गाँव ठाँव है जहाँ शान्ति अरु चेतन की !
बात–बात पर नहीं घात है लगती शहरी अन बन की !!
हाँ कुछ थोथी राजनीति ने वातावरण बिगाड़ा है !
"जय जवान अरु जय किसान" का नारा बहुत पछाड़ा है !!

फिर से भरनी वही भावना, अभिनव ज्योति जगानी है !
भीड़–भाड़ से इन शहरों की ग्राम्या छवि बचवानी है !!
भरनी है अब नई प्रेरणा–रिश्तों के सद्भावों में !
चाल बाजियों का न प्रदूषण फैले अपने गाँवों में !!

खेत–खेत में क्रमवत श्रम से ही तो स्वर्ण बरसता है !
असली भारत यदि देखो तो अभी गाँवों में बसता है !!
कण–कण को अब नई प्रेरणा मिले इंदिरा गाँधी से !
बाल–वृद्ध अरु युवा–चेतना खिले इंदिरा गाँधी से !!

जो संवेदन शील सदा से–मन से सबके पास रही !
ग्रामीणों की उन्नति का वह रचती नव विश्वास रही !!
उसको था विश्वास स्वयं पर नव इतिहास बनाने का !
अक्सर खींचा ओर स्वयं की उसने ध्यान जमाने का !!

देखे थे उत्थान, पतन अरु पुनरुत्थान संजोया था !
ख्याति देश की फैलाने में क्षण न एक भी खोया था !!
उसकी गाथा, माथा सबका ऊँचा करती जाएगी !
युगों–युगों तक जग की संतति उसके यश को गाएगी !!

ओ रे, मेरे देश वासियों !

यद्यपि जीवन होम कर दिया सद्भावे की धरती पर,
फिर भी मन मे साध रह गई, और यहा कुछ करती पर,
साथ दिया था नही वक्त ने, बन्द सिलसिला चाहो का–
देख अधर मे, हुआ गुजरित इंदिरा गाँधी का नव स्वर !

ओ रे, मेरे देश वासियो ! तौल समय को चलना तुम,
कदम–कदम साम्राज्यवाद की परखा करना छलना तुम,
रखना नित सबन्ध सभी से मित्र भाव सदभावो के;
राष्ट्रपिता गाँधी अरु नेहरू नीति कभी न बदलना तुम !

अर्थ संतुलन, शक्ति संतुलन नीति परक सिद्धान्त रहे,
साख न धूमिल हो भारत की इसका ध्यान नितान्त रहे,
सर्वोदय की रहे भावना और कामना उन्नति की;
जन हितकारी योजनाये हो, कही न कोई अशान्त रहे !

विश्व ढेर पर विध्वंसों के बैठा है यह ध्यान रहे,
इसी तथ्य को रख समक्ष नित प्रगति-पक्ष विधान रहे,
जो भी पग अब उठे राष्ट्र की स्थिति का हो परिचायक
पूर्ण दमक के साथ चमकता जग में हिंदुस्तान रहे !

भारत को है गर्व स्वयं के संस्कृति-स्वर-संचालन में,
यही विरासत पुलक भरेगी नित्य देश के जीवन में,
हो न प्रभावित सत् साहित्यिक विधा, बाह्य संकेतों से;
खिलें महकते पुष्प सदा ही प्यारे प्यारे उपवन में !

भारत की यह शान्ति-कामना कष्ट जगत के हर लेगी,
स्वाभिमान से जीने का हर एक किसी को वर देगी,
होगी जग में जीत सत्य की, यह भारत का नारा है;
'सत्यमेव जयते' की वाणी शक्ति निराली भर देगी !

गर्व सहित जीवन जीता अब व्यक्ति यहाँ प्रत्येक रहे,
अमन-चमन की रक्षा की हर एक हृदय मे टेक रहे,
यही कामना है मेरी अब नव भविष्य की लय के संग;
रहें संगठित सभी नागरिक, न्यारा भारत एक रहे !